माहुरी जाति का विवेचनात्मक इतिहास

—शिव प्रसाद लोहानी

श्री मधुरासिनी महादेव्यै नमः

उरुतदस्य यद्दैश्य

सहयोग राशि - १०१/- रु० मात्र

माहुरी जाति का विवेचनात्मक इतिहास

अध्यक्ष

सदानन्द प्रसाद भदानी

उपाध्यक्षद्वय

कालीचरण राम तरव, नरेन्द्र प्रसाद चरण पहाड़ी

कोषाध्यक्ष

ध्रुवनारायण प्रसाद भदानी

मन्त्री

बनमाली राम

संयुक्त मंत्री

युगल किशोर गुप्ता

लेखक

शिव प्रसाद लोहानी

एम० ए०, साहित्य रत्न

प्रकाशक

माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति

विद्यापुरी, झुमरीतिलैया (कोडरमा)

पिन - 825 409

सहयोग राशि - १०१/- मात्र

प्रथम संस्करण - 1998

मूल्य - 101 रु० मात्र

प्रकाशक - माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति
विद्यापुरी, झुमरीतिलैया - 825 409
जिला - कोडरमा

मुद्रक - भगवती प्रेस
झुमरीतिलैया - 825 409
दूरभाष - (06534) 22453/22553

MAHURI JATI KA VIVECHNATMAK ITIHAS
CRITICAL HISTORY OF MAHURI VAISYA

अनुक्रमणिका

मथुरासिनी-वन्दना

जय, जयति मथुरा भूमि, मथुरा-वासिनी, मथुरासिनी !
तुम हरो भव-भय, करो निर्भय, जननि, भव-भय-नाशिनी !

यह अगम दुख की भव-निशा,
सूझे न कोई भी दिशा,

दिशि-दिशि उगो बन शशि अमावस करो पूनम-यामिनी !
जय, जयति मथुरा भूमि, मथुरा-वासिनी, मथुरासिनी !

यह जाति-दुर्गति, दुर्दशा,
देखी न जाती अब दशा,

दुख के भँवर से जाति-नौका पार कर भव-तारिणी !
जय, जयति मथुरा-भूमि, मथुरा-वासिनी, मथुरासिनी !

हे अध-अधम-उद्धारिणी !
हे पाप-शाप-निवारिणी !

बन पाप के घन में तड़ित की दमक, दमको दामिनी !
जय, जयति मथुरा भूमि, मथुरा-वासिनी, मथुरासिनी !

- कपिल देव नारायण

महिमा-मण्डित इतिहास

मुट्ठी में भर कर लाए हैं हम अनन्त आकाश ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

महासेन की महिमा जागी, जागे भामासाह,
जगे भगीरथ, जाग उठा है भागीरथी-प्रवाह,
सिद्ध मनोरथ 'सदानंद' का, 'शिव' का सफल प्रयास ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

कैसे उद्गम, कैसे उद्भव, कैसे हुआ विकास,
अर्पण है दर्पण तुमको माहुरी जाति इतिहास,
शब्द-शब्द में आये हैं लेकर सत्यार्थ-प्रकाश ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

आज भूल कैसे सकते हैं 'गया राम' का नाम,
प्रथम जाति-इतिहास-रचयिता, सादर उन्हें प्रणाम,
सदा 'उमा', 'गोपी', 'कारु', 'भगवान दास' के दास ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

जाति-पुरुष, अध्यक्ष प्रथम मंडल के 'हरखू राम',
जिनकी सेवा ने स्वजाति को दिये नये आयाम,
ये नभ के नक्षत्र रहेंगे देते सदा प्रकाश ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

अंधकार को चीर जाति के नभ पर उगा 'मयंक',
खिला पंक में पंकज मानो धुल सा गया कलंक,
प्रथम प्रकाशक 'प्रभु दयाल' थे खुद ही एक प्रकाश ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

कन्या के विवाह की खातिर किया देह भी होम,
ऋणी रहेगा उस 'होरिल' का सदा रोम-प्रति-रोम,
'छट्टू-होरिल' के कृतज्ञ, शिक्षा का किया विकास ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

जाति-वन्दना के क्रम में स्वर पर स्वर जुड़े अनेक,
एक 'टेक नारायण' भी थे उसी गीत की टेक,
थी स्वजाति की सेवा में अर्पित जिनकी हर साँस ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

मुरझा पाए जाति सरोवर के न कमल के फूल
कर दो आज प्रदूषण को सरवर जड़ से निर्मूल
"कमलापति" हर लें समाज के सब कुण्ठा संत्रास
महामहिम माहुरियों का महिमा मण्डित इतिहास ।

जल में रह कर भी जल बिन जैसे प्यासी हो मीन,
ज्योति-ग्रहों की जननी फिर भी जाति ज्योति से हीन,
'तमसो मा ज्योतिर्गमय', दो तम से हमें निकास ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मण्डित इतिहास ।

मुट्ठी में भर कर लाए हैं हम अनंत आकाश ।
महामहिम माहुरियों का महिमा-मंडित इतिहास ।

– कपिल देव नारायण

वक्तव्य

किसी जाति को ठीक से समझने-बूझने, उसके पूर्व एवं वर्त्तमान परिवेश से अभिज्ञ होने एवं जाति के सर्वांगीण स्थितियों को दिग्दर्शन करने के लिए इतिहास का होना परमावश्यक है । इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर माहुरी जाति का विवेचनात्मक इतिहास लिखवाने और उसे प्रकाशित करने हेतु माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति की स्थापना की गयी । स्थापित लेखक, विद्वान श्री शिव प्रसाद लोहानी को इसके लिखने का भार इसलिए दिया गया कि करीब ३० वर्षों तक "माहुरी मयंक" का सम्पादन करने के कारण जाति के सन्दर्भ में ये व्यापक रुप से सारी बातों को जानते हैं । इनकी व्यस्तता एवं प्रकाशन व्यय की अप्राप्यता के कारण अब तक इसे छापा नहीं जा सका । इमें प्रसन्नता है कि देर से ही सही किन्तु अच्छे रुप में इसका प्रकाशन किया जा रहा है । जाति के लोगों का सहयोग रहा तो जाति के सम्बन्ध में नये साहित्य भी प्रकाशित किये जायेंगे ।

समाज का व्यापक हित इसी में निहित है कि लोग परिस्थिति को देखकर समाज के भविष्य का निर्माण करें । हम समझते हैं कि स्वातंत्र्य पूर्व एवं स्वातंत्रोत्तर काल में शिक्षा एक ऐसा अमृत रहा है जिसे पान कर लोग स्वयं और समाज को भी गौरवान्वित करते हैं । माहुरी जाति में पूर्व के दशकों में इस ओर ध्यान नहीं दिया गया । कुछ ऐसे परिवार हुए जिन्होंने शिक्षा को अपने परिवार में प्रस्थापित किया । उसमें सर्वोच्च स्थान सिलाव (नालन्दा) के बाबू लालजी रामजी का है । ये स्वयं शिक्षित होकर डाक विभाग की उच्च सेवा में रहे । इतने से ही उन्हें संतोष नहीं

हुआ और वे अपने चारों लड़कों को उच्च शिक्षा दिलायी । बड़े लड़के श्री दामोदर बाबू न्यायिक सेवा में गये और जिला जज होकर अवकाश प्राप्त किये । दूसरे बाबू योगेश्वर प्रसाद अपने जमाने के समाज में प्रथम एम०एस०सी० थे जिन्होंने समाज की भी अत्यन्त सेवा की । तीसरे डॉ० राजेश्वर प्रसाद इंग्लैंड जाकर डॉक्टरी की सर्वोच्च शिक्षा MRCP (London) ग्रहण की । चौथे व्रजेश्वर बाबू विद्युत विभाग के ख्याति प्राप्त इंजीनियर थे ।

इस परिवार ने समाज में बहुत से लोगों को शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा थी । शिक्षा के अमृत से न केवल सम्बद्ध व्यक्ति-परिवार वरन् सारा समाज लाभान्वित होता है ।

इसलिए हम चाहेंगे कि समाज के सभी लोग इस बात को समझें और अपने परिवार में सभी लोगों को शिक्षित बनायें ।

इस इतिहास के पढ़ने से यह बात ज्ञात हो जायगी कि शिक्षित होकर जिन लोगों ने अपना कार्य सम्पादित किया है वे अपेक्षाकृत अधिक सफल रहे हैं ।

हम समझते हैं कि इस इतिहास से लोगों का शिक्षा की ओर झुकाव बढ़ेगा । सम्भवतः यही सबसे बड़ी बात ही होगी ।

सदानन्द प्रसाद भदानी
अध्यक्ष
माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति

निवेदन

[illegible]ली चरण राम [illegible]

माहुरी जाति का विवेचनात्मक इतिहास आपके सामने है । यह कैसा है, इसको लिखने और छापने में कितना परिश्रम हुआ है इसका अन्दाजा तो विज्ञ पाठक और समाज सेवी ही लगा सकते हैं । इम समझते हैं कि इसके प्रकाशन से बहुत सी ऐसी बातों की जानकारी लोगों को मिल जायगी जिन्हें वे नहीं जानते होंगे । इसके प्रबन्ध और व्यवस्था करने में इसके मन्त्री श्री बनवालीराम ने बहुत परिश्रम किया है । ये एक ख्याति प्राप्त समाजसेवी हैं और इम समझते हैं कि आप लोगों का सहयोग रहा तो इस संस्था के द्वारा दूसरी समाजोपयोगी रचनायें भी छापी जायेंगी ।

इतिहास एक ऐसा विषय है जिसकी बातें अंतिम नहीं होती । यदि भविष्य में कुछ नई बातें ज्ञात होती हैं तो उसमें परिवर्तन भी होता है । वेसा हुआ तो अगले संस्करण को अद्यतन बनाया जा सकेगा ।

उपाध्यक्ष द्वय

कालीचरण राम तरवे

नरेन्द्र प्रसाद चरण पहाड़ी

माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति

विचारणीय बात

किसी भी संस्था के सम्यक संचालन के लिए समुचित कोष का होना आवश्यक है । माहुरी इतिहास की छपाई, सामग्री जुटाने और प्रचार-प्रसार के लिए वांछित रकम कुछ कम नहीं चाहिए थी । फिर भी इसका काम प्राय: बराबर चलता ही रहा । मन्त्री के साथ मैंने भी माहुरी वैश्य महामण्डल के मण्डलों का दौरा किया और लोगों से इतिहास की सामग्री भेजने को कहा । इसका असर अच्छा रहा और लेखक के पास छपाई के योग्य सामग्री पहुँची, किन्तु अधिक नहीं । समिति की स्थापना से इस रुप में परिभ्रमण आदि में कुछ रकम खर्च हुए जिनकी प्राप्ति जिस रुप से हुई उसका पूरा हिसाब पुस्तक छप जाने के बाद प्रस्तुत किया जायगा ।

सम्प्रति कोष में पैसे नहीं थे । इसलिए मैंने अनुरोध करके सी० एच० लि० फर्म से पाँच हजार रुपये प्राप्त किया । इसके पूर्व भी खर्च के लिए इस फर्म ने रकम दी थी । डी० एल० चरण पहाड़ी फर्म के संचालक श्री नरेन्द्र प्रसाद चरण पहाड़ी ने कृपापूर्वक सब मिलाकर ६१०१ रु० दिये । इसमें से १००० रुपये ये पूर्व में व्यय हेतु दिये थे । प्रख्यात समाजसेवी एवं माहुरी जाति के समर्पित व्यक्ति जातिरत्न बाबू कमलापति राम ने पाँच हजार की राशि इस संस्था को देने की कृपा की है । केन्दुला-करकेन्द के सुविज्ञ एवं निस्वार्थ समाजसेवी बाबू युगल किशोर गुप्ता महामन्त्री कोयलांचल माहुरी वैश्य संघ ने कृपापूर्वक पाँच हजार की रकम दी है । अत: ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं ।

वास्तव में माहुरी जाति का विवेचनात्मक इतिहास एक ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तक है जो कि जाति के सभी घरों में एक-एक प्रति रहनी चाहिए । इसे पढ़कर लोग जाति के बारे में, पूर्व पुरुषों के बारे में सारी बातें जान सकेंगे । तय है कि स्वजातीय बन्धु इसको समझेंगे और इसकी प्रति खरीद कर अपना ज्ञान बढ़ायेंगे और समिति के घाटे की भी भरपाई करेंगे ।

ध्रुवनारायण भदानी, *कोषाध्यक्ष*

माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति

निवेदन

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है -
हम कौन थे क्या हो गये हैं
और क्या होंगे अभी

ऐसे उत्प्रेरक भाव विचारों को लक्ष्य करके जाति गौरव को दिग्दर्शित करने हेतु इतिहास प्रकाशन की बात सामने आयी । जीवित जाति का इतिहास रहना परमावश्यक है क्योंकि इससे बीती बातों और स्वर्गीय जाति मनीषियों के बारे में जाना जा सकता है और हम पिछली गलतियों का सुधार कर सकते हैं ।

जाति के कई छोटे इतिहास हैं और समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में ये छपते रहे हैं । किम्वदन्तियाँ, जनश्रुतियों के माध्यम से भी बहुत सी बातों का पता चलता है । इन बिखरे सूत्रों को पिरोकर और जातीय संगठनों की स्थितियों के बारे में जानकर हम इतिहास से प्रेरणा ले सकते हैं ।

इतिहास लेखन की योजना १९९२ में बनी । उसी के बाद इसके लेखक श्री शिव प्रसाद लोहानी लेखन कार्य में प्रवृत हो गये । बिखरे सूत्रों को एकत्र करने हेतु कई सभायें हुई - उन सभाओं और बैठकों में लोगों से अपील की गयी, छपे परचे भी बँटे कि लोग अपनी विशिष्ट जानकारियाँ लेखक के पास भेजें । लेखक ने भी व्यक्तिगत रुप से अनेक लोगों से सम्पर्क साधा । किन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि बहुत कम लोगों ने इस पर ध्यान दिया जिससे राष्ट्र कवि की उपर्युक्त पंक्तियाँ व्यर्थ प्रमाणित होती रहीं ।

इस स्थिति में समिति के पदाधिकारियों को ही मिल बैठकर या व्यक्तिगत सम्पर्क करके तथ्यों का पता लगाना पड़ा । यह बात जरुर

है कि इसके लिए वांछित रकम नहीं थी किन्तु जब इतिहास छपने योग्य होता तभी न प्रकाशन व्यय की बात आती ।

जब इतिहास में प्रभूत सामग्री एकत्र हो गयी और इसे अन्तिम रुप रायगढ़ के उद्योगपति श्री रामदुलार गुप्त के अतिथि गृह में रहकर प्रेस कापी तैयार की गयी और श्री गुप्ता के आतिथ्य और उनके लिपिकों के सहयोग अच्छे रहे । पर उसके बाद भी सामग्री को प्रेस में जाने तक प्राप्त की गयी सामग्री का समावेश किया गया जिसमें कि यह संस्करण अद्यतन हो जाय ।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इसके अध्यक्ष समाज रत्नाकर श्री सदानन्द प्रसाद भदानी ने छपाई का जिम्मा अपने उफपर लेकर प्रकाशन का कार्य सुगम कर दिया है । कोषाध्यक्ष श्री ध्रुवनारायण भदानी, उपाध्यक्ष द्वय श्री काली चरण तरवे एवं श्री नरेन्द्र प्रसाद चरण पहाड़ी एवं स० मंत्री श्री युगल किशोर गुप्त ने भी इसमें यथोचित सहयोग प्रदान किया है ।

पर यदि इसके विद्वान लेखक इतने वर्षों तक सक्रिय नहीं रहते, प्राप्त सूचनाओं को संजो कर नहीं रखते, उनके उपयोग यथास्थान नहीं करते तो यह पुस्तक इतनी उपयोगी नहीं बन पाती जितनी कि हो पायी है ।

इस इतिहास की वास्तविक उपयोगिता तभी होगी जब जाति के प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति होगी । अब लड़के के साथ लड़कियाँ, पुतोहू भी शिक्षित हो गयी हैं । अतः वे भी इससे लाभान्वित होंगी, ऐसा हमारा विश्वास है ।

बनमाली राम
मन्त्री
माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति

लेखक की प्रस्तावना

माहुरी इतिहास प्रकाशन समिति के अनुरोध पर हमने यह माहुरी जाति का विवेचनात्मक इतिहास लिखा । प्रामाणिक सामग्री के अभाव में स्फुट रुप से इस सन्दर्भ में जो सामग्री मिली उसे ही आधार मानने की विवशता रही । साधन-समय के अभाव में जितना किया गया है उससे अधिक करना संभव नहीं था । विखरे सूत्रों को एक स्थान पर संग्रहीत करके वैसे विन्दुओं के संकेत दिये गये हैं जिससे कि इतिहास लिखने वाली भावी पीढ़ी को कुछ आधार मिल जाय ।

यह सही है कि पुरातन सिक्के, ताम्रपत्र, भवनों के खण्डहर एवं भग्नावशेष पुरातन इतिहास की संरचना के लिए आवश्यक तत्व होते हैं । ये राजे-महाराजे शासकों के होते जरुर हैं किन्तु इनमें भी प्रासंगिक तौर पर कुछ दूसरी जातियों और लोगों से सम्बन्धित बातें प्राप्त हो जाती हैं । अतः आवश्यकता इस बात की है कि इस पर गहन शोध, अध्ययन-मनन करके इतिहास लिखा जाय तो वह अधिक प्रामाणिक होगा ।

इतिहास लेखन के लिए जिस गम्भीर ऐतिहासिक तत्वों का अध्येता होना चाहिए वैसा हम नहीं हैं किन्तु सामाजिक और लेखन कार्यो से जुड़े होने के कारण हमने इतिहास लेखन का दुस्साहस किया है । इसलिए हमारी सीमा को ध्यान में रखकर पाठक इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि वे हमारे साथ न्याय कर सकेंगे ।

सामाजिक या किसी जाति के इतिहास का अभिप्राय सामान्यतः यह होता है कि जाति अपने पूर्व पुरुषों, घटनाक्रमों से

परिचित होवे, पूर्व की गलतियों को सुधारे ओर वर्तमान में जो गलती हो रही है उसका परिमार्जन करे । इसी बात को ध्यान में रखकर यथावसर हमने विवेचनात्मक विचारों को सम्मिलित किया है जो कि जाति को विकास पथ पर चलने के लिए प्रेरित कर सकेंगे ।

इस इतिहास लेखन के क्रम में समिति के अध्यक्ष समाज रत्नाकर श्री सदानन्द प्रसाद भदानी, जाति रत्न श्री कमलापति राम तरवे, श्री बनमाली राम, श्री राम दुलार गुप्ता, श्री कृष्ण प्रसाद भदानी जैसे व्यक्तियों के परामर्श मिलते रहे हैं । बिना इनके इस सहयोग के इसका लिखा जाना संभव नहीं होता । अतः हम उनके आभारी हैं ।

हमें विश्वास है कि पूर्वाग्रह रहित होकर इसे जो भी पढ़ेंगे उन्हें इस विवेचित स्थिति से हमारी कठिनाइयों की समझ बनेगी और वे इसी आलोक में इसे पढ़ेंगे, इत्यलम् ।

वसंत पंचमी — **शिव प्रसाद लोहानी**

माघ शुक्ल ५ सं० १९५४ वि०

ता० १. २. १९९८

लेखक परिचय

१९२४ ई० में जन्में श्री शिव प्रसाद लोहानी हिन्दी और अंग्रेजी दो विषयों में एम० ए०, साहित्यरत्न (हिन्दी) और शास्त्री (संस्कृत) हैं । १९४८ से ही लेखन कार्य में जुड़े हैं । स्वतन्त्र लेखन के क्रम में इनकी बहुत सी साहित्यिक रचनायें साहित्य संदेश, वीणा सरस्वती संवाद में निकली । दैनिक पत्रों के रविवासरीय संस्करण में इनकी हजारों रचनायें छपीं । ३० वर्षों तक "माहुरी मर्यक" का संपादन किया । हिन्दुस्तान समाचार, हिन्दुस्तान, प्रदीप, आर्यावर्त आदि के संवाददाता रहे । आकाशवाणी पटना के स्थायी वार्ताकार हैं । वैश्य सभा से ४० वर्षो से जुड़े हैं । अ० भा० वैश्य महासम्मेलन के उपाध्यक्ष, महाउरन वैश्य संघ के संस्थापक अध्यक्ष रहे । कुछ काल के लिए दो हाई स्कूलों के प्रधानाध्यापक और कॉलेज में अंग्रेजी के प्रवक्ता और नालन्दा शोध संस्थान के पत्रकारिता विभागाध्यक्ष रहे । सहकारिता आन्दोलन एवं सामाजिक शैक्षणिक कार्यो में भी समय दिया । पेशे से कृषक और व्यवसायी हैं । पिछले दो वर्षो से ये पुस्तकें लिख कर छपा रहे हैं । मगही में (कविता संग्रह) मट्टी (कहानी संग्रह) गलबात (निबन्ध संग्रह) माहुरी मण्डल नाटक समीक्षक और हिन्दी में मगही भाषा और साहित्य, मगही भाषा और निबन्ध तथा कहानी संग्रह 'घोटाला घर' छप चुकी है । इनकी ये रचनायें कापफी चर्चित एवं प्रशंसित हुई है ।

शक्तिचरण तरवे
गिरीडीह

खण्ड- १
अध्याय- १
प्राचीन काल का विवेचनात्मक परिचय

चातुर्वर्ण्य ब्राह्मण, क्षात्रेय, वैश्य और शुद्र जब भी अस्तित्व में आये हों इतना स्पष्ट है कि इनके अस्तित्व में आने के बाद से इसे सामाजिक मान्यता मिल गयी । पुरुष सूत्र के निम्न श्लोक को प्रक्षिप्त मानने वाले लोगों के बावजूद इसकी विश्वसनीयता बनी हुई है, यह श्लोक यह है :

ब्राह्मणं अस्य मुखमासित बाहू राजन्य कृतः ।
उरुतदस्य यद् वैश्यः पद्यां शुद्रः अजायत ।।

तात्पर्य यह है कि 'मुख ब्राह्मण' बाहु क्षत्रिय, उरु वैश्य और पैर शूद्र है ।

वास्तविकता कुछ हो इसका भावार्थ जो अक्सर कहा जाता है एक प्रकार से यह 'सर्वमान्य' कथन हो गया है ।

वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में जन्मना और कर्मणा का विवाद भी साथ-साथ चलता रहा है । जहाँ रुढ़िवादी (ORTHODOX) सनातनी लोग इसे जन्मना मानते हैं वहीं 'रुढ़ि विहीन' आर्य समाजी कर्मणा, गुणकर्म के स्वभाव के अनुरुप किसी व्यक्ति के वर्ण का निर्धारण करने के पक्षधर है ।

सारा 'समाज' यदि चार वर्णो में विभाजित होता तो एक बात थी । यहाँ तो चारों के सैकड़ों उपवर्ण जाति के रूप बन गए हैं । अब तो यह खंड 'विखंडन की प्रक्रिया' को प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष हवा दे रहे हैं । जाति के ये विखंडन कहीं देश को ही विखंडित न कर दें ।

विखंडन की इस प्रक्रिया में जन्मना जाति को वर्चस्व प्राप्त है । जन्मना शुद्र चाहे कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य हो धर्म परिवर्तन कर ले तो भी शुद्र जाति का लेबल उस पर लगा ही रहेगा । कुछ ऐसी

ही स्थिति पिछड़ी जाति के वैश्य की भी है । यदि वर्ण जाति कर्मणा हो तो शायद ऐसी विसंगति नहीं होती । क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कितना भी विपन्न क्यों न हों जन्मना ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य होने के कारण धनी से धनी उच्च पदस्थ शूद्र से ऊपर ही रहेगा ।

वैश्य की उपमा उदर से दी गयी है । उदर निर्विकार भाव से शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग, नस-नाड़ी, अस्थि-मज्जा का आनुपातिक रुप से पोषण करता है । उदर कार्य करना बन्द कर दे तो वे सारे अवयव निष्क्रिय हो जायेंगे । कोई अंग यदि यह सोचे कि सुस्वाद भोजन के कौर के मुख्य तत्व उदर में जाने के पश्चात् हृदय में चला जाता है तो क्या शरीर की स्थिति ठीक रहेगी ?

इसी रुप में वैश्य यदि व्यापार करना बन्द कर दे तो देश की आर्थिक स्थिति क्या गतिशील रहेगी ? गैर वैश्य वृत्ति के लोग जो आर्थिक गड़बड़ कर देते हैं उसका सोवियत संघ उदाहरण है । भारत में भी राष्ट्रीय कृत उपक्रमों की जो दर्दनाक स्थिति हुई यह सर्व विदित है ।

किन्तु यही वैश्य अपने में भी असंगठित है; इसका खास कारण यह भी है कि अन्य वर्गों से कुछ अधिक ही, वैश्य अनेक टुकड़ों और उप-टुकड़ों में जाति और उपजाति में विभाजित हो गया । पहले तो रोटी भी अलग थी, बेटी भी । अब रोटी साथ है किन्तु बेटी अलग ही है । पर दुर्भावना और आपसी भेदभाव आज उससे भी अधिक है जबकि रोटी अलग थी ।

टुकड़ों में बटे होने की चर्चा वैश्य के सभी इतिहास के लेखकों ने की है, हिमालय प्रेस, पटना-४ से प्रकाशित 'भारतीय वैश्यों का संक्षिप्त इतिहास' में लेखक डॉ० इन्द्रदेव नारायण सिंह 'निकुम्भ' ने भी की है । उन्होंने वैश्यों की ३८ जातियों के नाम गिनाये हैं ।

सन् १८९२ में स्थापित अ० भा० वैश्य महासभा ने ई० १९०१ में एक पत्र में लिखा था कि बनियों के ४२ उपवर्ग हैं । पर आइने अकबरी में बनियों के ८४ उपभेद बताये गये हैं । अ० भा० वैश्य

महासभा के संयोजक (हैदराबाद) के अध्यक्ष डॉ० रामेश्वर दयाल ने अपनी वृहद पुस्तक वैश्य समुदाय का इतिहास में वैश्यों के ३५४ उपवर्गों को उल्लेख किया है । देश हित से परिपूरित लोग चाहते हैं कि ये सारी उपजातियाँ केवल वैश्य वर्ण में समाहित हो जायें ।

विचार पूर्वक देखा जाय तो इन सभी ३५४ उपवर्गों की मूल समस्या प्राय: एक ही है । व्यापार प्रधान जाति होने के कारण कम से कम ९० प्रतिशत लोगों की आजीविका का साधन व्यवसाय है, इनमें से अधिकतर छोटे गरीब दुकानदार हैं । नेताओं, सरकारी अफसरों आदि लोगों में व्यापारियों के प्रति बेवजह दुर्भावना रहती है । फलत: बेबुनियाद आरोपों के ये शिकार होते रहे हैं । अन्य कई समस्यायें भी प्राय: एक ही पगकार की है । इसके लिए सभी वैश्यों को एक सूत्र में बांधने के लिए संगठित होना होगा ।

चूँकि हम माहुरी वैश्य जाति का विवेचनात्मक इतिहास लिख रहे हैं पहले माहुरी और तुल्य जातियों के बारे में विवेचन करें । वैश्य समुदाय के अन्य लोगों को भी इससे प्रेरणा मिलेगी और अपनी-अपनी उपजातियों का क्षेत्र विस्तार करके संगठन की ओर बढ़ेंगे ।

डॉ० इन्द्रदेव नारायण सिंह 'निकुम्भ' ने अपने 'भारतीय वैश्यों का संक्षिप्त इतिहास' में जिन वैश्यों की ३८ जातियों की चर्चा की है, उनमें स्पष्ट रुप से 'माहुरी' वैश्य लिखा है । यह स्वाभाविक है क्योंकि इस पुस्तक का प्रकाशन पटना के हिमालय प्रेस से हुआ है और बिहार प्रदेश में माहुरी वैश्य का खास महत्व है ।

किन्तु अ० भा० वैश्य महासभा ने ८ जनवरी, १९०१ को उत्तरप्रदेश के चीफ सेक्रेटरी को पत्र दिया उसमें माहुरी नहीं है । माहुर, माहौर का नामोल्लेख अवश्य है, चूँकि यह उत्तरप्रदेश की बात है और उत्तरप्रदेश में स्पष्ट ही माहुरी नाम की कोई जाति नहीं है, अगर है तो ततुल्य माहौर वैश्य, माथुर वैश्य इसलिए इसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता ।

वैश्य समुदाय का इतिहास में विद्वान डॉ० रामेश्वर दयाल ने

स्पष्टत: माहुरी शब्द का उल्लेख ३५४ वैश्य उपवर्गों में किया है । डॉ० रामेश्वर दयाल ने बहुत सराहनीय कार्य किया है जो कि आने वाली वैश्यों की पीढ़ियों का मार्गदर्शन करेगा ।

खण्ड- १

अध्याय- २

मध्य काल (पूर्वार्द्ध) सन् १९०० ई० तक

विवेचनात्मक परिचय : मध्य काल खण्ड की शुरुआत किस ईस्वी सन् से मानी जाय यह कहना आसान नहीं है अतएव इसकी शुरुआत के वर्ष को हम भावी इतिहासकार को अंकित करने के लिए छोड़ रहे हैं । हम इतना जरुर कह रहे हैं कि इस काल खण्ड के बारे में भिन्न-भिन्न विद्वानों, समाजसेवियों, इतिहासकारों ने जो विचार व्यक्त किये हैं और हमें जो जानकारी मिली है उसे उद्धृत कर रहे हैं, साथ ही यह भी निवेदन कर रहे हैं कि यदि इसका दूसरा संस्करण हमारे जीवन काल में निकला तो उस समय तक जो भी दूसरे विचार हमें प्राप्त होंगे उन्हें इस अध्याय में सम्मिलित किया जायेगा ।

डॉ० भगवान दास एम०एस०सी०, पी०एच०डी० पूर्व रोडर सागर विश्वविद्यालय (म०प्र०) का विचार है :

वैश्यों के भीतर माहुरी एक अल्पसंख्यक उपजाति है, जिसका केन्द्रीयकरण दक्षिण बिहार एवं उड़ीसा के कुछ जिलों में हो गया है, इस जाति में प्रधानत: मांस एवं मदिरापान निषेध है तथा विधवा विवाह नहीं होता है, इस जाति के लोग धार्मिक प्रकृति के हैं । सनातनी नानक और कबीर पंथ के मानने वालों का बाहुल्य है, इसमें व्यवसाय की प्रथा अधिक है इनका प्रधान धंधा दुकानदारी है पर कुछ लोग खेती करते अथवा करवाते हैं । शिक्षा का प्रचार अभी कम हुआ है इनका रीति रिवाज करीब-करीब अग्रवाल जाति से मिलते-जुलते हैं ।

H. H. Pislay I.C.S. की लिखी हुई पुस्तक The Tribes and Castes of Bengal है । यह पुस्तक कलकत्ता के Bengal Secretariat Press से १८९१ ई० में छपी थी इसके पृष्ठ ४४ पर यह विवरण छपा है ।

Mahuri a Subcaste of Bania in Bihar. Who occupy

nearly as high a rank as the Agrawallas in social estimation, like the Sikhs the Mohuris strictly prohibit use of tobacco and a man detected smoking would be expelled from the community. Another peculiar usage is that marriages are always celebrated in the bridegrooms house not at brides. Trade and money lending are the proper occupation of the Mahuris. Some of them have acquired substantial tenures and setup as landlords and Zamindars.

अनुवाद : माहुरी बनिया वर्ग की एक उपजाति बिहार में सामाजिक दर्जे में अग्रवालों जैसी उच्च कुल के वर्ग में हैं । सिखों की भाँति माहुरी जाति में तम्बाकू व्यवहार पर कड़ा प्रतिबन्ध है, यहां तक कि कोई व्यक्ति तम्बाकू पीता पाया जाता है, तो उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता है । दूसरी अनोखी बात इस जाति में विवाह सम्बन्धी यह है कि हमेशा लड़के वाले के घर पर ही सम्पन्न होता है कन्या के घर पर नहीं । माहुरियों का मुख्य धन्धा है, व्यापार तथा महाजनी (इसमें से कुछ लोगों ने पट्टे पर भूमि ले रखी है) कुछ भूस्वामी तथा जमींदार हैं ।

प्रसिद्ध समाज-सेवी दीपनगर श्री महावीर राम सेठ का कहना है कि सन् ७५३ हिजरी में मुहम्मद तुगलक दिल्ली के राज्य में सिंहासन पर विराजमान थे । उसी समय हजरत सैयद इब्राहिम रहमत उल्लाह उपनाम मलिक वैय्यो बादशाह के सेनापति थे । ये तुगलक का आदेश पाकर मलिक वैय्यों ने बिहार पर दो बार चढ़ाई की । पहली लड़ाई का परिणाम मुन्शी श्री राम ज्ञानी ने अपनी तवारोख श्री माहुरी भूषण में जो कि भाखा जुवान में है लिखा है कि माहुरी सौदागर हिन्दू जो कि मथुरा के रहने वाले थे पर बिहार के एक सुबेदार ने जिनका नाम बिठ्ठल सुबेदार था बहुत जुल्म किये । वृन्दावन वासी माहुरी जाति बहुत सा कीमती माल मसलन रेशमी कपड़े, ऊनी शाल, दुशाले, अंगूठी, जवाहरात और घोड़े इत्यादि लेकर व्यापार के उद्देश्य से पटना होते हुए बिहार पहुँचे । बिठ्ठल सुबेदार ने इन लोगों को बहुत सा सामान खरीदने के ख्याल से लिया और इसका मूल्य देने की प्रतिज्ञा की । परन्तु बाद में कीमत देने से इन्कार कर दिया । जब सौदागरों को नाउम्मीदी हो गयी,

इस कदर नुकसान बर्दास्त के बाहर हो गया तो आपस में राय कायम की कि देहली दरबार में इस्तगासा पेश किया जाय । फलत: वे लोग देहली पहुँचे और मुहम्मद तुगलक की खिद्मत में इस्तगासा पेश किया । सुबेदार ने जिसने इन पर जुल्म किया था इसका बयान बादशाह के सामने किया । बादशाह ने इनकी बेवसी पर तरस खाकर अपने 'सिपह सालार' हजरत सैयद इब्राहिम उर्फ मलिक वैय्यो को हुक्म दिया कि फौज का एक दस्ता अपने साथ लेकर बिहार जाओ और बिठ्ठल सुबेदार को हमारे हुक्म से आगाह करो कि वह सौदागरी की तमाम चीजों की कीमत अदा करे । अगर वो हुक्म न माने तो पहले उसे समझाओ अगर वह उस पर भी न मानेतो उसको मुनासिब सजा दो ।

बादशाह के हुक्म के मुताबिक हजरत सैयद इब्राहिम लश्कर लेकर देहली से चले और मुसलसल सफर करते हुए बिहार पहुँचे । बिठ्ठल सुबेदार को निहायत संजीदगी से समझाया और शाही हुक्म सुनाया । सुबेदार झुंझलाकर बोला कि माहुरी सौदागरों का दावा बिल्कुल गलत है और शाही हुक्म एक तरफा है इसलिए मैं इस पर अमल करने से मजबूर हूँ । इसके बाद हजरत सैयद इब्राहिम शाही हुक्म बजा लाने को तैयार हो गये और सुबेदार जी पहिले से होशियार था मुकाबले के लिए तैयार हो गया । दोनों तरफ से लड़ाई शुरु होने लगी । मगर सुबेदार की फौज मुकाबला नहीं कर सकी और भाग खड़ी हुई । सुबेदार लड़ाई के मैदान में लड़ते हुए मारा गया । इसके बाद मलिक वैय्यों ने सौदागरों को सामान असवाव की कीमत दिलवा दी । माहुरी जाति उससे बहुत खुश हुई और बिहार में बस गयी ।

इसके बाद मलिक वैय्यो का देहान्त दिल्ली जाते सन् ७५३ हिजरी में ही हो गया । उनकी लाश बिहार लाई गई और बिहार के पश्चिम एक पहाड़ी की चोटी पर दफनाई गई थी । सुल्तान तुगलक ने एक आजीवोशान गुम्बद उनकी कब्र पर तामीर करवायी ।

इनकी मौत के बाद माहुरी जाति जो मलिक वैय्यों से बहुत खुश थी हर साल उनकी वर्सी और उर्स-धूमधाम से मनाने लगी । सुप्रसिद्ध चिन्तक विद्वान एवं जाति हितैषी श्री राम कृष्ण राम अठघरा गिरिडीह के

विचार : हमारे पूर्वज कौन थे ? हम किसके वंशज हैं ? इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न किन्बदन्तियाँ प्रकाश में आ रही है । जाति अन्वेषकों के हम इसके लिए विशेष आभारी हैं, और उनको हम हृदय से धन्यवाद देते हैं । "माहुरी भूषण" के यशस्वी लेखक स्व० श्रीमान गयाराम भवानी ने तो हमें वैश्य वर्ण ही बतलाया, हमारे पूर्वज के नाम उल्लेख कर खाता गोत्र का पूर्ण परिचय देते हुए पुस्तक की पठनीय रुचिकर बनाने के लिए किसी कवि के द्वारा छन्द और दोहों में छपवा कर प्रकाशित किया । तदन्तर स्व० कुलभूषण बा० प्रभूदयाल गुप्त झरिया ने अपनी ४० पृष्ठ भाषण पुस्तिका में माहुरी जाति को क्षत्रिय प्रमाणित किया । उनके कथन के आधार पर मैंने कर्नल टाड कृत राजस्थान इतिहास का अध्ययन किया जिसमें लगभग ४०० क्षत्रियों की नामावली सूची में "माहुरी" क्षत्रिय का नाम पाया जाता है, जो महावरगढ के वासी थे । "जाति भास्कर" तथा शमसावाद आगरा से निकलने वाली "माथुरवैश्य हितकारी" पत्र के कई अंकों और विशेषांकों को पढ़ा । कुछ दिन पूर्व दैनिक विश्वामित्र के अग्रलेख में एक ऐतिहासिक विद्वान ने यह लिखा कि यवनों के अत्याचार से पीड़ित हो सैकड़ों क्षत्रिय जातियों को नोन और मिर्च तक बेचने पड़े । देश के विभिन्न भाग में ये जातियाँ फैल गयी और वाणिज्य वृति करने के कारण वैश्य कहलाई । मथुरा और आगरा के आस पास बसने वाली जाति का एक बहुत बड़ा बिहार की ओर प्रस्थान किया जहाँ वे स्थायी रुप से बस गये । संभव हो इसी दल में हमारी जाति के पूर्वज हों जो बिहार के पटना, गया, मुंगेर, हजारीबाग जिलों में बसे और व्यापार और खेती गृहस्थी करने लगे । कुछ बड़े-बड़े लोगों ने जागीरदारी हासिल की जो जमींदार कहलाये ।

हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए जब कोई इतिहास न लिख छोड़ा तो जो बातें अनुसंधान एवं अन्वेषण के रुप में हमारे सामने आती है उन पर हमें सोचना और समझना पड़ता है इस संदर्भ में एक पूर्व की घटना का स्मरण होता है जिसका उल्लेख निम्न भाँति करना आवश्यक है।

बचपन में हम ने पालगंज के सुविख्यात स्वजाति धनाढ्य महापुरुष का नाम सुना था जिनका नाम श्री थान सिंह था, जिनका

बनवाया हुआ वंशीधर मन्दिर आज टूटी-फूटी अवस्था में पड़ा है । आपके वंशज अहिल्यापुर मंडल के सभापति श्री जगदीश राम जी, इसरी निवासी सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री प्रीतम राम जी सभापति इसरी मंडल तथा पालगंज निवासी श्री प्रसादी राम जी हैं । आपके सम्बन्ध में यह बात आज तक पसिद्ध है कि आज से लगभग साठ वर्ष पहिले एक जैन सम्प्रदाय के सेठ पालगंज जब वहां के राजा साहेब के गढ़ के अंदर स्थित जैन मंदिर का दर्शन तथा चढ़ावा करने आये तो पाँच सौ रुपये नोट की रेजगारी (रेजकी) की तलाश करने लगे । नहीं मिलने पर वे बड़े चिन्तित हुए । राजा साहेब से प्रार्थना करने पर उन्होंने अपनी असमर्थता प्रगट की । बाबू थान सिंह जी बैठे थे । उन्होंने सेठ जी से पूछा कि किस ईस्वी सन् की रेजगारी चाहिए ? यह सुनकर सेठ जी चकराये और उनकी तरफ गौर से ताकने लगे । सेठ जी ने जो कहा उसी सन् की रेजकी देकर नोट लिए । हमारी जानकारी से उपर्युक्त बातें तो बिल्कुल सत्य है, परन्तु बाबू थान सिंह के नाम से वे कैसे प्रसिद्ध हुए उनके वंशज महानुभावगण या कोई पालगंज निवासी ही इस शंका का समाधान कर सकते हैं ।

माहुरी महामण्डल के पूर्व उपाध्यक्ष समाज-सेवी एवं पूर्व डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर बाबू श्याम लाल कुटरियार द्वारा अग्रोतकान्वय पर एक विहंगम दृष्टि -

'अग्रोतकान्वय' एक पुस्तक का नाम है लेकिन जैसा की नाम से शक होता है यह कोई पौराणिक या धार्मिक ग्रंथ नहीं है वरन् यह अग्रवाल, वैश्य जाति का इतिहास है । लेखक हैं श्री निरंजनलाल गौतम संपादक "अग्रज्योति संदेश" । प्रकाशन भी अग्रज्योति संदेश कार्यालय से हुआ है । पुस्तक काफी अध्ययन और मनन पूर्वक लिखी गयी है । वैश्य जातियों के इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए पठनीय है । मेरी जाति के विद्वान लोग इस पुस्तक से परिचित हो जायें और उनमें यह रुचि उत्पन्न हो कि वे भी अपनी जाति के इतिहास लिखने या लिखवाने में दिलचस्पी लें । इस पुस्तक में माहुरी जाति पर केवल दो जगह कुछ प्रकाश डाला गया है जो काफी नहीं है । पृष्ठ ५ पर वे लिखते हैं कि हमने अग्रवाल शब्द को वैश्य जाति का एक वर्ग विशेष मानकर उनके उपवर्गों को एक

ताने-बाने में बुनने का प्रयत्न किया है । हमारे इस प्रयत्न से उन लोगों को कुछ निराशा होगी जो अग्रवाल के साथ वैश्य शब्द लगाना हेय समझते हैं, किन्तु उन्हें समझ लेना चाहिए कि हम वैश्य पहले हैं अग्रवाल इसके पश्चात् हैं ।

इस पुस्तक के ऐतिहासिक पक्ष के बारे में श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार जी ने लिखा है कि मैं ऐतिहासिक दृष्टि से और अधिक गवेषणा के लिए गुंजाइश को मानता हुआ भी यही समझता हूँ कि हमें श्री गौतम के निष्कर्ष का पूर्णतया समर्थन करना चाहिए । वे फिर लिखते हैं- इतिहास की घटनायें प्राय: विवादास्पद होती है और वे वैसी ही रहेंगी । हम उनके ताने बाने में क्यों उलझें ? कृषि शिल्प तथा वाणिज्य के व्यवसायी समाज को तो अब यही समझ लेना चाहिए कि हम में से कोई एक-दूसरे से ऊँचा या नीचा नहीं हैं । हमारा लक्ष्य तथा समस्त समाज के प्रति कर्त्तव्य समान है । समानकर्मी रहकर हम कदम-कदम मिलाकर चलें इसी में हमारा श्रेय है ।

वैश्य जाति के आदि पुरुष महाराज अग्रसेन

इस पुस्तक के लेखक की मान्यता है कि अग्रवालों या यों कहिए कि वैश्यों के आदि पुरुष महाराज अग्रसेन थे । ये कलिकाल के आगमन के ८५ वर्ष पूर्व हुए थे और अग्रोहा जनपद के राजा या प्रधान थे । यह अग्रोहा हिसार जिले में है । वे इस बात का ऐतिहासिक आध ार भी देते हैं ।

इस आधार को डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त जो इस समय पटना म्यूजियम के प्रधान क्यूरेटर हैं, कोई ऐतिहासिक आधार नहीं मानते यद्यपि वे भी स्वयं अग्रवाल हैं । वे अग्रोहा की ऐतिहासिक स्थिति को मानते हैं लेकिन महाराज अग्रसेन को कोई ऐतिहासिक पुरुष नहीं मानते । वैसे लेखक ने मान्यता प्रदान करने वालों की एक लंबी सूची इस पुस्तक में दी है ।

माहुरी जाति :-

अग्रोहा में वैश्यों से अलग १८ परिवार थे । उनके एक परिवार के प्रधान (पितामह) थे महाराज अग्रसेन । उनका गोत्र गर्ग था । बाकी १६ परिवारों के अलग-अलग १६ गोत्र थे । इस तरह अग्रवालों और उनसे मिलते अन्य वैश्यों के १८ गोत्र प्रचलित हैं ।

लेखक ने पुस्तक में गोत्रों का एक तुलनात्मक चार्ट दिया है और यह साबित किया है कि चार प्रधान वैश्य जाति अग्रवाल, महावर, माहुरी या माहौर और माथुर वैश्यों के गोत्र लगभग एक ही है । मैं यहाँ से उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं समझता । शब्द मिलते-जुलते हैं लेकिन इनमें से कोई भी माहुरी जाति के १४ खातों से नहीं मिलते । लेखक ने इसका कारण यह बताया है कि चूँकि माहुरी जाति बहुत पहले ही मुख्य धारा से कटकर अलग हो गयी थी, इसलिए कालान्तर और देशान्तर के कारण इन गोत्रों को भूल गयी । बात कुछ विश्वसनीय नहीं मालूम होती । दो चार समानतायें तो पायी जाती हैं । वैसे इनमें सात गोत्र (गर्ग, गोयल, बंसल, सिंघल, मंगल, बिन्दल और कुच्छल) महावर,

माहुरी या माहौर और माथुर वैश्यों के साथ गोत्रों से किसी न किसी रुप में मिलते हैं । मगर इनमें से कोई भी माहुरी जाति के किसी भी खाते या गोत्र से नहीं मिलता ।

किस प्रकार माहुरी जाति का नाम माहुरी पड़ा और कैसे मुख्य वैश्य जाति समुदाय से यह जाति अलग हुई इस पर लेखक ने प्रकाश डाला है । जिन दिनों राजस्थान के वैश्य राजस्थान में व्यापार द्वारा अपार धन अर्जित कर रहे थे और उत्तर भारत के वैश्य मुगलों के मोदी तथा प्रबन्धक बनकर यश और वैभव बढ़ा रहे थे । वैश्यों का एक वर्ग मुगलों का विरोध कर रहा था (जिसमें भामाशाह का नाम लिया जा सकता है) एक ओर प्रतिभाशाली अग्रवालों ने मुगल राज्य में अपनी प्रतिभा का उपयोग करके धन, यश और गौरव प्राप्त किया तो दूसरी ओर वैश्यों का एक वर्ग अपनी आन-बान-शान के लिए विदेशी आक्रामकों से टक्कर लेता रहा । वे स्वाभिमानी राष्ट्र भक्त वैश्य, मुगलकाल में पद्दलित हुए और अपमानजनक माहुर (विष की गाँठ अर्थात् शत्रु) नाम से संबोधित हुए ।

उपर्युक्त भेदों पर यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो ये भेदभाव दो सौ, तीन सौ वर्षों से पहले के नहीं है । अग्रोहा (वैश्यों के आदि स्थान) जनपद का सम्पूर्ण पतन १२ शताब्दी ११९५ में शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमण के समय में हुआ और अग्रोहा निवासी अग्रोहा छोड़कर तितर-बितर हो गये वे जहाँ-जहाँ जाकर बसे अपने को अग्रोतकान्वय (अग्रोहक) वैश्य कहते थे और उनमें कोई भेदभाव नहीं था किन्तु मुस्लिम आक्रमण के कारण जब वे अपने नये स्थानों को छोड़कर अन्यत्र जाकर बसे तो उनमें स्थान के नाम से परिस्थितिवश जाति बन्धनों को तोड़कर विवाह सम्बन्ध करने के फलस्वरुप अनेक भेद हो गये और इन वर्ग भेदों की चरम सीमा हमें मुगलकाल में ही देखने को मिलती है ।

यही वह काल है जबकि वैश्यों में राजनीतिक दृष्टि से भी भेदभाव उत्पन्न हुआ । जो वैश्य अग्रवाल मुगलों का साथ देते थे उन्हें मुगल दरबार में सम्मान और संपत्ति मिलती थी किन्तु जो देशभक्त वैश्य

मुगलों से टक्कर लेते थे उन्हें देश निकाला दिया गया उन्हें अपशब्दों से सम्बोधित कर अपमानित किया गया और नाना प्रकार के कष्ट पहुँचाये गये । ऐसे देशभक्त अग्रवालों में से एक वर्ग बिहार के "माहुरी वैश्य" हैं । मुसलमानों द्वारा सताये जाने पर कुछ लोग राजस्थान से चलकर पहले मथुरा फिर बिहार में जाकर बस गये । मुगलों ने इन देशभक्त अग्रवालों वैश्यों को अपमानित करने के लिए माहुर (विष का गाँठ) नाम दिया और कालान्तर में ये लोग अपना मूल नाम भूल गये । वे अब अपने को माहुरी वैश्य कहते हैं । किन्तु आज भी वे अपना आदि स्थान मथुरा बताते हैं । मथुरासिनी देवी की पूजा करते हैं विवाह के समय मथुरा की मिट्टी और मथुरा के वृक्ष की डाल मंडप में रखते हैं ।

ऐसे ही देशभक्त अग्रवाल वैश्यों की एक शाखा जिसे मुगलों ने अपमानित करने के लिए माहुर (विष की गाँठ) नाम दिया माहौर नाम से ग्वालियर, आगरा, अलीगढ़, एटा, फर्रुखाबाद आदि स्थानों पर बिखर गयी और यह वर्ग अपने को माहौर और माथुर वैश्य कहते हैं । दूसरा वर्ग अलवर के आस पास बस गया और महावर नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

उपर्युक्त सात गोत्रों में समानता का जो चार्ट ऊपर दिया गया है उससे स्पष्ट है कि मुगलकाल तक ये चारों वर्ग (महावर, माहा या माहौर और माथुर) एक थे और सभी अग्रवाल वैश्य थे । अफसोस इस बात की है कि माहुरी जाति में इतने विद्वानों और धनिकों के रहते हुए भी अभी तक अपनी जाति का इतिहास लिखवाने की आज तक कोई चेष्टा नहीं हुई है, जबकि अग्रवाल जाति के अब तक सात इतिहास ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं । अभी भी गंभीर चेष्टा होनी चाहिए कि किसी अधिकारी विद्वान द्वारा अपनी जाति का एक प्रमाणिक इतिहास लिखवाया जाय । संवत १९७४ (ईस्वी सन् १९१७) में खेमराज श्री कृष्णा दास बम्बई द्वारा प्रकाशित एवं श्री पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित पुस्तक 'जाति भास्कर' के पृष्ठ १३९ में माहुरी जाति के बारे में यह लिखा है:-

माहुरिया :- बिहार और गंगा यमुना के अन्तरावासी वणिक माहुरिया नाम से प्रसिद्ध हैं । कोई-कोई इसको रस्तोगी वैश्य की शाखा समझते हैं । यह

कृषक गणों को मजदुरी देकर ईख की खेती कराते हैं । उनमें भी सिख संप्रदाय के समान तम्बाकू नहीं पीते हैं । तम्बाकू पीने वाला जाति से बाहर कर दिया जाता है ।

माहुर व माथुर :- इन वैश्यों के भेद ही माहुर, माहौर माथुर है । कोई तीनवारे, सातवारे कोई चौसेनी कोई दलपतिया (बढ़पतिया) गुलहरे शिवहरे बिथमी इत्यादि अनेक नामों से पुकारे जाते हैं । इस माहुर जाति के लोग आगरा, एटा, अलीगढ, चन्दौसी, फर्रुखाबाद, धौलपुर रिवाड़ी अलवर और मुरादाबाद में निवास करते हैं । परन्तु भिन्न-भिन्न नामों से पुकारे जाने के कारण अनेक भागों में विभाजित होने के कारण एक-दूसरे से पृथक हो रहे हैं । परन्तु अब कुछ-कुछ सम्मिलित होते जा रहे हैं ।

१. श्रेणी में आगरा, पिनाहट, इरादतनगर और शमशाबाद आदि स्थानों में अपने को माथुर वैश्य कहते हैं ।

२. श्रेणी में ऊँचागाँव, बहादुरपुर, रुस्तमगढ़, फर्रुखाबाद, उडवारागंज आदि स्थानों में रहते हैं ।

३. श्रेणी के लोग चन्दौसी, मुरादाबाद, खाड़ी, हसनपुर, इत्यादि स्थानों में बसते हैं और सातवार माहौर, बढ़पतिया, गुलहरे, चौसेनी और शिवहरे इत्यादि कहते हैं ।

४. एक दल अलवर, जयपुर, चितौरी आदि स्थानों में निवास करता है ।

मथुरा प्रसाद से इरोदननगर वालों ने कहा है हम लोग माथुर वैश्य हैं, माथुर बिगड़कर ही माहुर हो गया है इसलिये अपने को माथुर कहना ही उचित है कारण कि पूर्व में कलाल भी अपने को माहौर कहते थे । एक माथुर वैश्य नाम संवत १९४२ में रखा कहा जाता है । प्रताप सिंह को अनन्त रुपया देने वाली इसी माहुर वंश का था । कहा जाता है कि इनके पूर्वज मथुरापुरी के बीच महौरीपुरी में रहते थे और इसी पौरि से निकलकर इधर-उधर बसे तब माहुर कहलाने लगे । परन्तु इस बात से यह सिद्ध होता है कि हम चन्द्रवंशी महाउर की संतान हैं । इस महाउर से चन्द्रवंश का तीसरा कुल उत्पन्न हुआ है । महाउर चन्द्रवंश यथाति का तीसरा पुत्र था यह नाम यथाति में उरु है । कोई-कोई इसके तुर्वसू

भी कहते हैं । उससे विदित होता है कि यह उरुवंशी जिनका राज्य मथुरा आदि स्थानों में था उनके वंशज ही माहौर कहलाये ।

संवत् १९६५ में जहाँगीर के समय धौलपुर में रम्पाशाह ने एक मंदिर बनवाया था उसमें जाति का माहुर-माथुर ऐसा स्पष्ट खुदा है । एक नगर राजपुताना में माहोर है । एक साहब कहते हैं राजपुताने का वाचक माहौर है यहाँ से निकले हुए लोग माथुर कहलाये । परन्तु जो नीच जातियाँ यहाँ से बाहर गयीं वे माहौर, सुनार, माहोर केली, माहौर बढ़ई कहलाये । मध्य राजपुताना माहरि कहलाता है, एक मत ऐसा भी है, माहौर महत्व प्रकाश में ३६ राजकुलों में एक माहौर जाति नं० ३० में पड़ी है । इससे वे लोग अपने को क्षत्रिय होने का प्रमाण देते हैं, पर हमारी समझ में क्षत्रिय होने का इस जाति में कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है । समस्त असली क्षत्रिय यज्ञोपवित्र धारी होते हैं । पर हमने स्वयं देखा है, अब से बीस वर्ष पहले इनमें १०० पीछे ५ भी यज्ञोपवित धारी नहीं थे रीति रिवाज वैश्यों का सा है । इनमें जोकेराव या धरेजाकर लेते हैं कोई माहौर महावर या माहुर एक ही मानते हैं यह बड़ी भूल है । महावर जाति माहुर जाति से पृथक है ।

२५-१०-१९२३ ई० को मगध माहुरी महामण्डल का अष्टम अधिवेशन बरबिघा (मुंगेर) में हुआ था, जिसके मनोनीत सभापति कुलभुषण बाबू प्रभूदयाल गुप्ता बरहपुरिया ४० पृष्ठों के विस्तृत भाषण में उन्होंने माहुरी जाति के इतिहास विषय पर खोज कर काफी प्रकाश डाला उसका कुछ अंश इस प्रकार है ।

सबसे पहले किसी समाज व जाति को अपने पूर्व गौरव का इतिहास सामने रखकर वर्तमान और भविष्य का कार्यक्रम तैयार करना चाहिए । समाज का भूत गौरवपूर्ण हो तो वर्तमान जीवन को सुदृढ़ एवं श्रेष्ठ बनाता है । इसी आधार पर मैं आज बन्धुओं के समक्ष माहुरी अर्थात् माहौर जाति के गौरवपूर्ण इतिहास का दिग्दर्शन करता हूँ । ....हम कौन थे हमारे पूर्वज कहाँ के थे और किस तरह बिहार में आये, आज हमारी अवस्था इतनी शोचनीय क्यों हो गयी, इन विषयों पर अनुसंधान कर मैं पता लगा पाया हूँ वह आपके समक्ष रखता हूँ ।

हम महावरगढ़ (राजपूताना) के रहने वाले थे और ययाती के तीसरे पुत्र जिनका नाम महौरव था उन्हीं महाराजा महौरव की संतानों में से हैं। महावरगढ़ राजपूताने में एक प्रसिद्ध वीर स्थान है। कालान्तर या समय के हेर-फेर से बादशाही अमलदारी के समय बहुत दिक होकर कुछ लोग अपनी दिक जन्म-भूमि छोड़कर कई स्थानों में जाकर बस गये, कुछ लोग मथुरा प्रान्त में जाकर बसे। उसी समय से हमारी जाति भटक रही है। मगध में आने का कारण जिस समय अकबर बादशाह राजा मानसिंह को बिहार पर चढ़ाई करने के लिए भेज रहा था उस समय राजपुताने में भी मुगलों का अत्याचार बढ़ गया था। इसी भय से पीड़ित हो राजपूताने की माहौर जाति भी व्यग्र हो उठी थी। राजा मानसिंह का अकबर के संबंधी हो जाने के कारण दरबार में बड़ा मान था और उनके अधिकार में राज्य संबंधी कई बड़े-बड़े कार्य थे। जब बिहार पर चढ़ाई करने का मौका आया तो उन्हें सेनापति बनाकर अकबर ने भेजा। चलते समय मानसिंह ने बहुत सेना एकत्र की और राजपूताने के वीर पुरुषों को अपने साथ लाना चाहा परन्तु वहाँ के कट्टर राजपूत मानसिंह के चक्कर में नहीं आये उन लोगों ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और सदा हिन्दूपति राणा प्रताप की सेवा में लगे रहे। राजपूतों पर जब इनकी दाल न गली तब महावरगढ़ की रहने वाली माहुरी जाति के वीर पुरुषों का एक दल तैयार कर बिहार लाये। इसी जाति के लोगों को सेना का मुखिया भी बनाया। माहौर जाति वहाँ के अत्याचार से बहुत व्याकुल हो गयी थी इसलिए मानसिंह का साथ दिया और अपनी जन्मभूमि को छोड़कर लड़ने के लिए यहाँ आना स्वीकार किया। इस समय बिहार में पठान-वंश की सुबेदारी थी। यहाँ आकर उन लोगों को बिहार के सुबेदार से लड़ाई करनी पड़ी। राजा मानसिंह की अध्यक्षता में वीर माहौर जाति खूब लड़ी और परिणामतः बिहार अधिपति सुबेदार की हार हुई, सुबेदार मारा गया। राजा मानसिंह को आगे उड़ीसा जाना था। अतः बिहार का शासन भार इसी वीर माहौर वंश के सरदार शाह बिट्ठलचंद को दिया जिसने यहाँ के सुबेदार का पद संभाला। इनकी सहायता के लिए बहुत से बुद्धिमान माहुरी जाति के वीर यहाँ नियुक्त किये गये। इस प्रकार माहौरों का एक बड़ा दल बिहार

में रह गया, तभी से इस जाति की जड़ बिहार में जम गयी। यह घटना १६ वीं शताब्दी अर्थात् १५७० ई० के लगभग की है।

मथुरावाशी माहौरों का बिहार आगमन : हमारे कुछ भाइयों की धारणा है कि हम लोग मथुरा से आकर बसे हैं और उसका संकेत मथुरासिनी देवी और मथुरा के चौबे पुरोहितों को बताते हैं। हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि हमारे कुछ भाई मथुरा और उसके आस-पास में महावरगढ़ से आकर बसे थे परन्तु उनके साथ कोई ब्राह्मण या पुरोहित नहीं आये थे। मथुरा में बस जाने पर अपने धार्मिक कार्यों के लिए पुरोहितों की जरुरत पड़ी तब वहाँ के चौबे जी से पुरोहित बनने की प्रार्थना की और उन्हें पुरोहित बना लिया। तभी से चौबे वंश वाले पुरोहित हैं। कुछ दिनों के पश्चात् इन्होंने कुल-देवी की स्थापना करनी चाही, क्योंकि महावरगढ़ में ये लोग शक्ति के उपासक थे और मथुरासिनी देवी की आराधना करते थे। उन्हीं देवी की स्थापना वे मथुरा में भी करना चाहते थे। मथुरा के चौबों ने कहा कि हम लोग कृष्ण उपासक तथा वैष्णवी सम्प्रदायी हैं। आप लोग भी कृष्ण की उपासना करें और मथुरासिनी देवी का नाम मथुरासिनी देवी रखकर वैष्ण्व सम्प्रदाय के अनुसार उनकी पूजा करें। तभी से महौरियों के यहाँ मथुरासिनी देवी की उपासना होती है और श्री कृष्ण को श्रेष्ठ देव मानते हैं। जब ये लोग स्थाई रुप से यहाँ बस गये तथा शान्तिमय जीवन व्यतीत करने लगे और इनको मालूम हुआ कि हमारी जाति और बिरादरी के लोग प्रधान रुप से शासक होकर बिहार में शासन कर रहे हैं। शाह बिट्ठल यहाँ के सुबेदार हैं और कई जाति वाले उनके यहाँ ऊँचे-ऊँचे पदों पर कार्य कर रहे हैं। वहाँ के वासी माहुरियों का जीवन सुख और समृद्धि सम्पन्न व्यतीत हो रहा है। बिहार में इनका राजवंश होने के कारण सब जगह प्रतिष्ठा बढ़ गयी है तब मथुरावासी अनेक माहौर भाई ने वहाँ से चलकर बिहार में आकर व्यापार करना चाहा। शाह बिट्ठलचंद जी ने इन लोगों को अपनी जाति बिरादरी का जानकर उचित सत्कार से उत्तम-उत्तम जंगलों में रहने का प्रबन्ध करा दिया और व्यापार में भी उचित सहायता दी। इस प्रकार मथुरावासी इन महावर वासियों ने बिहार में धीरे-धीरे अपना अड्डा जमा लिया

और यहीं घर-बसाकर बस गये। मथुरा से अपने पुरोहितों को यहाँ लाये। बिहार के जिस मुहल्ले में ये चौबे पुरोहित बसे उनका नाम अभी भी मथुरिया मोहल्ला के नाम से विख्यात है। क्षत्रिय ब्राह्मणों के पुरोहित होने का कारण बन्धुओं अब आप लोगों को यह सन्देह होगा कि जब मथुरावासी चौबे पुरोहित हो ही गये थे तो पुनः क्षत्रिय ब्राह्मण हम लोगों के पुरोहित किस प्रकार हुए। जिस समय शाह बिठ्ठलचंद जी बिहार आये थे उनके साथ कोई पुरोहित या आचार्य राजपुताने से नहीं आये थे। जब महावरगढ़ सदा के लिए आना जाना छोड़कर यहाँ ही अपने परिवार के साथ स्थाई रुप से रहने लगे तब इन्हें भी आचार्य पुरोहितों की जरुरत पड़ी और राजदरबार में पुरोहितों की खोज होने लगी। उस समय राजदरबारी और पुराने लोगों ने कहा कि यहाँ अभी पं० श्री नाथजी एक क्षत्रिय ब्राह्मण अच्छे विद्वान और पूर्ण पण्डित हैं। उन्हीं को ही पण्डित बनाया जाय। सबके विचार से इन्हीं को पुरोहित बनाया गया तभी से जो महावरगढ़ से यहाँ आये थे उनके पुरोहित श्रोत्रिय ब्राह्मण हुए और इसी से आज भी कुछ माहुरियों के पुरोहित श्रोत्रिय ब्राह्मण हैं और जो मथुरा से यहाँ आये उनके पुरोहित चौबे जी हैं। इस प्रकार बहुत दिनों तक मथुरा से तथा महावरगढ़ से आये हुए महौरियों का जीवन एक साथ मिल-जुलकर शान्ति से व्यतीत हुआ और धीरे-धीरे दोनों दलों के लोगों नेअपना सब संबंध अपने पूर्व स्थान से तोड़ दिया और यहीं विवाहादि करने लगे।

शाह बिठ्ठल चंद के समय माहुरी जाति का खूब दबदबा और उन्नति थी। ये वीर हितैषी भी खूब थे। उनके दरबार में माहौर जाति के बड़े-बड़े वीर और बुद्धिमान व्यक्ति रहते थे। आज जो हम लोगों के यहाँ प्रत्येक बात में सिलसिला दिखाई देता है वह किसका बनाया हुआ है ? यह उन्हीं वीर और बुद्धिमान व्यक्तियों का गौरव चिन्ह हैं।

शाह बिठ्ठलचंद की सुबेदारी को सुनकर शाह सेठचन्द और भदूचन्द दो माहुरी व्यापारी शाह के दरबार में बड़ी-बड़ी बेशकीमती चीजें लेकर बेचने को आये उनका बड़ा आदर व सत्कार हुआ पर जब वस्तुएँ खरीदी जा चुकी और कीमत का चिट्ठा तैयार कर शेठू शाह ने दिया तब

दरबार का रुख पलट गया क्योंकि वहाँ कोई तो कहने लगा कि यहाँ कीमत आधी मिलेगी क्योंकि आधी रकम सुबेदारी काम के लिए ले ली जायेगी। कोई कहने लगा कि कई चीजें इतनी कीमत के योग्य नहीं है इससे रंज हो शेठू शाह ने कुछ कड़े शब्दों का प्रयोग किया। इस पर तुरंत शाह का मन रंज हो गया और आज्ञा दी कि सब चीजें लाकर इसे हाते से बाहर करो। बेचारी व्यापारी की सब चीजें लूट ली गई थीं और बहुत जलील किया गया। उस समय भारत का शासन नियंत्रित रुप में नहीं था। जिसकी लाठी उसकी भैंस का बल साथ-साथ ही बहुत से दरबारी शाह से अतिरिक्त वैमनस्य रखते हुए सदा बदला चुकाने की फिराक में लगे रहते थे। दरबारियों ने मिलकर सेठ के मन को बढ़ाया कि बादशाह के दरबार में नालिश करने से तुम कीमत भी पाओगे और सुबेदार को खूब दण्ड भी मिलेगा।

शाह के बादशाह के यहाँ नालिश कर दी। तुरन्त एक बड़ी सेना मल्लिक वयो की अधीनता में बुन्देला राजपूतों की तथा मुगलों को बादशाह ने भेजी। मल्लिक वयो ने आकर शाह को समझाया परन्तु शाह ने धनमद के कारण एक न सुनी और दोनों में लड़ाई शुरु हो गई। शाह तो मारे गये पर शेठू शाह को कुछ हाथ न आया। मल्लिक वयो बिहार का सुबेदार हुआ। बुन्देला राजपूत वहीं जागीर जमींदारी पाकर बस गये, जिसका प्रमाण अभी भी वइयो दरगाह ओर बुन्देला जमींदार बिहार में वर्तमान में है।

जाति का नाश और उदय जाति से ही होता है 'ऐसी घटना भारत के भाग्य में सदा से ही होती आयी है।

हमारे भद्दू शाह तथा शेठू शाह जी को भी जाति नाश पर पश्चात्ताप करना पड़ा। उनके सब मनोरथ पर तो पानी फिर गया केवल मल्लिक वैश्यों ने उन्हें बिहार का सेठ बना दिया जिसके प्रमाण की जरुरत नहीं है। अभी भी बिहार मुसलमानों का केन्द्र ही रहा है। बिठ्ठलचंद जी का धन और प्राण दोनों मुगलों ने हर लिया। उनके दुख से दुखी ओर सन्तप्त परिवार को अब बिहार छोड़ अन्यत्र जाने की नौबत आ गयी। अन्यान्य बड़े-बड़े माहुरियों की जागीर और धन ले लिया गया

तब लाचार हो उनके बड़े पुत्र महाचन्द शाह बिहार छोड़कर दूसरी जगह जा बसे। कुछ वीर जो मुगलों से बहुत काल तक लड़ते रहे और अंत में जब देखा कि सुबेदार मारे गये तब इसी बरबीघा में एक गिरोह के साथ आकर बस गये। यह स्थान पूर्वजों के स्मारक की एक वीर भूमि है। अतः मैं इस वीर भूमि को एक बार पुनः प्रणाम करता हूँ।

शाह भद्दू और शेटू चन्द जी ने पुनः माहोरी जाति को सुसंगठित रुप में लाने और सामाजिक, पारिवारिक तथा धार्मिक जीवन को सुचारु रुप से चलाने के लिए एक बड़ी पंचायत की। इस पंचायत में उस समय के प्रायः सभी भाई एकत्रित हुए थे। उस विशाल जातीय सभा में शाह शेटू चन्द और शाह भद्दूचंद ने अपने किए हुए पर दुख प्रगट किया कि आप जाति बान्धवों के सामने मैंने बड़ा अपराध किया जो केवल अपने क्रोध में आकर जाति शिरोमणि का नाश कराया। आज आप लोगों से विनय है कि हम लोग इस पंचायत में सब मिलकर यह प्रतिज्ञा कर लें कि कोई किसी का अनिष्ट नहीं करेंगे। जाति उन्नति के लिए सब प्रकारके उपायों को सोचें और आज यह निर्णय करें कि किस प्रकार कार्य सुचारु रुप से चलाया जाय जिससे दूसरे के लिए हम सब आदर्श हो जावें और हम लोगों पर दूसरे लोग अत्याचार न करें।

अंत में यही तय पाया कि पुनः बिठ्ठलचन्द जी के बड़े पुत्र को इस बड़ी पंचायत का सरदार बनाया जाय और उनको चौधरी की पद्वी दी जाय क्योंकि उनके वंशज सदा से इस जाति के सरदार हैं। यह बिठ्ठलचन्द क्रे बड़े पुत्र शाह महाचन्द को जातीय पंचायत का चौधरी बनाया गया। इस समय के बड़े-बड़े अन्यान्य माहुरी जो प्रतिष्ठित बुद्धिमान तथा जाति प्रेमी थे इन्हीं में से कुछ को दीवान और कुछ को नायक बनाया गया इन्हीं तीनों के चलाए नियमों पर हमारी जाति का अभी तक सब काम चल रहा है। इन लोगों ने जातीय कार्य और विवाहादिक मांगलिक प्रथा को सुविधाजनक करने के लिए माहुरी जाति की शाखा अल्ले संशोधित कर यहाँ की स्थिति के अनुसार विवाह इत्यादि के समय अड़चन न पड़े इसलिए प्रत्येक शाखा के लोगों को अलग कर उसका प्रचलित नाम खाता रखा तभी से अल्ले अलग-अलग खाता से प्रसिद्ध है। जैसे शाह

की संतान शाह खाता लोहानी कहलाते हैं। शाह ताराचंद के वंशज तथा भट्टशाह के वंशज भदानी और शेटूशाह के वंशज सेठ कहलाये। इस प्रकार कुछ खाता जाति के वीर और नामी पुरुषों के नाम पर कुछ स्थान विशेष को प्रसिद्धि के कारण पड़ा। जैसे वीर पुरिया से बरहपुरिया वीर विगहिया से बर विगहिया तीन चरण अड़ने वाले से चरण अड़िया इत्यादि खाता गुण विशेष के कारण हुआ जिसका पूर्ण विवरण माहुरी जाति का इतिहास नाम ग्रंथ में वर्णन करुंगा जो तैयार कर रहा हूँ।

ज्ञातव्य है कि बाबू प्रभुदयाल गुप्त का यह ऐतिहासिक भाषण था और इसके बाद हजारीबाग और मगध महामण्डलों के सभापतियों एवं माहुरी मयंक में जो तत्संबंधी लेख निकले हैं उसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन भले हो परन्तु मूल स्वर प्रायः एक ही है। फिर भी इस काम के लिए गंभीर अध्येताओं और अनुसंधानकर्ताओं के लिए इनकी बड़ी उपयोगिता होगी। इनमें वर्णित प्रत्येक परिवर्तनों और नयी उद्भावनाओं के आधार पर नयी ऐतिहासिक स्थापना की जा सकती है। हमारा यह लेखन अन्तिम नहीं है क्योंकि इसमें जितना समय श्रम और अर्थ की अपेक्षा है वैसे साध न अभी उपलब्ध नहीं है।

भावी अनुसन्धानकर्ताओं के लिए हम इन सूत्रों की चर्चा कर देना उपयुक्त समझते हैं।

प्रसिद्ध समाज-सेवी बाबू रामकृष्ण राम अठघरा के माहुरी मयंक के सितम्बर १९५६ के अंक में एक लेख छपा है उसके महत्वपूर्ण अंश ये हैं।

कर्नल टाड के इतिहास, स्व० पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र कृति 'जाति भास्कर' 'माहौर महत्व प्रकाश' स्व० गया राम जी कृत 'माहुरी भूषण' में, जहांगीर के समय धौलपुर में 'रम्भाशाह' द्वारा निर्मित मंदिर में माहुर शब्द का साफ-साफ खुदा रहना इत्यादि प्रमाणों से हमने निर्णय किया कि माहुरी शब्द माहौर, माथुर आदि का अपभ्रंश है और हम एक हैं।

मगध माहुरी मण्डल के पूर्व मंत्री एवं माहुरी मयंक के पूर्व मैनेजर स्व० बाबू हरिहर प्रसाद लोहानी का माहुरी मयंक के अक्टूबर

१९५६ में एक रचना छपी है जिसका शीर्षक है माहुरी जाति के विस्तार की आवश्यकता ।

'ऐसा समझा जाता है कि हमारी जाति पहिले मथुरा की ओर से बिहारशरीफ से मुसलमानी राज्य के समय किसी कारणवश आकर बस गयी इस मान्यता के कई तर्क हैं । ..... एक तो बिहार में मथुरिया मोहल्ला का नामकरण, सर्वप्रथम चौबे लोगों को पुरोहित मानना, बिहार में गढ़ा खोदकर बालू भरना, वृन्दावन की झुरी लकड़ी का हवन करना आदि ...... ।'

माहुरी मयंक के जुलाई १९९० में गया के श्री शंकर प्रसाद भदानी का एक लेख 'अपनी जाति के इतिहास को जानिये' शीर्षक से छपा है । यह लेख भी दृष्टव्य है ।

फरवरी १९९० के माहुरी मयंक में 'माहुरी जाति के ऐतिहासिक सन्दर्भ में' शीर्षक से छपा है जो लेख हटिया राँची के श्री निवास तरवे बी०एल० के लेख से जाति के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है ।

रजौली के युवराज राम भदानी की छोटी रचना माहुरी मयंक के जून १९५८ अंक में थी, जिसे पढ़ा जाना चाहिए ।

ख्याति प्राप्त समाज सेवी बाबू मदन लाल माथुरी का "माहुरी मयंक" के अप्रैल १९५८ अंक में छपा लंबा लेख "माहुरी जाति ऐतिहासिक दृष्टि" से जाति के इतिहास की कई बातों पर प्रकाश पड़ता है । माहुरी जाति के इतिहास लिखने वाले गंभीर अनुसंधानकर्ता को इसे पढ़ना चाहिए ।

बिहारशरीफ मण्डल के मूल निवासी प्रो० मुजीबूर रहमान कलकत्ता युनिवर्सिटी में उर्दू फारसी के अध्यापक हैं, उन्होंने उर्दू भाषा में 'बारहगाँवा' नाम की एक किताब लिखी है । इस किताब में प्रो० रहमान साहब ने माहुरी जाति के बारे में लिखा है इस किताब के कुछ अंश के आशय ये हैं :-

हिजरी सन् ६२० में मथुरा इलाके के थोड़े से माहुरी व्यापारी,

जेवर, कपड़ा और कुछ दूसरी चीजें लेकर बाजार व्यापार करने आये थे । बिहार के सामंत बिट्ठल ने उनसे सामान खरीदने के बहाने सब सामान छीन लिया । लाचार होकर सौदागरों ने दिल्ली के बादशाह से फरियाद को तो वहां से मल्लिक वयो को सेनापति बनाकर कुछ फौज के साथ भेजा । तब बिट्ठल से अनेक सामान वापस मिले और बिट्ठल मारा गया । तब ये लोग मथुरिया मोहल्ला में बस गये जो आज भी मौजूद है । तब से मल्लिक वयो की पूजा माहुरी लोग करते हैं । श्री स्व० श्यामा कान्त लोहानी ने १९८७ में "माहुरी जाति का प्राचीन इतिहास" के नाम से एक पुस्तक छपवाई है । इसके प्रकाशक हैं गुप्ता प्रकाशक, कंचन भवन, नया टोला, पटना - ४ । पुस्तक में लेखक ने इस बात की स्थापना कर दी है कि माहुरी शब्द मौखरी का अपभ्रंश है । मूल में यह बिहार की ही जाति है जो कि मथुरा महावरगढ़ आदि स्थानों में परिस्थितिवश जाकर बस गयी । लेखक ने प्रसिद्ध इतिहासकार काशीप्रसाद जयसवाल की पुस्तक (दि काबेरी, दि माखरीज एण्ड दि संगम एज) के पृष्ठ संख्या ८० से यह उदाहरण भी दिया है -

गया जिले में बसी हुई माहुरी जाति मौखारियो के वंशज है, ये अपने राज्य के लोप तथा वृद्धि परिधन के कारण क्षत्रिय से वणिक बन गये हैं ।

महापण्डित राहुल सान्कृतायन रूस जाने से पूर्व नालंदा के पुनरुद्धार के हामी थे । इस सदी के तीस से चालीस के दशक में बहुधा नालंदा आते थे । नालंदा में उस समय निवास की कोई जगह नहीं थी । चाय पान की दुकान तक नहीं थी । अतः निकट के सिलाव में मगध माहुरी महामण्डल के संस्थापकों के प्रमुख बाबू भगवानदास नवदिया के यहाँ ठहरते थे । माहुरी जाति के बारे में उन्हें जिज्ञासा हुइ तो उन्होंने अपनी एक पुस्तक संभवतः "तिब्बत में सवा साल" में यह बात लिखी कि माहुरी मौखरी के वंशज हैं किन्तु कुछ वर्षों बाद स्वयं उन्होंने "बोल्गा से गंगा" नामक पुस्तक में इसका खंडन भी किया । ये दोनों पुस्तकें समाज में कई जिम्मेदार लोगों ने देखी थी । किन्तु हो सकता है कि दोनों बातें उनकी दूसरी पुस्तकों में हो । इस बिन्दु पर अनुसंधान वांछनीय है ।

प्रसिद्ध समाज सेवी बाबू रामकृष्ण राम अठघरा ने माहुरी मयंक के सितम्बर १९५६ के अंक में एक लेख लिखा है । उसमें की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है :-

'जाति के किसी विद्वान का मत है कि माहुरी मौर्य वंशीय क्षत्रिय के वंशज हैं । माहुरी को मौर्य वंशीय क्षत्रिय प्रमाणित करना नितान्त भ्रम है ।'

क्षत्रिय की बात आती है तो नूरसराय के स्वर्गीय बाबू रामकृष्ण लोहानी जो मगध माहुरी महामण्डल के सक्रिय कार्यकारणी सदस्य थे कहा करते थे, बाबू प्रभु दयाल गुप्त ने एक बार बहुत जोर लगाकर प्रस्ताव रखा कि माहुरी वैश्य नहीं क्षत्रिय है । किन्तु प्रस्ताव पारित नहीं हो सका तब अंत में उन्होंने व्यंग्य में कहा कि यदि यह प्रस्ताव पारित हो जाता तो कुछ वर्षों में माहुरी जाति क्षत्रिय से ब्राह्मण बन जाती । स्मरणीय है कि स्वतंत्रता पूर्व काल में जाति का ऊँची वर्ण में प्रस्थापित करने की होड़ थी । पिछड़ी जाति के कहार ने उस समय आन्दोलन चलाया था कि वे चन्द्रवंशीय क्षत्रिय है । राम के उपनाम के बदले वे सिंह लगाना प्रारंभ कर दिये थे । आज तो बात उल्टी है कायस्थ भी शूद्र बनना चाहते हैं ।

पटना के जिला सेसन जज सिलाव निवासी बाबू दामोदर प्रसाद ने १९५५ के माहुरी मयंक में एक लेख प्रकाशित कराया था जिसमें उन्होंने कहा था माहुरी वैश्य नहीं क्षत्रिय हैं क्योंकि इनमें वैश्योचित गुण सहिष्णुता, बारीकी और व्यवसायिक बुद्धि नहीं है । इनके विपरित इनमें अवांछनीय वाचालता, जोश लड़ने-भिड़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है ।

जो भी हो अब क्षत्रिय विवाद खत्म हो चुका है और लोग सर्वानुमति से माहुरी को वैश्य मानने लगे हैं । हजारीबाग माहुरी महामण्डल ने तो सन् १९५३ के पुनर्गठित हजारीबाग माहुरी महामण्डल का नाम ही माहुरी वैश्य महामण्डल रख दिया है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर श्री श्यामाकान्त लोहानी का मौखरी होने की स्थापना को अंतिम तथ्य नहीं माना जा सकता । इस पर

अभी भी खोज की गुंजाइश है ।

दैनिक राजस्थान टाइम्स, अलवर (राजस्थान) के सम्पादक स्वनामधन्य बाबू रामकुमार राम जी की दो छोटी पुस्तकें हमारे सामने हैं । एक का नाम है महा-उर वैश्य और दूसरे का महावर (आदि वैश्य) । ये दोनों पुस्तकें राजस्थान टाइम्स ऑफिस तिलक मार्केट, अलवर (राजस्थान) से प्रकाशित हैं । ये पुस्तिकें "महावर जाति के इतिहास की रुपरेखा" शोध प्रबन्ध के अंश है । यह शोध प्रबन्ध हिन्दी विश्व विद्यालय, प्रयाग द्वारा साहित्य महोपाध्याय उपाधि हेतु उस समय अर्थात् १९८५ में विचाराधीन थी ।

विवेच्य पुस्तिका महावर (आदि वैश्य) के प्रथम पैराग्राफ (नीचे अंकित है) से ही यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महावर से उनका तात्पर्य सभी तसुल्य नाम वाली जातियों से है । यह अंश विचारणीय है ।

आदि वैश्य या मूल वैश्य वर्ण की ऐतिहासिक खोज व गहरी छानबीन में महावर, महवर, महाउर, माहुरी, माहुरे, माहू, पहुर, मौड़, मिहिर, मिहिरिया, मुहरी, मेहर, मेहरा, महरा, मेर, सुमेर, सुमेरियन, महाजन, रुर, वरुर, उरवाज, सउरवाज, सुरवाज, सुवाल आदि विविध नामव रुपों में विभक्त वैश्य वर्णीय समूहों की उत्पत्ति उद्भव व क्रमिक विकल्प के इतिहास के साथ-साथ इन सब व अन्य तत्संबंधित तथा उद्यमी शब्दों के नाम रुप व उनके अपभ्रन्शित अंगों पर विस्तृत दृष्टिकोण व विशद गहराई से विचार किया जाना नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है जिससे इसे विशाल भरतखण्ड के प्राचीनतम आदि वैश्य वर्ग के सही स्वरुप का बोध होकर मार्गदर्शन मिल सके ।

एक स्थान पर वे लिखते हैं :-

''कहा जाता है कि विगत तीन चार हजार वर्ष लंबे संकटापत्र काल में आदि वैश्य वर्ग के बहुत से समूह देश विदेश के सुदूरीय भागों व सुरक्षित प्रदेशों में भी चले गये और उन्होंने वहाँ समयानुकूल धर्म कर्म ग्रहण कर लिया । कुछ समूहों ने समय की विपरीतता के कारण विदेशों

में भी शरण ले ली और कालान्तर में अपना मूल धर्म कर्म त्याग कर वहीं के प्रचलित धर्मों में विलीन व समाहित हो गये । चीन, जापान, भूटान, तिब्बत, नेपाल, इण्डोनेसिया, सुमात्रा, कम्बोडिया, तुर्की, इरान, इराक, मिश्र, अफगानिस्तान, युगान्डा, लंका, वर्मा, रूस, इटली आदि देशों में बसे अति प्राचीन प्रवासी जातियों के इतिहास उनके कार्यकलाप तथा पूरा सामग्रियों में वणिक वर्ग के कार्य व कर्तृत्व की जो मौलिक झलक देखने को मिलती है वे सब भारत खण्ड के आर्यत्व व वैश्य वर्ण की अपनी विशेषता से ही परिपूरित है ।"

माहुरी महामण्डल के गया अधिवेशन में एक बार कलवार (जायसवाल) जाति के नामी विद्वान जिनका नाम संभवतः डॉ० रामशरण प्रसाद था और वे इंडियन लाइट नामक एक साप्ताहिक पत्र पटना से निकालते थे उनकी जातीय पत्रिका इलाहाबाद से प्रकाशित है यह बात कही थी कि सभी वैश्य पूर्णतः कलवार है जैसे जयसवाल, कलवार, सूँड़ी कलवार, तेली कलवार, माहुरी कलवार, इनका यह लचर तर्क भी था कि कलवार सयत चुआते थे और इसमें महुआ मुख्य द्रव्य होता था । इस कारण दोनों में 'म' का संयोग होने से माहुरी कलवार की ही शाखा है, किन्तु इस सन्दर्भ में अभी तक कोई लिखित बात देखने को नहीं मिली ।

माहुरी जाति के संबंध में विशेष जानने के लिए निम्नलिखित पुस्तकें पठनीय हैं इनमें भी कुछ सामग्री काम की मिलेगी ।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की एक शाखा से प्रकाशित एक पुस्तक है जिसके लेखक प्रसिद्ध विद्वान सकल नारायण पाण्डेय हैं । संभवतः इसका दूसरा नाम "वर्ण विवेक चन्द्रिका" है ।

एक अन्य पुस्तक है **"जाति अन्वेषण"**

यह पुस्तक सन् १९१४ ई० की छपी है । इस पुस्तक के लेखक हैं क्षत्रिय पं० छोटे लाल शर्मा । वेद् वेदान्तों व उपान्तों तथा सरकारी रिपोर्टों के आधार पर यह पुस्तक लिखी गयी है इसे प्रकाशित किया है हिन्दू वर्ण व्यवस्था मण्डल में इसके कुछ अंश ध्यान देने योग्य है ।

"माहौर नाम की एक जाति है ये लोग अपने आप को वैश्य बतलाते हैं ।"

एक सरकारी अफसर के कथ्य का इसमें उद्धृत किया गया है । इसका भावार्थ यह है कि आगरे में मथुरियों का पता भी लगता है जो महाजन भी कहातें हैं और अनाज का व्यापार करते हैं जिन्होंने शराब के धन्धे को बिल्कुल छोड़ दिया है ।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ८८ में पण्डित जी ने लिखा है कि अग्रवालों की १२ शाखाओं में से माहुर भी एक शाखा है ।

स्वर्गीय जनक देव आर्य का **"माहुरी जाति"** शीर्षक से एक लंबा लेख 'माहुरी मयंक' के नवम्बर १९५५ में छपा है, प्रस्तुत किया है । एक महत्वपूर्ण अंश यह है :-

'हमलोग राजस्थान के निवासी हैं । राजस्थान के ३६ राजवंशों में से एक माहौर जाति का भी नाम आता है और इसके राजस्थान के निवासी होने का पता चलता है । माहौर और माहुरी मिलते-जुलते नाम होने से विश्वास के योग्य है । राजस्थान से हटकर कुछ उत्तरप्रदेश और कुछ बिहार चले आये ।'

बाबू हरिहर प्रसाद लोहानी पूर्व मंत्री, मगध माहुरी महामण्डल ने माहुरी मयंक के सितम्बर १९५६ में एक लेख छपवाया जिसका शीर्षक है "माहुरी जाति के विस्तार की आवश्यकता" इसमें उन्होंने पश्चिम के माहौर आदि से संबंध स्थापित करने का मन्तव्य प्रकट किया है । इसी लेख में उन्होंने यह भी लिखा है पुराने महामण्डल में बाबू गोपीचन्द लाल गुप्त के नेतृत्व में एक उप समिति मथुरा आदि जाकर पता लगाने हेतु बनी थी । परन्तु कार्य स्थगित रह गया चूँकि सारा समाज इस बात पर राजी नहीं था ।

माहुरी मयंक के जुलाई १९३७ के अंश में मगध माहुरी महामण्डल के संस्थापकों में प्रमुख बाबू भगवानदास नवदिया का एक लेख छपा है जिसका स्वर ऐसा है कि जब तक यह प्रमाणित नहीं हो जाय कि पश्चिम के बन्धुओं और माहुरी एक हैं कोई संबंध किया जाना ठीक नहीं ।

उसी अंक में बाबू दामोदर प्रसाद मुंसिफ (अन्त में जिला जज) ने इसके विपरीत मत व्यक्त किया है ।

नव गठित माहुरी महामण्डल के संयोजक मंत्री और अध्यक्ष रहे श्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी० इस माहौर मिलन और यह कि माहौर, माहुर एक है "ढकोसला और बकवास" कहा करते थे, बाबू हरिहर प्रसाद अठघरा, बाबू किशोरी लाल वरहपुरिया बाबू गंगा प्रसाद अठघरा कुछ समाज सेवियों के भी यही मत रहे हैं ।

इसी अध्याय के एक स्थान पर यह लिखा गया है कि मथुरा से सम्बन्धित होने के सूत्र मथुरा क्षेत्र के चौबे का पुरोहित होना मथुरासिनी देवी की पूजा-अर्चना करना, विवाह के समय हवन में मथुरा की लकड़ी का प्रयोग करना इस बात के साक्षी हैं कि माहुरी का सम्बन्ध मथुरा से रहा है । १९९४ ई० तक अब मथुरा के चौबे का आवागमन पूर्णतया समाप्त हो गया है । मथुरासिनी देवी की पूजा पूर्ववत कायम है ।

रायगढ़ (मध्यप्रदेश) में गिरीडीह से जाकर बसे उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री रामदुलार गुप्ता लोहानी की मान्यता है कि माहुरी का मूल स्थान राजस्थान है । अपने इस कथन की पुष्टि वे इस रूप में करते हैं -

'अपने समाज के इतिहासकारों एवं विचारकों के चिन्तन से स्पष्ट हो जाता है कि यह जाति मूलतः महावरगढ़ जो कि राजस्थान में अवस्थित है, के ही हैं । यह जाति स्वभाव से स्वाभिमानी राष्ट्रभक्त होने के कारण मुगल शासकों का हमेशा कोप भाजन बनी रही । फलस्वरुप छिपते-छुपाते एक स्थान से दूसरे स्थानों पर भटकते तथा शासकों का मुकाबला करते रहे । इसी क्रम में राजस्थान से सुदूर मथुरा के अंचलों में तथा कुछ बिहार की ओर अपने आप ही छुपते-छुपाते बढ़ चले । आपात काल में जैसा कि होता है ये अपने गोत्र को खाता से छुपाये ताकि शासकों को मालूम न हो ये कौन हैं ?'

'ऐसी विकट स्थितियों में भी समाज के मनीषियों ने अपनी परम्परा एवं संस्कृति की रक्षा की जो एक बेमिसाल प्रमाण आज भी अपने में मौजूद है । जैसे राजस्थान के बालुका प्रदेश का स्मरण हेतु ही

विवाह के अवसर पर बेदी में बालु का प्रयोग अनिवार्य रखा तथा जिसे यमुना का बालु शासकों को भ्रमित करने के लिए कहा गया ।'

'राजस्थान का होने का एक प्रमाण हमारे व्यापार का ढंग, खान-पान, रीति-रिवाज से काफी एक रुपता प्रदर्शित होती है । यद्यपि बिहार आगमन जी०टी० रोड से ही हुआ क्योंकि तब तक शेर शाह सूरी द्वारा यह मार्ग बन चुका था किन्तु हमारे पूर्वज सड़क किनारे न बस वहां से सुदूर गाँवों में एवं जंगलों में ही बसे इसका भी कारण शासकों का भय ही रहा था ।'

'राजस्थान के रिवाज का अनुसरण ही अपने समाज में विवाह में पगड़ी का रिवाज पटवासी समधी को पगड़ी जो अब टोपी ले चुकी है ।'

'अपनी आदत अर्थोपार्जन हेतु देश के किसी भाग में जाने की आदत सदैव से चली आ रही है । यही कारण है कि यह देखा जाता है कि अपने समाज के लोग एक स्थान पर १०० वर्ष भी नहीं रह पाते । यही बात मैं अपने में भी पा रहा हूँ । आज से १२५ वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज गया जिला अन्तर्गत रजौली से हजारीबाग जिला के चोंगाखार गाँव अर्थोपार्जन हेतु हमारे ८वीं पीढ़ी के पूर्वज पहुँचे तथा वहां अपने हिसाब से भरपूर अर्थोपार्जन किये । पुनः वहां से मेरे पूज्य पिता आज से ४० वर्ष पूर्व म०प्र० के रायगढ़ जिला पहुँच गये । यह आदत ठीक मारवाड़ी अग्रवालों से मेल खाती है ।'

'राजस्थान खनिज प्रधान प्रदेश होने के कारण वहां के व्यापार में इसकी प्रधानता रही है । यही कारण रहा कि कालान्तर में बिहार में बसे अपने समाज के लोगों में खनिज जैसे माइका तथा कोयला के खानों में अपने लिए अर्थोपार्जन का साधन अपनाया ।'

पचम्बा निवासी बाबू गयाराम की १८९२ ई० में छपी इतिहास परक छन्दमय रचना 'माहुरी भूषण' पर एक दृष्टि :

इस अध्याय में अब तक माहुरी जाति के इतिहास के बारे में स्वजातीय बन्धुओं के जो विचार आये हैं वो इस कालखण्ड के बारे में

जरुर है किन्तु वे १९०० ई० के बाद लिखे गये हैं । दूसरी जातियों द्वारा विवेचित कुछ बातें अवश्य ही इस कालखण्ड की है जो महत्वपूर्ण है ।

इस परिपेक्ष्य में यदि पचम्बा निवासी बाबू गयाराम जी की 'माहुरी भूषण' की चर्चा नहीं की जाय तो उचित नहीं होगा । 'माहुरी भूषण' नामक पुस्तिका का प्रकाशन जनवरी १८९२ ई० में उस समय के ख्याति प्राप्त प्रकाशक लखनऊ के मुंशी नवल किशोर जी (सी०आई०ई०) के छापे खाने से हुई थी । इसका द्वितीय संस्करण झुमरीतिलैया (कोडरमा) के प्रबुद्ध समाजसेवी उद्योगपति एवं राजनीतिज्ञ श्री सदानन्द प्रसाद भदानी के व्यय से १९९० ई० में निकला । इसकी प्रेरणा श्री वनमाली राम ने दी जिनके इसमें छपे विचार पठनीय है ।

इसकी भूमिका में बाबू गया राम जी ने लिखा है कि दीपादास जी ने मेरे पूर्व छन्दों में जाति विषयक बातों का वर्णन किया है जिससे इन्हें "माहुरी भूषण" की रचना में सहायता मिली । खेद है कि यह रचना बहुत ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सकी जैसा कि लिखा जा चुका है माहुरी भूषण १८९२ ई० में छपी अवश्य ही दीपादास की रचना इसके २०-२५ वर्ष पहिले की होगी ।

"माहुरी भूषण" नामक यह पुस्तिका स्वतंत्रता पूर्व काल की एक मात्र वैसी कृति है जिसमें माहुरी जाति के इतिहास के उल्लेखनीय सूत्र मिलते हैं । बड़े आकार के ४२ पृष्ठों की यह पुस्तिका ५ विभागों में विभाजित है । उस समय रचनायें प्राय: छन्दबद्ध हुआ करती थी । दोहा, चौपाई, सोरठा, छप्पय, तोड़क छन्द, लच्छी छन्द, कवित्त, निवाहा प्रभृति छन्दों में इसकी रचना की गई है । बाबू गया राम जी के विचारों को छन्दोबद्ध करने वाले सज्जन हैं लक्ष्मण पाठक जी । पुस्तक के प्रथम विश्राम के अंत का यह वाक्य द्रष्टव्य है ।

इति माहुरी भूषण वैश्य कुलोद्भव श्रीमान् गया रामानुमत्या श्री लक्ष्मण पाठक कविकृत मंगलाचरण: प्रथमोविश्राम: ।

उस समय काव्य रचना अवधि एवं व्रजभाषा में होती थी । अत: इसकी भाषा व्रज अवधि का मिश्रित रूप है ।

प्रथम विश्राम मंगलाचरण का है । अंत के दो छन्दों में गया राम जी की वंशावली वर्णित है इसके अनुसार गया राम जी मोतीराम के सुपुत्र थे । हजारीबाग के करिहरवासी ग्राम के निवासी इन्हें बताया गया है ।

द्वितीय विश्राम का पहला "दोहा" से ज्ञात होता है कि माहुरी जाति के ऊपर प्रकाश डाला जायेगा ।

> जग में जो खल मण्डली, बोले करि उपहास ।
> भयो कवन विधि माहुरी ताको करों प्रकाश ॥४०॥

इन पंक्तियों से यह ध्वनित होता है कि माहुरी जाति का इस समय उपहास होता था इसी उपहास को दूर करने हेतु माहुरी जाति का विवरण दिया जा रहा है । ज्ञात हो कि माहुरी जाति को कुछ रिवाजों के कारण लोगवाग उपहास करते थे । आज भी यहां लोग करते हैं । जैसे धुम्रपान को यहां सामाजिक मान्यता नहीं रही सो यदि कोई दूसरी जाति का व्यक्ति अपने रिश्तेदारों के यहां गया और उसे हुक्का पीने को नहीं मिला तो वह कहता कि उसका घर माहुरी जैसा है हुक्का पानी भी नहीं मिला । कहुआ विवाह में सादगी खान-पान में हैसियत से ज्यादा खर्च नहीं करना आदि कुछ ऐसी बातें रही हैं जिनकी खिल्ली उड़ायी जाती थी । यद्यपि कि इन रिवाजों के मूल में सादा जीवन उच्च विचार की भावना थी ।

इसके बाद के छन्दों में भगवान श्री कृष्ण और मथुरा क्षेत्र के विभिन्न स्थितियों का चित्रण है । यह शायद इसलिए कि माहुरी मथुरा क्षेत्र से बिहार में आये । यह भी कि कंश के अत्याचार से जब लोग पीड़ित हुए तो वे सोचने लगे कि -

> नीति विरुद्ध अनेक विधि, देखि कंश की रीति ।
> कहँ बसिहों यहि ग्राम में, जहाँ नित होत अनिति ॥६७॥

इसलिए लोगों ने खासकर माहुरी भाइयों ने मथुरा से पलायन करने की सोची -

परिहरि मथुरा नगर कुल केतनो ॥०१॥
बसंउ संकेत ग्राम वैश्य कुल एंतनो ॥

यह विधि मथुरा पुर तजे, बसे दूसरो ग्राम,
जाके बास जहाँ भयो, खाता ताके नाम ॥७२॥
मथुरापुर बसि माथुरी, माहुर ताको अंस ।
अन्त भयो सो माहुरी नाम इसी अवतंस ॥७३॥

बसके सकेतपुर खाता तातें सेठ भयो,
भाद्रवन वाही सों भदानी कहायो है ।
करहला में बसे सोई कपिशये कहाय आय,
तालवन वासी तरबे खाता सो बतायो है ।
कनवारें बसें सोई कन्धवें कहत लोग,
लोहवन निवासतें लोहानी गनि लायो है ।
नन्दी ग्राम बसिकें नवदिया गनात समें,
बहुला वन वास वरहपुरिया बनायो है ।
अठघरा के बसें अठघरिया प्रधान खाता,
कुटरियार कहाय कुदरवन के निवासी हैं ।
वरसाना बासहुतें बड़गावें जानि जात,
अलख ग्राम वासी आराम सो प्रकाशो है ।
चरण पहाड़ी के चरणड़िया खाता ख्यात,
बसई ग्राम वासी साह खाता को प्रकाशो है ।
यह चौदह ग्राम वासी, चौदहों सो खाता भयो,
इष्ट जाको कृष्ण चन्द साहब अविनासी है ।

द्वितीय विश्राम के अन्तिम छन्द से ज्ञात होता है कि गया राम जी की मान्यता थी कि महावरगढ़ से माहुरी लोग मथुरा आये और वहाँ से अन्यत्र गये -

प्रथम महावर गढ़ बसे फिर मथुरापुर वास,
एक नाम है माहुरी फिर माहुरी प्रकाश ॥८८॥

तृतीय विश्राम में मथुरादेवी का नाम कई बार आया है ।

हमारे कुल के धर्म है, भजिये शम्भु सुजान,
मथुरादेवी को भजो जो करिहैं कल्याण ॥६८॥
मथुरादेवी को भजो, पूजा कर चित चाव,
मथुरा चौबे को सदा पूजो तिनके पाँव ॥६९॥

ऐसा प्रतीत होता है कि मथुरादेवी ही बिहार में आकर मथुरासिनी हो गयी । १९८० में तत्कालीन महाडर वैश्य रुंध के अंध्यक्ष श्री सदानंद भदानी डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त, श्री बनमाली राम, श्री ओम प्रकाश विद्यालंकार के साथ हमें (शिवप्रसाद लोहानी) राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के भ्रमण के क्रम में मथुरा जाना पड़ा था । वहाँ जाकर हम लोगों ने मथुरा देवी के मंदिर का पता लगाया, यह मथुरादेवी का मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में माहौरी पीढ़ी में स्थित है । वहाँ के पुजारी ने मथुरादेवी के बारे में कई आश्चर्यजनक बातें बतायी थी । इस मंदिर के इतिहास की विस्तृत जानकारी प्राप्त किया जाना अपेक्षित है । सम्भव है इससे माहुरी जाति के अज्ञात ऐतिहासिक तथ्य का पता चले ।

तृतीय विश्राम में मथुरा से बिहार आकर मलिक वयो की बहुप्रचारित कथा का वर्णन है कि किस प्रकार उसके द्वारा बेचे गये विहार के बिट्ठल सेठ ने कीमत नहीं चुकायी और भद्दू के दिल्ली बादशाह फरियाद पर मलिक वयो को बिहार भेजा गया । मलिक वयो ने बिट्ठल से कीमत चुकायी और माहुरियों को भाग दिलाया । उसके बाद बिहार में इस जाति का निश्चित आवास बना -

यह विधि बसे बिहारपुर, किये बहुत व्यापार,
दिन दूना सुख होत जहां बढ़े बहुत रोजगार ॥१॥

चतुर्थ विश्राम में मानव के आध्यात्मिक और धार्मिक स्थिति का विचार व्यक्त किया गया है । सदाचार और शास्त्र सम्मत जीवन जीने की कला का विशद वर्णन इस अध्याय में है ।

पाँचवें याने अन्तिम विश्राम में रचयिता ने विद्या की आवश्यकता

पर विचारोत्तेजक वर्णन किया है । उत्तर खण्ड में गद्य में शिक्षा की आवश्यकता पर बहुत ही सारगर्भित बातें कही गयी हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस माहुरी भूषण पुस्तिका में रचयिता ने माहुरी के ऐतिहासिक तथ्यों का छन्दात्मक वर्णन के साथ-साथ उसके भौतिक गुणों और सदाचार को परिपालन करने के अलावा शिक्षा ग्रहण करने की महती आवश्यकता बतायी है ।

माहुरी भूषण का महत्व हिन्दी साहित्य में भी है क्योंकि जिस काल खण्ड की यह रचना है उसमें साहित्य की दृष्टि से कुछ तत्व विचारणीय है ।

डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त की इतिहास की पुस्तक में ऐसा लिखा गया है कि नागपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस०एन० देव का कहना है कि मध्यप्रदेश की सीमा में जो कि राजस्थान से सटा है और पूर्व में वह राजस्थान का हिस्सा था खुदाई हुई है । उस खुदाई में माहुर नगर नाम के नगर में अवशेष मिले हैं ।अनुसंधानकर्ता को इस सूत्र के आधार पर अनुसंधान करना चाहिए ।

स्वतंत्र पूर्व काल में ब्रिटिश शासन काल में प्रत्येक जिले से प्रतिवर्ष एक गजेटियर निकलता था । इस गजेटियर में सम्बन्धित जिले की भाषा, कृषि, अर्थ, धर्म, जाति के सम्बन्ध में मुख्य बातें छापी जाती थीं । पटना के सिन्हा लाइब्रेरी में कुछ दिन रहकर माहुरी जाति से सम्बन्धित कुछ नोट हमने तैयार किया था । पटना, गया, हजारीबाग और मुँगेर जिलों के गजेटियरों में माहुरी के बारे में कुछ प्रकाश डाले गये हैं । खेद है कि वह नोट कई अन्य कागजों के साथ भूल गये । दुबारे उसे प्राप्त करने का समय नहीं मिला । भावी इतिहासकार इन गजेटियरों से कुछ जानकारी माहुरी जाति के बारे में प्राप्त कर सकते हैं ।

उपर्युक्त कथन एवं विवेचन से निम्नलिखित विन्दु उभरकर आये :-

(१) माहुरी अग्रवालों की एक शाखा है जिसके मुख्य गुरू महाराज

अग्रसेन जी थे ।

(२) माहुरी शब्द मौखरी का परिवर्तित रूप है ।

(3) माहुरी, महावर, माथुर, माहौर, प्रमृति जातियाँ एक ही है जिनका विस्तार विदेशों में भी है स्थान एवं कालभेद से उनके नाम परिवर्तन हो गये ।

(४) माहुरी बस माहुरी है किसी दूसरे से कोई सरोकार नहीं ।

(५) माहुरी कलवार का अंग है ।

(६) माहुरी जाति का मूल स्थान राजस्थान का महावरगढ़ है, वहीं से एक जमायत बिहार और दूसरी मथुरा पुनः मथुरा क्षेत्र से भी कुछ लोग बिहार आकर उनसे मिली ।

(७) महावरगढ़ से मथुरा आकर ही उनमें से कुछ लोग बिहार माहौर, महौरग्वोर, महावर, माथुर, वैश्य, माहुरी भी एक है ।

माहुरी जाति के इतिहास के सन्दर्भ में जितने विचार अब तक आये हैं वे उपर्युक्त सात बिन्दुओं पर ही दृष्टि डालते हैं किन्तु निश्चित रूप से कोई स्थापित तथ्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, किन्तु उनमें से छठा बिन्दु अधिक विश्वसनीय प्रतीत होता है कि महावरगढ़ से दो भागों में लोग चले एक भाग बिहार आया और दूसरा मथुरा क्षेत्र में । मथुरा क्षेत्र में दूसरी जमायत बिहार में आ मिली । इस प्रकार माहुरी जाति के भावी इतिहास लेखकों को इन बिन्दुओं पर विस्तृत छानबीन करनी चाहिए । सम्भव है कि इन बिन्दुओं के अलावे भी कोई ऐसे बिन्दु का पता चले जिससे कुछ बातें उभरकर आये । यह भी हो सकता है कि इन सारी बातों के अलावा कोई ऐसा प्रामाणिक तथ्य मिल जाय जो इन सभी को निरस्त कर दे और नयी स्थापना स्थापित हो ।

**
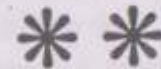
खण्ड - १
अध्याय - ३

मध्यकाल
(उत्तरार्द्ध १९०० ई०)

एक जमायत तत्कालीन शासकों के अत्याचार से ऊबकर महावरगढ़ से सीधे बिहार आयी । दूसरी जमायत मथुरा गयी । पुनः मथुरा से एक टुकड़ी बिहार में आकर मिली । दूसरी मान्यता यह है कि महावरगढ़ से मथुरा और मथुरा से एक टुकड़ी बिहार के बिहारशरीफ क्षेत्र में आयी । किन्तु अकाट्य साक्ष्य जब तक नहीं मिल जाते इसे सम्भावित कहना ही समीचीन है । ताम्रपत्र शिलालेख या पुस्तक को अकाट्य प्रमाण कह सकते हैं किन्तु ये वस्तुएं तो सामान्यतः राजा महाराजे या विशिष्ट वर्ग के लोगों के ही मिलते हैं । सामान्य जन के इतिहास तो जनश्रुतियों, किम्वदन्तियों या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रुप से कही गयी बातें ही इनके आधार होते हैं ।

तो बिहारशरीफ के बाद की इस जाति के बारे में माहुरी भूषण स्पष्ट है । पर बिहारशरीफ से हजारीबाग के गाँव कस्बों में लोग कब बसे इसका विस्तृत विवेचन नहीं मिलता ।

यहाँ पर हमें जनश्रुतियों पर ही संतोष करना पड़ता है । हजारीबाग के अंचलों में बसे लोगों में से अधिकांश लोगों ने यह बात बतायी कि उनके पुरखे मगध से आकर उन क्षेत्रों में बसे । १६०० ई० के आसपास मुसलमानी शासनकाल में लोग बिहारशरीफ आये होंगे और उसके बाद परिवार विस्तार और अनियोजन की वजह से व्यापार और जीविका की खोज में उस तरफ गये होंगे । झुमरीतिलैया के समाज सेवी श्री बनमाली राम कहते हैं कि उनके पुरखों की वंशावली है, जिससे ज्ञात होता है कि उनके पुरखे गोविन्दपुर से खरगडीहा गये । खरगडीहा से ये झुमरीतिलैया जा बसे । इसी प्रकार रायगढ़ (मध्यप्रदेश) के श्री रामदुलार

गुप्ता मूलतः रजौली के थे । उनके पुरखे रजौली से चोंगाखार और ये चोंगाखार से रायगढ़ आये । हजारीबाग महामण्डल के वर्षों पदाधिकारी रहे स्व० पुनीचन्द राम एडवोकेट कहते थे कि उनका परिवार मगध के मदाई गाँव से गिरिडीह आये । हजारीबाग महामण्डल के पूर्व पदाधिकारी रहे श्री यदुनन्दन प्रसाद एडवोकेट कहते हैं कि उनके पुरखें नूरसराय से गिरिडीह के निकट किसी गाँव में जा बसे और पुनः गिरिडीह आये । ज्ञात हो कि हजारीबाग महामण्डल के गठनकर्ताओं में बाबू कारु राम जी अठघरा थे जो कि सिलाव के निवासी थे । आज भी सिलाव में उनकी दूकान है, जो कि किराये पर लगी है कुछ परती जमीन भी है ।

यह स्थानान्तरण उन लोगों के लिए उपयोगी रहा क्योंकि उन स्थानों में जाकर उन लोगों ने पर्याप्त भूमि अर्जित की । आज भी बहुसंख्यक लोगों के पास खेती की जमीन है । कई परिवार जमीन्दारी भी खरीदे थे । आज भी जमीन्दारी के निशान उनके पास मौजूद है । पुरखों की स्थिति का अहसास कराने के लिए श्री बनमालीराम जी बड़े यत्न से जमींदारी बाण्ड का एक अदद सर्टीफिकेट रखे हुए हैं । बड़ी संख्या में लोग अभ्रक के व्यापार उद्योग के लिए गिरिडीह में जा बसे किन्तु खेती की जमीन आज भी उन्हें गाँवों से जोड़े हुए हैं ।

कालान्तर में माहुरी लोग, मुख्यतया मगध क्षेत्र के, वर्मा, उड़ीसा, बंगाल आदि स्थानों में भी जा बसे । इन स्थानों में जा बसने के बारे में **"माहुरी भूषण"** में कोई चर्चा नहीं है । इससे आभास मिलता है कि उन स्थानों में माहुरी बन्धुओं का निष्क्रमण **"माहुरी भूषण"** की रचना १८९२ ई० के बाद हुआ । जिस रचनाकार ने मगध और हजारीबाग में बसे माहुरियों के गाँवों का वर्णन किया हो वह दूसरे प्रान्तों में बसे लोगों के बारे में चुप रहता यह विश्वास योग्य नहीं है । निष्कर्ष यह कि वे उन्नीसवीं सदी के अंत या बीसवीं सदी के प्रारंभ में उन स्थानों में गये ।

१९वीं सदी का उतराई कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है । १८५७ ई० का सिपाही विद्रोह और १८८५ ई० में काँग्रेस की स्थापना इसी काल खण्ड में हुआ । इनके अलावे राजा राम मोहन राय का सामाजिक सुधार वलवन्त फड़के का ब्रिटीश के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह, गोखले के

राष्ट्रवाद की हितकारी घोषणा आदि ऐसी बातें हैं जिनसे जन सामान्य अत्यन्त प्रभावित हुआ । विदेशों की औद्योगिक क्रान्ति का भी यहाँ कम असर नहीं हुआ किन्तु इन सारी स्थितियों में माहुरी जाति का क्या योगदान रहा इसकी चर्चा कहीं नहीं दीख पड़ती । माहुरी भूषण में भी इसकी चर्चा नहीं है । लगता है अंग्रेजों के निरंकुश शासन के डर से गया राम जी ने इस पर कलम नहीं चलायी । अतएव यह शोधार्थियों के शोध का विषय बन गया है ।

इतना जरुर है कि आन्दोलनों ने ब्रिटीश शासन को यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि जिस निरंकुश रूप से वे शासन चला रहे थे उसमें सुधार लाये बिना अधिक वर्षों तक भारत में शासन नहीं कर सकते । इसलिए उन्होंने आई०सी०एस० एवं राज्य के अन्य महत्वपूर्ण पदों पर भारतीयों को नियुक्त करने का मन बनाया । यह तभी संभव था जब कि लोग स्तरीय शिक्षा ग्रहण करके इन प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रविष्ट होते । लगता है कि इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर गया राम जी ने **"माहुरी भूषण"** में जाति में प्रचुर शिक्षा प्रचार की वकालत की । यदि इनकी बातों पर लोग ध्यान दिये होते तो उस समय छोटी परीक्षा पासकर भी लोग अच्छी-अच्छी सरकारी नौकरियों में लग जाते और उस समय की यह स्थिति आने वाली पीढ़ियों के लिए वरदान बनती ।

ऐसा प्रतीत होता है कि माहुरी जाति आराम-तलब जाति रही है । भले वे विपत्ति के दिनों में सक्रिय हो किन्तु खाने-पीने एवं आवास की सुविधा मिल जाने पर उनकी अकर्मण्यता उन पर हावी हो जाती है । बिहार टेक्स्ट बुक द्वारा प्रकाशित पुस्तक **"आधुनिक भारत"** के पृष्ठ १०९ एवं ११० पर लिखा गया है कि उक्त कालखण्ड में उत्तर भारत में औसत किसान ५ एकड़ से ६ एकड़ के जोतदार रह गये । वे अपने परिवार के भरण पोषण के लिए भी पर्याप्त अनाज तब पैदा नहीं कर पाते थे । स्मरणीय है कि एक सदी के बाद भी मगध या हजारीबाग जिलों में एवं मगध के कुछ क्षेत्रों में माहुरी खेतिहरों को इससे अधिक खेती है । उस जमाने में तो इस रकवा से बहुत अधिक भूमि उनके पास थी । अत: उनका ध्यान समुचित कॉलेजी शिक्षा और सरकारी सेवाओं की ओर नहीं गया ।

उस काल खण्ड में व्यापारियों की समुचित प्रतिष्ठा थी । आज की तरह उन्हें गिरहकट और गैर जिम्मेदार नहीं समझा जाता था । ऐसी गर्हित उपाधि उन्हें इसलिए दी जाती रही क्योंकि वे प्रतिरोध करना नहीं चाहते और शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के आदी रहे । फलत: व्यापार की प्राप्त प्रतिष्ठा उन्हें पर्याप्त लगती थी । सम्भवत: इन्हीं कारणों से शिक्षा और उच्च सरकारी नौकरियों की तरफ वे मुखातिब नहीं हुए । इतना जरुर है कि राष्ट्रवादी भावनाओं से वे अभिभूत रहे । कोई महत्वपूर्ण राजनीतिक हस्ती उनकी जाति के नहीं रहे, किन्तु व्यक्तिगत रुप से जो उन्होंने राष्ट्रभक्ति के कार्यों में रुचि ली उसी का सुपरिणाम कालान्तर में जाति सभा में पूज्य महात्मा गाँधी का आगमन समझा जाना चाहिए । हमें विश्वास है कि अब भी यदि कोई परिश्रमी शोधार्थी हो तो इस काल खण्ड में माहुरी लोगों की देश भक्ति के सूत्र प्राप्त हो सकते हैं, जिनके आधार पर बहुत सी बातें प्रकाश में आ सकेंगी ।

पूर्व में कहा जा चुका है कि इस कालखण्ड में यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रान्ति हुई । इसी क्रान्ति की बदौलत मशीनों के द्वारा बहुत सी वस्तुओं का उत्पादन हुआ । भारत में अंग्रेजों ने औद्योगीकरण को बढ़ावा नहीं दिया, किन्तु प्रकारान्तर से यहाँ के खानों से कच्चा माल निकालने में लोगों को नियोजन मिला । इससे माहुरी जाति भी लाभान्वित हुई । आगे के अध्यायों में इसकी विशद चर्चा की गयी है ।
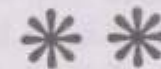
खण्ड - २

अध्याय - १

सामान्य विवेचनात्मक परिचय

(ईस्वी सत्र १९०१ से १९४६ तक)

यह कालखण्ड माहुरी जाति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इसी समय जाति को संगठित करने के लिए मनीषियों ने महामण्डल की स्थापना की । विचारों स्थितियों की सार्थक जानकारी के आदान-प्रदान के लिए माहुरी मयंक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । खनन उद्योग में लोग काफी संख्या में लगे, काफी सम्पत्ति अर्जित की । शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ । नये-नये व्यापार में लोग लगे । गाँवों से निकलकर नगरों महानगरों में प्रविष्ट हुए । दूसरे प्रान्तों में भी जाकर बसे । भिन्न-भिन्न प्रकार के छोटे-बड़े उद्योगों में लोग लगे । उच्च शिक्षा प्राप्ति की ओर सरकारी, अर्द्धसरकारी सेवाओं में गये । डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक बने । यों कहें कि जाति चतुर्दिक उन्नति की ओर अग्रसर हुई तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

समाज में व्याप्त रुढ़ियों से मुक्त होने और अन्य लोगों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को प्रेरित किया । साहित्य-रचना और पठन-पाठन की ओर रुचि जागृत हुई । सामाजिक रुप से आपसी मेल-जोल करने के लाभ की बातें बतायी गयीं ।

यूरोप में जिस औद्योगिक क्रान्ति की चर्चा पूर्व-अध्याय में की गयी है उसके कारण उन देशों की आर्थिक-स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ हो गयी और वहाँ के निवासी सुख-चैन की जिन्दगी जीने लगे । औद्योगिक क्रान्ति ने मशीनों का जमघट लगा दिया और उनसे विभिन्न प्रकार की उपयोगी वस्तुएं निर्मित होने लगीं । उन कल कारखानों में जितने कच्चे माल की जरुरत थी वे उन देशों में प्रचुरता से प्राप्त नहीं थे । भारत में उनकी उपलब्धता थी और यदि उपलब्ध कच्चे माल से यहाँ वस्तुएँ निर्मित होतीं तो देश धन-धान्य से परिपूर्ण होता । पर यह ब्रिटीश-शासन को मंजूर

नहीं था । साथ ही कच्चे माल का यहाँ से प्राप्त करने की उनकी विवशता थी । इस कारण यहाँ से कच्चा माल यथा- लोहा, ताम्बा, अभ्रक, कोयला एवं खनिज वस्तुओं के लिए खनन उद्योग प्रारंभ हुए । देखा-देखी भारतवासी भी उस खनन उद्योग में लगे । खनन कार्य हेतु कुछ मशीन की आवश्यकता थी उन्हें आयातित किया गया ।

हजारीबाग में खनिज-सम्पदा का विपुल भण्डार था और माहुरी लोग वहाँ गाँव-गाँव में बसे थे । कोडरमा के आस-पास पर्याप्त मात्रा में अभ्रक पाया जाता था । यह एक ऐसी खनिज सम्पदा है जो न आग में जलता था और न पानी में सड़ता है । विभिन्न मशीनों, वैज्ञानिक उपकरणों में इसकी बड़ी उपयोगिता थी । जो लोग इस अभ्रक उद्योग में लगे थे वे अपार सम्पत्ति अर्जित कर रहे थे । माहुरी बन्धुओं ने इस स्थिति को अपनी आँखों से देखा और इसमें लोग इतने मनोयोग से लगे कि कालान्तर में अभ्रक उद्योग माहुरियों का उद्योग समझा जाने लगा । यह स्थिति इतनी उत्साहवर्धक थी कि गाँवों में खेतों से लोगों को खाने का अनाज मिल जाता था । छोटे-छोटे व्यापार से अन्य खर्च चलते थे । परिवार की संख्या बढ़ने पर बढ़ी हुई संख्या अभ्रक के व्यापार में लग जाते थे । प्रायः सभी गाँवों में अभ्रक का निर्यात-योग्य बनाने के कामों में लोग लग गये । कई बड़ी कम्पनियाँ और फर्म बन गए । जिनकी चर्चा आगे की जायगी ।

कोयलांचल में भी माहुरियों की खासी अच्छी संख्या भिन्न-भिन्न कार्यों में लग गयी । कोयला के खनन में तो थोड़े से लोग लगे किन्तु कोयलांचल में जो आबादी की वृद्धि हुई, लाखों कामगार काम पर लगे उनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माहुरी के बड़े वर्ग ने दुकानें खोल लीं और अच्छी कमाई की । आगे भी इस प्रकार के धंधे में लोग लगे हैं । समाज के नेता बाबू प्रभुदयाल गुप्त जब अपने पैतृक स्थान शेखपुरा (मुँगेर) से झरिया गये तो कोयला के खनन कार्यों में ही लग गये थे । कोयलांचल क्षेत्र के झरिया, धनबाद, कतरास, करकेन्द, इसरी बाजार, फुलवाटांड, बेरमो तथा अन्य छोटे-बड़े कस्बों में अभी भी हजारों माहुरी-परिवार रह रहे हैं । मेहनती और लगनशील लोगों की स्थिति अभी

भी उन जगहों में अच्छी है । थोड़े से दूरदर्शी एवं बुद्धिमान लोगों ने तो विपुल संपत्ति अर्जित की है । इन स्थानों में न केवल हजारीबाग क्षेत्र के वरन् मगध क्षेत्र के लोगों की भी अवस्थिति है, परन्तु कम ।

माहुरी जाति के लिए यह पुनर्जागरण (Renasance) का स्वर्णिम काल था । सदी के प्रारम्भिक दशकों में माहुरियों की बहुत बड़ी संख्या दूसरे प्रान्तों में भी जा बसी । उड़ीसा और बंगाल में हजारों परिवारों ने निष्क्रमण किया । तब के गया जिले के करम से, कोसरा से पटना जिले के नूरसराय से, रहुई से एवं अन्य स्थानों से सैकड़ों परिवार वर्मा के हेन्जादा मींगे, रंगून आदि स्थानों में जा बसे ।

सर्वप्रथम नूरसराय के इन पंक्तियों के लेखक के पितामह बाबू गनौड़ीदास जी गये । तत्पश्चात् वे अपने ससुराल करम के बाबू दाहूराम देवकी राम को ले गये । उनका फर्म वहाँ बहुत पनपा । वहाँ इनकी बड़ी-बड़ी दुकानें थीं जिनमें दर्जनों माहुरी कार्यकर्ता घर के परिवार की भाँति रहकर काम करते थे । नूरसराय के ही बाबू लालजी राम थे जिन्होंने वहाँ विपुल सम्पत्ति अर्जित की । कोसरा के बाबू फुदीराम जी नूरसराय के बाबू संतोखी राम का नाम भी उल्लेखनीय है । इस प्रकार सैकड़ों माहुरी परिवार वहाँ थे जिनका मुख्य व्यवसाय किराना, कपड़ा, ज्वेलरी, महाजनी आदि था । मोटे तौर पर इन लोगों ने अपने लगन व मेहनत से काफी सम्पत्ति अर्जित की । द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम दिनों में जब बर्मा की हालत बहुत बिगड़ गयी तो वहाँ से इन लोगों ने पलायन करना शुरु कर दिया, परन्तु आज भी कुछ परिवार वहाँ बसे हुए हैं, किन्तु सैनिक शासन के ज्यादतियों के कारण वे लोग अब यहाँ से कट गये हैं । लगता है कि वे थोड़े परिवार अब पूर्ण रुप से बर्मा के संस्कार आदि से जुड़ से गये हैं ।

बर्मा की चर्चा होने पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की याद स्वतः ही मानस-पटल पर अंकित हो जाती है । जिन दिनों नेताजी ने बर्मा में आजाद हिन्द फौज की स्थापना की थी उस समय सैंकड़ों माहुरी परिवार वहाँ बसे थे और इनमें नूरसराय के स्व० बाबू लालजी राम के फर्म के संचालक बाबू राधेराम जी एक समृद्ध हीरा-ज्वाहरात के व्यापारी थे । इन्होंने लाखों रुपये नेताजी को दिये थे । इसकी रसीद आज भी उनके

उत्तराधिकारी श्री अयोध्या प्रसाद जी के पास सुरक्षित हैं, जो कि आजादी की लड़ाई में माहुरियों के सक्रिय सहयोग का साक्षी है । कोई दूसरा व्यक्ति होता तो आजादी के बाद इस रसीद के आधार पर काफी रकम और पद प्राप्त कर सकता था । किन्तु आज की राजनीति में माहुरियों की कोई पूछ ही नहीं है तो क्या होगा ।

इसी कालखण्ड में लोग उड़ीसा की ओर भी बढ़े । धीरे-धीरे वहाँ हजारों परिवार बस गये । उस समय उड़ीसा, बंगाल और बिहार तीनों एक ही प्रान्त थे । बंगाल पहले अलग हुआ जिसको लेकर राष्ट्रवादियों ने बहुत बड़े स्तर पर भंग भंग आन्दोलन चलाया । बिहार और उड़ीसा १९३४ तक एक साथ थे । फिर भी मगध क्षेत्र से दूरी काफी थी । वाहनों की सुविधा प्रायः नगण्य थी, कहीं पैदल, कहीं टमटम, कहीं बैलगाड़ी, कहीं रेलगाड़ी, कहीं बस से चलकर अभीष्ट स्थान तक पहुँचा जाता था । दशकों पहले बुजुर्गों का कहना था कि मगध क्षेत्र से अनाज वगैरह बैलों पर लादकर ले जाया जाता था । कभी-कभी हिंसक पशुओं का शिकार भी इन लोगों को होना पड़ता था । इतना कठिन परिश्रम करके लोग उड़ीसा जाते थे । चार-पाँच शताब्दी पूर्व तक लोग ऐसी वस्तुओं का व्यवसाय करते थे, जिससे अच्छी कमाई होती थी । कहने का तात्पर्य यह है कि जो सामान एक जगह सस्ते दामों पर मिलता था उसे दूसरी जगह ले जाकर अच्छे दामों पर बेचा जाता था । नालन्दा जिले से सुढ़ारी गाँव के एक बाबू तिलक राम जी थे जो कि वहाँ से बहेड़ा की गिरि लाकर इधर बेचते थे जो कि खाने में बादाम की तरह ही लगता था । वहाँ से ये सस्ते दामों में खरीदकर यहाँ मँहगे दामों में बेच दिया करते थे । यहाँ से भी ये मसूर की दाल वगैरह ले जाते थे । परिवार की औरतें यहीं गाँव में रहती थी । निष्क्रमण करने वालों में अधिक संख्या बरबीघा की बतायी जाती है । आज भी कईयों के मकान बरबीघा में मौजूद हैं । उड़ीसा के चपुआ, केओंझर, करोजिया, जशपुर, रायरंगपुर, राऊरकेला आदि कस्बों नगरों के अलावा कई गाँवों में भी माहुरियों की पर्याप्त संख्या देखी जा सकती है । ऐसी बात नहीं है कि सभी की आर्थिक स्थिति अच्छी ही है । कुछ तो काफी समृद्ध हैं किन्तु अन्य लोग

भी अच्छे खाते-पीते हैं । ये लोग कपड़ा किराना, बर्तन, हार्डवेयर, साईकिल, ठेकेदारी व रेडीमेड का व्यवसाय मुख्य रूप से करते हैं । कुछ लोग अच्छे पदों पर सरकारी सेवाओं में भी हैं । डॉक्टर, इंजीनियर, वकील व राजनीतिज्ञों की भी कमी नहीं है । उदाहरण स्वरुप श्रीमती सरोजदेवी काँग्रेस(इ) की जिला अध्यक्षा हैं जो कि केओंझर की हैं ।

उड़ीसा के उत्तरी भाग और बिहार के दक्षिणी हिस्से में झींकपानी, हाता, चाईबासा, हल्दीपोखर आदि नगरों कस्बों में इस जाति की अच्छी संख्या बसी हुई है । इन लोगों का सम्बन्ध और आवागमन उड़ीसा के उपर्युक्त स्थानों के बन्धुओं से सर्वाधिक है । यों कहें कि दक्षिणांचल का यह भाग उड़ीसा में ही घुल-मिल गया है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

बंगाल का कलकत्ता एक जमाने में रोजी-रोटी कमाने की अच्छी जगह समझी जाती थी जहां बिहार के लाखों लोग बसे थे । माहुरियों की अच्छी खासी संख्या वहां जाकर बस गयी थी । आज भी चार-पाँच सौ माहुरी परिवार वहाँ बसे हुए हैं । इसके अतिरिक्त बंगाल के अन्य क्षेत्र यथा - वर्द्धमान, दुर्गापुर व आसनसोल तथा रानीगंज में भी माहुरी परिवार बसे हुए हैं । पहले ये लोग मूल स्थान से सम्पर्क रखे हुए थे किन्तु अब वहीं के होकर रह गये हैं । रानीगंज का माहुरी मण्डल कभी सशक्त संस्था थी किन्तु अब शिथिल हो गयी है । रानीगंज कोयलांचल क्षेत्र में ही आता है । वहां का रहन-सहन और व्यवसाय झरिया धनबाद के समान ही है । उस समय नौकरी आसान थी । कोई भी सामान्य नौकरी की अपेक्षा रोजगार करना ज्यादा पसंद करते थे क्योंकि तब सरकारी नौकरियों में वेतन व अन्य सुविधाएं काफी कम थीं ।

व्यवसायी को समाज और शासन से प्रतिष्ठा मिली हुई थी । अब तो बात उल्टी है । भ्रष्ट से भ्रष्ट सरकारी अर्द्धसरकारी सेवकों के बारे में साधारण से साधारण तथा किसी राजनीतिक दल के लोगों को वाजिब शिकायत करने सुनने में भी मुँह में ही दही जम जाता है और ईमानदार तथा छोटे बड़े व्यवसायियों के लिये मुँह में गालियां ही गालियां रहती है । अब तो हजार दो हजार रुपये की पूँजी से भी व्यापार करने

वालों के सिर पर भिन्न-भिन्न प्रकार के लाइसेंसों और नियम कानून की तलवार लटकती रहती है ।

राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक व औद्योगिक चेतना का श्री गणेष उस काल-खण्ड में प्रारंभ हुआ । अन्य जातीय संगठन भी होने लगे । यानि जातीय गौरव की भावना शनै:-शनै: बलवती होने लगी ।

ऐसी बात नहीं कि जातीय संगठन बनने के पूर्व माहुरी जाति में कोई नियम कानून नहीं था और लोग कोई भी सामाजिक कार्य करने को स्वतंत्र थे । जो पद्धति जाति को अनुशासित रखती थी वह थी वंशानुक्रम एवं परम्परा द्वारा अनुमोदित चौधरी की सर्वमान्य प्रथा । चौधरी, समाज द्वारा मान्य परम्पराओं का परिपालन कराते थे और विपरीत आचरण करने वालों को दण्डित भी किया करते थे ।

१९११ ई० में मगध माहुरी महामण्डल की स्थापना हुई और १९१३ ई० से हजारीबाग माहुरी महामण्डल की स्थापना हुई ।

झरिया से जाति कुलभूषण प्रभुदयाल गुप्त के प्रकाशन-मुद्रण और संपादन में सर्वप्रथम जातिय पत्रिका "माहुरी मयंक" निकली । ज्ञात हो कि उस काल खण्ड में बिहार प्रदेश में दो चार खड़ी बोली के पत्र ही निकलते थे । उनमें बिहारशरीफ के केशोराम भट्ट के संपादन में बिहार-बन्धु समाचार पत्र था और दूसरा "माहुरी मयंक" । बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हीरक जयन्ती समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने की । उसके स्वागताध्यक्ष राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने "माहुरी मयंक" की चर्चा इसी संदर्भ में की थी और इसमें कालान्तर में बने संपादक कविवर गोपी चन्द लाल गुप्त बड़गवे का पुरानी पीढ़ी के कवि सह-योग्य संपादक का नामोल्लेख किया था ।

इस काल खण्ड के प्रारंभिक दशकों में माहुरी जाति के ग्रामीण क्षेत्रों में बसे लोगों के बारे में विशेष जानकारी नहीं मिलती । किन्तु वंशानुगत रुप से अपने बाप-दादों, बूढ़े-बूढ़ियों से सुनी गयी बातों के

आधार पर ऐसा ज्ञात होता है कि दक्षिण के गिरिडीह क्षेत्र के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन खेती और छोटी-मोटी दुकानदारी थी । मगध क्षेत्र में खेती कम लोगों के पास थी पर छोटे-बड़े कई जमींदार थे जिनमें जमींदार हसुआ के जमींदार मुख्य थे । हसुआ के उन जमींदारों के पास हजारीबाग जिले में कोडरमा के आस पास अभ्रक की खानों की जमींदारी थी जिन्हें सी०एच०लि० ने पीछे आकर चालू किया । इन्हीं लोगों के कब्जे में सपही का संसार का प्रसिद्ध खान था जहाँ का अभ्रक अत्यन्त कीमती एवं ऊँचे दाम के होते रहे हैं ।

छोटी दुकानें मोदीखाना के रुप में चलती थी । दोनों पक्षों के माहुरी भाई गाँवों से अनाज की लदनी करके बाहर ले जाते थे । जिनकी औकात अच्छी होती थी वे लगौनी-बझौनी सूद पर रुपया देने का काम करते थे । बहुत आसानी से बिना लिखा-पढ़ी के तुरंत जरुरतमन्द लोगों को रुपये मिल जाते थे । आभूषणों को गिरवी रखकर कम सूद पर रकम दी जाती थी । इन आभूषणों को शहरों में और भी कम सूद पर बड़े महाजनों के पास ये ग्रामीण दुकानदार गिरवी रख देते थे । इस प्रकार उन्हें बीच का मुनाफा मिल जाता था । सामान्य परिवार की महिलाएँ घर में चोली, झूला, बच्चों का पेंट, फ्रॉक आदि हाथ से सीकर घर में ही बेचती थी । उनके मर्द लोग कपड़ा खरीदकर ला देते थे । जिन महिलाओं के पति काहिल होते थे, उनकी पत्नियाँ इसी रुप में की गयी आय के रुपये जोड़-जोड़ कर बेटी की शादी तक कर देती थी, क्योंकि बेटी की शादी के वैवाहिक रुप अत्यन्त सरल और कम खर्च के होते थे । मगध क्षेत्र में माहुरी लोग खंडसार का लघु उद्योग चलाते थे । इन खंडसारों में भूरा, मगही चीनी बनाई जाती थी । सच तो यह है कि उन वर्षों में मील की चीनी, जिसे पूर्वी चीनी कहा जाता था, खाना पसन्द नहीं किया जाता था । यह बात प्रचलित थी कि पूर्वी चीनी में हड्डी का मिश्रण होता है । इस लघु उद्योग से हजारों परिवारों की जीविका चलती थी । मगध में खंडसार पर माहुरियों का एकाधिपत्य था । बिहारशरीफ के निकट के पचौड़ी गाँव तो पचासों घर माहुरी रहते थे जिनकी मुख्य जीविका खंडसार थी । वे सब मिलकर बिहारशरीफ आ गये हैं जहाँ आज भी कुछ

लोग खंडसार में भूरा बनाते हैं । सोहसराय, नूरसराय, बरबिघा, मारुफगंज (पटना सीटी) में अभी भी बहुत छोटे रुप में माहुरी भाई अब चीनी के स्थान पर पूर्वी चीनी से मिसरी बनाने का लघु उद्योग चला रहे हैं । यह गृह उद्योग माहुरियों द्वारा चलाये जाते हैं । ज्ञातव्य है कि चालीस के दशक तक खंडसार की मगही चीनी ही शर्बत बनाने के काम में आती थी । मील की पूर्वी चीनी का शर्बत उस समय हेय दृष्टि से देखा जाता था । आज के कोल्ड ड्रिंक की तुलना में वे अधिक शक्तिवर्धक, निर्दोष और सुस्वादु होते थे । वृद्धों की जमायत आज भी खंडसारी मगही चीनी का शर्बत पीने को आकुल रहती है, किन्तु मिले तब न । उन दिनों खंडसारियों की कोठरियों में दर्जनों नाद गड़े होते थे । इनके निर्माण में नदी के सेवार, तरल गुड़ के कठोर होने पर, रखकर चीनी निर्माण की प्रक्रिया सम्पन्न होती थी । नाद के नीचे एक सुराख होता था और रावा या गुड़ को तरलावस्था में गिरने से बचाने के लिए उस सुराख से लेकर ऊपर तक लकड़ी की छड़ी डाल दी जाती थी । जब वह द्रव्य कुछ कड़ा हो जाता था लकड़ी खींच ली जाती थी । तरल द्रव्य कठोर होने पर उसे लोह के सितुआ से छीलते-काटते थे । छीली वस्तु को तेज धूप में सुखाया जाता था । नाद के छीले हुए स्थान पर पुनः सेंवार डाल दिया जाता था । यह प्रक्रिया तब तक चलती थी जब तक कि नाद का सारा माल निकाल नहीं दिया जाता । उक्त छेद से नीचे गरिया गिरता था । यह गरिया रोटी के साथ खाने में सुस्वादु होता था । गरीबों की बात क्या धनी मानी व्यक्ति भी इसके साथ रोटी खाकर आनंदित होते थे । इसी को खैनी के पाउडर में मिलाकर हुक्का का तम्बाकू बनता था । अब मील के छोआ से तम्बाकू बनता है ।

वैवाहिक रश्मों-रिवाज अत्यन्त सरल थे । बेटी की शादी में उस समय कोई परेशानी नहीं थी । इसके विपरीत उन दिनों जहाँ-तहाँ कुँवारे लड़के देखे जा सकते थे । बेटी को गाँव वाले गाँव की बेटी समझते थे । जाति के सभी भाई-बन्धु रश्मों-रिवाज में थोड़ा-बहुत पैसे देते थे और रिश्तेदारों के यहाँ से खोंइछा के रूप में कुछ रकमें आ जाती थीं । परिवार वाले तो अपनी सामर्थ्य के हिसाब से खर्च करते ही थे ।

पाँच गज उजला कपड़ा पहनाकर बेटी काढ़ दी जाती थी । जहाँ पुरोहित जी जाकर उस लड़की का कन्यादान कर देते थे । दान करने का रिवाज उस समय नहीं के बराबर था । चढुआ शादी तो बड़े-बड़े जमींदार और पूँजीपति वर्ग के लोग ही करते थे । लड़कावाला जो बारात लेकर लड़की वाले के पास जाता था उसे लड़की के सारे रिश्तेदार, घर और दफा के लोगों को एक सप्ताह तक खिलाना पड़ता था । लड़की वाले को कोई भार नहीं पड़ता था । बरकढुआ शादियाँ भी होती थी जहाँ लड़का, लड़की के घर जाकर विवाह करता था ।

लड़की काढ़ने और लड़के वाले द्वारा लड़की वालों को खिलाने की प्रथा के विरोध में महामण्डल के संगठन बनने पर तीव्र विरोध किया गया । गोपीचन्द लाल गुप्त ने ईस्वी १९२३ में प्रकाशित माहुरी मण्डल नाटक में इन कुप्रथाओं पर कसकर प्रहार किया है । किन्तु आज जो वैवाहिक रस्मो रिवाज ने स्वरुप ग्रहण कर लिया है वह कदापि प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता । वैसा ताम-झाम और दिखावट से क्या फायदा जहाँ कन्या पक्ष वाले की हैसियत खत्म हो जाय और वह कंगाल बन जाय । साथ ही वर पक्ष वाले को भी कुछ नहीं प्राप्त होता वरन् सारी रकमें यों ही खत्म हो जाती है ।

विवेच्य कालखण्ड के द्वितीय और तृतीय दशकों में तो दक्षिण और मगध क्षेत्रों के दोनों वर्गों के बीच शादी-व्याह करने और दोनों महामण्डलों को एक करने की बात ही चलती रही । १९२३ में हजारीबाग माहुरी महामण्डल के दशम वार्षिक अधिवेशन के सभापति बाबू भगवान दास नवदिया ने अपने भाषण में कहाकि कुलभूषण बाबू प्रभूदयाल गुप्त मगध हजारीबाग महामण्डलों का एक करने की बात करते हैं सो विदित ही है, पर महामण्डल तो एक नहीं हो सके । दोनों पक्षों में शादियाँ अब धड़ल्ले से होती हैं । यहाँ यह विचारणीय है कि दोनों क्षेत्रों के लोगों में कितनी खाई थी वह इसी बात से ज्ञात होता है कि प्रकाशित कार्य विवरण (एकादश अधिवेशन) में (ईस्वी सन् १९१३ से १९२३) विक्रम संवत १९७० से १९८० तक के प्रस्ताव जो अधिवेशन में पारित हुए हैं उनमें पृष्ठ ९० के संख्या १६ में यह है-

'मगध से विवाह सम्बन्ध जोड़ने वाले व्यक्ति को यह मुनासिब होगा कि महामण्डल से सलाह ले लें । अन्यथा वे दोषी समझें जायेंगे ।' क्या यह इस बात का परिचायक नहीं है कि लोग दक्षिण और मगध से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने में हिचकिचाते थे ?

यहाँ यह भी जान लेना उचित होगा कि दकियानूसीपन के कारण छोटी-छोटी बातों के लिए लोग पंगतच्युत कर दिये जाते थे और कालान्तर में उन्हें जातिच्युत होने का खामियाजा भुगतना पड़ जाता था । जाति और राष्ट्र के हित में यह उचित नहीं था । किन लोगों को कैसे जातिच्युत कर दिया गया यह स्वयं में एक अनुसंधान का विषय है । क्या यह संभव नहीं है कि मगध से विवाह करने वाले दक्षिण के बंधु को दोषी मानकर उन्हें जातिच्युत नहीं कर दिया गया हो जैसा कि उपर्युक्त पुस्तक से ध्वनि निकलती है ? प्रसन्नता की बात है कि शताब्दियों का यह सामाजिक कोढ़ अब बहुलांश में विनष्ट हो गया है और अब जातिच्युत होने का अभिशाप वैसे परिवारों को भी नहीं भुगतना पड़ता है जिन्होंने या जिनके संतानों ने सामाजिक परम्पराओं से हटकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया है । इसके विपरीत पूर्व के जातिच्युत बंधुओं से भी रोटी-बेटी का संबंध स्थापित हो रहे हैं जो कि एक शुभ लक्षण है ।

यह सत्य है कि यदि स्थिति पचास वर्ष पहले होती तो समाज की हालत जो आज है उससे यह अधिक स्वस्थ होता । कहना नहीं होगा कि रमना गया के रमाभवन निवासी बंधुओं ने नारी और पुरुष दोनों को बिना भेदभाव के शिक्षा का अमृत छक कर पिलाया किन्तु वही अमृत वैवाहिक मामले में विष बन गया और समाज में एक ऐसे परिवार को अकेला छोड़ दिया जिसने सच्चे अर्थ में नारी शिक्षा की समाज में मशाल जलायी थी । शिक्षिता स्नातक महिला को योग्य पति नहीं मिलने पर उस परिवार ने आगे बढ़कर माथुर वैश्य परिवार से रिश्ता किया जिसके पक्ष एवं विपक्ष में उस समय के **"माहुरी मयंक"** में काफी लिखा पढ़ी हुई । विजय दकियानूसीपन को मिली और समाज पचास वर्षों के लिए पीछे चला गया । इतना ही नहीं क्षेत्र विस्तार की पावन कल्पना से पिछले दशकों में जो पश्चिम के बिछुड़े भाईयों माहौर, माहौर ग्वारे महाजन,

माथुर वैश्य आदि से सम्पर्क कायम हुए जिसमें सभी उपवर्गों के लाखों लाख रुपये और अमूल्य समय नष्ट हुए उसके बाद एक वैवाहिक संबंध भी स्थापित नहीं हुए जो वैवाहिक सूत्र रमनाभवन वालों ने उस समय थामा था उसे यदि समाज थाम लेता तो आज माहुरी जाति की बात ही कुछ और होती । राजनीतिक, सांख्यिक, सामाजिक, व्याहारिक, शैक्षणिक मामलों में हम बहुत ही आगे रहते ।

विदेश में शिक्षा अर्जन करने वालों को भी उस समय प्रताड़ना सहनी पड़ती थी । प्रताड़ना के विपरीत यदि दुलार-पुचकार और उत्साहवर्द्धन से किया गया होता तो समाज का शैक्षणिक स्तर कुछ दूसरा ही होता । खैरियत यह रही कि दोनों महामण्डलों के उद्देश्य जाति सुधार, धर्म संचार और शिक्षा प्रसार एक से रहे, पर आलोच्य काल खण्ड में तो समाज के लोग बस इतना ही चाहते थे कि लिखा-पढ़ी और हिसाब-किताब का सामान्य ज्ञान हो जाय, यही बहुत है । ग्रामीण क्षेत्र में बसे भाइयों के लिए वे शहरों में भेजकर, लड़कियों की तो बात न कीजिए, लड़कों को भी पढ़ाना दुष्कर था । यही कारण है कि हजारीबाग के अधिवेशनों में सदा यह कहा जाता रहा कि गिरिडीह के माहुरी छात्रावस में लोग छात्रों को भेजें । फिर भी वहाँ के स्थान कभी भरते नहीं थे । बाहर में रहने वाले लोग भी लड़कों को अधिक पढ़ाने के खिलाफ थे । लड़कियों को तो चिट्ठी-पत्री लिखने भर आ जाय, यही बहुत था । महामण्डलों और जातीय नेता लोगों द्वारा बार-बार शिक्षा के लिए कहे जाने पर भी अर्थाभाव और जड़ संस्कारों के कारण शिक्षा का वह माहौल समाज में उस समय नहीं पैदा किया जा सका जितना कि वांछनीय था । यदि शिक्षा की प्रगति तीव्र होती तो उच्च पदों पर अनेकानेक लोग प्रतिष्ठित होते जिससे समाज लाभान्वित होता, उच्च व्यावसायिक स्थिति की बात भी होती ।

प्रथम विश्व युद्ध तक तो भारत में अंग्रेजों की स्थिति सुदृढ़ थी, किन्तु इस विश्व युद्ध के बाद के वर्ष अंग्रेजों के लिए कठिनाई के रहे । १९२० आते-आते विश्वयुद्ध की विभीषिका से आक्रान्त भारत का आम नागरिक अपने को टूटा हुआ अनुभव करने लगा । तब राष्ट्रीय कांग्रेस देश को आजाद कराने के लिए विशेष प्रयत्नशील हो गया । १९२१ के गया

कांग्रेस के अधिवेशन ने स्वातंत्र्य प्राप्ति की तीव्र उत्कंठा जागृत कर दी । वास्तव में यह संतोष की बात है कि जिस रमाभवन को समाज के दकियानूस लोगों ने अलग कर दिया उसी परिवार ने गया कांग्रेस अधिवेशन में आये गाँधीजी, नेहरुजी आदि को रमाभवन में रखा था । सामान्य लोगों को राय बहादुर रामचन्द राम के पार नदी बंगले में रखा गया था । रमाभवन में गाँधी, नेहरु आदि ठहरे । संकट बाबू उस परिवार के जीवित व्यक्ति हैं । ये सारी बातें जानते हैं ।

प्रथम विश्व युद्ध से जर्जर भारत की अर्थ व्यवस्था को सुधारने का एक मात्र तरीका आजादी समझा जाने लगा । इस भावना से देश के युवक परिपूरित दीखने लगे कि अब तो आजाद होना ही है । लाखों की संख्या में लोग जेल जाने लगे । माहुरी समाज इससे पीछे कैसे रह सकता था ? हजारीबाग जिले के जमुआ, खरगडीहा, गिरिडीह, कोडरमा आदि स्थानों के लोग तो इस संग्राम में सक्रिय रहे ही मगध क्षेत्र के बिहारशरीफ, बरबीघा, नूरसराय, एकंगसराय, हिलसा, नवादा, गया, सोहसराय आदि जगहों के लोग भी इस आन्दोलन में कूद पड़े । हजारों लोग जेल गये और जुल्म सितम सहे । इसी बीच महात्मा गाँधी का आगमन बिहार प्रदेश में हुआ तो जमुआ थाना के माहुरी भाइयों ने खरगडीहा में एक वृहद् सभा का आयोजन किया, जिसमें महात्मा गाँधी ने आजादी की लड़ाई में भाग लेने का लोगों का आव्हान किया । उक्त सभा में गाँधी जी को १००१/- की एक थैली भी दी गई । माहुरी महिलाओं ने अपने जेवर उतार कर गाँधीजी के चरणों में रख दिया । वास्तव में यह एक विचित्र बात थी कि किसी जातीय सभा में पूज्य गाँधीजी का शुभागमन और भाषण हो । आने वाले पृष्ठों में महात्मा गाँधी के इस स्वागत का विस्तृत विवरण दिया गया है ।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कांग्रेस के ऐतिहासिक १९४० का अधिवेशन हजारीबाग जिले के रामगढ़ में हुआ था । उसमें झुमरीतिलैया के सी०एच०लि० एवं गया के लाला गुरुशरण लाल ने बहुत योगदान किया था । विस्तृत विवरण इन दोनों के प्रकरणों में किया गया है । इन दोनों के सहयोग के अलावे माहुरी जाति के हजारों युवकों ने स्वयंसेवक का झण्डा थाम कर विशाल भीड़ को नियन्त्रण एवं उनके कष्टों को दूर

करने का कार्य किया । चूँकि अधिवेशन के समय भीषण वर्षा हुई थी इन स्वयंसेवकों को बहुत अधिक खटना पड़ा था । इन स्वयंसेवकों में कई तो इतने अस्वस्थ हो गये कि महीनों बीमार पड़े रहे । रामगढ़ के निकटवर्ती और उसी जिले के रहने वाले होने के कारण ये स्वयंसेवक अधिक कार्य कर पाये थे । गाँवों से पुआल आदि लाकर वर्षा से लोगों का बचाव किया था ।

आजादी की लड़ाई में ये शिरकत कर ही रहे थे । जनसेवा की भावना से प्रेरित होकर अन्य क्षेत्रों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी । डिस्ट्रीक्ट बोर्डों के उस समय काफी अधिकार प्राप्त थे । यही एक सरकारी संस्था थी जिसके द्वारा जन आकांक्षा और आवश्यकता के अनुरुप ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, सड़क, स्वास्थ्य और अन्य जनोपयोगी छोटे कार्य हो सकती थी । अंतएव डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में हजारीबाग और मगध क्षेत्रों के कई लोग इसके मेम्बर चुनाकर आये ।

साहित्य-कला-संगीत का क्षेत्र माहुरी जाति के लिए उस काल में अछूता नहीं रहा । जाति के साहित्यकारों में नाटककार, कवि, लेखक कई हुए । पत्रकारिता के लिए मरुभूमि समझे जाने वाले प्रदेश के संबंध में पूर्व में ही लिखा जा चुका है कि "माहुरी मयंक" जातिय पत्रिका के साथ-साथ बिहार में खड़ी बोली का महत्वपूर्ण मासिक था । आज की तरह विदेशी खेलों का प्रचलन उन दिनों तो था नहीं किन्तु देशी खेल-कबड्डी, कुश्ती, तैराकी में ग्रामीण क्षेत्र के बंधुगण प्रवीण थे ।

धर्म अध्यात्म तो इंस जाति का अपना ही क्षेत्र समझना चाहिए । गाँवों में अक्सर अन्य जाति के लोग कहे सुने जाते थे - "रमुआ के मैया तो पड़िआहन हको, एता विचार कर हो कि बिना नहैले कोई भंसा में चल गेलो तो ओकर खैरियत नई ।" पवित्रता का धर्म से घनिष्ट सम्बन्ध है, धर्म अध्यात्म की वृत्ति वालों के लिए पवित्र होना वांछनीय है ।

इसी का परिणाम है कि माहुरियों द्वारा निर्मित मंदिर बहुत मिलेंगे । अयोध्या तक में माहुरियों ने मंदिर बनाया है । शायद ही कोई गाँव मिलेगा जहाँ कि मंदिर हो और उसमें माहुरियों की सक्रिय भागीदारी

नहीं हो । कई स्थानों में जैसे- फतेहपुर, खरगडीहा, बरकट्ठा, झुमरीतिलैया में सी०एच० द्वारा कांको आदि में तो निज के मंदिर निर्मित हैं । रजौली, धनियांपहाड़ी, अम्बेर, राजगिरि की बड़ी संगत को तो माहुरियों के क्षेत्रिय तीर्थ स्थल जैसे थे । उन संगतों के निर्माण में पचहत्तर प्रतिशत के करीब के आर्थिक अनुदान माहुरियों के होंगे । अद्यावधि माहुरियों के संबंध उनसे न्यूनाधिक रुप में विद्यमान है ।

दोनों महामण्डलों के उद्देश्य में भी धर्म संचार की बात प्रमुख है । सच तो यह है कि मगध माहुरी महामण्डल की स्थापना समारोह भी सिलाव के सत्संग सभा द्वारा आयोजित की गयी थी ।

ऐसी बात नहीं कि सभी की धार्मिक आस्थायें एक जैसी थीं । मुख्य आबादी तो सनातनी धर्मावलम्बी थी । आर्य समाजी, थियोसोफिस्ट लोग अपनी आस्थाओं के केन्द्रीय संगठनों से जुड़े थे । सनातन धर्म मानने वालों में राम, कृष्ण की पूजा करने वाले सगुणोंपासक थे तो निगुर्णपंथी कबीर, दादू के अनुयायी भी । ज्ञानाश्रयी (सूफी) शाखा के मतों से भी प्रगाढ़ सम्पर्क थे । पिछली पीढ़ी वालों ने तो बिहारशरीफ क्षेत्र के सूफियों को सुरक्षा भी प्रदान की थी जो कि ऐतिहासिक तथ्य है । सूफी माहुरी प्रगाढ़ संबंध की चर्चा बिहारशरीफ के प्रख्यात चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉ० आर० इसरी को पटना आकाशवाणी से प्रसारित वार्ता में विस्तार से की है । यह अन्यत्र रेखाँकित है ।

सन् १९३० के आस पास सस्ती का ऐसा दौर आया कि देश की सारी अर्थव्यवस्था गड़बड़ हो गयी । लोगों की क्रय शक्ति बहुत ही क्रम हो गई । कृषि की वस्तुएँ बहुत सस्ती हो गईं । बारह आने से एक रुपये मन राबा बिकने लगा । बढ़िया चावल और गेहूँ के भाव दो-ढाई रुपये मन हो गए । मजदूरी करीब पाँच आने प्रतिदिन हो गई । दुकानदारों की बिक्री बहुत कम हो गई, क्योंकि खेती में उपजे सामान बहुत सस्ते हो गए । बेकारी बढ़ गयी । इस स्थिति ने माहुरियों की कमर तोड़ दी । गाँवों कस्बों में बेरोजगारी की बाढ़ आ गयी ।

पेट में जब अन्न नहीं रहे, कपड़ा की समुचित व्यवस्था न हो

तो दूसरी बातें सूझती ही नहीं संभवतः यही कारण था कि इस समय चालीस के दशक में मगध, हजारीबाग के महामण्डलों एवं "माहुरी मयंक" की गाड़ी धीमी चलने लगी । मगध माहुरी महामण्डल के अधिवेशन नहीं होने लगे । राजगीर के मलमास मेले में तीन वर्ष पर दो-तीन घंटे का एक अल्पकालीन सभा जरुर हो जाती थी जिसका आयोजन मुख्यतः सिलाव के बंधु करते थे । व्यंग्य में एक लेखक ने उस समय "माहुरी मयंक" में लिखा भी था कि महामण्डल की तमादी रोकने के लिए लगता है राजगीर के मलमास मेले में एक सभा हो जाती है । ऐसी ही हालत में सन् १९३४ का भीषण भूकंप आया । इसने रही सही आर्थिक व्यवस्था को भी चौपट कर दिया । तत्पश्चात् द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका सामने आ गयी । इसकी समाप्ति होने पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का १९४२ का भारत छोड़ो आन्दोलन के तहत जेल भरो अभियान तथा अंग्रेजों के दमनचक्र तेजी से घूमा । सस्ती के स्थान पर मँहगी ने कब्जा जमाया । वस्तुओं की कमी हुई और इस हालत में जो व्यवसायी हिम्मत करके व्यवसाय करते रहे उनकी पाँचों ऊँगलियाँ घी में रहीं । इसके विपरीत जो उस डर से बैठे रहे कि कहीं पकड़ा न जाऊँ उनकी हालत पतली होती चली गयी ।

इस हालत में समाज का काम पूर्णतः बंद हो गया । सारे सामाजिक संगठन-महामण्डल एवं "माहुरी मयंक" पाँचवें दशक में पूर्ण रुप से बंद हो गये । यदा कदा चर्चा भर सुनी जाती थी । कोई आगे बढ़कर कुछ सामाजिक कार्य करने को तैयार नहीं था । फलतः समाज को गतिशील और संतुलित बनाये जाने के सारे रश्मोरिवाज में टुटनकी प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी ।
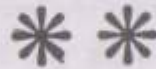
खण्ड - २

अध्याय - २

आधुनिक काल का सामान्य विवेचनात्मक परिचय

(सन् १९४८ से १९९६ तक)

स्वातंत्र्य पूर्व काल खण्ड (१९०१ - १९४७) के अंत में यह दर्शाया गया है कि द्वितीय विश्वयुद्ध से त्रस्त सामान्य भारतवासियों की आर्थिक स्थिति इतनी विषम हो गयी थी कि लोग रोटी-कपड़ा के जुगाड़ में ही व्यस्त रहते थे । सभी उपयोग की वस्तुओं के दाम बहुत बढ़ गये थे । इससे सामान्य जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था । कुछ मुट्ठी भर लोगों ने अवश्य भ्रष्ट एवं काली कमाई करके विपुल वैभव प्राप्त कर लिया था । वैभव के मद में चूर ऐसे सम्पत्तिशाली लोगों को समाज की चिन्ता नहीं थी । वे अपने में मगन थे । सामान्य जन को, खासकर समाजहित चाहने वाले समाज सेवकों के सोचने करने का अनुकूल अवसर नहीं था । ऐसे में मगध और हजारीबाग महामण्डलों के साथ-साथ "माहुरी मयंक" का बंद होना स्वाभाविक था ।

पर आजादी मिलने के बाद राजनीतिज्ञों ने राजनीतिक लाभ के लिए जातिवाद को जिस रुप में अपनाया, जातिवाद को जिस रुप में हवा दी- विशेषतया ऊंची जाति के लोगों ने, वे अन्य जातियों के लिए असह्य हो उठा । स्वातंत्र्य संग्राम के वे लोग जिन्होंने जाति- धर्मविहीन राज्य की कल्पना की थी, उनके लिए यह स्थिति रास नहीं आयी । अल्पसंख्यक समुदाय के अन्तर्गत मुसलमान और ईसाई को लिया गया । इस प्रकार उनके राजनीतिक और आर्थिक अधिकार सुरक्षित रहे, किन्तु अल्पसंख्यक जातियों के लिए यह हालत कष्ट से भरा था । जो जातियाँ सीमित क्षेत्र में अधिक थीं उनकी पाँचों अँगुलियां घी में थी, पर जिनका प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्वरुप था तथा जो भिन्न-भिन्न स्थानों में बसी थी, इनकी

संख्या उन स्थानीय क्षेत्र में बसी जातियों से कई गुणा अधिक थी । फिर भी वे घोर उपेक्षा की शिकार हो गयीं । प्रादेशिक और राष्ट्रीय चरित्र रखने वाली इन जातियों से विधान सभा एवं संसद में चुना जाना कठिन ही नहीं असंभव था । इसीलिए लिस्ट सिस्टम के चुनाव की माँग बढ़ती जा रही है जिसमें कि प्रादेशिक और राष्ट्रीय चरित्रवाली जातियों के साथ राजनीतिक न्याय मिले । वैश्य समुदाए का माहुरी जाति भी उसी उपेक्षा का शिकार थी । उनके कोई प्रतिनिधि विधान सभा और संसद में नहीं जा सकते थे । कांग्रेस के झंडे के नीचे जेल जाकर, यातनायें सहकर, अपनी सम्पत्ति की होली जलाकर जिन लोगों ने देशहित में स्वतंत्रता आन्दोलन में अपने को झोंक दिया था, उनकी बुरी हालत थी ।

फिर जिन जातियों के कभी कोई संगठन नहीं थे वे संगठित हुई । भले इनके विधिवत कागज पर संगठन नहीं बने किन्तु सभी लोगों में एक अलिखित संगठन की भावना जाग गयी और इस जागरण को लाने में चुनावी सरगर्मी ने काफी भावनात्मक बातें फैलायी । रोटी भले सभी के संग खायी जाने लगी किन्तु बेटी और वोट जाति को देने की बात चल पड़ी । जब यह चल पड़ी तो आज तक चल रही है । कोई राजनीतिक पार्टी कितना भी अनुशासित और सिद्धान्तनिष्ट हो जातिवाद को जीत का मूल आधार मानने लगे । चुनाव के मामले में उनके सारे सिद्धान्त हिरण हो जाते रहे हैं ।

इस परिप्रेक्ष्य में माहुरी जाति के संगठनकर्ताओं और शुभ चिन्तकों में महामण्डल और "माहुरी मयंक" के पुर्नप्रकाशन की बात आयी । पहले हजारीबाग माहुरी महामण्डल का पुनर्गठन हुआ । इसलिए भी कि उक्त क्षेत्र की आबादी सीमित क्षेत्र में फैली थी और इस कारण वहाँ वोट की राजनीति करना अपेक्षाकृत सुगम था । वैसी बात हुई भी । पंडरी के रघुनन्दन बाबू विधान सभा के लिए गिरिडीह में चुनाव लड़कर जीते । ये कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े थे । कांग्रेस ने उन्हें टिकट इसलिए ही दिया होगा कि स्वातंत्र्य आन्दोलन में इस क्षेत्र में माहुरी जाति ने मुख्य भूमिका अदा की थी । स्थिति ऐसी थी कि यदि इस जाति के किसी व्यक्ति को कांग्रेस टिकट नहीं देती तो

पक्षपात और जातिवाद की फैल रही बदनामी में और बढ़ोत्तरी होती । इसी क्रम में झुमरीतिलैया के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री सदानंद प्रसाद भदानी को भी संसद का चुनाव लड़ने के लिये कांग्रेस ने टिकट दिया किन्तु ये सफल नहीं हो सके क्योंकि रामगढ़ के राजा का राजनीतिक वर्चस्व छोटानागपुर क्षेत्र में बहुत था और राजा के विरुद्ध लड़कर जीतना आसान नहीं था । फिर जाति के वोट भी संगठन के अभाव में कम ही मिले यद्यपि इनकी संख्या अच्छी थी । राजनैतिक चेतना के अभाव के कारण जाति के लोगों ने वोट डालने का कृष्ट नहीं किया ।

कांग्रेस के आलाकमान कुछ जातियों के प्रभाव में इतने अधिक थे कि दूसरी जातियों को फूटी आँख भी देखना नहीं चाहते थे । इसी समय श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना की । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से माहुरी जाति का एक बड़ा भाग प्रभावित था और इस संगठन का राजनैतिक संस्करण जनसंघ ने माहुरी क्या सभी वैश्य वर्गों-उपवर्गों को अपने आगोश में ले लिया । इसका आर्थिक कारण भी था । वह इस रुप में कि कांग्रेस के अंदर वामपन्थी विचारधारा का प्राबल्य था और यह धारा निजी व्यवसाय के खिलाफ थी । इसका मतलब था परम्परागत आजीविका के माध्यम से माहुरी समाज का वंचित हो जाना । जो थोड़े से व्यवसाय-उद्योग को राज्य ने अपनाया उनमें राजनीतिक जातियों की बहुलता थी । इससे वैश्यों की जीविका के परम्परागत अवसर तो समाप्त हो गये किन्तु उन्हें कोई विकल्प नहीं दिया गया । सच तो यह है कि छोटी-मोटी भूलों के लिये भी वैश्य समाज के व्यवसायियों को तंग किया गया, मुकदमें चलाये गये, अपमानित किया गया, जेल भेजा गया । किन्तु गैर वैश्य जाति के व्यवसायियों के साथ ऐसी बेजा हरकत सरकार के कर्मचारी प्रायः नहीं ही करते थे क्योंकि उनकी जाति के लोग शासन तंत्र के अंग थे । मजा तो यह था कि जो सरकारी कर्मचारी पैसे लेकर दुकानदारों का शोषण करते थे, वे ही इन्हें जेल भी भेजते थे । सचमुच में यह आश्चर्य की बात थी कि एक हजार की पूँजी से खिचड़ी फरोस की दुकान करने वाले दुकानदारों को आठ नौ प्रकार के लायसेंस लेने पड़ते थे । बटखरा का, चीनी का, खाद का,

सरसों तेल का, किरासन का, श्रम विभाग का, फुडग्रेन का, जिला बोर्ड का, आपूर्ति विभाग का, रासायनिक खाद का, आयकर-बिक्रीकर आदि का । इन सभी के लाइसेंस लेने में हजारों हजार का वारा-न्यारा हो जाता रहा है । छोटी पूँजी का दुकानदार यह संभव नहीं कर सकता था क्योंकि उसकी सारी पूँजी इन्हीं में लग जाती । जीने के लिए कमाना जरुरी था और उसे गैरकानूनी कार्य करने की बाध्यता थी, क्योंकि सारे कानूनी नियम और दाँव-पेंच व्यावहारिक नहीं थे और न अभी ही हैं । उनकी इस वेवशी का छोटे अफसर नाजायज फायदा उठाते थे । इसकी कहीं कोई सुनवायी नहीं थी । उल्टे इस वैश्य समाज को चोर, लम्पट, चोरबाजारी का सरदार कहा जाने लगा ।

इस परिप्रेक्ष्य में जनसंघ ने जो नारा दिया - मुक्त व्यवसाय का, वह बहुत ही आकर्षक लगा । इन दुकानदारोंको लगा कि जनसंघ का शासन आने पर उन्हें ऐसी स्थितियों से निजात मिलेगी । इस वर्ग ने महसूस किया कि अव्यावहारिक कानूनों-नियमों की नंगी तलवारें जो इनके ऊपर अहर्निशि लटकी रहती हैं वे जनसंघ के शासन में हट जायेंगी । जनसंघ ने बनियों को स्थान-स्थान पर विधानसभा और संसद के चुनाव लड़ने के टिकट भी दिये । इससे इस संस्था के प्रति विश्वास की भावना बढ़ती गयी तब तक जब तक शासन के निकट पहुँचने की धूमिल आशा के समय इस जनसंघ ने भी पूर्व की कांग्रेस की तरह टिकट नहीं देकर इन्हें निराश किया । फिर भी आस्थावान लोगों को यह छलावा नहीं खला और ये समय रहते सावधान नहीं हुए ।

इसे जरा अधिक स्पष्ट रुप से देखा जाय । गिरिडीह से पूर्व में कांग्रेस टिकट पर माहुरी जीते थे और उस समय कांग्रेस ने इन्हें टिकट दिया था । तब जनसंघ ने माहुरी को ही टिकट देकर लड़वाया । किन्तु १९७७ में संविद सरकार बनने की आशा जब बलवती हुई तो दूसरे स्थान की दूसरी जाति के एक वैसे व्यक्ति को टिकट दिया गया जो जनसंघ की नीतियों में हृदय से विश्वास नहीं करता था और पीछे आकर कांग्रेस में स्वयं को समर्पित कर दिया । उसके बाद भी जीत की स्थिति होने पर माहुरी जाति को जनसंघ (अब भाजपा) प्रायः अछूत मानती है ।

वैश्य जाति के लोग मुख्य रुप से और माहुरी विशेष रुप से सिद्धान्तनिष्ठ होते हैं । उनकी निष्ठा ऐसी रहती आयी है कि वे पार्टी को जाति से ऊंचा मानते हैं । यह अच्छी बात है किन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में यह सर्वथा असंगत है । अन्य जातियाँ परिस्थिति के अनुसार अपनी राजनीति करती हैं । वोट और बेटी जाति को ही देते हैं चाहे वह किसी भी दल का क्यों न हो । यही कारण है कि वैश्य की किसी भी जात को अच्छी जनसंख्या होने के बावजूद लोग महत्व नहीं देते । श्री लालू प्रसाद यादव ने भले वह स्वार्थ प्रेरित ही हों, वैश्य को कुछ राजनीतिक महत्व दिया है । हो सकता है इसकी वजह से वैश्यों का ध्रुवीकरण हो जाय । जब लालू प्रसाद यादव की बात आयी है तो यह भी जान लेना चाहिए कि १९९० में हिन्दुओं में जो ऊंची और पिछड़ी जाति में संघर्ष हुआ था तो उनमें तीन चार माहुरी युवक मारे गये थे । देखना है कि माहुरियों का यह बलिदान क्या कुछ देता है । किन्तु माहुरियों में इस बलिदान को भंजाने की कला अन्य जातियों की तरह तो है नहीं । मिल-मिलाकर यही हुआ कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जो सुखी और निर्द्वन्द जीवन की बलवती आकांक्षा बेगवती हो रही थी, उस पर तुषारापात हो गया । इतना जरुर है कि कृषि कर्म में लगे हुए लोगों को जमींदारों के मारक जुल्म से निजात मिला । वहीं जिनकी आजीविका का साधन जमींदारी थी उन्हें जमींदारी समाप्ति के कारण परेशानियां भी बढ़ी । ऐसी बात नहीं कि सभी जमींदार जुल्मी ही होते थे । कुछ तो अपनी रियाया के प्रति बहुत उदार थे । खासकर माहुरी जाति के जमींदार दयावान ही थे । जुल्मोसितम करने वाले ऊंची जाति के रंगदार जमींदार थे ।

इस नैराश्य पूर्ण जीवन ने लोगों को संगठित होने को बाध्य किया । हजारीबाग माहुरी महामण्डल के लोगों ने इसमें अगुवाई की क्योंकि इनका क्षेत्र सीमित था और ये कुछ दूरी के चारों ओर हजारीबाग के गिरिडीह अनुमंडल में मुख्य रुप से बसे थे । संयोग से उस समय गिरिडीह में सुविख्यात समाजसेवी बाबू उमाचरण लाल तरवे बसे थे । इनकी प्रेरणा से हजारीबाग माहुरी महामण्डल का पुनर्जागरण हुआ । इस बार उन लोगों ने नाम में थोड़ा परिवर्तन किया । परिवर्तित नाम "माहुरी

वैश्य महामण्डल" रखा गया ।

दक्षिण और मगध का केन्द्र कोडरमा है । यहां दक्षिण और मगध दोनों क्षेत्रों के माहुरी काफी संख्या में बसे हैं । प्रख्यात अभ्रक उद्योगपति छट्टूराम होरिल राम लि० के एक भागीदार छट्टू बाबू मगध क्षेत्र के थे तो दूसरे होरिल बाबू दक्षिण के । फलत: दोनों महामण्डल के वहां मण्डल कायम रहे हैं । इस स्थिति में जब हजारीबाग माहुरी महामण्डल दुबारे अस्तित्व में आया तो कोडरमा के मगध क्षेत्र के लोगों को लगा कि मगध माहुरी महामण्डल को भी जीवित करना चाहिए । इस प्रकार सन् १९५५ में कोडरमा में एक प्रतिनिधि सभा बुलाई गयी, जिसमें निश्चित हुआ कि मगध माहुरी महामण्डल और 'माहुरी मयंक' को चालू किया जाय ।

इस प्रकार स्वतंत्रता के पूर्व काल की तरह माहुरी की संस्थायें सक्रिय हुईं । इन दोनों संस्थाओं के नेताओं की प्रेरणा से ततुल्य अन्य संस्थायें भी कार्यरत हुईं, जिनकी चर्चा यथा स्थान की जायेगी । वातावरण निर्माण करने में मनोभाव परिवर्तन में, रुढ़ियों के कुसंस्कारों को हटाने में शिक्षा के लिये प्रेरणा प्रदान करने में, वैश्यों के संगठित स्वरुप के लिये मिली जुली संस्कार वाली पश्चिम के पिछड़े बन्धुओं के पुनर्मिलन हेतु महाउर वैश्य संघ की स्थापना आदि हुई तो साथ-साथ नयी व्यावसायिक चुनौतियों से लड़ने के लिए स्थानान्तरण, नये व्यवसायों में प्रवेश आदि ऐसे कार्य हैं जिनसे समाज प्रकारान्तर से लाभान्वित हुआ । इसी का परिणाम हुआ कि पटना में जहां केवल मारुफगंज में २५-३० घर माहुरी थे बाकीपुर में भी काफी संख्या में लोग जा बसे । सब मिलाकर करीब चार सौ घर । राजधानी दिल्ली गाजियाबाद और निकटवर्ती हरियाणा के शहरों में करीब पाँच सौ घर माहुरी अभी रह रहे हैं । दूर-दूर में बसे होने के कारण आपसी सम्पर्क सीमित है । बिहार प्रदेश के व्यवसायियों एवं लघु उद्योगियों के सामने जो व्यवस्था, बिजली की क्षीण आपूर्ति की स्थिति बनी है उससे रोजगार की तलाश में अचानक लोग बड़ी संख्या में पलायन कर गये हैं । बम्बई में करीब दो सौ परिवार माहुरियों के हैं । बड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद, गौहाटी, आगरा, बंगलौर, ग्वालियर, आदि

स्थानों में भी सैंकड़ों परिवार निष्क्रमण कर गये हैं ।

इस काल खंड की सबसे दुखद बात यह है कि अभ्रक, कोयला जैसे महत्वपूर्ण खनन उद्योगों में सरकार ने स्वयं काम करना शुरु किया और वामपन्थ की झुकाव वाली सरकार ने गया काटेन एण्ड जूट मिल ऐसे महत्वपूर्ण कपड़ा सूत मिल को भी अधिग्रहीत कर लिया फिर भी यह नहीं चल पा रहा है । यहां यह ध्यान देने की बात है कि सारे सरकारी प्रतिष्ठानों में गैर बनियां लोगों को मुख्य रुप से नियुक्त किया गया जो कि कुछ तो व्यवसायिक परम्परा के अभाव में, और कुछ इस लोभ में कि उनकी जाति के ही अफसर मंत्री ऊपर में बैठे हैं खुलकर खेला । अब तो यह दिन आ गया है कि राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों को निजी व्यक्तियों को सौंपा जा रहा है । ज्ञातव्य हो कि अभ्रक खनन उद्योग एवं व्यवसाय में ९० प्रतिशत माहुरी भाई लगे थे । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहां चालू अभ्रक के खानों की संख्या करीब ६००-७०० की थी अभी कमते-कमते २०-२५ रह गयी है । लाखों मजदूर और हजारों व्यवसायी इससे बेरोजगार हो गये हैं ।

इस विषम स्थिति में भी जो उद्योग व्यवसाय की सोलहों कलाओं में पारंगत थे, निष्ठावान थे, संतुलित विचार रखते थे, अनाप-शनाप खर्च नहीं करते थे वैसे मारवाड़ी, गुजराती, पंजाबी बहुत आगे बढ़ गये । किन्तु माहुरी जाति की अतिशय खर्च की प्रकृति और बिना सोचे समझे क्षमता से ज्यादा बोझ उठाने का गैरवाजिब तरीका उन्हें असफल बनाता रहा है । यही कारण है कि जो पीढ़ी कमाती है, उसके बाद वाली पीढ़ी के अधिकांश लोग उसे बुड़ाकर ही दम लेते हैं । जो थोड़े से समझदार और संतुलित बच पाते हैं वे ही आगे बढ़ते हैं । रुढ़ि प्रेम इनकी नश-नश में भरा है चाहे वह व्यक्तिगत, पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन ही क्यों न हो । जिन लोगों ने रुढ़ि को छोड़कर परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बनाकर किसी भी क्षेत्र में बढ़े, वे अच्छे रहे ।

सामाजिक क्षेत्र में रुढ़ियों की अतिवादिता के कारण छोटी मोटी गलतियों में जो फंसते जातिच्युत कर दिये जाते थे उनसे बहुत सामाजिक

हानि हुई । इन्हें समयानुसार बनाने के लिए कोई कार्यक्रम नहीं चलाये गये । जब लोगों ने अधिकाधिक संख्या में नियम तोड़ा तो अब वे ग्राह्य होते जा रहे हैं । किसी परिवार का कोई युवक या युवती, आज दूसरी जाति के युवती या युवक से परिणय सूत्र में आबद्ध हो जाता है तो पूर्व की भाँति उस परिवार को जातिच्युत अब नहीं किया जाता ।

इसी परिप्रेक्ष्य में संख्या विस्तार और अन्य वैज्ञानिक कारणों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने की बात महाउर वैश्य संघ की ओर से कही गयी, पर यह चालू नहीं हो सका । यह माहुरी जाति, पश्चिम से आई इसकी बात तेजी से की जाती रही, सामाजिक सम्पर्क, आवाजाही, काफी हुई लेकिन उस मंजील तक लोग अभी नहीं पहुँचे हैं जहां पहुँचने से ही सम्बन्ध स्थायी हो पाते - अर्थात् वैवाहिक सम्बन्ध की स्थापना नहीं हो सकी । समय ही बतायेगा कि आगे क्या होगा ।

जब माहुरी जाति प्रताड़ित हुई तो नये-नये धन्धों में स्वयं को लगाने की प्रवृति बढ़ी । मशीन और बिजली, दवा, दालमिल, वनस्पति तेल आदि के थोक विक्रय केन्द्र खुले । टेक्निकल शिक्षा की ओर भी लोगों का झुकाव हुआ । सारे प्रदेश में यह वातवरण बना, महामण्डलों के अधिवेशनों, माहुरी मयंक के लेखों, माहुरी शिक्षा न्यास के सकारात्मक कदमों के कारण जाति में सैंकड़ों डॉक्टर, इंजीनियर बने । दर्जनों कॉलेज के लेक्चरर, रीडर, प्रोफेसर, मुँसिफ, जज, बिक्रीकर पदाधिकारी, आरक्षी विभाग, कृषि विभाग, बैंक, जीवन बीमा निगम, शेयर ब्रोकर एवं स्पृहणीय सरकारी पदों पर नियोजित हुए । कुछ अपवाद को छोड़कर कोई भी बड़ी फैक्ट्री नहीं लग रही है पूर्व में कुछ लगी थी वे नहीं चल सकी । यदि बड़ी फैक्टरियाँ लगती तो बहुत लोगों को नौकरियाँ मिल जाती । प्रसन्नता की बात है १९९६ ई० आते-आते माहुरी युवकों ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई०ए०एस०) और एलाइड सर्विस में सफलता पायी है ।

खण्ड - ३

अध्याय - १

जाति हितैषी संस्थाओं के विवेचनात्मक परिचय

(प्रारंभ से १९९६ ई० तक)

महामण्डल त्रय - समाज को व्यवस्थित, संयमित, संतुलित, गतिशील एवं उर्ध्वगामी बनाने के लिए समाज के मनीषियों एवं हितचिन्तकों ने मगध में मगध माहुरी महामण्डल एवं दक्षिण में हजारीबाग माहुरी महामण्डल नामक संस्थाओं की स्थापना की ।

ऐसी बात नहीं कि इन सामाजिक संस्थाओं के निर्माण के पूर्व समाज को व्यवस्थित एवं सुचारु रुप से संचालित रखने के कोई माध्यम नहीं थे । ये माध्यम निश्चित रुप से थे और इन्हीं माध्यमों के सहारे सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं के पालन भी किये और कराये जाते थे ।

ये माध्यम गुरु पुरोहित के मानवीय सद्गुणों से सम्बन्धित उपदेश जो मुख्यतः धार्मिक, अध्यात्मिक आस्थाओं पर आधारित होते थे । ये उपदेश मन की आन्तरिक शान्ति और परिवेश की पवित्रता को बनाये रखने में सहायक थे । सामाजिक और पारिवारिक स्थितियों को संतुलित संयमित बनाये रखने के लिए समाज में चौधरी का अस्तित्व था । चौधरी माहुरी जाति के ही व्यक्ति होते थे जो वंशानुगत क्रम से कार्यक्षेत्र में प्रतिष्ट होते थे । शादी-विवाह, भरनी-करनी एवं अन्य कार्य प्रयोजनों में इनका मार्गदर्शन परिवार के लिए आवश्यक होता था । चौधरी के निर्णय के विपरीत सामान्यतः कोई भी उपर्युक्त कार्य सम्पन्न नहीं होता था ।

चौधरी वंश के एक वर्तमान सदस्य गिरिडीह जिला के खरगडीहा ग्राम के श्री चुरामणि राम का समाज से अभी भी लगाव है और उन्होंने

अपने पूज्य चौधरी की कार्यावली के बारे में जो सुना उसे पूर्ण रुप से स्मरण किये हुए है उनसे सम्पर्क साधा गया तो उन्होंने यह लिखकर दिया ।

बात बहुत पुरानी है । मैंने जो बातें अपनी पिताजी से सुनी है उन्हें उल्लेख कर रहा हूँ उन दिनों अपने समाज का कोई संगठन, सभा, सोसायटी नहीं था । लोग शादी-विवाह के अवसर पर एकत्र हुआ करते थे । उन दिनों एक मंडप में सात, नौ, दस, ग्यारह तक बेदी हुआ करती थी । इन सब बातों की जानकारी उनकी (अर्थात् चौध री को) रहा करती थी, क्योंकि उस समय के हजारीबाग जिला माहुरी वैश्य के नाम से उनके यहाँ, जिनके यहाँ मंडप होता था, चिट्ठा लिखते । उस मंडप में कितने लड़कों की शादी हो रही है, कल कहाँ से लोग कन्यादान हेतु आ रहे हैं, इन सारी बातों की जानकारी मिल जाती थी । फिर शादी से पहिले वहां १६ कहार वाली पालकी से पहुँच जाते थे और सामाजिक बुराइयों की सब शिकायत उनके पास एकत्र होती थी । सबका निपटारा सबके सामने किया जाता था ।

श्री चुरामणि रामजी से उनके पूर्व पुरुषों के बारे में पूछने पर उन्होंने इस रुप में वंशावली की बात बतायी ।

प्रेम चौधरी निधन वर्ष १८९३ ईस्वी

घनश्याम चौधरी निधन वर्ष १८९५ ईस्वी

(१) निरंजन चौधरी निधन वर्ष १९६३ ईस्वी

(२) कमल चौधरी

(१) हरी चौधरी (२) चुरामणि चौधरी (३) परमेश्वर चौधरी

समाज सेवी श्री बनमाली राम जी मूलतः इन्हीं के ग्राम खड़गडीहा के निवासी हैं । इन्होंने बताया कि निरंजन चौधरी जी के समय तक चिट्ठा लिखाने का कार्य चलता रहा जिसे उन्होंने (श्री बनमाली राम ने) स्वयं अपनी आंखों से देखा था ।

कवि श्री कपिलदेव नारायण जी कविवर गोपीचन्द लाल के भांजा हैं और उन्हीं की देख-रेख में शिक्षा ग्रहण की । ये भी गोपीचन्द जी से चौधरी के बारे में इसी तरह की बातें सुनने की चर्चा करते रहते हैं ।

एक चौधरी परिवार का यह उदाहरण मात्र है । दक्षिण एवं मगध में चौधरियों के बीसियों परिवार थे । ऐसी बातें प्रचलित है कि कोई चौधरी जब किसी परिवार में जाता था उन्हें बैठने के लिए पीढ़ा दिया जाता था, स्वागत-सत्कार किया जाता था । ज्ञातव्य है कि बैठने के लिए पीढ़ा दिया जाना आदर का सूचक था । जैसे- आज कुर्सी है । अभी भी सामान्य घरों में पीढ़ा पर बैठने की प्रथा, खाने की प्रथा न्यूनाधिक रुप से प्रचलित है ।

मगध में शाह खाता वाले ही सामान्यतः चौधरी होते थे । बीस-पच्चीस वर्ष पहले किसी सामान्य व्यक्ति को मजाक करने वाले लोग मजाक में कहते थे कि 'चौधरी आ गेलथुन इनका पीढ़ा में बैठावा' यह इस बात का परिचायक है कि जाति में चौधरियों की पूछ थी ।

गुरु, पुरोहितों द्वारा समाज को व्यवस्थित रखने की बात का अन्दाज इसी से लगाया जा सकता है कि सन् १९१५ के अकबरपुर में सम्पन्न हुए एवं सन् १९१७ में राजगृह में सम्पन्न हुए मगध माहुरी महामण्डलों के अधिवेशनों का सभापतित्व रजौली संगत के तात्कालीन महंत श्री १०८ गोपाल बक्स दास ने किया था । स्मरणीय है कि काकों, धनियापहाड़ी, रजौली, राजगृह और अम्बेर (बिहारशरीफ) के संगतों से माहुरी जाति के सर्वाधिक लोगों के लगाव थे और ये इनके शिष्य हुआ करते थे । हिन्दुओं में गुरुओं की परम्परा कमोवेश आज भी चल रही है । राजगृह के बड़ी संगत के महंत पूज्य श्री १०८ महंत शुकदेव मुनि जी एम०ए० को सौंपकर हरिद्वार चले गये हैं । महंत हंसदेव मुनि जी की प्रतिष्ठा आज भी ज्यों का त्यों है और अक्सर गया आकर अपने शिष्यों को उपदेशामृत पान कराते रहते हैं । गया के पार नदी के जनकपुरी मोहल्ले में माँ मथुरासिनी मंदिर का निर्माण कराके पूजा कर श्री १०८ हंसदेव मुनि जी ने लाखों की सम्पत्ति माहुरियों को एक ट्रस्ट बनाकर दे

दी है ।

पुरोहित वर्ग का समाज में धार्मिक क्रियाओं के लिए आज भी महत्व बना हुआ है । सभी प्रकार के पारिवारिक वैवाहिक श्राद्धीय एवं अन्य पूजा पाठों में इनकी उपस्थिति वांछनीय है । आज तो ये कर्म क्षेत्रिय ब्राह्मणों द्वारा सम्पन्न कराये जाते हैं, किन्तु तीन दशक पूर्व तक प्रायः इनके सारे अधिकार मथुरा के चौबे लोगों या उनके वंश के बिहारवासियों के जिम्मे था । इनमें स्व० पं० गंगा प्रसाद चतुर्वेदी जी का बहुत अधिक वर्चस्व समाज पर था । सच्चे अर्थ में ये अपने यजमान-माहुरियों के हित चिन्तक थे । यह एक ऐतिहासिक और विवाद रहित तथ्य है कि हजारीबाग माहुरी की स्थापना हेतु सर्वप्रथम इन्होंने ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । यह कहना असंगत नहीं होगा कि यदि पूज्य चतुर्वेदी जी इस ओर ध्यान नहीं देते तो पता नहीं कब हजारीबाग माहुरी महामण्डल की स्थापना होती ।

माननीय चतुर्वेदी जी, महंत गोपाल बक्स दास तथा जातीय मनीषियों को इस बात का अहसास था कि यदि ऐसी संस्था नहीं बनी जो कि सामाजिक कार्यों पर हाथ डालकर उन्हें व्यवस्थित रखे तो अनातिदूर भविष्य में समाज को संतुलित रखने वाले माध्यम नकारा हो जायेंगे, क्योंकि देश में लोकतान्त्रिक व्यवस्था के प्रति लोगों के झुकाव होते जा रहे थे । कोई भी माध्यम तब तक बेकार होने वाले थे जिनके लोकतान्त्रिक स्वरुप सम्भवित नहीं थे ।

उपर्युक्त स्थितियों के आलोक में माहुरी महामण्डल की स्थापना की बात असामयिक नहीं कही जा सकती । यह तो एक अत्यन्त सोची समझी और दूरदर्शितापूर्ण कदम था, जिसका कार्यान्वयन यदि नहीं होता तो समाज का स्वरुप अपेक्षाकृत अधिक विश्रृंखलित रहता । यह बात जरुर है साम्प्रतिक परिस्थिति में जबकि सर्वत्र विघटन और विखंडन के स्वर गूँज रहे हैं स्वार्थवाद और व्यक्तिवाद मस्तक ऊँचा किये जा रहे हैं, अन्य संस्थाओं की तरह महामण्डलों की समाजहित की बातें भी नक्कार खाने में तूती की आवाज जैसी लग रही है । पर यह तो कठोर सत्य है

कि महामण्डलों की स्थापना के बाद दशकों तक महामण्डलों की पकड़ समाज में पूरे तौर पर रही और सामाजिक नियमों के विरोध में किसी की हिम्मत कुछ करने की नहीं होती थी । हाल के पिछले वर्षों तक हजारीबाग माहुरी महामण्डल (अब माहुरी वैश्य महामण्डल) की सामाजिक ताकत इतनी मजबूत थी कि क्या मजाल कोई नियम विरुद्ध कार्य कर ले । मगध माहुरी महामण्डल (अब माहुरी महामण्डल) की वैसी मजबूत पकड़ कभी नहीं रही किन्तु जो भी हो समाज को सुसंगठित करने का समुचित प्रयास किया और कई क्षेत्रों में इसने आशातीत सफलता प्राप्त की । मगध माहुरी महामण्डल का क्षेत्र विस्तृत होने के बावजूद इसने कई अवसरों पर ऐसे वातावरण और परिवेश निश्चित रूप से बनाये जिनसे समाज अत्यधिक प्राणवान हुआ, भले यह अप्रत्यक्ष रुप से हुआ हो ।

इतना ही नहीं महामण्डलों की स्थापना के पूर्व प्रयोग के तौर पर माहुरी जाति के संगठनों के प्राण बाबू कारुराम अठघरा ने हजारीबाग जिले में माहुरी जातीय पंचायती एवं मगध के अपने जन्म स्थान सिलाव में माहुरी मण्डल की स्थापना की थी । इस प्रयोग ने बाबू कारुराम अठघरा को आवश्वस्त किया कि यदि इन्हें वृहन्तर परिवेश में संचालित किया जाय तो समाज विशेष रुप से लाभान्वित होगा । समाज की सारी समस्याओं का सामूहिक निदान तो होगा ही सारी जाति को एक सूत्र में बांधकर अभीष्ट सामाजिक हित साधा जा सकेगा । उनकी यह दूर दृष्टि वास्तव में रंग लायी । इन्हीं के जन्म स्थान सिलाव के प्रतिष्ठित व्यक्ति बाबू भगवान दास जी नवदिया का भी इन कार्यों में सहयोग था । सच कहा जाय तो बाबू भगवान दास नवदिया ने मगध में मगध माहुरी महामण्डल की स्थापना की तो बाबू कारुराम अठघरा ने हजारीबाग माहुरी महामण्डल की । इन कारणों से सिलाव कस्बा की ऐतिहासिक महत्व हो गया है ।

माहुरी महामण्डलों की स्थापना

मगध माहुरी महामण्डल एवं हजारीबाग माहुरी महामण्डल

यद्यपि दो अलग-अलग संस्थाएं रही किन्तु इन दोनों की स्थापना के पीछे एक ही प्रेरणा थी जातीय उत्थान की । प्रेरक भी दोनों के एक ही थे ।

२, ३ एवं ४ अप्रैल १९२३ को हजारीबाग माहुरी महामण्डल के मनोनीत सभापति और मगध माहुरी महामण्डलों के संस्थापकों में प्रथम बाबू भगवान दास नवदिया, सिलाव (पटना) के थे । इनके भाषण के कुछ मुख्य इस प्रकार थे । 'शिवलोक वासी बाबू राधाकान्त लाल कन्धवे ने भी यह सुन स्वयं पधारने की कृपा की और माहुरी महामण्डल के कायम करने में पूर्ण सहायता प्रदान की और जिसका फल यह हुआ कि मगध माहुरी महामण्डल कायम हो गया ।'

'मगध माहुरी महामण्डल को कायम कर श्रीमान् बाबू कारुराम जी अठघरा निश्चिन्त नहीं हुए । उन्होंने राजगृह से गिरिडीह लौटकर ही हजारीबाग निवासी भाइयों को जगाना आरम्भ किया और अपने अनवरत परिश्रम के द्वारा सम्वत् १७९० (सन् १९१३) में ही हजारीबाग माहुरी महामण्डल को कायम किया ।'

'मगध माहुरी महामण्डल ने शिवलोक वासी बाबू राधाकान्त लाल जी कन्धवे को प्रथमतः महामण्डल का सभापति निर्वाचित कर बड़ा ही अच्छा काम किया । उन्होंने स्वयं घूमना प्रारंभ किया जिसका भारी प्रभाव स्वतजाति पर पड़ा और इस प्रकार शीघ्रता से कई एक मण्डल भी कायम हो गये ।'

'इस तेजी से मगध माहुरी महामण्डल का कार्य संचालन किया गया और इतना विशेष उत्साह लोगों में हुआ कि कुछ ही दिनों में मगध माहुरी महामण्डल के नेताओं में कई एक कारण वैमनस्य हो गया जिससे महामण्डल का कार्यक्रम शिथिल पड़ गया ।'

'मगध माहुरी महामण्डल की शिथिलता को हजारीबाग महामण्डल के नेतागण सहन नहीं कर सके क्योंकि हजारीबाग तथा मगध माहुरी महामण्डल सुनने को दो संस्थायें प्रतीत होती है परन्तु वास्तव में यह दोनों दो शरीर एक प्राण थे ।'

'माहुरी जाति के गुरु श्री १०८ महन्त गोपाल बक्स दास जी

मगध माहुरी महामण्डल का शिथिल पड़ जाना देख माहुरी जाति के पुर्नः पतन का अँकुर जान पड़ा और उन्होंने हजारीबाग महामण्डल को गत राजगृह मेले में बुलाकर मगध माहुरी महामण्डल को पुनः जागृत कराया । आज हर्ष के साथ शिरोमणि बाबू रामचन्द राम जी ऐसे सुयोग्य सभापति को पाकर अपने निर्दिष्ट मार्ग जाति पर चलाने को तैयार हो गया है ।'

हजारीबाग एवं मगध माहुरी महामण्डलों के उद्देश्यों में पूरी समानता थी और है भी । जाति सुधार विद्या प्रचार, धर्म संचार ये तीन ऐसे बिन्दु हैं जिनके बारे में आज भी दोनों महामण्डलों के सभापति अपने भाषणों में अवश्य चर्चा करते हैं । लगता है कि ये बिन्दु जाति के लिए वेद वाक्य है । दोनों महामण्डलों के अधिवेशनों में लोग एक दूसरे महामण्डल के जाति हितैषियों को निश्चित रुप से आमंत्रित करते हैं जिससे दोनों संस्थाओं के जाति सेवकों में जाति हित की बात होती है । यह भी है कि समाज सेवकों की राय यदि तर्क पूर्ण हुई तो उसे बेहिचक मान लिया जाता है ।

बहुत पीछे करीब बीस वर्ष पूर्व पंगतच्यूत माहुरी बिरादरी की सभा बिहार माहुरी महामण्डल के नाम से बनी इसका उद्देश्य भी इन्हीं दोनों महामण्डलों की भाँति बने ।

हजारीबाग माहुरी महामण्डल परिवर्तित नाम माहुरी वैश्य महामण्डल हजारीबाग माहुरी महामण्डल का कोई क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नहीं है, किन्तु माहुरी वैश्य महामण्डल द्वारा जो पिछले कुछ वर्षों से अधिवेशन के अवसर पर स्मारिकायें एवं 'माहुरी मयंक' में समय-समय पर इनके सम्बन्ध में लेख निकलते रहे हैं और इस महामण्डल के कर्मठ मन्त्री **श्री शक्ति चरण तरवे** ने जो सूचना भेजी है, उसके आधार पर ये अधोलिखित पंक्तियों में लिपिबद्ध किये गये हैं । संभवतः इन्हें प्रामाणिक मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए । फिर भी इसमें सुधार संसोधन परिवर्द्धन की गुंजाइश हो सकती है जिन्हें पुस्तक के आगामी संस्करण में सम्मिलित किया जाना चाहिए ।

सम्वत १९६९ वि० अर्थात् १९१२ ई० में माहुरी वैश्य महामण्डल

की स्थापना स्व० श्री कारु राम जी ने राजगृह में "मगध माहुरी मंडल" के नाम से किया । उस समय वहाँ (मगध) के निवासी दूर-दूर इलाकों में बस कर व्यवसाय और गृहस्थी में लगे हुए थे, जिसके कारण वे आपस में मिल नहीं सकते थे । संगठन के अभाव में समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियां फैल रही थीं । समाज के लोगों के बीच की दूरी बढ़ती जा रही थी । समाज में व्याप्त कुरीतियों से हर व्यक्ति ऊब चुका था ।

स्व० कारु राम जी यह देख कर अत्यन्त शोकाकुल हो गये । उन्होंने सोचा यदि समाज की यही स्थिति रही तो माहुरी जाति की परम्परा नष्ट हो जायेगी । अतः "मगध माहुरी मंडल" की स्थापना कर उन्होंने समाज को संगठित किया ।

इसकी सुचना पंडित गंगा प्रसाद चतुर्वेदी चैत्र सुदी सप्तमी को खरगडीहा के माहुरी निवासियों को दी तथा अपना विचार प्रगट किया कि आप लोगों को भी इसकी स्थापना करनी चाहिए ।

स्व० बाबू कारु राम जी को चैन कहाँ ? उनके हृदय में समाज सुधार की ज्वाला धधक उठी थी । वे सम्वत् १९७० वी० (१९१३ ई०) में गिरिडीह आये तथा इस अंचल की एक सभा का आव्हान किया । मिति ज्येष्ठ वदी सप्तमी को खरगडीहा में सभा हुई जिसमें हजारीबाग माहुरी वैश्य महामंडल की स्थापना हुई, जिसका उद्‌घाटन पं० गंगाप्रसाद चतुर्वेदी ने किया ।

योग्य व्यक्ति के अभाव में सभापति का स्थान रिक्त हो गया । इस सभा में लगभग ८०० उत्साही व्यक्ति उपस्थित हुए । सम्वत् १९७१ (१९१४ ई०) में द्वितीय अधिवेशन खरगडीहा में ही हुआ । इसके सभापति बाबू हरखू राम जी । इस सभा में लगभग १००० व्यक्तियों ने सक्रिय रुप से भाग लिया । इस सभा में अनेक बिछुड़े भाईयों को मिलाया गया । जिससे समाज की एकता में वृद्धि हुई, धर्म और अहिंसा पर जोर दिया गया और दुर्गा पूजा में बलि देने की प्रथा का डट कर विरोध किया गया । स० १९७१ (१९१४ ई०) में ही एक विशेष अधिवेशन मिर्जागंज में संपन्न हुआ । इस अधिवेशन में स्वजातियों के अतिरिक्त अनेक बड़े-बड़े विद्वान भी उपस्थित हुए । महामण्डल को सुचारु रुप से चलाने

के लिए इसे चार भागों में विभक्त कर दिया गया ।

तृतीय अधिवेशन रेम्बा में धूमधाम के साथ सं० १९७२ (१९१५ ई०) में सुसम्पन्न हुआ । चतुर्थ अधिवेशन सं० १९७३ (१९१६ ई०) में भरकट्ठा में हुआ । पंचम अधिवेशन गाण्डेय में सं० १९७५(१९१८ ई०) को हुआ । षष्ठ अधिवेशन सं० १९७६ (१९१९ ई०) चन्दौरी में हुआ । सप्तम अधिवेशन पुनः खरगडीहा में ही सं० १९७७ (१९२० ई०) में हुआ जबकि देश में असहयोग आन्दोलन चल रहा था । नवम अधि वेशन बेंगाबाद में सं० १९७८ (१९२१ ई०) में हुआ । इस अधिवेशन में मगध के विशिष्ट व्यक्ति पधारकर इसकी कार्यवाही में चार चाँद लगा दिये । दशम अधिवेशन सं० १९७९ (१९२२ ई०) में पुनः मिर्जागंज में हुआ । इन सभी अधिवेशनों के सभापति बाबू हरखू राम जी थे ।

एकादश अधिवेशन सं० १९८० (१९२३ ई०) में पंचबा में सम्पन्न हुआ । इस सभा के सभापति बाबू भगवान दास नवदिया थे । इन अधिवेशनों का समाज में गहरा प्रभाव पड़ा, कुरीतियाँ दूर होती गयीं और परस्पर प्रेम बढ़ता गया । शिक्षा का भी प्रसार होने लगा ।

इसी प्रकार प्रगति के पथ पर अग्रसर समाज के सामने १९४१ ई० में २९ वें अधिवेशन के पश्चात् अनेक बाधायें उपस्थित हो गयीं । जिनमें द्वितीय विश्व युद्ध, राष्ट्रीय आन्दोलन, मँहगी आदि प्रमुख थे । इन कारणों से महामण्डल का कार्य स्थगित कर देना पड़ा । फिर भी बीच-बीच में कार्य कारिणी समिति की बैठक हुआ करती थी । इन दिनों "माहुरी छात्रावास" जिसकी स्थापना १९३९ ई० लगभग हुई थी सुचारु रुप से चल रहा था ।

"माहुरी मयंक" के एक पुराने अंक भाग ६ अंक १० अक्टूबर १९२५ ई० से ज्ञात होता है कि "माहुरी वैश्य महामण्डल" के एक विशेष अधिवेशन में जो खरगडीहा में हुआ महात्मा गाँधी का शुभागमन हुआ था । महात्मा गाँधी का भव्य स्वागत किया गया । "माहुरी वैश्य महामण्डल" की ओर से इन्हें देशबन्धू कोष के लिए १००० रूपये की थैली भेंट की गयी तथा मान पत्र भी दिया गया ।

देश परतन्त्रता की बेड़ियों को झनझना कर तोड़ चुका था । स्वतंत्र देश के स्वतंत्र वातावरण से प्रभावित होकर सोया हुआ महामण्डल फिर से जाग उठा । १० वाँ पचम्बा अधिवेशन के कार्य विवरण जो छपा है उसमें बाबू टेकनारायण भदानी जी मन्त्री ने रिपोर्ट में यह बात लिखी है इसलिए इसे प्रामाणिक माना जा सकता है ।

पुनर्जागरण :-

१९६४ ई० के २९ वें अधिवेशन के बाद जब महामण्डल का अधिवेशन बंद हो गया तो समाज में तरह-तरह की कुरीतियाँ फैल गयी । स्वजातीय बन्धु सामाजिक बुराईयों से आक्रांत हो गये लोगों में त्राहि-त्राहि मच गयी । सामाजिक नियमों का खुलकर उल्लंघन होना शुरु हुआ यहाँ तक कि शादी विवाह के रस्मोरिवाज की सीमा ही नहीं रही । तब लोगों को महामण्डल की याद आयी और कई दिनों के विचार-विमर्श के बाद १९-२-५३ को गिरिडीह में स्थानीय माहुरी समाज के सदस्यों की बैठक हुई । जिसका श्रेय बाबू उमाचरण लाल तरवे जैसे योग्य नेता के अलावे स्व० दृगपाल राम जी, रामकृष्ण राम अठघरा, राम प्रसाद राम जी अठघरा, स्व० मलूराम, द्वारिका राम जी, पतरु राम कंधवे हरखू राम गुप्त, श्री कमलापति राम, श्री रामेश्वर राम जी, स्व० चुल्हन राम जी को है । इस बैठक में महामण्डल के पुनर्संगठन पर विचार किया गया । उसी दिन कोडरमा कतरासगढ़, जमशेदपुर तथा इसरी आदि स्थानों में शिष्ट मण्डल भेजने के लिए निश्चित किया गया । शिष्ट मण्डल सभी मंडलों में जाकर लोगों को जागृत तथा उत्साहित किया । १९-४-५३ ई० की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक परसाबाद माइका सिन्डीकेट के प्रांगण में ३०० सदस्यों की उपस्थिति में हुई । लोगों के अपार उत्साह को देखते ही बनता था ।

इस बैठक में माहुरी वैश्य महामंडल अधिवेशन ६ और ७ मई १९५३ को गिरिडीह में बाबू उमाचरण लाल तरवे जी की अध्यक्षता में होना निश्चित हुआ । स्वागत कारिणी समिति के अध्यक्ष बाबू रामप्रसाद राम अठघरा चुने गये और ३० वाँ अधिवेशन इस प्रकार गिरिडीह में संपन्न हुआ जिसमें

मगध के भी स्वजातीय बन्धु पधारे थे । इस अधिवेशन में महामण्डल का नामकरण - "बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल" किया गया ।

७, ८, ९ मई १९५४ को बिहार माहुरी वैश्य महामंडल का अधिवेशन पुनः गिरिडीह में हुआ जिसके मनोनीत सभापति बाबू उमाचरण लाल तरवे तथा स्वागताध्यक्ष बाबू ठाकुर दास भदानी थे । इस अधिवेशन में मगध तथा दक्षिण दोनों अंचलों से लोगों ने भाग लिया । इस अधिवेशन के पहले कोडरमा में एक प्रतिनिधि सभा हुई थी जहाँ एक काम-चलाऊ कमेटी बनी । उस कमेटी द्वारा छपे हुए प्रस्ताव वितरित किये गये । इसे विषय निर्वाचनी तथा खुले अधिवेशन में रखा गया किन्तु वह प्रस्ताव पारित न हो सका ।

२१-१-५५ को कार्यकारिणी समिति की एक बैठक हुई लेकिन उपस्थिति सन्तोषजनक न थी । इसलिए बाबू उमाचरण लाल तरवे ने "बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल" के सभापति पद से त्याग पत्र दे दिया, जिससे बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल भंग हो गया ।

बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल के भंग हो जाने पर हजारीबाग अंचल के लोगों ने पुनः हजारीबाग माहुरी वैश्य महामण्डल का संगठन बाबू उमाचरण लाल तरवे की अध्यक्षता में कायम किया ।

३२ वाँ अधिवेशन हजारीबाग माहुरी वैश्य महामण्डल के नाम से १९५५ ई० के २५, २६ और २७ मार्च को हुआ इस अधिवेशन में बाबू उमाचरण लाल सभापति तथा स्वागताध्यक्ष बाबू ठाकुर दास भदानी थे । इस अधिवेशन में श्री कृष्ण बक्स दास जी रजौली, १०८ स्वामी हँसमुनिदेव परम पूज्य स्वामी कुटस्थानन्द जी उपस्थित हुए थे तथा तत्कालीन लोकसभा के सदस्य राजस्व मंत्री बाबू नागेश्वर प्रसाद सिन्हा भी सभा में पधारे थे उन्हें मान पत्र दिया गया था ।

३३ वाँ अधिवेशन १९५६ अप्रैल में खरगडीहा में हुआ था । इसके अध्यक्ष थे डॉ० ठाकुर राम कन्धवे एवं स्वागताध्यक्ष थे श्री डोमन राम भदानी । इस वर्ष की कार्यकारिणी समिति की दो बैठकें हुई ।

३४ वाँ अधिवेशन उमाचरण लाल तरवे की अध्यक्षता में मई

१९५७ में पचम्बा में हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री डॉ० गोपी कृष्ण गुप्ता वैद्य थे। इस अधिवेशन में छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति को शिक्षाऋण के रुप में देने का निश्चय किया गया। इस वर्ष मण्डल के सामने छोटानागपुर बैंक डूब जाने के कारण आर्थिक कठिनाईयां उपस्थित हुई जिनकी पूर्ति अल्पकालीन चन्दा से की गयी।

३५ वाँ अधिवेशन भरकट्ठा में बाबू बन्धन राम भदानी के सभापतित्व में हुआ। स्वागताध्यक्ष थे कमला पति राम जी इस अधिवेशन में महामण्डल के लिये एक जीप लेने का निश्चय लिया गया जिसके लिये लोगों ने विशेष चन्दा लिखवाया।

३६ वाँ अधिवेशन १९५९ में हुआ जिसके सभापति बाबू हरखूराम गुप्ता और स्वागताकारिणी के सभापति बाबू चूल्हन राम एकघरा थे। इस अधिवेशन में आपसी झगड़े को निपटाने की एक समिति का संगठन किया गया।

३७ वाँ अधिवेशन सन् १९६० में बेंगाबाद में हुआ इसके सभापति थे बाबू रघुनन्दन राम तथा स्वागताध्यक्ष थे बाबू भगवान दास चरणपहाड़ी। इस अधिवेशन में अगले वर्ष स्वर्ण जयन्ती मनाने का निश्चय किया गया।

१९६१ में महामण्डल की स्थापना के ५० वर्ष पूरे हो गये। इस वर्ष स्वर्ण जयन्ति बड़े ही धुमधाम से माहुरी छात्रावास में गिरिडीह में बाबू उमाचरण लाल तरवे के सभापतित्व में मनाया गया। स्वागताध्यक्ष थे बाबू रामप्रसाद अठघरा। वैवाहिक नियमावली और दण्ड विधान पुस्तक इसी वर्ष प्रकाशित करवाया गया।

५१ वाँ अधिवेशन १९६२ में मिर्जागंज में श्री पतरुराम कन्धवे के सभापतित्व में हुआ तथा स्वागताध्यक्ष श्री डोमन राम थे। इस अधिवेशन में निश्चय हुआ कि महामण्डल का भार नवयुवकों पर सौंपा जाय।

५२ वाँ अधिवेशन १९६२ में गांडेय में हुआ। सभापति थे बाबू रामप्रसाद राम अठघरा तथा स्वागताध्यक्ष थे श्री झरीराम कुटरियार। इस

अधिवेशन में शादी के समय वेदी पर रेडियो पंखा देने पर रोक लगाया गया। उमाचरण लाल तरवे स्थायी सभापति निर्वाचित हुए।

५३ वाँ अधिवेशन १९६४ में मनोनीत सभापति श्री पुरनानन्द तरवे के सभापतित्व में गिरिडीह में हुआ स्वागतकारिणी के सभापति थे श्री भवानी राम-चरण पहाड़ी। इस प्रकार इसी अधिवेशन से नवयुवकों ने महामण्डल के कार्यों में सक्रिय सहयोग दिया। इसी वर्ष माहुरी मण्डल क्षेत्र में जनगणना हुआ।

१९६५ में ५४ वाँ अधिवेशन बाबू उमाचरण लाल तरवे के सभापतित्व में कतरासगढ़ में बड़े धूमधाम से मनाया गया स्वागताध्यक्ष थे डॉ० ठाकुर राम गुप्ता। इस अधिवेशन में वैवाहिक दण्ड विधान में संशोधन कर नियम भंग कर विवाह करने वालों को १० वर्ष पंगतच्युत करने का विधान बनाया गया। इस अधिवेशन में माननीय रामेश्वर दयाल गुप्ता भी उपस्थित थे। माहौर, माथुर, वैश्य संघ में महामण्डल को सम्मिलित करने का निर्णय लिया गया और हजारीबाग शब्द निकालकर माहुरी वैश्य महामण्डल रखा गया। वेदी चुकती की रकम ५१ रूपया से बढ़ाकर ७५ रूपया कर दिया गया।

५५ वाँ अधिवेशन गिरिडीह छात्रावास में बाबू ठाकुर दास भदानी के सभापतित्व में १९६६ ई० में सम्पन्न हुआ। स्वागताध्यक्ष थे कविवर भूषण सत्संगी। इस अधिवेशन में बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री बाबू कृष्ण बल्लभ सहाय भी पधारे थे। उन्होंने जातीय संगठन के लाभ के बारे में भाषण भी दिये।

५६ वाँ अधिवेशन पुनः गिरिडीह में १९६७ ई० में हुआ। इसके सभापति थे बाबू तालेवर राम और स्वागताध्यक्ष बाबू पूनीतचन्द राम कपसिमे। इस अधिवेशन में मगध अंचल के अनेक गणमान्य व्यक्ति पधारे थे। माहुरी मयंक पुनः प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ था। माहुरी मयंक समिति में इस अंचल के भी सदस्य लिए गये।

श्री रामप्रसाद राम कुटियार के सभापतित्व में १९६८ में गिरिडीह में ५७ वाँ अधिवेशन मनाया गया। स्वागताध्यक्ष थे बाबू पूनीचन्द राम

कपसिमे । यह अधिवेशन लग्न के बाद आषाढ़ के महीने में सम्पन्न हुआ था क्योंकि पहले जो समय निश्चित किया गया था उस समय गिरिडीह नगर में कतिपय कारणों से कर्फ्यू लगा दिया गया था । अत: इस तिथि के कार्यक्रमों को स्थगित कर देना पड़ा । इस अधिवेशन में बेदी पर चाँदी के बर्तनों को देना बन्द कर दिया गया तथा मण्डलों को पुनर्गठन करने का निश्चय किया गया ।

५८ वाँ अधिवेशन १९६९ में राम प्रसाद राम कुटिरयार की अध्यक्षता में मिर्जागंज में हुआ । स्वागताध्यक्ष थे बाबू युगल किशोर राम वैसखियार । इस अधिवेशन में एक सहायता कोष की स्थापना के लिए रैफल का आयोजन किया गया जिसमें १९५६ रुपये की आय हुई । इस रकम से कई विधवायें रोगग्रस्त तथा वृद्ध तथा वृद्धा की सहायता की गयी । इस अधिवेशन में मंडलों की संख्या बढ़ाकर २६ कर दी गयी ।

१९७० के सभापति श्री रामप्रसाद राम ही रहे मन्त्री थे श्री खगपति राम । १९७१ में प्रख्यात समाजसेवी एवं राजनीतिज्ञ श्री सदानन्द प्रसाद भदानी सभापति हुए मन्त्री श्री खगपति राम ही रहे । १९७२ में छत्रपति राम गुप्ता १९७३ में योगेश्वर राम सेठ, सभापति और श्री सत्यनारायण तरवे मन्त्री रहे । १९७४ में श्री प्रभूदयाल गुप्ता सभापति एवं मन्त्री उमेश प्रसाद अधिवक्ता हुए । १९७५, १९७६ और १९७७ में सभापति थे श्री खगपति राम और मन्त्री श्री सत्यनारायण तरवे १९७८ के सभापति श्री काशी नाथ गुप्ता और १९७९ के सभापति श्री हरीराम एम०एस०सी० थे । मन्त्री थे श्री सत्यनारायण तरवे । १९८० में सत्यनारायण बाबू सभापति हुए और खगपति बाबू मंत्री । दामोदर प्रसाद भदानी १९८१ में, परमेश्वर प्रसाद बढ़गवे १९८२ में, सत्यनारायण तरवे १९८३ में, बल्देव राम बैशखियार १९८४ में सभापति हुए और इन सभी के साथ श्री देवकीनन्दन राम मंत्री रहे । १९८५ में कालीचरण तरवे १९८६ में राम प्रसाद राम कुटरियार, सभापति और यदुनन्दन राम मन्त्री रहे । १९८७ में श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, १९८८ में और १९८९ में श्री सत्यनारायण सभापति और देवकीनन्दन राम मन्त्री रहे । १९९० और १९९१ में श्री विन्देश्वरी प्रसाद अधिवक्ता, सभापति और ठाकुर चन्द राम

मन्त्री रहे । १९९२ में श्री ध्रुव नारायण भदानी सभापति और श्री शक्ती चरण तरवे मन्त्री चुने गये । वर्ष १९९३ के सभापति मन्त्री, ध्रुवनारायण भदानी एवं शक्तीचरण तरवे बने रहे । उपर्युक्त अवधि में स्थायी सभापति बाबू कमलापति राम तरवे एवं स्थायी उप सभापति श्री राम प्रसाद राम कुटरियार बने रहे ।

१९९४ में इसरी अधिवेशन में श्री ध्रुवनारायण भदानी १९९५ में झुमरीतिलैया में श्री सत्यनारायण तरवे और १९९६ हजारीबाग के बिनोबा भावे विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर डॉ० विनोदिनी तरवे गिरिडीह अधिवेशन के सभापति रहे । इन तीनों वर्षों में श्री शक्ति चरण तरवे मन्त्री बने रहे ।

१९९५- विनोदिनी तरवे उप कुलपति विनाबाभावे विश्वविद्यालय । १९९६ श्री सत्यनारायण राम तरवे १९९७ में श्री राजकुमार राम भदानी तीनों वर्षों में पुराने मंत्री ही रहे ।

१९७१ में जिस अधिवेशन के सभापति श्री सदानन्द प्रसाद भदानी थे झुमरीतिलैया में हिरक जयन्ती मनायी गयी थी । इसमें रजौली के महन्त पूज्यपाद श्री श्री १०८ श्री कृष्ण बक्स दास जी एवं तात्कालीन प्रख्यात साहित्यकार एवं सांसद श्री शंकर दयाल सिंह भी पधारे थे ।

मगध माहुरी महामण्डल (परिवर्तित नाम: माहुरी महामण्डल)

माहुरी महामण्डल (पूर्व नाम मगध माहुरी महामण्डल) का प्रामाणिक इतिहास प्राप्त नहीं हो सका है । इसके वर्तमान पदाधिकारियों के पास भी रिकार्ड नहीं है । इसलिए समय-समय पर "माहुरी मयंक" में इस महामण्डल के बारे में जो बातें प्रकाशित हुई है उसे हम उद्धृत कर रहे हैं । ध्यान देना चाहिए कि मयंक के सारे अंक उपलब्ध नहीं है फलत: जो भी अंक मिले उन्हीं के आधार पर निम्नांकित बातें लिखी जा रही है ।

नवगठित माहुरी महामण्डल के संयोजक मंत्री एवं अध्यक्ष रहे प्रख्यात समाजसेवी श्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी० ने २८ एवं २९ मई १९७० को सम्पन्न हुए माहुरी महामण्डल के १६ वें अधिवेशन में अध्यक्ष

की हैसियत से कुछ बातें कही जिसके कुछ अंश इतिहास पर प्रकाश डालते हैं ।

'मगध माहुरी महामण्डल का जन्म सन् १९१२ में हजारीबाग माहुरी महामण्डल का जन्म सन् १९१३ में और "माहुरी मयंक" का जन्म अगस्त १९१४ में हुआ । ये तीनों संस्थायें आज तक जीवित और जागृत हैं । हजारीबाग अंचल की संस्था तो प्राय: नियमित रुप से केवल एक बार के तरह त्रर्षीय स्थगन के अनन्तर अपना वार्षिक अधिवेशन भी करता रहा है और अपने सदस्यों की अनुशासनबद्ध प्रगति के लिए बधाई का पात्र भी है । मगध अंचल की संस्था नियमित रुप से नहीं चल पायी है । अनेक कारणों से जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ ही सर्वोपरि रहा है- संस्था में अनेक उतार-चढ़ाव आये । संगठन कभी शिथिल हो गया तो कभी पर्याप्त शक्तिशाली । अधिवेशन भी कभी तो नियमित रुप से वार्षिक क्रम में हुए और कभी कई वर्षों के अन्तर से । परन्तु ऐसा लगता है कि महामण्डल तथा मंडलों का कायम रहना ही इस समाज की प्रकृति का स्वाभाविक लक्षण है । जब-जब संगठन शिथिल हुआ है, इसके सदस्य और नेता बेचैन हुए प्रतीत हुए हैं और संस्था का पुनर्जागरण अविलम्ब हुआ है । इस अन्ठावन वर्ष की अवधि में माहुरी महामण्डल ने अपना अस्तित्व कभी भी नहीं खोया ।' इसी १६ वें अधिवेशन के अवसर पर जाति हितैषी एवं "माहुरी मयंक" के प्रकाशक बाबू हरिहर प्रसाद अठघरा का भाषण जून ७० के "माहुरी मयंक" में छपा है जो कि निम्न रुप में है ।

'सर्वप्रथम मगध माहुरी महामण्डल के नाम से इसकी स्थापना सन् १९१२ में राजगीर के मलमास मेले में स्वनामधन्य बाबू भगवान दास नवदिया ने किया उनके साथ स्व० बाबू कारुराम अठघरा, बाबू मधुसूदन प्रसाद तरवे एवं केशव लाल तरवे थे । जाति हित के लिए तीन मुद्दे तय किये गये । जाति सुधार, धर्म संचार एवं विद्या प्रचार । राजगीर से लौटकर बाबू कारु राम जी और पं० गंगा प्रसाद चतुर्वेदी हजारीबाग जिला गये । बाबू कारुराम गिरिडीह में बस रहे थे । उस अंचल के लोगों को उत्साहित करके मगध माहुरी महामण्डल की रुप रेंखा के अनुसार उन लोगों ने उसी अंचल के बन्धुओं को भी हजारीबाग माहुरी महामण्डल कायम करने पर

बल दिया । परिणाम स्वरुप उधर भी १९१३ ई० में माहुरी महामण्डल की स्थापना खरगडीहा में हुई ।'

'राजगीर से लौटकर राधाकान्त जी भगवान दास नवदिया, केशोलाल और मधुसूदन प्रसाद के साथ मगध क्षेत्र में भ्रमण करके अनेक मण्डलों को कायम किया और इस प्रकार मगध में जगह-जगह माहुरी मण्डल कायम हुआ जिससे जाति सुधार का कार्य प्रारंभ हुआ । समाज के परम उत्साही बाबू प्रभू दयाल गुप्त झरिया में वास कर रहे थे और जाति हित की लगन उनके हृदय में भरा था । उन्होंने १९१४ के अगस्त मास में सर्वप्रथम 'माहुरी मयंक' का प्रकाशन किया । इसके संपादक स्वनामधन्य बाबू गोपीचन्द लाल बड़गवे हुए ।

'सन् १९१२ से १९३६ तक मगध क्षेत्र में महामण्डल के १२ अधिवेशन हुए और इस मध्य हजारीबाग एवं मगध के बन्धुओं के बीच परस्पर सम्पर्क दृढ़ होता गया । यहाँ तक कि मगध के अधिवेशन में हजारीबाग के बन्धु सभापति निर्वाचित हुए और हजारीबाग के अधिवेशन में मगध के नेता सभापति बनाये गये । बाबू भगवान दास जी के अतिरिक्त समाज के अन्य विज्ञ नेतागण तो समाज हित के कार्य में रत हुए उनमें मुख्य थे राधाकान्त लाल कन्धवे हिसुआ, रामचन्द राम भदानी, मधुसूदन प्रसाद, केशो लाल तरवे, दुलचन्द राम हिसुआ, नेमचन्द राम बिहार, रामकृष्ण राम लोहानी नूरसराय, नागाराम दीवान गया, कारुराम भदानी गया, चेतूलाल बराविधा, रामदास जी, खिजर सराय, प्रभुदयाल गुप्त झरिया, गोपीचन्द लाल बड़गवे हिसुआ, हरिहर प्रसाद लोहानी इत्यादि । जैसे-जैसे समाज में जाति सुधार का कार्य बढ़ा और बाबू रामचन्द्र राम ने अपने सभापतित्व काल में विशेष श्रद्धा से जाति हित समारोहों का आयोजन किया, धन का व्यय करके जाति हित के अनेक कार्य किये । इससे स्वजाति बन्धुओं ने उन्हें जाति शिरोमणि के पद से विभूषित किया और मगध माहुरी महामण्डल के स्थायी सभापति सर्व-सम्मति से चुने गये । आप के ही सभापतित्व काल में शायद १९२५ में ही यह संस्था सोसायटी रजिस्ट्रेसन एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत भी किया गया था । इन्हीं के कार्य काल में माहुरी जाति के विद्यार्थियों को मासिक अनुदान पढ़ाई जारी रखने हेतु भी

दिया गया था और कुछ युवक पढ़कर सरकारी नौकरियों में प्रवेश पा चुके थे । कुछ गरीब लाचार विधवाओं को भी सहायता दी गयी । परन्तु वे सब सीमित आकार में ही रहे ।'

'परन्तु जैसा सभी सामाजिक जातिय संस्थाओं का हाल रहा है, कभी सक्रिय, कभी निष्क्रिय माहुरी महामण्डल कुछ कारणवश शिथिल पड़ गया और प्राय: बहुत वर्षों तक सुप्त रह गया । इसी बीच छिटपुट रुप से कुछ मण्डल अपने क्षेत्र में कार्य करते रहे । कुछ धनीमानी सज्जनों ने छात्रों को छात्रवृत्ति देकर उनकी पढ़ाई में मदद की और परिणाम स्वरुप अनेक स्वजाति उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने पैरों पर खड़े हो गये । अनेक मण्डल अपने उद्योग से मण्डल के लिए भूमि सम्पत्ति अर्जित की कुछ ने अनुदान चन्दा इत्यादि से अपने सीमित दायरे में कार्य भी किया, परन्तु जैसा पहिले कहा जा चुका है पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई ।'

इनके मुद्रित भाषण के निम्नांकित अंश माहुरी महामण्डल द्वारा कार्य होने का इतिहास प्रस्तुत करता है ।

माहुरी जाति के सुधार तथा उन्नति का श्रेय श्रीमान् बाबू कारु राम जी अठघरा सिलाव निवासी हालमुकाम गिरिडीह को ही है । आपने ही सर्वप्रथम सम्वत् १९४७-४८ (ईस्वी सन् १८९०) में श्रीमान् बाबू गयाराम जी भदानी पचम्बा निवासी के साथ मिलकर मुकाम गांडे रामनगर में माहुरी जातीय पंचायती निरुपण की थी और श्रीमान बाबू गया राम जी "माहुरी भूषण" नामक ग्रन्थ को छपवाकर माहुरी जाति इतिहास को जाति सुधार के लिए प्रचार किया था । परन्तु वैमनस्य हो जाने के कारण यह माहुरी पंचायती शिथिल पड़ गयी थी ।

हजारीबाग प्रान्त में अपने उद्देश्य को सफल होते, नहीं देखकर श्रीमान् बाबू कारु राम जी ने अपनी मातृभूमि की शरण ली तथा जाति सुधार और धर्म संचार को लेकर अपनी जन्मभूमि सिलाव में ही स० १९६१ (सन् १९०४) में एक सभा मेरी अनुपस्थिति में कायम की । उन्होंने ही जाति सुधार का बीज बोया था जिसका प्रभाव यह हुआ कि सिलाव मण्डल में जाति सुधार होने लगा । हर साल बाबू कारु राम जी

अवकाश मिलने पर उपदेश देने को आया करते थे । सिलाव में सत्संग सभा स० १९६७ (सन् १९१०) में कायम हुई । उसमें धर्म संचार केवल अपने ही जाति में नहीं हुआ वरन् अन्य जातियों में भी फैल गया ।

उक्त सत्संग के बृहत् अधिवेशन में जो राजगृह में स० १९६९ (सन् १९१२) में हुआ और जिसमें बाबू कारु राम जी अठघरा ने स्वर्गीय बाबू मधुसूदन प्रसाद तरवे तथा स्वर्गीय बाबू केशवलाल जी तरवे की मंत्रणा से यह निश्चित किया कि इस सुअवसर में यदि माहुरी जाति हित में कोई कार्य किया जाय तो अत्युत्तम होगा ।

'राजगृह मेले में प्राय: मगध भर के माहुरी भाई अवश्य आते हैं, यही विचार कर एक कापी बनाई गई और माहुरी मण्डल के तीन उद्देश्य विद्या प्रचार, जाति सुधार और धर्म संचार के विषय को उल्लेख कर सत्संग सभा के पण्डाल में रखी गयी । आगत स्वजाति भाइयों से पूछा गया कि माहुरी मण्डल के कायम करने में सम्मति देते हैं ? बड़े हर्ष के साथ कहना पड़ता है कि सब भाइयों ने स्वीकार किया कि कायम हो ।

स्व० अठघरा जी के निम्न अंश द्रष्टव्य है : अपनी जाति की यह शिथिलता हमारे कोडरमा के स्वजातीय बन्धुओं को अखर गयी और गत सन् १९५४ में बाबू छदूराम भदानी, बाबू किशुन चन्द राम भदानी, बाबू जनकदेव आर्य, बाबू नारायण राम बरहपुरिया एवं बाबू काशीराम कपसिमे इत्यादि सज्जनों ने मिलकर एक प्रतिनिधि सभा बुलायी और एक दिन का सम्मेलन किया और माहुरी महामण्डल की पुनर्स्थापना हुई । इसी सभा में यह भी तय हुआ कि "माहुरी मयंक" के प्रकाशन के बिना बंगाल बिहार और उड़ीसा में बसे माहुरी बन्धुओं को जागृत करना कठिन होगा । अतः बाबू छद्दूराम किशुनचन्द राम ने एक मुश्त २०००/- दो हजार धन देकर "माहुरी मयंक" के पुनर्प्रकाशन के लिए प्रोत्साहित किया और वर्तमान "माहुरी मयंक" सन् १९५५ के अगस्त माह में पुनः उदित हुआ । इसके प्रकाशक बाबू हरिहर प्रसाद जी अठघरा और संपादक श्री शिव प्रसाद लोहानी चुने गये ।

उसी सभा में "माहुरी महामण्डल" के लिए बाबू छद्दूराम

भदानी अस्थायी सभापति और श्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी० संयोजक चुने गये । १९५७ में गया के पुरानी गोदाम में छट्टू बाबू के स्थायी सभापतित्व में वृहत् और ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ । इसके मन्त्री श्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी० चुने गये । कार्यकारिणी समिति में समाज के सभी मुख्य हितैषी लिये गये । इसी अवसर पर रात्रि में एक वृहत् कवि सम्मेलन श्री शिवप्रसाद लोहानी के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ । इस कवि सम्मेलन का उद्घाटन यशस्वी और हिन्दी साहित्य के मूर्द्धन्य कवि - "हंस कुमार तिवारी" ने किया । कवि सम्मेलन में सभापति श्री शिव प्रसाद लोहानी का मुद्रित भाषण काव्य साहित्य की स्थायी निधि के रुप में हिन्दी काव्य जगत में प्रख्यापित हुआ । श्री लोहानी ने इस भाषण में साहित्य को ऐसे रुप में प्रस्थापित किया जिससे इनके हिन्दी के काव्य-साहित्य पर पकड़ प्रतीत होती है ।

इस गया अधिवेशन के बाद माहुरी जगत में सामाजिक गतिविधियाँ तेज हो गयी । अधिवेशन के पूर्व बिहार एवं उड़ीसा के सभी प्रमुख नगरों में एक शिष्ट मंडल में सर्व श्री योगेश्वर प्रसाद, शिव प्रसाद लोहानी, हरिहर प्रसाद अठघरा, प्रो० केदारराम गुप्त, हरिहर प्रसाद कपसिमे, नारायण राम बरहपुरिया, काशीराम कपसिमे, गंगा प्रसाद, जनकदेव आर्य, देवनारायण भदानी थे ।

तीन कारों पर घूमने वाले इस शिष्ट मण्डल ने समाज में एक नयी चेतना की लहर पैदा कर दी । माहुरी मयंक के लिए भी उचित वातावरण की निर्मिति हुई । लगता था कि पुनर्गठित "माहुरी महामण्डल" और "माहुरी मयंक" समाज की सारी आकांक्षाओं का प्रतीक था । लोगों में इतना उत्साह दृष्टिगोचर हुआ कि सभी लोग एक स्वस्थ समाज के निर्माण को महत्वपूर्ण मानने लगे ।

इस शिष्टमण्डल ने झरिया (धनबाद), कतरास, जमशेदपुर, चाईबासा, रायरंगपुर, राँची, रजौली, बिहारशरीफ, इस्लामपुर, पटना, गया आदि स्थानों का दौरा किया था ।

"माहुरी मयंक" के अप्रैल-मई १९९५ के अंक में छपे श्री नन्द लाल प्रसाद द्वारा भेजा गया

"माहुरी महामण्डल" के अधिवेशनों के स्थान व सभापति का विवरण :-

वर्ष	स्थान	सभापति
१९१२	राजगृह	राधाकान्त लाल कन्धवे
१९१५	अकबरपुर	महन्त गोपाल बक्स दास, रजौली
१९१७	राजगृह	महन्त गोपाल बक्स दास, रजौली
१९२०	गया	प्रभुदयाल गुप्त झरिया
१९२१	गया	दामोदर प्रसाद तरवे, गया
१९२२	बिहारशरीफ	हरखू राम, हजारीबाग
१९२३	बरबीघा	प्रभुदयाल गुप्त, झरिया
१९२४	नवादा	भगवान दास नवदिया, सिलाव
१९२५	खुदागंज	रामलाल भदानी, गया
१९२६	गया	उमाचरण लाल तरवे, गया
१९२७	मखदुमपुर	रामचन्द्र राम भदानी
१९३४	राजगृह	श्रीकान्त लाल कन्धवे, हसुआ
१९५७	गया	छट्टूराम भदानी, कोडरमा
१९६६	गया	दुर्गा चरण लाल वाणप्रस्थी, सिलाव (प्रतिनिधि सभा)
१९७०	गया	श्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी०, गया
१९७१	गया	श्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी०, गया
१९७२	गया	श्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी०, गया
१९७३	झरिया	प्रो० डॉ० केदार राम गुप्ता, भागलपुर
१९७५	नवादा	प्रो० डॉ० केदार राम गुप्ता, भागलपुर
	बरबीघा	श्री हरीराम भदानी एम०एस०सी०
	झरिया	बाबू गुरुप्रसाद राम भदानी
	गया	श्री पूर्णानन्द तरवे
	गया	श्री पूर्णानन्द तरवे
१९९४	पटना	श्री सदन राम

मगध माहुरी महामण्डल के मंत्रियों एवं अन्य पदाधिकारियों की क्रमबद्ध सूची कहीं प्राप्त नहीं हो सकी । किन्तु माहुरी मयंक के पुराने अंकों एवं अन्य स्त्रोतों से जो थोड़ी बहुत जानकारी मिली है उसके आधार पर निम्नांकित व्यक्तियों ने मन्त्री पद सम्भाला है :

सर्वश्री मधुसूदन प्रसाद, हरिहर प्रसाद लोहानी, उमाचरण लाल तरवे, राधाराम, योगेश्वर प्रसाद, पूर्णानन्द तरवे, विजय चन्द्र प्रसाद भदानी, सच्चिदानन्द गुप्त ।

इनमें से प्राय: सभी ने एकाधिक अध्यक्षों के साथ मन्त्री का पद सम्भाला है ।

माहुरी वैश्य महामण्डल की तरह यहाँ भी प्रारम्भ में स्थायी अध्यक्ष की परम्परा थी । उसी के तहत दशकों तक गया के बाबू रामचन्द्र राम जी भदानी स्थायी अध्यक्ष रहे । इनका जातीय, व्यावसायिक, औद्योगिक एवं नैतिक प्रभाव न केवल जाति में अपितु क्षेत्र के सभी वर्गों में था । जाति में इनके प्रभाव का आकलन इसी से किया जा सकता है कि महामण्डल ने इन्हें "जाति शिरोमणि" की उपाधि से विभूषित किया था । बाबू प्रभुदयाल गुप्त को "जाति कुलभूषण" तथा बाबू गोपीचन्द लाल गुप्त को "कवि शिरोमणि" की उपाधि से विभूषित किया था ।

जब तक "जाति शिरोमणि" रामचन्द्र राम जी भदानी जीवित रहे, स्वयं में महामण्डल की प्रतिमूर्ति थे । जब महामण्डल शिथिल हो गये तब भी जातीय कार्य और समस्याओं का समाधान किया करते थे । ऐसी किसी बात का पता नहीं चल पाया है कि इसके बाद भी कोई स्थायी अध्यक्ष हुआ । लगता है कि स्वातंत्रपूर्व काल तक ये आजीवन स्थायी अध्यक्ष पद पर आसीन रहे । पुनर्जागरण काल के बाद स्थायी अध्यक्ष का पद नहीं रहा किन्तु कुछ इसी रुप में कोडरमा के बाबू छदूराम भदानी आजीवन स्थायी अध्यक्ष पद पर समाहृत रहे ।

स्मरणीय है कि दशकों तक ये दोनों विभूतियाँ - बाबू रमाचन्द्र राम और बाबू छदूराम समाज के शीर्ष पुरुषों में गिनें जाते रहे ।

माहुरी नवयुवक सभा :

दोनों महामण्डलों की स्थापना काल से ही महामण्डल एव मण्डल में अनुसंगिक नवयुवक सभायें बनती रहीं जिनके उद्देश्य महामण्डल को सहयोग करके सामाजिक कार्यों को आगे बढ़ाना था । मण्डलों की नवयुवक सभायें तो उतनी सक्रिय नहीं रही किन्तु महामण्डल की नवयुवक सभा अपेक्षाकृत अधिक सशक्त रहीं । इनके कोई विस्तृत विवरण और क्रमवद्ध स्वरुप नहीं मिले । इस कारण इनके प्रामाणिक और सुसंगत स्थिति की चर्चा संभव नहीं ।

मगध माहुरी महामण्डल का ६० के दशक में जो पुनर्जागरण हुआ उसमें लखीसराय के निवासी तत्कालीन गया कॉलेज के छात्र स्व० जनार्दन प्रसाद बरहपुरिया ने मण्डलों में घूम-घूम कर युवकों को समाज सेवा में लगने का प्रयास किया । इनका विशेष जोर इस बात पर रहता था कि युवक पढ़ाई नहीं छोड़ें और शिक्षित होकर ही किसी व्यवसाय में लगें । अनेक स्थानों पर इन्होंने कर्मठ छात्रों को संगठित भी किया । इनके बाद ज्ञात-अज्ञात अनेक लोगों ने इसमें रूचि दिखायी जिनके प्रमुख हस्ताक्षर हैं श्री भोला प्रसाद चरण पहाड़ी, श्री राजेन्द्र प्रसाद अकेला, श्री सच्चिदानन्द नवदिया, श्री विजय नवदिया आदि । इधर केन्दुआ-करकेन्द के श्री युगल किशोर गुप्ता एवं श्री अरूण कुमार गुप्ता का माहुरी नव युवक संघ अभी बहुत सक्रिय है और उल्लेखनीय कार्य कर रहा है, इसीलिए इस संगठन की विस्तृत चर्चा इसी प्रस्तर में यथास्थान की गयी है ।

श्री भोलाचरण पहाड़ी ने पूर्व में इस नवयुवक संघ को नयी दिशा दी थी । इसके कई समारोह हुए थे जिनमें लखीसराय का समारोह उल्लेखनीय है । श्री सच्चिदानन्द नवदिया ने नालन्दा जिला स्तर का समारोह सांहसराय में कई बार अच्छे ढंग से किया ।

बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल :

माहुरी तीन उपवर्गों में विभाजित थे । कुछ समाजसेवियों ने इस विभाजन को समाप्त करने की ठानी । ज्ञातव्य बात यह है कि छोटी-मोटी

सामाजिक गलतियों के लिए जातिच्युत करने की परम्परा बनी हुई थी, अनेकों प्रमाण मौजूद थे । मूल धारा के अतिरिक्त दूसरी धारा वह थी जो कि तत्कालीन पटना जिले के नगर नौसा कराय परसुराय, फतुहा और खुसरुपुर में मूल रुप से बसी थी । उस समय इस दूसरी धारा की संख्या पचास घर के नीचे थी । तीसरी धारा झाझा, झरिया, परैया, पावापुर, गया एवं अन्य दर्जनों जगह में बसी थी और जिसकी संख्या हजारों घरों में थी ।

दूसरी धारा के लोगों की सबसे बड़ी कठिनाई वैवाहिक संबंध जोड़ने में थी । इस धारा के भागलपुर में हिन्दुस्तान कॉमर्शियल बैंक के मैनेजर स्व० बाबू रामनारायण गुप्ता कहते थे कि सभी प्राय: एक-दूसरे से संबंधित हैं । इन्हें अब अपनी लड़की की शादी करने का समय आया तो इन्होंने भागलपुर में रह रहे प्रो० रामलखन राम और प्रो० केदार राम गुप्ता से सम्पर्क किया । इन दोनों ने शिव प्रसाद लोहानी से संपर्क साधा तो करीब १९४८ के आसपास प्रो० केदार राम और शिवप्रसाद लोहानी ने गया आकर एक बैठक की और मेल-जोल की आवश्यकता बतायी । इस समय दोनों महामण्डल सुप्तावस्था में थे । सोचा गया कि तीन धाराओं को पहले दो धारा में किया जाय । प्रयास करके बाबू रामनारायण.गुप्ता जी की कन्या की शादी तीसरी धारा में इस्लामपुर में करायी गयी । इस प्रयास से रंग आया और दूसरी और तीसरी धारा का विभेद समाप्त हुआ ।

तत्पश्चात् करकोटा (धनबाद) के ख्याति प्राप्त विद्युत कार्यपालक अभियन्ता श्री वासुदेव प्रसाद ने प्रयास किया कि मूल धारा में मिलकर समाजोन्नयन में लगा जाय । इस कार्य में झुमरीतिलैया के श्री बनमाली राम ने काफी दौड़ धूप की । तद्नुसार बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल के नाम से संगठन स्थापित हुआ । इसका पहला अधिवेशन बड़े धूमधाम से झाझा में किया गया । इस अधिवेशन में दोनों धाराओं के शीर्ष समाजसेवियों ने भाग लेकर इसे सफल बनाया ।

यह अधिवेशन ७ एवं ८ मार्च १९८१ को श्री कांशीनाथ राम पावापुर पो० सिंहडीह (धनवाद) की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुआ । इसमें श्री रघुनन्दन राम एम०एस०सी० डिप्टी पर्सनल मैनेजर इ०

का कोल्डफील्ड जिला धनबाद तथा श्री विष्णु देव राम, वित्त पदाधिकारी राँची विश्वविद्यालय उपाध्यक्ष एवं श्री वासुदेव प्रसाद विद्युत अधीक्षण अभियन्ता मन्त्री चुने गये । 'माहुरी मयंक' का मार्च १९८१ का अंक झाझा अधिवेशन विशेषांक के रुप में प्रकाशित हुआ था । इस अधिवेशन का उद्घाटन किया था माहुरी वैश्य महामण्डल के स्थायी अध्यक्ष जातिरत्न श्री कमला पति राम तरवे और मुख्य अतिथि मगध के डॉ० केदार राम गुप्ता थे ।

इस महामण्डल को भी शिरोमणि माहुरी वैश्य महामण्डल में मिला दिया गया । तत्कालीन माहुरी महामण्डल के मंत्री विजयनन्द भदानी ने काफी दौड़ धूप की थी । अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं करते हुए उन्होंने परैया आदि कई स्थानों की यात्रा की जो कि अन्त में उनकी जीवन लीला को समाप्त करने का एक प्रबल कारण बना था ।

दीपनगर के फूलचन्द राम बरहपुरिया ने गया के माहुरी महामण्डल के अधिवेशन में इस वर्ग के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने की घोषणा की । अध्यक्ष कांशी राम गुप्ता के पुत्र से तद्नुसार श्री बरहपुरिया की पुत्री का परिणय दीपनगर में २५ मई १९८३ की रात्रि में संपन्न हुआ । इसमें समाज के सभी वरेण्य व्यक्ति सर्व श्री सदानन्द प्रसाद भदानी, विजय चन्द्र प्रसाद भदानी, शिव प्रसाद लोहानी, सच्चिदानन्द प्रसाद एडवोकेट, बनमाली राम, रामधनी राम अकेला, भोलाचरण पहाड़ी, सुरेश प्रसाद एडवोकेट, महावीर राम सेठ, चन्द्रशेखर प्रसाद, सच्चिदानन्द नवदिया, शम्भु प्रसाद भदानी, अशोक कुमार, सरयुग राम आदि उपस्थित थे । अन्य कई शादियाँ भी सम्पन्न हुई । किन्तु इस ग्रुप के लोगों की यह शिकायत रही कि मूल ग्रूप वाले लड़की देकर लड़का लिए । किन्तु लड़का नहीं दिये, इस कारण यह आगे बढ़ाया नहीं जा सका ।

किन्तु इस ग्रुप की दर्जनों शादियाँ पश्चिम के महाउर वैश्य संघ के उपवर्गों के साथ संपन्न हुई है तथा अभी भी हो रही है ।

किन्तु बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल के पदाधिकारी और कार्यकर्ता निष्क्रिय हो गये हैं और झाझा के बाद इन लोगों का कोई अधिवेशन नहीं हुआ ।

डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त की पुस्तक "माहौर माहुर वैश्य जाति" के अनुसार उपर्युक्त वर्ग के लोगों के दो संगठन पूर्व में भी बने थे। एक था पिछलवार माहुरी महामण्डल झाझा, दूसरा माहुरी वैश्य महासभा झरिया। पिछलवार माहुरी मंडल के अध्यक्ष थे श्री झाझा और महासभा के बाबू दामोदर प्रसाद गुप्ता। पिछलवार को ये माहौर का वछलस गोत्र का अपभ्रंश मानकर इसकी समानता माहौरों से मानते हैं।

माहुरी शिक्षान्यास :

जाति के मेधावी छात्रों को मुख्यतः टेक्नीकल एवं व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने में आर्थिक तंगी आड़े नहीं आवे इसके लिए समाज के शीर्ष चिन्तकों सर्वश्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी०, प्रो० डॉ० केदारनाथ गुप्त, विजय चन्द भदानी निखिल चन्द्र गुप्त, शिव प्रसाद लोहानी, सदानन्द भदानी आदि ने माहुरी शिक्षा न्यास की स्थापना की। चन्दे से प्राप्त राशि को बैंक के नियतकालीन खाते में जमा करके उससे अर्जित ब्याज की राशि छात्रों को कर्ज के रुप में बिना ब्याज का देने की व्यवस्था इसमें बनी। माहुरी महामण्डल के अध्यक्ष इसके पदेन अध्यक्ष होते हैं। मन्त्री के जिम्मे सारा हिसाब किताब रहता है। अब तक इसमें सर्वश्री निखिल चन्द्र गुप्त, डॉ० उमानाथ भदानी, अनिल कुमार, प्रो० सदानन्द प्रसाद मन्त्री रहे हैं, जिन्होंने न्यास को परिचालित किया है। कर्ज की राशि कम ही वापस हो पायी है। माँगने वाले छात्रों की कमी है। इस कारण ब्याज की राशि को भी मूल धन में अभी मिलाकर जमा करा दिया जाता है। करीब डेढ़ लाख रुपये की राशि जमा है किन्तु जिस उद्देश्य के लिए इसका गठन किया गया था उसकी आंशिक पूर्ति ही रही है।

वर्षों से न्यास का अधिवेशन नहीं हुआ है और न कार्यकारिणी की बैठक ही हुई है। संस्था अकर्मण्य सी लगती है। फलतः जिस उद्देश्य से इसकी स्थापना की गयी थी उसकी पूर्ति नहीं हो रही दिखती है।

महाउरु वैश्य संघ :

बरवीघा के १९२३ के अध्यक्ष पद से बोलते हुए बाबू प्रभूदयाल गुप्त ने अपने ऐतिहासिक भाषण में परम्परागत रुप से प्रचलित धारणा को

पुष्ट किया कि माहुरी का आदि स्थान मथुरा रहा है।

इस धारणा के अनुसार ही काशी में दशकों से रह रहे, गया के बाबू दामोदर प्रसाद जी ने अपनी कन्या का विवाह माथुर वैश्य समाज में किया। तत्कालीन मगध माहुरी महामण्डल के ख्याति प्राप्त समाजसेवी बाबू हरिहर प्रसाद लोहानी ने माहुरी मयंक भाग १० अंक ११ (जून १९३७) में इसे 'नवीन विवाह संबंध' शीर्षक से छपाया और इसे आदर्श विवाह की संज्ञा दी। रुढ़िवादी विचारों के पोषकों ने इसे अनुचित बताया। बाबू भगवान दास नवदिया जैसे माहुरी जाति के प्रमुख नेता ने अपने लेख 'नवीन वैवाहिक समस्या' शीर्षक से जुलाई १९३७ में एक लेख छपाया जिसमें लोहानी जी के विचारों को समाज विरोधी बताया उसी अंक में माहुरी जाति के शुभ चिन्तकों और हजारों माहुरी परिवारों के आध्यात्मिक नेता श्री १०८ स्वामी हंसदेव मुनि ने नवीन विवाह शीर्षक से अपने लेख में इसे प्रगतिशील विवाह बताया। उसी अंक में समाज में उस समय के प्रसिद्ध एक मात्र मुंसिफ बाबू दामोदर प्रसाद नवदिया ने नवीन विवाह संबंध पर एक लेख प्रकाशित कराया जिसमें उन्होंने इस विवाह को समय की पुकार बताया।

इन सारे विवादों के पश्चात् कन्या के विद्वान पिता बाबू दामोदर प्रसाद का 'माहुरी मयंक' के अक्टूबर १९३७ के अंक 'मेरा आखिरी पत्र' शीर्षक से लेख छपा जिसमें उन्होंने इस बात को दर्शाया है कि उन्होंने वह संबंध समाज के व्यापक हित में पुरखों द्वारा कही गयी इन बातों के आधार पर सम्पन्न कराया जिसमें कि उन मनीषियों ने माहुरी जाति को मथुरा के क्षेत्र से आकर बसने की बात कह रखी थी।

अन्ततः रुढ़िवादी विचारों की विजय हुई और इस शिक्षित परिवार को समाज ने छोड़ दिया।

अब यदाकदा माहुरियों के लड़के लड़कियों की शादी दूसरी जाति से होती है। किन्तु उन्हें पंगतच्युत नहीं किया जाता। यह एक अच्छी परम्परा विकसित हुई है पर निश्चित रुपसे इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली आदि क्षेत्रों में मुख्य

रुप से बसे माहौर माथुर (वैश्य) महावर, महौरग्वोर इत्यादि उपवर्गों में किया जाना ही उचित और समीचीन है ।

संयोग ही कहा जाय कि माहौर के प्रख्यात समाज सेवी डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्ता १९५६ में पटना डाक तार फोन विभाग में बदलकर आये और उन्हें एक बुक स्टाल पर 'माहुरी मयंक' की प्रति मिली । तभी से माहुरी के विशिष्ट जाति सेवकों से उनका सम्पर्क हुआ । यह सम्पर्क शनै: शनै: बढ़ता ही गया । बिहार में ये १९५६ से १९५९ तक रहे और इस बीच उन्होंने भ्रमण किया और माहुरी जाति को जानने, समझने, परखने का पूरा अवसर मिला । इनके हृदय में माहुरियों के प्रति अच्छी भावना उद्भूत हुई और क्षेत्र विस्तार की भावना से इन्होंने तत्तुल्य उपवर्गों माहुरी माहौर महावर माथुर वैश्य आदि की संस्था बनाई । इस संस्था की स्थापना के संबंध में डॉ० रामेश्वर दयाल ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'माहौर माथुर वैश्य जाति एवं उसके संगठनों पर ऐतिहासिक अनुसंधान' नामक प्रथम संस्करण वर्ष १९६७ के पृष्ठ संख्या २१३ पर लिखा है ।

इस प्रकार ९-१० मई १९६४ में अचल हाल आगरा में सम्मेलन श्री शिवप्रसाद लोहानी एम०ए० संपादक माहुरी मयंक (गया) निवासी नूरसराय जिला पटना के सभापतित्व में हुआ । उत्सव पर २५० व्यक्ति उपस्थित थे तथा अलवर, जयपुर, दिल्ली, ग्वालियर, मुरैना, एटा, बदायूं, अलीगढ़, अतरोली, फिरोजाबाद, पटना, गया, गिरिडीह, झरिया, कोडरमा आदि सब स्थानों से प्रतिनिधि आये थे ।

इस संघ का नाम माहौर (माहुरी, महावर) संघ रखा गया । संघ की स्थापना के समय के सभापति (FOUNDER PRESIDENT) को माहुरी उपवर्ग के श्री शिव प्रसाद लोहानी को प्राप्त हुआ यह माहुरी गौरव की ऐतिहासिक बात है । स्थापना के बाद १२ जून १९६५ को अलवर राजस्थान में इसका प्रथम अधिवेशन बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ । काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया । इसका सभापतित्व अवकाश प्राप्त सिविल सर्जन डॉ० हरिनारायण गुप्त आगरा ने किया । दिनांक ७-११-६५ को गिरिडीह में बाबू उमाचरण लाल तरवे की कोठी पर इस संगठन की अंतरंग की द्वितीय बैठक हुई । इस बैठक में संघ प्रध

ान, उप प्रधान, प्रकाशन मंत्री बाबू काशी राम गुप्त, एम०पी०, श्री रामावतार गुप्त, बाबू रामनारायण गुप्त, श्रीमती गंगा देवी, डाटा अलवर, डॉ० रामलखन राम गुप्त, श्री हरिराम भदानी, श्री राम प्रसाद राम, श्री रामकृष्ण अठघरा, श्री शादीलाल गुप्ता और स्थानीय नेता बाबू उमाचरण लाल तरवे, बाबू कमलापति राम तरवे आदि ने भाग लिया । एक सभा बाबू रघूनन्दन राम एम०एल०ए० के सभापतित्व में हुई, जिसमें करीब २५० लोगों ने भाग लिया । इसके अनन्तर बैठक एवं सभायें, फिरोजाबाद, दिल्ली, बरैली में हुई । १९ मई १९६७ को मुरादाबाद में प्रिंसिपल वेद प्रकाश गुप्त एम०ए० के सभापतित्व में हुई । संघ का नाम वृहद संघ रखा गया ।

वर्षों जब यह संस्था कई कारणों से सो गई तो झुमरीतिलैया के श्री बनमाली राम ने इसे पुर्नजीवित करने का प्रयास किया । श्री सदानन्द प्रसाद भदानी एवं संस्था के संस्थापक अध्यक्ष श्री शिवप्रसाद लोहानी से बार-बार मिलकर इसे पुर्नजीवित करने की इच्छा जाहिर की । इन्होंने जयपुर, दिल्ली, अलबर, आगरा आदि की यात्रायें की और इस संघ से संबद्ध लोगों से विचार विमर्श किया । इनके प्रमुख डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त तो है ही दिल्ली के पूर्व मंत्री श्री शिवचरण गुप्त (EX M.P) बाबू रामोतार आर्य, बाबू मोहन लाल गुप्ता, आगरा के श्री दाऊदयाल बादिल श्री डिप्टी राम.जी, श्री बंगाली राम जी, श्री बालमुकुन्द गुप्त फिरोजाबाद, श्री रामधन महाजन बरैली, श्री जयप्रकाश गुप्ता दिल्ली, श्री बनवारी लाल गुप्ता जयपुर, श्री देशबन्धु गुप्ता, श्री बद्रीप्रसाद दोषी, श्री देवलाल गुप्ता आगरा आदि प्रमुख हैं । अंतत: २६ जनवरी सन् १९८० को दिल्ली में श्री शिवचरण गुप्त की कोठी में एक सभा हुई जिसमें बिहार के भी बहुत से माहुरी बन्धु सम्मिलित हुये थे । इस सभा में श्री सदानन्द प्रसाद भदानी अध्यक्ष और डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त मंत्री चुने गये । इस टीम ने इतना अधिक भ्रमण किया कि सारे क्षेत्र में तहलका मचा दिया । सर्व श्री सदानन्द प्रसाद भदानी, डॉ० रामेश्वर दयाल, शिवप्रसाद लोहानी, बनमाली राम एवं ओम प्रकाश विद्यालंकार की टीम ७ अगस्त १९८० को झुमरीतिलैया से अध्यक्ष की कार से निकली । यह टीम

उत्तरप्रदेश के वाराणसी, प्रयाग, कानपुर, फर्रुखाबाद, बरैली, बदायूं, मुरादाबाद, अलीगढ़, सिकन्दराबाद, एटा, फिरोजाबाद, आगरा, मथुरा में जनसभाओं को सम्बोधित किया। पश्चात् राजस्थान के अलवर, जयपुर होते हुए मध्यप्रदेश के मुरैना, ग्वालियर, झांसी, खजूराहो, पन्ना का भ्रमण करके माहौर, माथुर वैश्य, महावर, माहोरग्वौर, उपवर्गों की सभाओं में संघ की बातें रखी और जन सम्पर्क किया।

२१ और २२ नवम्बर १९८१ को उपर्युक्त भ्रमण का सुखद स्वरुप बरैली के महत्वपूर्ण अधिवेशन में दृष्टिगोचर हुआ जिसमें सभी उपवर्गों के प्रबुद्ध जनों के अलावे बिहार के माहुरी लोगों की बड़ी संख्या ने भाग लिया। इस महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक अधिवेशन की अध्यक्षता माहुरी वर्ग के वरेण्य समाजसेवी श्री सदानन्द प्रसाद भदानी ने किया था। मंत्री के रिपोर्ट में डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त ने जो विचार व्यक्त किये थे वे उनके ट्रैक्ट में छपे हैं। माहुरी मयंक के दिसम्बर ८१ के अंक में भी यह प्रकाशित हुआ है। इसके कुछ अंश दृष्टव्य है।

..........बस संघ का चक्र घूमने लगा शिव त्रय श्री शिव प्रसाद गुप्त (स्पीकर उ०प्र० विधानपरिषद), शिवचरण गुप्त (Ex M.P & Ex Minister Delhi) एवं शिवप्रसाद लोहानी (संपादक माहुरी मयंक) के सम्पर्क एवं उद्योग के कारण इसे संघ का शिव युग कह सकते हैं।

ज्ञातव्य हो कि सदानन्द बाबू के अध्यक्ष चुने जाने पर संघ प्रेमियों ने इतनी यात्रायें करके समाज में संगठन का बिगुल घूम-घूम कर बजाया जो कि अविस्मरणीय है। यही कारण था कि बरैली के ऐतिहासिक अधिवेशन में इन्हें ही दुबारा अध्यक्ष चुना गया। बरेली में ही संघ का नामकरण "महाउरु वैश्य संघ" सर्वसम्मति से किया गया। इस नाम में किसी एक उपवर्ग का बोध नहीं होता संघ का बोध चिन्ह 'तराजू' के मूल अंश वाला भी लोकप्रिय हो गया है। प्राय: सभी उप वर्ग वाले भी इसका प्रयोग कर रहे हैं।

बरेली अधिवेशन के पश्चात् झुमरीतिलैया में संघ का १८ वाँ वार्षिक अधिवेशन २३ एवं २४ जून १९८४ को उल्लासपूर्ण वातावरण में

संपन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता श्री सदानन्द प्रसाद भदानी ने की। इनके भाषण का यह अंश अति महत्वपूर्ण है।

संगठनकारी प्रकृति के हम चिरपोषक हैं। संगठन के तत्व को हम जीवन में प्रस्थापित करने के पक्षधर हैं और यह पक्षधरता महाऊरवैश्य संघ के सभी घटकों में चिरकाल से विद्यमान है। सभी घटकों में यह विद्यमान क्यों न हो जबकि तथ्यों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हम सब एक ही वृक्ष की शाखायें हैं।

इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष थे प्रसिद्ध अभ्रक उद्योगपति एवं माहुरी वैश्य महामण्डल के स्थायी अध्यक्ष श्री कमलापति राम तरवे। इनका स्वागत भाषण बहुत ही महत्व रखता है, कुछ अंश दृष्टव्य है।

हमारे वैश्य परिवार में राजनैतिक दांव-पेंच के कारण कुछ गिरावटें आयी हैं परन्तु मेरी निजी धारणा है कि हमारे संगठन की चट्टान से टकराकर वे राजनीतिक बुलबुले सदा के लिए समाप्त हो जायेंगे और हमारी जातीय आकाश पर सफलता का नया सूरज यहां चमक उठेगा।

स्वागत मंत्री थे समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री परमेश्वर प्रसाद बड़गवे। इनका भाषण विचारोत्तेजक तो था ही स्वागत की बहुत अच्छी व्यवस्था थी।

इस आयोजन की सफलता का श्रेय संघ को पुर्नजीवित करने वाले समाज सेवी श्री बनमाली राम जी को है। देश के कोने-कोने में बिखरे सूत्रों को एक माला में पिरोने का कार्य डॉ० रामेश्वर दयाल के साथ मिलकर इन्होंने किया ही झुमरीतिलैया में ऐसा विशाल आयोजन किया कि संघ के जीवन में एक ऐतिहासिक बात कही जायेगी।

बरेली में संघ के मंत्री, आगरा के सुप्रसिद्ध समाज सेवी और महाऊर संघ के संस्थापकों में से एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर श्री दाऊदयाल बांदिल चुने गये थे। उन्होंने झुमरीतिलैया में अपने वार्षिक प्रतिवेदन में वैश्यों के उद्‌भव और क्रमिक विकास को दर्शाते हुए माहौर, महावर, माहुरी, माहौरग्वौर, माथुर वैश्य की स्थिति का जिक्र किया। माहौरग्वोर के तत्कालीन अध्यक्ष इन उपवर्गों से सम्पर्क साधकर सभा आयोजित

करने का आदेश दिया गया । उनके भाषण का यह अंश पठनीय है ।

'........डॉ० रामेश्वर दयाल ने बिहार के माहुरियों को खोजा । इस प्रकार इन सब वर्गों के मनीषियों की बैठक दिल्ली में होने लगी । एक दिन मैं अपने रिस्तेदार स्व० मुकुन्दीलाल गुप्ता के यहां दिल्ली गया था । उस समय मैं अखिल भारतीय महौरग्वोर वैश्य महासभा का अध्यक्ष था । वे मुझे इस बैठक में ले गये । वहां इस बात पर बहस हो रही थी कि संगठन की संस्था का जन्म देने हेतु कब कहां और कैसे बुलाया जाय । इसमें आर्थिक समस्या व व्यवस्था की अड़चन पड़ रही थी । मैंने उस बैठक में कहा कि आप लोग स्वीकृति दें तो यह सम्मेलन आगरा में अखिल भारतीय ग्वारे माहौर वैश्य महासभा के आतिथ्य व व्यवस्था में किया जा सकता है । तिथि आपको निश्चित करनी है । समस्या हल हो गयी और ९ व १० मई, सन् १९६४ को अचल भवन आगरा में श्री शिवप्रसाद लोहानी की अध्यक्षता में सम्मेलन संपन्न हुआ और विधिवत् अखिल भारतीय माहौर माथुर वैश्य संघ का जन्म हुआ ।

'.........संघ के कार्यकर्ता गहरी निंद्रा में सो गये पुनः १९७९ में बिहार से एक आंधी आई और कार्यकर्ताओं की पुकार हुई । श्री बनमाली राम ने कार्यकर्ताओं को एकत्रित किया था और दिल्ली में श्री शिवचरण गुप्ता की कोठी पर दिनांक २५-१-८० को एक सम्मेलन हुआ ।'

इस सफल अधिवेशन में श्री पूर्णानन्द तरवे महामंत्री बनाये गये, महाऊर पत्रिका के संपादक श्री शिवप्रसाद लोहानी चुने गये । फिरोजाबाद में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बालकृष्ण गुप्ता के आतिथ्य में कार्यकारिणी की बैठक हुई । तत्पश्चात् श्री पूर्णानन्द तरवे ने त्याग पत्र दे दिया । पुनः श्री दाउदयाल बाँदिल ने महामंत्री का पद संभाला । ६ और ७ अक्टूबर १९८६ को इसका वार्षिकोत्सव श्री शिवचरण गुप्ता (Ex M.P) की अध्यक्षता में आगरा के माथुर वैश्य भवन पंचकुइया में संपन्न हुआ । श्री शिवचरण गुप्ता का विद्वतापूर्ण भाषण हुआ जिसमें उन्होंने इस संघ को सक्रिय बनाने की आवश्यकता बताई । मूक किन्तु निस्वार्थ समाज से भी श्री डिपुटी राम गुप्ता ने स्वागत भाषण में इस संघ को संगठित बने रहने की पीड़ा दृष्टिगत होती है । डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त ने अपने भाषण में संघ को

जीवित बने रहने को आवश्यक बताया । इस अधिवेशन में आगरा के पूर्व डिप्टी मेयर एवं पूर्व राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश डॉ० प्रकाश नारायण गुप्ता अध्यक्ष निर्वाचित हुए । मंत्री बनाये गये श्री दाउदयाल बाँदिल । इस अधिवेशन में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान के अधिकाधिक लोग थे किन्तु बिहार के लोगों का अभाव खटका था । किन्तु माहुरी उपवर्ग के कई समाजसेवियों के पत्र वहां पढ़े गये थे ।

झुमरीतिलैया के अधिवेशन में इसे संघीय (FEDERAL) स्वरुप प्रदान किया गया जिसके अनुसार सभी उपवर्गों की शीर्ष संस्थायें अपना प्रतिनिधि और दान की राशि भेजतीं और काम चलता । किन्तु प्रायः सभी उपवर्गों की शीर्ष संस्थायें लुप्त रहती हैं इस कारण वो न तो समय पर धन राशि भेज पायीं और न ही प्रतिनिधि ही । दूसरी तरफ संघ पूर्व की तरह जब सर्व शक्ति सम्पन्न एकल (UNITY) संस्था थी संघ स्थान-स्थान पर शाखायें खोलकर चन्दा प्राप्त करता था ।

ऐसी शाखाओं की विस्तृत सूची बरेली अधिवेशन के संस्मरण ग्रन्थ में संग्रहित है । यदि इसका स्वरुप एकल बना रहता तो संभवतः ऐसी स्थिति नहीं आती जैसी कि हो गयी, अर्थात् कार्यकलाप बन्द हो गये । उक्त काल खण्ड के जो भी अभी जीवित समाजसेवी हैं उनसे आज भी कुछ लोगों के पत्र व्यवहार व्यक्तिगत रुप से होते हैं । सभी को इस बात की पीड़ा है कि एक बहुत अच्छी और लाभप्रद संस्था का सूर्यास्त हो गया । क्या पुनः सूर्योदय नहीं होगा ? होगा क्यों नहीं बशर्ते कि पूर्व की भाँति लोग पुनः एक बार कार्यशील हो जायें ।

महाऊर वैश्य संघके अन्तर्गत, माहौर, माथुर वैश्य, महावर, महौरग्वोर, म्हौड़, महा[illegible]न एवं माहुरी मुख्य रुप से आते हैं । ज्ञातव्य है कि केवल माहुरी ही ऐसा उपवर्ग नहीं है जिसमें अभी तक दो घटकों में लोग बँटे हैं । प्रायः सभी उपवर्गों में ऐसी बात न्यूनाधिक रुप में पायी जाती है । अखिल भारतीय माथुर वैश्य महासभा आगरा वाले के दूसरा उपवर्ग आगरा, जयपुर प्रान्तस्थ माथुर वैश्य महासभा ताजगंज (आगरा) है तीसरा है माथुर वैश्य (पूर्व नाम चौसेनी माहौर) संगठन चौथा है । माथुर वैश्य संघ मुरादाबाद रामपुर क्षेत्र एक ओर है । मथुरिया नाम से भी एक

उपवर्ग है जिसमें चन्द्रभानु गुप्त राजनीतिज्ञ और गुलाबराय सरीखे हिन्दी के मूर्धनय विद्वान हरप्रसाद भैयाजी अलीगढ़ के हुए । माहौर के समकक्ष ग्वारे माहौर वैश्य हैं, जो कि संभवत: ग्वालियर क्षेत्र के रहने के कारण ग्वोर कहाये । ये सारी बातें डॉ० रामेश्वर दयाल लिखित पुस्तक के आधार पर लिखी जा रही हैं ।

इन बातों पर विचार करने से पता चलता है कि सभी उपवर्गों में पूर्व में छोटी-मोटी समाज विरोधी परम्पराओं के ग्रहण करने या दूर में बसे होने की वजह से दूसरा ग्रुप बन गया । किन्तु पिछले दशक से अन्तर्जातीय विवाह अक्सर हो रहे हैं और अब लोग अपनी जाति के संबंध में परिवारों को पंगतच्युत नहीं करते जैसा कि माहुरियों में भी हो रहा है ।

उरुतंत्र नामक पत्रिका का प्रकाशन महाउरु वैश्य संघ की गतिविधियों के लिए डॉ० रामेश्वरदयाल गुप्त करते रहे हैं । इसका आगरा संस्करण भी कुछ छापता रहा है । इसके अलावे संघ की गतिविधियों के विवरण उपवर्गों की पत्रिकायें माहुरी मयंक, माहौर मित्र, महावर मयंक, राजधानी महावर संदेश माथुर वैश्य हितकारी में छपते रहे हैं । बरेली एवं झुमरीतिलैया के महाउरु वैश्य संघ अधिवेशनों की स्मारिकायें झुमरीतिलैया से छपी हैं । ये अनमोल निधि के रुप में हैं । विशेष विवरण अन्यत्र है ।

महाउर वैश्य संघ (द्वितीय चरण)

पूर्व महाउर संघ के कार्यकलाप बन्द हो जाने की पीड़ा सभी लोगों को खलने लगी । पच्चीस तीस वर्षों की मेहनत और लाखों-लाख रुपये खर्च करने और समय की बर्बादी से भीतर-भीतर सभी परेशान थे । इसलिये बिहारशरीफ क्षेत्र के कुछ समाज सेवियों मुख्यत: सर्व श्री बनमाली राम, शिव प्रसाद लोहानी, कृष्ण प्रसाद अठघरा, महावीर राम सेठ, कामता प्रसाद अठघरा ने मिलकर २५-९-९० को सोहसराय जलालपुर में एक सभा करके महाउरु वैश्य संघ (द्वितीय चरण) की स्थापना की । इसके अध्यक्ष बिहार नगरपालिका के वार्ड कमिश्नर समाज सेवी श्री अर्जुन प्रसाद जी तथा मंत्री श्री नित्यानंद जी बनाये गये । उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान के समाजसेवियों से पत्र व्यवहार भी

किया गया । दो ढाई वर्षों तक संस्था चली, लक्खीसराय, झुमरीतिलैया, बरबिघा आदि स्थानों का भ्रमण किया गया । किन्तु अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने से कार्यकर्ता हताश हो गये और कार्यकलाप बन्द हो गये ।

शिरोमणि माहुरी वैश्य महामण्डल

माहुरी जाति की चट्टानी एकता के लिये समाज के मनीषियों की अभिलाषा प्रारंभ से ही रही है कि हजारीबाग और मगध के महामण्डलों का एक संगठन बनाया जाय । वास्तव में दोनों संगठनों के नेता लोग एक दूसरे के अधिवेशनों में जाते ही नहीं थे बल्कि सभापतित्व भी करते रहे हैं ।

सुप्त महामण्डलों के पुनर्जागरण के पश्चात् ऐसी ही भावना उदित हुई तो हजारीबाग और मगध के नेतृत्व वर्ग ने एक ऐसी संस्था का निर्माण करने की योजना बनाई जिसमें दोनों संगठनों के लोग रहें । इसी उद्देश्य से झुमरीतिलैया के सी०एन०लि०फर्म के विश्राम बाग में दिनांक २३-२-७९ रविवार को दोनों संगठनों के शीर्ष लोगों की सभा हुई जिसमें शिरोमणि माहुरी वैश्य महामण्डल संस्था की स्थापना की गयी । इस स्थापना सभा का सभापतित्व माहुरी वैश्य महामण्डल के स्थायी अध्यक्ष एवं प्रख्यात समाजसेवी श्री कमलापति राम तरवे ने की । इसमें श्री सदानन्द प्रसाद भदानी अध्यक्ष एवं श्री बनमाली राम जी मंत्री चुने गये । इस संगठन का एक कार्य यह भी कहा गया कि समान विचार धारा वाले स्वजातीय बन्धुओं की जो मूलत: उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली में बसे हैं विशेष जानकारी प्राप्त की जाय तथा राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे तमाम बन्धुओं का एक व्यापक संगठन बनाया जाय । इस तरह के विचार दोनों महामण्डलों की बैठकों में पूर्व में प्रगट किये गये थे । ज्ञात हो कि राष्ट्रीय स्तर पर महाउरु वैश्य संघ का जो निर्माण हुआ उसके मूल में यही भावना थी । महाउरु वैश्य संघ के संबंध में इस पर विशेष चर्चा की गई है ।

बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल की स्थापना के उपरान्त यह महामण्डल भी शिरोमणि में सम्मिलित हो गयी । इस प्रकार माहुरी नाम से जानें जानी वाली सभी घटकों का एक व्यापक संगठन बन गया ।

इस संस्था की बैठकें भिन्न-भिन्न स्थानों पर होती रहीं । जैसे

८-३-८१ को झाझा १९-४-८१ को झरिया में १०-१-८२ में पावापुर में ५-९-८२ को कतरास में तथा ३१-१-८५ को राजगीर में ।

१९८० ईस्वी में इसका सफल एवं द्वितीय भव्य अधिवेशन झुमरीतिलैया में हुआ । इसमें तीनों संगठनों के चुने हुए प्रतिनिधि पधारे थे ।

जाति गौरव एवं महत्व को प्रतिपादित करने के पावन उद्देश्य से बिहार प्रदेश की राजधानी पटना में ११ एवं १२ अप्रैल १९८७ को कदमकुँआ के बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के विशाल भवन में इसका तृतीय अधिवेशन श्री सदानन्द प्रसाद भदानी के सभापतित्व में संपन्न हुआ । इसमें माहुरी बन्धुओं के अलावे आगरा के डॉ० प्रकाश नारायण (पूर्व मंत्री) श्री दाउदयाल बाँदिल आगरा, श्री मोहन लाल गुप्ता, दिल्ली आदि महाठरु वैश्य संघ के नेतागण भी पधारे थे । दूसरे दिन प्रारंभ में बिहार राज्य वैश्य सभा के नेताओं ने भी इसे संबोधित किया । इसमें प्रमुख थे श्रीमती प्रभावती गुप्ता, पूर्व मंत्री बिहार एवं संसद सदस्य, श्रीमती तारा गुप्ता पूर्व विधायक, श्री जगदीश प्रसाद एडवोकेट सर्वोच्च न्यायालय, श्री विजय कुमार मस्ताना आए इन लोगों ने अपने भाषण में वैश्य एकता की आवश्यकता की बात बतायी । इस अधिवेशन में आगामी सत्र के लिए श्री कमलापति राम तरवे सभापति और श्री सत्यनारायण तरवे मंत्री चुने गये ।

पटना के ऐतिहासिक अधिवेशन में पटना माहुरी मण्डल के लोगों ने इतना अच्छा प्रबन्ध किया कि वह बेमिसाल था । सर्व श्री सदानन्द राम, अर्जुन प्रसाद, विनोद कुमार, राधेश्याम प्रसाद, अशोक कुमार साधुशरन भदानी, जवाहर प्रसाद, अनिल कुमार लोहानी, केदार प्रसाद, रामेश्वर प्रसाद एडवोकेट, दामोदर प्रसाद आदि ने सम्मेलन को सफल बनाने में बहुत परिश्रम किया ।

पटना अधिवेशन के पश्चात् नये अधिकारियों ने इस संस्था को संचालित करने में रुचि नहीं दिखायी इसका एक कारण यह भी दिखता है कि संस्था का संघीय स्वरुप होने के कारण सम्बद्ध महामण्डलों ने

सदस्यों की नामावली जो कि उसमें सेवावृति वाले लोगों का अभाव रहा । यदि संस्था का एक (UNITARY) विधान रहता तो संस्था के सदस्यों का चुनाव आम सभा में प्रतिनिधियों द्वारा होता तो शायद संस्था जो आज मृतप्राय है किसी न किसी रुपमें चलती रहती । पुराने पदाधिकारियों से नये पदाधिकारियों की राय न लेना भी इसका एक कारण लगता है ।

* *
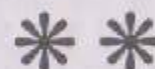
खण्ड - ३

अध्याय - २

माहुरी मयंक एवं समाज की अन्य पत्रिकायें, स्मारिका, संस्मरण ग्रन्थ

किसी भी जीवंत समाज के लिए पत्रिकाओं का होना आवश्यक है । माहुरी जाति के पूर्व पुरुषों की जागृत पीढ़ी ने इस बात को समझा था और इसी बात के वशीभूत होकर १९१४ ई० में (संभवतः) माहुरी मयंक नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया ।

"माहुरी मयंक" से तब से लेकर आज तक अनेक उतार चढ़ाव देखे हैं । मयंक के प्राकृतिक स्वभाव के अनुरुप अस्त-उदय की प्रक्रिया से भी यह पत्रिका दो चार हुई है ।

चालीस के दशक में "माहुरी मयंक" के अस्ताचल गामी स्थिति को देखकर गया के रामप्रीति राम कन्धवे ने "माहुरी मयंक" नाम की एक पत्रिका निकाली थी । कन्धवे जी उस समय पुस्तकों का व्यवसाय और प्रकाशन में संलग्न थे । आशा की गई थी कि प्रकाशन व्यवसाय से संबद्ध होने के कारण पत्रिका को स्थायित्व प्राप्त होगा, किन्तु प्रारंभिक दिनों में युवकोचित उष्मा प्रदर्शित करने के पश्चात् कुछ महीनों में ही बन्द हो गयी ।

काल खण्ड के पहचान को बनाये रखने के लिए "माहुरी मयंक" की उपर्युक्त अवधि को १९४७ ई० तक को "पूर्व स्वातंत्र काल" और १९४७ से १९९६ को स्वातंत्रोत्तर काल से सम्बोधित किया जायेगा ।

स्वातंत्रपूर्व काल

"माहुरी मयंक" का कोई इतिहास नहीं होने के बावजूद दोनों काल-खण्डों के "मयंक" के अंकों में यत्र-तत्र प्रसंगवश कुछ बातें छपी हैं जिन्हें आधार मानकर इसके बारे में चर्चा की जायगी । पूर्व स्वातंत्र काल की प्रतियाँ बहुत ढूँढ़ने पर थोड़ी सी ही मिल पायीं जिनमें "मयंक" के बारे

में कुछ सूत्र मिले हैं । वे सूत्र ही सम्प्रति मुख्याधार हैं । स्वातंत्रोत्तर काल के कुछ ऐसे सामाजिक व्यक्तियों द्वारा कई एक स्थानों पर ऐसी बातें छपी हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि "माहुरी मयंक" के प्रकाशन का वर्ष १९१४ ई० माना गया है । इस सन्दर्भ में "माहुरी मयंक" के अक्टूबर १९२७ के पृष्ठ संख्या २१९ में "माहुरी मयंक" की उत्पत्ति और इससे लाभ शीर्षक के अन्तर्गत नूरसराय निवासी श्री भगवानदास बरहपुरिया का एक लेख छपा है । विचारणीय अंशों के अविकल रुप ये हैं :

अस्तु यथार्थ में "मयंक" पत्रिका का जन्म तो हुआ १९१४ ई० से क्योंकि जब मैं बरबीघा में था, कुलभूषण बाबु प्रभुदयाल जी बरहपुरिया भी अपने ससुराल बरबीघा में वर्तमान थे । एक दिन हम लोगों के बीच यह बात उत्पन्न हुई कि मनुष्य जन्म सार्थक तभी होगा जब जाति की सेवा की जाय । इसलिये हम लोग कोई और उपाय नहीं सोचकर केवल यही उत्तम समझें कि जाति सुधार और विद्या प्रसार तभी होगा जब हमलोग एक जातीय मासिक पत्र निकालेंगे । इस पत्र में लेख तथा गद्य-पद्य देकर "माहुरी समाज" को उत्साहित करेंगे ।

अस्तु एक दिन हमलोगों ने एक बात का निश्चय कर लियाकि पत्र का संपादक किनको बनाना चाहिये और किस स्थान से "मयंक" निकाला जाना चाहिये और इसके लेखक कौन होंगे । इन सब बातों पर विचार किया गया और अंत में यह बात पक्की हुई कि झरिया स्थित कमलाप्रेस से पत्र निकलेगा और संपादक बाबू गोपीचन्दलाल जी मोकाम-सपही रहेंगे और लेखक में बाबू भगवानदास बरहपुरिया नूरसराय निवासी होंगे । जब यह सब बात तय हो गयी तब एक दिन हम और बाबू प्रभुदयाल जी शेखपुरा रेलवे स्टेशन से सवार होकर सपही पहुँचे । तीनों आदमियों ने राय-मशविरा कर "माहुरी मयंक" मासिक पत्र को निकालने की पक्की बात स्थिर की और अंत में झरिया से यह पत्र प्रकाशित किया गया जो आप लोगों के सम्मुख अब तक वर्तमान है । अब यही पत्र गया लक्ष्मी प्रेस में आजकल मुद्रित हो रहा है ।

उपर्युक्त अवतरण में बाबू गोपीचन्द लाल गुप्त जी का नाम आया है जो कि प्रकाशित अंक के तत्कालीन संपादक थे । चूँकि संपादक

ने कथ्य से अपनी असहमति कहीं नहीं जतायी इससे उसे सत्य माना जाना चाहिये ।

पूर्व स्वातंत्र काल खण्ड के "माहुरी मयंक" के अंकों में "माहुरी मयंक" को "माहुरी महामण्डल" का मुख्य पत्र घोषित किया जाता रहा है । इसलिये जब-जब माहुरी महामण्डल के कार्यकलाप बन्द या शिथिल हुए मयंक भी उसी स्थिति में रहा । उस काल खण्ड के संपादक बाबू गोपीचन्द लाल गुप्त रहे जो कि अपने समय के सिद्धहस्त कवि और लेखक थे । संपादन का कार्य उन्होंने संपादकीय मानदण्डों को सामने रखकर किया । इसका प्रमाण यह है कि अक्टूबर १९२७ के अंक में "माहुरी मयंक पर मेरी राय" शीर्ष में श्री दामोदर दास जी का लेख छपा है जिसमें उन्होंने संपादन की कई त्रुटियों की ओर इंगित किया है । निश्चय ही संपादकीय कला की सहिष्णु विचारधारा का यह प्रतीक है जिसके अनुसार विचार स्वातन्त्र्य के व्यक्तिकरण की छूट सभी लोगों को है । पत्रिका की भाषा प्रांजल ही रही है, जो कि उस समय की प्रचलित भाषायी रीति-नीति के अनुसार थी । यही कारण है कि यद्यपि "मयंक" एक सामाजिक पत्रिका थी, उस समय की गिनी-चुनी प्रकाशित पत्रिकाओं में यह एक थी । १९१४ ई० में तो बिहार में हिन्दी की दो-चार पत्रिका ही थी । यही कारण है कि बिहार में पत्रकारिता का इतिहास जब लिखा जाता है तो इस "माहुरी मयंक" का नामोल्लेख आवश्यक होता है । बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हीरक जयन्ती समारोह के स्वागताध्यक्ष के भाषण में राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने बड़े आदर के साथ "माहुरी मयंक" का उल्लेख इसी संदर्भ में किया था । उस हीरक जयन्ती का सभापतित्व तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने किया था ।

तीसरे दशक में "माहुरी मयंक" में पृष्ठादिक्रम वर्ष के आधार पर होता था अंक के आधार पर नहीं । यह पद्धति उस समय की ख्याति प्राप्त पत्रिका सरस्वती, माधुरी आदि में भी देखी जा सकती है । १९२६ ई० तक के "माहुरी मयंक" में पृष्ठांकन का यही क्रम देखा जा सकता है । किन्तु १९२८ ई० के प्रथम अंक से पृष्ठांकन का क्रम अंक के अनुसार हो गया । अवश्य ही उस समय तक अन्य पत्रिकाओं ने भी वही

क्रम प्रारम्भ किया था । इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि पत्रकारिता के बदले स्वरुप और मानदण्डों के अनुरुप "मयंक" भी प्रकाशित होता रहा । सभी अंकों में संपादकीय विचार नहीं लिखे जाते थे । जब संपादक ने इसकी आवश्यकता महसूस की संपादकीय लिखी । वार्षिक मूल्य १.५० - २/- तथा प्रत्येक अंक की कीमत डेढ़-दो आने थे । सहायक संपादक में इन्द्रजीत लाल कुटरियार, के०एल० गुप्ता के नाम रहे थे । मैनेजर और प्रकाशक के रुप में बाबू हरिहर प्रसाद लोहानी और कभी बाबू उमाचरण लाल तरवे के नाम भी देखे जा सकते हैं । चालीस के दसक में श्री कान्तलाल का नाम संचालक में देखा जा सकता है ।

स्वातंत्र्य पूर्व काल को मयंक के संपादक की मूल दृष्टि समाज को उन्नत बनाने का था । लगता है कि समाज की आवश्यकता से संबंधि त लेख संपादक स्वयं लिखकर किसी के नाम से छाप दिये हैं, यह भाषा-भाव से प्रगट होता है । यह इस बात का प्रमाण है कि संपादक समाज को गतिशील बनाने के लिए बेचैन थे ।

१९५४ ई० में झुमरीतिलैया (कोडरमा) के लोगों ने विश्रामबाग में एक प्रतिनिधि सभा बुलायी । इसमें महामण्डल के पुनर्गठन और "मयंक" के पुनर्प्रकाशन की बात तय हुई । "माहुरी मयंक" स्वातंत्र्य पूर्व काल की तरह मगध माहुरी महामण्डल का मुख पत्र नहीं बन सका, बल्कि यह एक स्वतंत्र संस्था बन गयी जिसमें कि मगध और हजारीबाग दोनों क्षेत्रों के लोगों को रखा गया । इसके अध्यक्ष कोडरमा के बाबू हरिहर प्रसाद जी भदानी (छट्टू बाबू के ज्येष्ठ पुत्र) बनाये गए । श्री शिव प्रसाद लोहानी उस समय तक साहित्य और पत्रकारिता जगत में समुचित स्थान बना चुके थे । कोडरमा वालों ने इन्हें वैतनिक संपादक बनाना चाहा था, किन्तु श्री लोहानी जी ने इसे स्वीकार नहीं किया और समाजहित में अपनी सेवाएँ अवैतनिक रुप में ही देने की घोषणा की । प्रारंभिक आवश्यक खर्चे के लिए कोडरमा के अभ्रक सम्राट छट्टूराम होरिल राम फर्म ने एक मुश्त दो हजार रुपये की राशि प्रदानकी । बाबू हरिहर प्रसाद भदानी की अध्यक्षता में जो "माहुरी मयंक समिति" बनी उसमें समाज के सभी शीर्ष व्यक्तियों को रखा गया और यही समिति अभी तक विद्यमान

है, परन्तु यदा-कदा इसके पदाधिकारियों का परिवर्तन होता रहा है। लघु अंतराल को छोड़कर श्री शिवप्रसाद लोहानी १९५५ से १९८८ ई० तक लगातार संपादक के पद पर आसीन रहे। बीच में ६-७ महीने के लिए आवश्यक कार्य के कारण अलग हो गये थे और उन दिनों बाबू उमाचरण लाल तरवे संपादक रहे थे।

श्री नवल किशोर कन्धवे श्री चन्द्रिका प्रसाद, श्री प्रमोद कुमार भदानी, श्री परमानन्द गुप्ता, श्री कपिल देव नारायण, श्री कामता प्रसाद एडवोकेट ने कुछ-कुछ वर्षों तक सहायक संपादक का पद संभाला।

करीब दस वर्षों तक बाबू हरिहर प्रसाद अठघरा प्रकाशक रहे। इन्होंने बड़े मनोयोग पूर्वक प्रकाशक का काम किया। ये पूर्ण रुप से पारिवारिक, व्यावसायिक मामलों से मुक्त थे और मयंक से उनका हार्दिक लगाव था। इस कारण इन्होंने जिस ढंग से प्रकाशन और व्यवस्था का काम संभाला वह न भूतो न भविस्यति की कहावत का उदाहरण है। छपाई, सफाई, गेट अप, सुरुचिपूर्ण सामग्री, संकलन, प्रकाशन के समय सभी में ऐसे व्यक्ति का मिलना आसान नहीं। इनके निधन के बाद वृहद् हरिहर अठघरा स्मृति अंक निकाला गया जिसमें इनके जीवन की सारी मुख्य बातें लेखबद्ध हैं।

इनके बाद अपने क्षेत्र के ख्याति समाज सेवी राम गोपाल आर्य 'गोप' ने प्रकाशक का गुरुत्तर भार संभाला। वे वारसलीगंज के रहने वाले थे और पत्रिका गया से निकलती थी। फिर भी उन्होंने प्रकाशक का काम बहुत ही अच्छे ढंग से वर्षों तक निष्पादित किया। इनकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि ये कस्बों, नगरों, महानगरों, में घूम-घूमकर "माहुरी मयंक" का ग्राहक बनाते, विज्ञापन एकत्र करते और नये छात्रों को लिखने के लिए प्रेरित करते। दो बार इन्होंने संपादक श्री शिवप्रसाद लोहानी के साथ उड़ीसा के चपुआ-झोपड़ा, करौजिया, रायरंगपुर, जशपुर, चाईबासा, राँची, जमशेदपुर का भ्रमण किया। उन स्थानों में पर्याप्त ग्राहक बने और सभी स्थानों पर समाज के लोगों ने स्मरणीय स्वागत सत्कार किया। इन्हीं दो दौरों में सैकड़ों आजीवन ग्राहक भी मयंक के सदस्य बने। गोप जी ऐसे

प्रकाशक उसके बाद पत्रिका को नहीं मिला। संपादक को ये कहा करते थे कि आप छपाई के खर्च की चिन्ता न करें, जितना अच्छा हो अंक निकालें, खर्च की व्यवस्था मैं करूँगा। गोप जी लेखक और सिद्धहस्त कवि भी थे।

इनके बाद गया कोर्ट में प्रैक्टिस करने वाले नवादा निवासी श्री भगवान राम एडवोकेट ने इस पद का कार्य भार संभाला। किन्तु वे अधिक दिनों तक इस कार्य को नहीं संभाल पाये। परन्तु जितने दिनों तक उन्होंने प्रकाशन का भार संभाला, उनकी लगन, निष्ठा और कर्तव्य परायणता का 'मयंक' ऋणी रहेगा।

जब कभी प्रकाशक का स्थान रिक्त हुआ, श्री पूर्णानन्द तरवे ने इसका भार उठाया। श्री तरवे जी "माहुरी मयंक" के लिए सदा सक्रिय रहे हैं। इन सब में अगर श्री राजेश्वर प्रसाद की चर्चा नहीं की जाय तो उनके साथ बहुत बड़ा अन्याय होगा। ये चर्चा के पात्र इसलिए नहीं हैं कि ये वर्षों तक मयंक समिति के मंत्री पद पर सुशोभित रहे वरण इसलिये कि वे जब से गया में बसे "मयंक" के लिए इनके हृदय में नहीं बुझने वाली ज्वाला जलती रही है। आजन्म सारे बिखरे सूत्रों को पिरोकर "माहुरी मयंक" को प्रकाशित करने में संलग्न रहे।

इन स्थितियों के बाद मयंक-प्रकाशन के ऐसे क्षण आये जब "मयंक" का प्रकाशन संभव नहीं था। वैसे ही दुर्दिन के समय में कतरीसराय निवासी जो मेडिकल में अध्ययनरत थे डॉ० उमेश प्रसाद और श्री सुरेश प्रसाद एडवोकेट की जोड़ी आयी। इन दोनों युवकों ने गहन अध्ययन और नयी वकालत की जिम्मेवारी सँभालते हुए प्रकाशन का कार्य किया। डॉ० उमेश प्रसाद प्रकाशक थे और श्री सुरेश जी मंत्री। कभी-कभी तो इन दोनों को रात्रि के दो बजे तक जगकर भी "मयंक" का काम करना पड़ता था। इन दोनों की सहायता के लिए श्री नन्दलाल जी आए थे जिन्होंने गाँव-गाँव और नगर-नगर घूमकर "माहुरी मयंक" के नये सदस्य बनाये। उसके पश्चात् पूरा काम सुरेश बाबू ही करते रहे।

उपर्युक्त सभी प्रकाशकों के साथ श्री शिव प्रसाद लोहानी संपादक रहे । श्री लोहानी जी नूरसराय में थे और इनके सारे कार्य डाक द्वारा होते थे । फिर भी प्रकाशन सामग्री की कभी भी कमी इन्होंने नहीं होने दी । तब तक प्रकाशक, संपादक, मन्त्री सभी में आपसी सौहार्द और सहयोग था । सभी एक-दूसरे की कठिनाइयों को समझते थे और किसी में कोई विभेद नहीं था ।

१९८८ में श्री शिवप्रसाद लोहानी ने संपादक के पद्भार से मुक्त होने की इच्छा व्यक्त की तो "मयंक समिति" ने इन्हें भारी मन से विदा किया और इनके स्थान पर सुयोग्य विद्वान श्री चन्द्रिका प्रसाद भदानी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए । करीब दो वर्षों तक संपादन करने के बाद इन्होंने संपादन कार्य से मुक्त होने की इच्छा व्यक्त की तो इन्हें दुखी मन से बिदाकर दिया गया और इनके स्थान पर गया कॉलेज में कॉमर्स विभाग के रीडर डॉ० शिव शंकर प्रसाद जी को सर्वसम्मति से नियुक्त किया गया इनके पद मुक्त होने पर श्री नवल किशोर कन्धवे इसके सम्पादक बने । दुर्भाग्यवश थोड़े समय के बाद ही वे काल कलवित हो गये । तत्पश्चात् श्री चन्द्रिका प्रसाद भदानी पुनः संपादक बने । किन्तु ये इस बार भी हट गए । बरबीघा में जून १९९५ में श्री परमानन्द गुप्त जो राजगीर निवासी हैं को चुना गया ।

कुछ अंकों के संपादन करने के बाद श्री परमानन्द गुप्त ने भी त्यागपत्र दे दिया । उनका कहना है कि प्रकाशन की अव्यवस्था के कारण उन्होंने त्याग पत्र दिया । उनके हटने के बाद से पिछले करीब एक वर्ष से इसका प्रकाशन बन्द है । यह स्थिति इन पंक्तियों के नवम्बर ९६ तक लिखी जाने तक की है ।

"माहुरी मयंक" ने अपने प्रारम्भ काल से ही व्यापक दृष्टिकोण रखा है । जाति की हानिप्रद बुराइयों को, रुढ़ियों को विनाश कर समाज को बहुविध-संपन्न बनाये जाने की ललक इसमें रही है । जाति की ९५ प्रतिशत लोगों की आजीविका का साधन व्यवसाय रहा है । इसमें भी ज्यादातर लोगों की खुदरा दुकानदारी रही है । स्वातंत्र्योत्तर काल में इन छोटे दुकानदारों को इतने अधिक नियम-कानून वो भी पर्णतया अव्यावहारिक

हालत में जकड़ दिया गया है कि कोई भी खुदरा दुकानदार उन्हें पूरा नहीं कर सकता । स्वतंत्रता के पूर्व काल में जहाँ व्यापारी कोर्ट-कचहरी में जाना उचित नहीं समझते थे वहीं इस काल में सारे व्यवसाय सरकारी ऑफिसों से जुड़ गये । इन स्थितियों की सही जानकारी "माहुरी मयंक" के लेखों में इस रूप में दिया गया है कि गैर माहुरी व्यवसायी भी इसके ग्राहक बन गये । ज्ञातव्य हो कि इन दिनों कोई भी समाचार पत्र या पत्रिका इन छोटे दुकानदारों के पक्ष में कुछ भी छापने से परहेज करता था ।

"माहुरी मयंक" ने देश में वैश्य का तगड़े संगठन की आवश्यकता महसूस की । इसलिए बिहार में वैश्य सभा की गतिविधियों को प्रकाशित करते रहता था । १२ एवं १३ फरवरी १९७२ को संपन्न हुए बिहार वैश्य सभा के अध्यक्ष डॉ० पद्मभूषण दुखनराम का भाषण छापा है ।

उच्च एवं तकनीकी शिक्षा की उपयोगिता, विधवा विवाह के पक्ष-विपक्ष की बातें, अपनी डफली अपना राग शीर्षक स्थायी स्तम्भ में पाठकों के स्फुट विचार प्रकाशन, महिला एवं बाल जगत के स्थायी स्तम्भ, विचार से परिपुष्ट, परिभाषा से शिथिल लेखों का पुर्नलेखन करके प्रकाशन, समयानुसार विशेषांकों का प्रकाशन जैसे वाणिज्य विशेषांक, हरिहर प्रसाद अठवरा, विजय चन्द भदानी, राम गोपाल आर्य, उमाचरण लाल तरवे के स्मृति विशेषांक, गया विशेषांक, मगध हजारीबाग के अधिवेशनों के विशेषांक प्रकाशित किए जाते रहे ।

तिलक-दहेज की बढ़ती प्रवृत्ति पर रोक एवं समाज के मान्य सादगीपूर्ण विवाहों की परम्परा को अपनाने के संबंध में सैंकड़ों लेख छपे हैं । जागरुक माहुरी मण्डल एवं समितियों के समाचार नियमित रुप से निकलते रहे हैं ।

लोक भाषा मगही का "माहुरी मयंक" के यशस्वी संपादक बाबू गोपीचन्द लाल गुप्त ने अपनी अमर कृति "माहुरी मण्डल" नाटक में प्रचुर प्रयोग कर अग्रणी मगही लेखकों में अपना नाम अमर कर दिया है । उन्हीं के पदचिन्हों पर चलकर दशाब्दियों संपादक रहे । ख्यातिप्राप्त पत्रकार एवं विद्वान श्री शिवप्रसाद लोहानी ने अपने संपादन काल में मगही

की कविताओं और लेखों को छापकर लोक भाषा मगही को आगे लाने में कामयाबी हासिल की। १९९० से अब पटना से छपने वाले दैनिक पत्रों में मगही की रचनाएं अक्सर छपती हैं। समाचार को बनाने के लिये इध र के वर्षों में मगही के शीर्षक लगाकर मगही के प्रभाव को मुखर स्वीकृति प्रदान की जा रही है। जब कभी मगही का प्रमाणिक इतिहास लिखा जायेगा तो माहुरी मण्डल नाटक और माहुरी मयंक के उल्लेख एवं विवेचन के बिना अधूरा ही माना जायेगा।

पुनर्प्रकाशन के प्रारंभिक २० वर्षों में "माहुरी मयंक" की छपाई सफाई गेट-अप और सामग्री जिस रुप में छपे वो अपने में अनोखा कहे जायेंगे। उस कालखण्ड में जितनी भी वैश्य की उपजातियों की पत्रिकाएँ छपती थी इसका शीर्ष स्थान था। बुक-स्टालों में भी "माहुरी मयंक" की प्रतियाँ बिकने लगी थी। एक वैसे ही बुक-स्टाल से पटना में कार्यरत प्रख्यात समाजसेवी डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त ने "मयंक" की प्रति खरीदी और उसके स्वरुप और सामग्री को देखकर इतने प्रभावित हुए कि संपादक प्रकाशक से संपर्क साधा। इसकी व्यापक चर्चा महाउरु वैश्य शीर्षक के अंतर्गत की गई है।

उपर्युक्त काल खण्ड के "माहुरी मयंक" की उपयोगिता और प्रसिद्धि का यह आलम था कि इसके पास भारत सरकार ब्रिटिश दूतावास, राष्ट्रसंघ के दिल्ली कार्यालय, बुल्गेरिया दूतावास, रोमानिया दूतावास नियमित रुप से और रुस, अमेरिका के दूतावास विशेष अवसरों के समाचार एवं चित्रों के ब्लौक "माहुरी मयंक" में प्रकाशनार्थ भेजते थे। इन सामग्रियों के उस अंश को जो कि "माहुरी मयंक" की नीति के अनुरुप होते छापे जाते थे। उस काल के 'मयंक' को देखने से यह स्पष्ट हो जायगा क्योंकि उनमें अमुक दूतावास के सौजन्य से वाक्य छपे हैं।

यह कहना असत्य नहीं होगा कि पुनर्प्रकाशन के उत्तर काल खण्ड में कागज, छपाई, पोस्टेज एवं अन्य संबंधित वस्तुओं में मूल्यों में इतनी बढ़ोत्तरी हो गयी कि अन्य प्रत्र-पत्रिकाओं की तरह इसके मुल्य में बढ़ोत्तरी करनी पड़ी। इधर व्यक्तिगत कारणों से समर्पित और त्यागनिष्ठ कार्यकर्ताओं

की संख्या में कमी आ गयी है। फलस्वरुप "माहुरी मयंक" अपने परम्परागत स्वरुप को बनाये रखने में असमर्थ हो गयी है। इसके साथ ही संकीर्णताओं की परिधि में पत्रिका को कैद कर लिया गया जिससे "माहुरी मयंक" का व्यापक परिवेश छिन्न-भिन्न हो गया है। इस अमावस्या की घोर रात्रि में मयंक अपना प्रकाश बनाए रखने में असमर्थ हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं।

"माहुरी मयंक" की नियमावली (BY LAWS) बनी हुई है। इसके अनुसार अध्यक्ष, मंत्री, संपादक, प्रकाशक और समिति के सदस्यों को चुनने का अधिकार ग्राहकों को प्राप्त है। संपादक और प्रकाशक की चर्चा पूर्व में की जा चुकी है। अध्यक्ष में बाबू हरिहर प्रसाद भदानी के निधनोपरांत सर्वश्री नारायण राम, बरहपुरिया, सदानन्द भदानी, रामदास गुप्त बरहपुरिया, योगेश्वर प्रसाद, कपिल देव नारायण, सदानन्द राम, मंत्री में सर्वश्री राजेश्वर प्रसाद, सुरेश प्रसाद अधिवक्ता, राम गोपाल आर्य प्रमुख है। मदन गुप्त मधुकर भी कुछ महीनों के लिए प्रकाशक बने थे। इसकी पूरी जानकारी उपलब्ध नहीं होने के कारण इस सूची को पूर्ण नहीं माना जाना चाहिए।

आजीवन ग्राहकों से प्राप्त राशि के बारे में अपुष्ट समाचारों के अनुसार उतनी रकम अब बैंक में नहीं है जितनी कि होनी चाहिए। कहा जाता है कि प्रकाशन में अर्थाभाव के कारण उस जमा पूँजी से भी रकम खर्च कर दी गयी है। फिर भी यदि इसकी सुचारु व्यवस्था समाज के व्यापक परिवेश को देखते हुए की जाए तो अभी भी 'मयंक' अपने खोए हुए गौरव को प्राप्त कर सकता है।

"माहुरी मयंक" को पठनीय एवं उपयोगी बनाने में इसके कवियों और लेखकों का सहयोग सर्वोपरि रहा है। कुछ ऐसे रचयिता रहे हैं, जिन्होंने भिन्न-भिन्न विषयों पर समाज की स्थितियों को देखकर समाज को उन्नत बनाने हेतु स्वयं या संपादक के अनुरोध पर 'मयंक' को उपयोगी बनाने में सदा सहयोग किया है। इनमें कुछ प्रमुख हस्ताक्षर हैं सर्वश्री डॉ० प्रो० केदार राम गुप्ता, पं० छेदीलाल झा, पं० सुदामादत्त शर्मा, योगेश्वर प्रसाद, जनकदेव आर्य, हरिहर प्रसाद अठघरा, हरिहर प्रसाद

लोहानी, उमाचरण लाल, इन्द्रजीत लाल कुटरियार, श्यामलाल कुटरियार, प्रो० अखिलानन्द राम, नवल किशोर कन्धवे, प्रमोद कुमार भदानी, राम गोपाल आर्य गोप, निखिल चन्द्र गुप्ता, बनमाली राम, सदानन्द राम, चन्द्रिका प्रसाद भदानी, परमानन्द गुप्त, कामता प्रसाद अठघरा, विजय चन्द्र प्रसाद भदानी, प्रभुचन्द गुप्त चरणपहाड़ी, श्री १०८ श्री हंसदेव मुनि, डॉ० भगवान दास, डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त, सहदेव लोहानी, रामकृष्ण राम अठघरा, डॉ० शिव शंकर प्रसाद आदि प्रमुख हैं ।

कवियों के प्रमुख हस्ताक्षर हैं : भूषण राम सत्संगी, रघुनन्दन प्रसाद आश्रित, अवधेश कुमार 'उन्मन', नानक चन्द गुप्त कपसिमे, देवेन्द्र प्रसाद कन्धवे, राजेन्द्र गुप्ता कन्धवे, पुरुषोत्तम पुष्प, गणेश सुमन और कपिल देव नारायण आदि ।

ऐसे लेखकों, कवियों की संख्या कम नहीं जिन्होंने समय-समय पर 'मयंक' की सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरुप अपनी रचनाएँ भेजकर कृतार्थ किया है । ये हैं : भुवनेश्वर दत्त 'व्याकुल', भूपनाथ त्रिपाठी, के०एल० गुप्ता, केदारनाथ लोहानी, प्रमोद कुमार भदानी (झुमरीतिलैया), अर्जुन प्रसाद पटना, जनार्दन प्रसाद बरहपुरिया, लक्ष्मी नारायण भदानी, राजेन्द्र प्रसाद बरहपुरिया (दिल्ली) रामवरण सारथी, डॉ० प्रो० देवेन्द्र प्रसाद कपसिमे, फकीरचन्द राम, हरिहर प्रसाद कपसिमे, सुनील सेठ, रघुनन्दन प्रसाद सिंह, पूर्व संपादक (आर्यावर्त), अयोध्या प्रसाद, बैसखीयार, गंगा प्रसाद अठघरा, भोला चरण पहाड़ी, वीणा रानी गुप्ता, किशोरी लाल बरहपुरिया, विष्णु प्रसाद (गौहाटी), दुलारचन्द कपसिमे, दुर्गाशरण वाणप्रस्थी, सुरेन्द्र प्रसाद तरुण, (पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री) सतीश प्रसाद, शिव कुमार तरवे, पुष्पा बरहपुरिया, जगदीश प्रसाद (गोविन्दपुर), दामोदर प्रसाद (डिस्ट्रिक्ट जज), रामनाथ प्रसाद एडवोकेट, रामेश्वर प्रसाद एडवोकेट, डॉ० हरि नारायण भदानी, सिद्धेश्वर नाथ चौधरी 'मंजू', महावीर राम सेठ, राजेश्वर प्रसाद, टेक नारायण भदानी, नरेन्द्र नितेश (रानीगंज), संत कुमार माहुरी, रामश्रय झा, तृप्ति नारायण शर्मा, देवनन्दन राम, ब्रजेश कुमार (पटना) आदि ।

उपर्युक्त वर्णित लेखकों के अतिरिक्त कई ऐसे मनस्वी व्यक्ति

हैं जिन्होंने मयंक के संपादन सामग्री चयन, प्रकाशन, वितरण के सन्दर्भ में अपने विचार देकर 'मयंक' के संपादन-प्रकाशन की स्थिति को लोकप्रिय बनाने में अप्रत्यक्ष रुप से सहायता की है । इनमें मुख्य हैं : सर्वश्री योगेश्वर प्रसाद एम०एस०सी०, टेकनारायण भदानी, मधुसूदन राम, बनमाली राम, हरिहर प्रसाद लोहानी, कमलापति राम तरवे, ओम प्रकाश, विद्यालंकार, ध्रुवनारायण भदानी, भीष्म देव आर्य, काली प्रसाद सेठ, गौरी शंकर भदानी, राम प्रसाद कुटरियार, सत्यनारायण तरवे, परमेश्वर प्रसाद बड़गवे, काशीराम कपसिमे, दर्शन राम कपसिमे, ओमप्रकाश सेठ (गिरिडीह) ।

"माहुरी मयंक" प्रदीप और आज के पूर्व संपादक श्री पारसनाथ सिंह, सुप्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक श्री राम जी मिश्र मनोहर, आकाशवाणी पटना के श्री शालिग्राम भारती, तारकेश्वर भारती, डॉ० रंजन सूर्यदेव प्रसाद स्वर्णकिरण, श्री हरिश्चन्द्र प्रियदर्शी, डॉ० सरयू प्रसाद का भी आभारी हैं, जिन्होंने "माहुरी मयंक" के संपादन में अपनी विवेचनात्मक विचार से हमें लाभान्वित किया है ।

अव्यवस्था और संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण 'मयंक' का प्रकाशन अस्त-व्यस्त हो गया है । दायित्व बोध के इस अभाव के कारण समाज का एक बड़ा भाग इससे क्षुब्ध है । शायद इसी कारण माहुरी वैश्य महामण्डल गिरिडीह एवं करकेन्द माहुरी मण्डल ने स्मारिकाएँ निकालकर अपनी बातों को समाज के समक्ष रखने की शुरुआत की है । साथ ही बोकारो माहुरी संघ ने 'चेतना' नामक अनियतकालीन पत्रिका छपवा रही है । हजारीबाग से श्री सहदेव लोहानी, रजरप्पा टाइम्स और बिहारशरीफ से श्री भोला प्रसाद चरण पहाड़ी, पावापुरी टाइम्स का प्रकाशन करके समय-समय पर जाति की गतिविधियाँ संस्मरण आदि छपते रहते हैं । जनवरी ९७ से त्रैमासिक अमृत कलश का प्रकाशन हुआ है । इसके संपादक हैं श्री मदन लाल मधुकर । पत्रिका की छपाई-सफाई ऑफसेट में छपने के कारण अच्छी है पर सामग्री चयन में विविधता और उपयोगिता पर ध्यान नहीं दिया गया है । दो चक्र निकलने के बाद यह बन्द हो गया । स्व० कामता प्रसाद अठघरा अधिवक्ता द्वारा सम्पादित एवं स्व० रामधनी प्रसाद अकेला द्वारा प्रकाशित मथुरासिनी समाचार बिहारशरीफ

से वर्ष १९७९ में प्रकाशित किया गया जो वर्ष १९८८ तक निरन्तर प्रकाशित हुआ। इसका आयाम विस्तृत था किन्तु समाज हित की बातें भी यथावसर छपती रहीं।

श्री मधुकर जी ने एक छोटा माहुरी जाति का इतिहास भी छपाया है जो कि माहुरी भूषण पर आधारित है। बिहारशरीफ मण्डल ने इधर माहुरी नाम से दो अनियमितकालीन पत्रिका छापी है जिसमें स्थानीय जाति समाचार छपे हैं। माहुरी महामण्डल के उद्देश्य में जाति हित के पत्रिकाओं के प्रकाशन की बात लिखी गयी है। किन्तु महामण्डल ने केवल "माहुरी मयंक" को ही सहयोग दिया है। यदि महामण्डल इन समाचार विचार माध्यमों को भी सहयोग और हौसला बढ़ाते तो इनके स्वरुप भी अच्छे होते क्योंकि समाज में किसी एक पत्रिका का एकाधि पत्य से स्थितियों का सार्थक आभास लोगों को नहीं कराया जा सकता। उदाहरण के तौर पर महामण्डल के पूर्व अध्यक्ष डॉ० केदार राम गुप्ता एवं कुछ अन्य समाजसेवियों की मौत पर "माहुरी मयंक" चुप रहा तो पावापुरी टाइम्स ने डॉ० केदार राम गुप्ता के ऊपर सामग्री छापी। जाति हित की संस्थाओं के पदाधिकारियों की अकर्मण्यता को भी उजागर करना पत्रकार का दायित्व है इसका निर्वाह भी पिछले कुछ वर्षों से 'मयंक' नहीं कर पा रहा है। कारण जो भी हो परन्तु सत्य यही है। ज्ञात हो जीवित और जाग्रत जाति का आइना जातीय पत्रिका होती है। इसलिए मयंक का विधिवत प्रकाशन आवश्यक है। पत्रिका संपादन एवं प्रकाशन समय पर हो इसलिए कर्तव्यपरायण व्यक्तियों को इसके लिए आगे आना होगा।

इसके अलावे समाज में कई राष्ट्रीय प्रान्तीय, दैनिक समाचार-पत्रों एवं आकाशवाणी से भी जुड़े कुछ लोग हैं, जो कि जाति-हित के समाचारों को यथावत प्रकाशित करते रहते हैं। दैनिक हिन्दुस्तान पटना के श्री शिव प्रसाद लोहानी और दैनिक आवाज धनबाद के श्री विश्वनाथ भदानी अधिकृत संवाददाता हैं। पटना आकाशवाणी के स्थायी वार्ताकार श्री शिवप्रसाद लोहानी हैं जिन्होंने एकाधिकबार प्रसंगानुसार जाति के गौरव से संबंधित वार्ता प्रसारित कीये हैं। "माहुरी मण्डल नाटक" के मगही का प्रथम प्रकाशित ग्रन्थ होने की वार्ता इन्होंने आकाशवाणी से प्रसारित किया

था। अप्रैल १९९४ में माहुरी वैश्य महामण्डल के अधिवेशन का समाचार का प्रसारण भी इन्होंने अपने संपर्क के माध्यम से करवाया था।

यह युग प्रचार का है और प्रचार के इलेक्ट्रानिक एवं प्रिन्ट मीडियासे जब तक सार्थक संपर्क स्थापित करके लोगों के बीच स्थितियों का अहसास नहीं कराया जायगा, समाज अभीष्ट लाभ से वंचित रहेगा। आवश्यकता इस बात की है कि इनसे संपर्क साधने के लिये वांछित प्रयास किया जाना चाहिए। यह जितना जल्दी होगा उतना ही श्रेयस्कर होगा।

अ० भा० महाउरु वैश्य संघ का संस्मरण ग्रन्थ-१ वर्ष १९८२

सरिता साईज की १५० पृष्ठों वाला इस ग्रन्थ के संपादक हैं महाउरु वैश्य संघ के संस्थापक अध्यक्ष श्री शिव प्रसाद लोहानी। सहायक संपादक हैं : बांकीपुर माहुरीमण्डल के मंत्री श्री अर्जुन प्रसाद। व्यवस्थापक हैं समर्पित समाजसेवी श्री बनमाली राम और सहायक व्यवस्थापक हैं श्री बेचूराम कपसिमे (प्रचार मंत्री अ०भा० महाउरु वैश्य संघ) प्रकाशक हैं - श्री श्यामाकान्त लोहानी और सह प्रकाशक है - श्री नित्यानन्द प्रसाद गुप्ता।

विभिन्न विषयों पर इसमें लेख छपे हैं - दिल्ली के श्री महेश चन्द्र गुप्त का झुमरीतिलैया के श्री सदानन्द प्रसाद भदानी का, दिल्ली के पूर्व सांसद एवं मंत्री श्री शिव चरण गुप्त का, जयपुर के श्री बनवारी लाल गुप्ता का, बरेली के पूर्व सांसद एवं मंत्री श्री राममूर्ति जी का सुप्रसिद्ध समाज सेवी डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्ता का, अलवर के राजस्थान टाइम्स के पत्रकार व यशस्वी संपादक श्री रामकुमार राम का, दिल्ली के स्व० नवीन चन्द्र आर्य का, गिरिडीह के समाजसेवी श्री राम प्रसाद राम का, पटना के श्री अर्जुन प्रसाद की कवितायें है - बरेली के श्री सत्यपाल गुप्ता का, श्री अरविन्द कुमार भदानी का एवं प्रारंभ में मधुरासिनी वन्दना है श्री भोला प्रसाद चरण पहाड़ी का।

कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों के चित्र अंक की सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं। सबसे उपयोगी वस्तु है संघ की सैकड़ों शाखाओं के पदाधि

कारियों के नाम पते जो कि भविष्य में सम्पर्क सूत्र बढ़ाने के उपयोगी माध्यम बन सकते हैं ।

छपाई, सफाई, चित्राकर्षक और समाजसेवियों के लिए यह संग्रहणीय है । देश के कोने-कोने के सभी घटकों के व्यापारिक औद्योगिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन भी उपयोगी हैं ।

स्मरणीय है कि बरेली में सम्पन्न हुए महाउरु वैश्य संघ का अधिवेशन अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें सभी उपवर्गों के हजारों व्यक्तियों ने इसमें सिरकत की थी । उसी की स्मृति में यह संस्मरण ग्रंथ-१ प्रकाशित हुआ । प्रकाशन के तुरन्त बाद नई दिल्ली के रेलवे के एक हॉल में इस संस्मरण ग्रन्थ का विमोचन राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री श्री बद्री प्रसाद गुप्ता ने किया और इसका उद्घाटन किया था भारत सरकार के तत्कालीन ऊर्जा राज्यमंत्री श्री विक्रम महाजन ने । इस अधि वेशन में दिल्ली के पूर्व सांसद मंत्री श्री शिवचरण गुप्ता, स्व० मोहन लाल गुप्ता, स्व० रामावतार आर्य, डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्ता बड़े सक्रिय थे । यह अपने ढंग का एक अनुठा समारोह था ।

अ० भा० महाउरु वैश्य संघ का संस्मरण ग्रन्थ- २

यह संस्करण ग्रन्थ-२ का प्रकाशन महाउरु वैश्य संघ के महत्वपूर्ण झूमरीतिलैया अधिवेशन के पश्चात् हुआ । बड़े आकार में १२५ पृष्ठों का अवलोकनीय संग्रहणीय और पठनीय है । इसके संपादक हैं – समाज के मूर्धन्य विद्वान और पत्रकार श्री शिवप्रसाद लोहानी, संपादन निर्देशक हैं प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री सदानन्द प्रसाद भदानी, सह संपादक हैं श्री बेचूनारायण जिसमें व्यवस्थापक हैं श्री परमेश्वर प्रसाद बड़गवे ग्रंथ के प्राप्ति स्थान के व्यक्ति हैं श्री ओमप्रकाश विद्यालंकार एवं मुद्रक हैं पटना के श्री श्यामाकान्त लोहानी । इसकी अनुक्रमाणिका देखने से ज्ञात होता है कि अंक में महाउरु वैश्य संघ के प्राय: सभी उपवर्गों के विद्वान लेखकों की रचनाएँ हैं । साथ-साथ अधिवेशन के सभापति स्वागताध्यक्ष स्वागत मंत्री के भाषण के अलावा आय-व्यय का पूर्ण विवरण है ।

खण्ड – ४

अध्याय – १

उल्लेखनीय प्रसंग

पूर्व के पृष्ठों में अनेकानेक प्रसंगों में व्यक्तियों की चर्चा यथावसर हुई है । उसमें से कुछ ऐसे प्रसंग हैं जिनके विशेष वर्णन अपेक्षित हैं । कुछ की तो उन प्रसंगों में चर्चा तक नहीं हो सकी होगी क्योंकि उनके सामाजिक सन्दर्भ ज्ञात नहीं हो सके । एकाधिक अवसरों पर लोगों से पत्र एवं व्यक्तिगत प्रतिनिधिक सम्पर्क साधा गया । किन्तु वांछनीय जानकारी नहीं मिल पायी । भारी मन से यों उन्हीं प्रसंगों से संतोष करना पड़ रहा है जो हमें उपलब्ध हो सका ।

महात्मा गाँधी के खरगडीहा आने का प्रसंग

"माहुरी मयंक" के भाग-६ अंक- १० अर्थात् अक्टूबर १९२५ में पूज्य महात्मा गाँधी के स्पेशल हजारीबाग माहुरी महामण्डल के अधि वेशन में पधारने का विस्तृत विवरण छपा है । इसी सन्दर्भ में पटना से प्रकाशित तत्कालीन ख्यातिप्राप्त राष्ट्रीय विचारधारा वाले साप्ताहिक पत्र 'देश' के १५ अक्टूबर १९२५ में स्वयं महात्मा गाँधी ने उपर वर्णित खरगडीहा के स्पेशल अधिवेशन का वर्णन किया है । इन दोनों प्रसंगों के विशेष अंक को यहां उद्धृत किया जा रहा है ।

माहुरी महामण्डल का एक स्पेशल अधिवेशन स्थान खरगडीहा में हुआ । देशबन्धु कोष के लिये माहुरी महामण्डल एक हजार रुपये की थैली गाँधीजी को भेंट की तथा मान-पत्र भी दिया ।

खरगडीहा में महात्मा गाँधी

६-१०-१९२५ को ९:३० बजे महात्मा गाँधी गिरिडीह पचम्बा होते हुए मोटर द्वारा खरगडीहा डाक-बंगला में पहुँचे । दर्शकों की खासी भीड़ थी लोग सड़क के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े थे । उस समय शंखों की ध्वनि हो रही थी । लोग उत्साह और आनन्द से परिपूर्ण थे । उस

समय की शान्ति सिर्फ स्वयं सेवकों के ही परिश्रम का फल थी । विशुद्ध खद्दरधारियों की संख्या अधिक थी । कोई एक घंटे तक महात्मा गाँधी एक चर्खा में (जो कुछ बेमरम्मत हो रहा था) लगे रहे, उसके बाद उन्होंने महिला सभा में पदार्पण किया जहाँ औरतों की खासी भीड़ थी । औरतें शान्ति से उनका अमृतमय वचन सुन रही थी । इस इलाके की औरतों के जेवरों को देखकर उन्हें आश्चर्य सा लग रहा था । जब महात्मा जी ने देश-बन्धु कोष के लिये पैसा माँगा तब थोड़ी देर के लिये अशांति हुई थी, औरतें चाहती थीं कि जो कुछ वे दे महात्मा जी के चरणों पर रखें तथा चरण स्पर्श करें । देश-बन्धु कोष के लिये जेवर माँगने पर कई स्त्रियों ने अपने कुछ आभुषण उन्हें प्रदान कर दिया । उन आभूषणों को देखकर महात्माजी काफी प्रसन्न हुए थे । प्रायः ११:३० बजे महिला प्रस्तुत सभा मंच पर बाबू राजेन्द्र प्रसाद, बाबू मथुरा प्रसाद, बाबू रामनारायण सिंह, सुखलाल, बाबू कृष्णाबल्लभ सहाय आदि सज्जन उपस्थित थे । प्रायः ४ बजे महात्माजी का गोशाला टांड में शुभागमन हुआ । उपस्थिति लगभग ४ हजार की थी औरतें काफी तादाद में थी ।

मंच पर आसीन होने के बाद सर्व साधारण की ओर से एक अभिनन्दन पत्र जगन्नाथडीह निवासी श्री अवधेश्वरी प्रसाद ने पढ़कर महात्मा जी को समर्पित किया और श्री टेकनारायण राम भदानी जी ने एक हजार रुपये की थैली भी भेंट की ।

अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए महात्मा जी ने जो कुछ कहा था इसका सारांश इस प्रकार है –

आप लोगों ने जो दो अभिनन्दन पत्र तथा रुपयों की थैलियां दी हैं उसके लिये मैं आपलोगों का अहसान मानता हूँ । यह हमारा पहला बार है कि आप माहुरियों से मुलाकात हुई है । यह सुनकर बड़ा हर्ष होता है कि आपलोगों ने अपनी जातीय संस्था में चरखा-खद्दर को स्थान दिया है तथा उसमें आपने कुछ उन्नति भी की है तथा यह सुनकर मुझे आनन्द हुआ कि आप लोगा हिन्दू-मुसलमान दोनों भाई मिलकर इस इलाके में रहते हैं किसी प्रकार की वैमनस्यता दोनों के बीच नहीं है । मैं इस बात को अधिक बतलाना नहीं चाहता हूँ क्योंकि आप लोगों ने अहिंसात्मक

असयोग के सिद्धान्त को समझ लिया है । आपस के झगड़ों को अदालतों में न भेजकर आपस में ही तय करें । देशबन्धु दास ने हिन्दुस्तान की बड़ी सेवा की है । उनका उद्देश्य खद्दर और चरखा का प्रचार करना है ।

१५-१०-१९२५ के साप्ताहिक देश में महात्मा गाँधी लिखते हैं-

देवघर से हम लोग खरगडीहा गये । गिरिडीह होकर यहां आना पड़ता है । गिरिडीह तक हमलोग रेल से गये यहां से खरगडीहा २६ मील मोटर की सफर है । यहां स्त्रियों की सभा में काम का श्रीगणेश हुआ । अब तक मैं सभा में स्त्रियों के जेवरों की आलोचना करने से अपने को रोके हुये था । यद्यपि यह मेरे लिय कष्टकर था । किन्तु पहुँचे से केहुनी तक बतीसियों से भरे हुए हाथ तीन इंच की गोलाई वाले बड़े और मोटे नथ जो मुश्किल से नाक की छेदों से लटकते हैं मेरे लिये असह्य हो गये । मैंने बहुत मुलायमियत से कहा कि इस तरह के सारी गहने शरीर के सौन्दर्य को जरा भी नहीं बढ़ाते उल्टे इससे बड़ी दिक्कतें होती है और इससे बहुत सी बीमारियाँ पैदा होती है और मैंने साफ देखा है कि उनके जरिए बहुत सा मैल जम जाता है । मैंने कहीं भी इस प्रकार के गहनों का व्यवहार नहीं देखा है । हां इतने वजनी गहने मैंने देखें हैं जैसे कठियाबाड़ी के बाजूबन्द जो कि असह्य रुप से भारी है । कठियावाड़ी औरतों के बदन का इतना हिस्सा कंगन तथा और जेवरों से ढंका हुआ नहीं रहता है । मुझसे कहा गया है कि इन नथों से कभी-कभी नाक की सिरायें कट भी जाती है ।

मेरी इन सीधी बातों का जो असर उन भद्र श्रोताओं पर पड़ा है, उसका ख्याल कर मैं सहम गया था । पर मेरे व्याख्यान के बाद जब मैंने उनसे देशबन्धु कोष के लिये याचना की तो उन्होंने मुझे उदारतापूर्वक पैसे दिए । यह देख मैंने कुछ संतोष पाया । मैंने अपनी बातों को इन दाताओं के हृदय तक पहुँचा देने की कोशिश की और उनसे उनके अनावश्यक गहनों का अधिकांश भाग मुझे दे डालने को कहा । महिलाओं ने मेरी सम्मति मुस्कुराते हुए स्वीकार की और उनमें से कुछ ने अपनी कई गहने भी दे डाले । मैं नहीं जानता कि बाहरी साज-सज्जा का परिणाम और उनकी बारीकी से चरित्र के विकास पर कुछ भी सहायता मिलती है ।

हजारों दृष्टांत है जिनसे यह साबित होता है कि बुद्धि से इसका कुछ संबंध है । चरित्र से अलग संस्कृति से इसका कुछ संबंध है यह भी सहज ही मालूम होता है किन्तु चुंकि मैं चरित्र को संस्कृति से बढ़कर मानता हूँ । मुझे ताज्जुब है कि मैं भारत के विभिन्न प्रांतों की स्त्रियों के बीच में जाने का अधिकार का आभुषणों के सुधार में लगते हुए उसका ठीक-ठाक उपयोग कर सकता हूँ या नहीं । जो मैं इन स्त्रियों के माँ-बाप और पतियों से अर्थशास्त्र और स्वास्थ्य के आधार पर इनके आभूषणों में काट-छाँट करने को कहूँगा ।

इसी जगह मुझे माहुरियों से जान पहचान हुई । ये वैश्य हैं । कहा जाता है कि कई पीढ़ियाँ पहले मथुरा और उसके आस पास के मुल्कों से घुमते हुए आकर बिहार में बस गये । ये धनी और उत्साही हैं । इनका प्रधान धन्धा व्यापार है । इनमें से कितने कट्टर सुधारवादी हैं । ये खद्दर पहनते हैं और इन्होंने चरखों से गरीबों के लाभ को समझा है । इनमें से कितनों ने जो पहले मदिरा और मांस खाते थे उसे छोड़ दिया है । अपने अभिनन्दन पत्र में उन्होंने यह बतलाया है कि उन्होंने समझा है कि असहयोग आन्दोलन केवल आत्म-शुद्धि करने वाला है और इनमें इनके अभ्यंतर जीवन में क्रांति मचा दी है । ये राजनीति में कुछ या एकदम भाग नहीं लेते । किन्तु वे अपने छोटे समाज में हर तरह के सुधार करने पर उतारु हैं । हिन्दुस्तान के इन लोगों पर असहयोग पर नैतिक प्रभाव शायद सबसे अधिक स्थायी है और इसके गर्भ में वे कल छिपे हुए जिनका अभी हमें थोड़ा आभास मिल सकता है । मुझे मालूम हुआ है कि संथालों में भी ऐसे ही सुधार हुए हैं । उनमें से बहुतों ने जो कि शराब के आदी थे को अब उनका सम्पूर्ण त्याग कर दिया है । पिकेटिंग उठ जाने के बाद जो आन्दोलन शिथिल हो गया था इन दिनों जग गया है । किन्तु इस बार यह उन हिंसात्मक भावों से रहित है जिनका समावेश १९२१ में हो गया था । अलग संथालों की सी सीधी किन्तु मूर्ख जातियां शराब खोरी की आदत से बचायी जा सके तो यह उनकी रक्षा करना होगा ।

स्व० श्यामलाल कुटरियार के "माहुरी मयंक" के मार्च १९६९ के अंक में क्या महात्मा गाँधी माहुरी बनियां थे । शीर्षक से एक लेख

छपा है उसमें उन्होंने महात्मा गाँधी के आत्मकथा सत्य के प्रयोग से यह अंश भाग-१ पृष्ठ- १ का उद्धरण किया है ।

'गाँधी कुटुम्ब जान पड़ता है कि पहले पन्सारी का धंधा किया करते थे पर मेरे दादा से लगाकर तीन पीढ़ीयों तक अन्य व्यवसाय करता आया है ।'

उसी पुस्तक के अध्याय-६ पृष्ठ-३३ पर लिखा है 'गाँधी कुटुम्ब वैष्णवी सम्प्रदायी था । मेरे माता-पिता भले वैष्णवी थे नित्य मंदिर जाते थे । गुजरात में जैन सम्प्रदाय का बड़ा जोर था । उनका प्रभाव हर प्रवृत्ति पर था । सो मांसाहार का विरोध और बहिष्कार जैसा गुजरात में और जैनों और वैष्णवों में देखा जाता है वैसा हिन्दुस्तान या सारी दुनिया में और कहीं दिखाई नहीं देता है । मैं इन्हीं संस्कारों में पला हूँ ।

कुटरियार जी ने अपनी राय इस प्रकार लिखी है : उक्त वर्णन से भौरों (म्हौरों) की माहुरियों से समानता साफ प्रतीत होती है ।

डॉ० रामेश्वर दयाल जी ने भी अपनी पुस्तक 'माहौर वैश्य जाति एवं उनके संगठनों पर ऐतिहासिक अनुष्ठान' के पृष्ठ १७४ पर कुछ इसी तरह की बातें लिखी है । डॉ० दयाल ने तो ऐसा भी माना है कि 'म्हौड़' भी 'महाउरु वैश्य संघ' के घटकों में है । इस बात की विस्तृत जानकारी अपेक्षित है ।

.
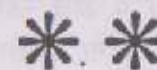
विविध उल्लेखनीय प्रसंग

उपाधि

मूल नाम के बाद माहुरी जाति में बीसवीं सदी के प्रारम्भ में राम लगाने की प्रथा थी जैसे छट्ठूराम, रामचन्द्र राम आदि । विशिष्ट लोग नाम के बाद लाल भी लगाते देखे गए हैं जैसे दुर्गाचरण लाल आदि । सभी वैश्य गुप्त लगाते थे । अतः गुप्त टाइटिल भी लगाया जाने लगा है यथा प्रभुदयाल गुप्त आदि । ये लोग अपने खाते का भी उल्लेख करते हैं जैसे- रामकृष्ण राम लोहानी, सदानन्द प्रसाद भदानी आदि ।

भोजन, वस्त्र, परिधान और सामान्य आर्थिक स्थिति

स्थिति : माहुरी जाति मूलतः शाकाहारी है । बहुमत उसना चावल भी नहीं खाते हैं । अरवा चावल खाने की विशेष प्रथा है । शाकाहारियों में इस जाति की गणना की जाती है । बिना स्नान किए औरतें चौके में प्रवेश नहीं करती हैं । महिलाएँ तो खासकर शौच जाने के बाद कपड़ा भी बदलती हैं । प्याज, लहसुन पहले चौके में नहीं चलते थे । अब इसमें शिथिलता आ रही है । अधिक दाम के कपड़े पहनने में लोग हिचकिचाते नहीं है । थोड़ी रकम हाथ में आ जाने पर घर बनाने की पहली प्राथमिकता रहती है । शादी विवाह में अत्यधिक खर्च करना आम बात है । एक सर्वेक्षण से पता चला है कि आर्थिक संपन्नता प्राप्त व्यक्ति के बेटे-पोते तब तक अर्थोपार्जन में रुचि नहीं लेते हैं जब तक उनकी तिजोरियों में रकमें होती हैं । पचहत्तर प्रतिशत लोग बाप-दादों की कमाई शुन्य पर ला देने के बाद ही नए सिरे से परिश्रम करके कमाई करते हैं । बारह प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हैं जो बाप-दादों की सम्पति को बहुत बढ़ा देते हैं । शेष बारह प्रतिशत सम्पत्ति को यथावत रखते हैं ।

स्वभाव से माहुरी जाति के लोग दब्बू प्रवृत्ति के नहीं होते । इनकी प्रखरता वाचालता और जरुरत से ज्यादा अपने को शक्ति सम्पन्न समझने की प्रवृत्ति आम है । जो संतुलित जीवन व्यतीत करते हैं वे तीव्र उन्नतगामी होते हैं क्योंकि आमतौर पर लोग होशियार और

बुद्धिमान हैं ।

समाज में महिला का स्थान

महिलाओं की स्थिति माहुरियों के घरों में अपेक्षाकृत अच्छी कही जा सकती है । महिलाएँ खर्चीली स्वभाव की होती हैं । वे अपनी आर्थिक स्थिति की चिन्ता नहीं करते हुए अपने से सम्पन्न घरों की महिलाओं के खान-पान, रहन-सहन का अनुकरण करती हैं । सदा अपने से ऊँचे घरों में संबंध करना पसन्द करती हैं । हाँ वर्षों की दौड़-धूप से त्रस्त होने पर ये औने-पौन फिसलकर वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को लाचारी में कष्टमय भी बना देती हैं । लड़कियों में पढ़ने की प्रवृत्ति इधर बहुत बढ़ी है । जहाँ पढ़ने की सुविधा है, वहाँ अनेकानेक स्नातक लड़कियाँ मिल जाती हैं । लड़कों की अपेक्षा अभी स्नातक लड़कियों की अधिकता दीख पड़ती है ।

माहुरी जाति की नैसर्गिक प्रवृत्ति

माहुरी जाति की स्पष्ट विशेषताएँ रेखांकन करने योग्य है । खान-पान में सात्विकता, पौष्टिकता का समावेश स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है । इस मद में कंजूसी सामान्यतः स्वीकार्य नहीं है । कहीं-कहीं तो ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत का व्यावहारिक रुप भी परिलक्षित होता है । जिद्द, अपनी बात पर अड़े रहने की प्रवृत्ति, तर्क-वितर्क द्वारा अपनी बात को सिद्ध करने का प्रयास करना, अस्वाभाविक नहीं, रुढ़ि और परम्परा के प्रति अवांछित व्यामोह शिक्षित लोगों में भी पाया जाता है चाहे वह रीति-रिवाज कितनी ही हानिप्रद क्यों न हो । सामाजिक गोष्ठियों सभाओं में उन्हें तिरस्कृत करना, विरोध के प्रस्ताव पास कराना आसान नहीं ।

खेल-कूद

स्वातंत्र्य पूर्व काल में भारतीय खेल की परम्परा चालू रही । इसके अन्तर्गत कबड्डी, कुश्ती आदि खेल खेले जाते थे । ग्रामीण क्षेत्रों में कुश्ती प्रतियोगिता को दंगल के नाम से जाना जाता था । माहुरी जाति के लोगों द्वारा इसमें भाग लिए जाने का कोई विधिवत स्वरुप नहीं

मिलता है । किन्तु-पुराने व्यक्तियों द्वारा यह सुना जाता है कि जमींदार किस्म के लोग कुश्ती में दिलचस्पी रखते थे ।

स्वातंत्रोत्तर काल में माहुरी जाति के लड़कों का सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में भाग लेने की बात ज्ञात होती है । इसकी शाखाओं में कसरत और खेलकूद होते थे । कालान्तर में क्रिकेट, पोलो, बैडमिन्टन, शरीर सौष्ठव आदि का प्रचलन बढ़ा परन्तु इसका भी कोई स्पष्ट विवरण नहीं मिलता । इसमें एशिया प्रसिद्ध शरीर सौष्ठव के खिलाड़ी नूरसराय निवासी सुनील कुमार लोहानी का नाम चर्चा में है । ये बिहार कुमार, बिहार श्री एवं भारत कुमार आदि उपाधि पा चुके हैं । संचार विभाग प्रायः प्रत्येक वर्ष देश के भिन्न-भिन्न स्थानों में जाते हैं और कभी प्रथम कभी द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त कर आते हैं । ये भूतत्व विज्ञान (जियोलॉजी) में प्रथम श्रेणी में साइंस कॉलेज पटना से एम०एस०सी० पास हैं ।

संगीत-कीर्तन

संगीत जीवन को मृदुल और सरस बनाने का माध्यम है । इसका सार्थक रसास्वादन करने के लिए भी संगीत की प्रारम्भिक जानकारी वांछनीय है । ऐसे जानकार समाज में अनेकानेक हैं । किन्तु शास्त्रीय और पारम्परिक संगीत के ऐसे मर्मज्ञ भी समाज में हुए हैं जिनका महत्व क्षेत्रीय के साथ-साथ विस्तृत परिधि में देखा सुना गया है । नालन्दा जिला के हिलसा अनुमण्डल के निवासी रामकृष्ण राम जी और प्रभुचन्द राम जी ऐसे व्यक्ति हैं । रामकृष्ण राम जी हारमोनियम के शास्त्रीय गायन के मर्मज्ञ थे तो उनके अनुज प्रभुचन्द जी तबला के । तबला वादन के बाबू प्रभुचन्द जी शास्त्रीय गायन भी करते थे ।

सिलाव संकीर्तन मण्डली

संकीर्तन के क्षेत्र में सिलाव के बाबू भगवानदास नवदिया के नेतृत्व में संकीर्तन मण्डली बनी थी, इसमें किशोरीलाल बरहपुरिया का गायन अत्यन्त मनमोहक और चित्राकर्षक होते थे । उत्तर प्रदेश के सीतापुर नगर एवं बिहारशरीफ में चौथे दशक में अखिल भारत वर्षीय संकीर्तन सम्मेलन

हुआ था । इसमें उन्हें दर्जनों रजत और स्वर्ण पदक मिले थे ।

बरबीघा कीर्तन मण्डली

बरबीघा के बाबू चेतूलाल जी के संरक्षण में एक अच्छी कीर्तन मण्डली बनी थी । रामचन्द्र यश कीर्तन मण्डली नूरसराय - रामकृष्ण लोहानी के नेतृत्व में एक कीर्तन मण्डली निर्मित हुई थी जो प्रत्येक वर्ष अ०भा० कीर्तन सम्मेलन में भाग लेती थी ।

ज्योतिष

श्री मधुसूदन राम

श्री मथुरा प्र० लोहानी

ज्योतिष का प्रभाव समाज में बराबर रहा है । आज भी बहुत से संबंध ज्योतिष निष्कर्ष के आधार पर ही होते हैं । समाज में अनेक लोग ऐसे हैं जिन्हें ज्योतिष शास्त्र के वैवाहिक गणना का प्रारम्भिक ज्ञान है । किन्तु समाज में ऐसे तीन हस्ताक्षर है जिन्हें ज्योतिष का अधिक ज्ञान प्राप्त है । एक हैं ओढ़नपुर (नवादा) के निवासी श्री मथुरा प्रसाद लोहानी पटना और दूसरे हैं झुमरीतिलैया के श्री मधुसूदन राम भदानी । श्री मथुराजी की रचनाएँ ज्योतिष की भारतवर्षीय ख्याति प्राप्त अंग्रेजी पत्रिका में छपती रहती है । तीसरे हैं टाटा के श्री सरयू प्रसाद जी । ये सिद्धहस्त ज्योतिषी हैं ।

दूसरे श्री मधुसूदन राम जी भदानी जी का ज्योतिष के विशद अध्ययन का प्रमाण यही है कि इनके यहाँ सभी प्रमाणिक ज्योतिष ग्रन्थों का पच्चासों हजार ग्रन्थ के संग्रह के साथ-साथ सैकड़ों वर्षों के पंचांग देखे जा सकते हैं । ज्योतिषीय गणना इनकी अत्यन्त वैज्ञानिक और सटीक होती है । ये खरगडीहा के निवासी हैं और समाज सेवी टेकनारायण राम भदानी के पुत्र

हैं । भोपाल की एक अ०भा०ज्योतिषियों की संस्था ने इन्हें ज्योतिष वाचस्पति की उपाधि दी है । माहुरी मयंक के संपादक रहे नवल किशोर कन्धवे की रुचि ज्योतिष में अच्छी थी । स्वर्गीय होने तक 'मयंक' के अधि कांश अंकों में ज्योतिष की बातें रहती थी । स्व० दामोदर कन्धवे झुमरीतिलैया में रहे और ज्यातिष की अच्छी जानकारी रखते थे ।

विधवा की पीड़ा

यों तो विधवा का जीवन कष्टकारक होता है किन्तु माहुरी जाति की विधवाएँ सबसे अधिक कष्ट सहने को मजबूर हैं । जो विवाह के कुछ महीनों, वर्षों में ही वैधव्य जीवन जीने को विवश होती है उनके लिए यह भयानक त्रासदी है । किसी भी शुभ कार्य में विधवा की उपस्थिति वर्जित रहती है । शादी विवाह, छट्ठी, मुंडन में तो विधवा पर दृष्टि पड़ना भी शुभ नहीं माना जाता है । माथे में सुहाग का चिन्ह सिन्दूर नहीं लगा सकती और न हाथों में चूड़ी ही पहन सकती है । ये सिर्फ चाँदी या सोने की चुड़ी पहन सकती है । आजादी के बाद विधवाओं को पति की सम्पत्ति का मालिक बना दिया गया है इससे इसकी हालत में कुछ सुधार हुआ है और उनके नजदीकी रिश्तेदार उन्हें कम से कम पूछने लगे हैं । कभी-कभी यही अधिकार उनके प्राण का अन्त कराने में सहायक हो जाता है । मगध महामण्डल में पुनर्विवाह जद्दोजहद के बाद पास हुआ । पक्ष-विपक्ष में दर्जनों लेख 'मयंक' में छपे किन्तु कोई भी युवक विधवा से शादी करने में आगे नहीं आता ।

पारिवारिक परिवेश

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में सम्मिलित परिवार की प्रथा थी । धीरे-धीरे शताब्दी के अंत आते-आते छोटे व्यक्तिगत परिवार की स्थिति बनती जा रही है । माता-पिता की व्यावसायिक अधिकार जब तक पूरा रहता है सभी बेटों में पारिवारिक उन्नति की कामना रहती है, सम्मिलित परिवार चलता है, किन्तु जैसे ही लड़के लोग रुपये की छीना-झपटी अप्रत्यक्ष रुप से करने लगते हैं आर्थिक स्थिति चरमरा जाती

है । बँटवारा होने के बाद कुछ लड़के की हालत खराब हो जाती है कुछ अच्छे हो जाते हैं । बूढ़े माँ-बाप को कूढ़न और ऊब की जिन्दगी बितानी पड़ जाती है ।

लड़की के विवाह की समस्या भी विकट होती जा रही है । पूर्वापेक्षा भिन्न-भिन्न प्रकार के नये प्रकार की पसन्दगी हो गयी है । विविधता की कमी के कारण बहुधा न तो लड़की के पसन्द लायक लड़का मिल पाता है और न ही लड़के के पसन्द के लायक लड़की । सम्भवत: इसीलिए अन्तर्जातीय विवाहों की बढ़ोतरी होती जा रही है । इतना होने पर भी ततुल्य स्वरुप की जातियों से आपसी मेलजोल करके वैवाहिक संबंध करने की सामाजिक मान्यता नहीं मिल पा रही है । संतोष इतना ही है कि जिस परिवार में कोई अन्तर्जातीय विवाह करता है पूर्व की तरह समाज से पदच्युत करने की प्रथा काम नहीं आती ।

आभूषण और माहुरी

अन्य जाति की महिलाओं की तरह माहुरी जाति की महिलाओं का भी जेवरों के प्रति आकर्षण रहा है । सदी के तीसरे चौथे दशक में वजनी चाँदी के जेवर पहनने की प्रथा थी । सोना नाक, कान व गला में पहना जाता था । हसुली, बांक, बिजौठा, बाजू हेंकल, गोड़हा, करधनी, ताबीज, कंगना, ठेल, मनटीका, झांझ, लच्छी आदि चाँदी के बनते थे । अमीरों में कहीं-कहीं ये जेवर सोने के भी बनते थे । अब धीरे-धीरे १९९६ ई० तक पहुँचते-पहुँचते चाँदी के जेवर पहनने की प्रथा प्राय: समाप्त हो गयी । पैर में वजनी गोड़हा के स्थान पर हल्का पायल पहना जाता है । गले में सोने चाँदी के सीकड़ी, कान में सोने का इयरिंग या टॉप, नाक में सोने का बेसर पहना जाता है ।

चौका चूल्हा जलावन

माहुरी महिलायें चौका चूल्हा बर्तन साफ करने के पश्चात् स्नान करके चूल्हा जलाती है । जलावन के रुप में कोयला, लकड़ी और गोयठा

का प्रयोग किया जाता है । किरासन तेल का स्टोव भी काम में लाया जाता है । परन्तु अब धीरे-धीरे उन जलावनों ने गैस चूल्हा का स्थान ग्रहण कर लिया है । सुदृढ़ आर्थिक स्थिति वालों के घरों में चौका बर्तन मांजने का काम दाइयाँ करती हैं । किन्तु सामान्य घरों में महिलायें यह काम स्वयं करती हैं । रसोइयां तो गिने चुने घरों में है । पूर्व में जाति की गरीब विधवा या महिलायें बड़े घरों में यह काम करती थीं जिन्हें सिधमाइन कहा जाता है ।

वरतूई

पिछले कुछ वर्षों से समाज में विवाह के पूर्व विदेशी पद्धति रिंग शिरोमणि का रिवाज बढ़ रहा है । इस रिंग शिरोमणि में समाज के पंचों की सहमति की कोई गुंजाईश नहीं रहती है । जबकि हमारी जाति की वरतुई की अंगूठी भेजे जाने वाले पारम्परिक रिंग शिरोमणि का उत्कृष्ट रुप में जातीय परिपक्व प्रौढ़ युवाओं की जनतांत्रिक पद्धति जैसी सहमति का प्रावधान था । दूसरी जाति वाले वरतूई के रस्म को अच्छा नहीं मानते उन्हें भ्रम इसलिये है कि वरतूई के सामाजिक महत्व को वे नहीं जानते ।

ऐतिहासिक जानकारी वाले लोग जानते हैं कि पूर्व में किसी भी जाति की लड़की से शादी करने पर वह लड़के की कुल गोत्र में मिल जाती थी । हमारे मनीषियों ने समाज के लिए इसे उचित नहीं समझा । उस समय लड़कियों की कमी थी और जब हमारी जाति सुदूर पश्चिम से आयी व्यक्ति संस्कारवान थे । स्वभावतः लड़कियाँ भी अत्यन्त सुन्दरी और आकर्षक होती थी । क्या अजब की दूसरी जाति वाले लड़की की विवशता का लाभ उठाकर उससे विवाह नहीं कर लें । वरतूई के रश्म से इस पर नियंत्रण संभव था । यह कहा गया है कि लड़का बाप का किन्तु लड़की पूरे समाज की । अतः लड़की के विवाह के पूर्व गाँव वाले से सम्मति अनिवार्य है । यही कारण है कि लड़की के पिता वर की तलाश में निकले पर शादी तब पक्की समझी जाएगी जब पंचों की स्वीकृति मिल जायगी । अतः लड़के के पक्ष की ओर से पंचायती के खर्च लेकर परोहित

लड़की के घर आते हो करते हैं तथा लड़की के घर पहुँचते हैं । वहाँ के जातीय पंचों के सामने यह रकम रखकर वितरित की जाती है । तत्पश्चात् लड़की वाले एक थैले में अक्षत आदि के साथ सोने की अंगूठी पुरोहित जी को देते थे । पुरोहित जी सभी लोगों से राय माँगते थे । स्वीकृति मिलने पर ही पुरोहित जी अक्षत की अंगूठी थैली में ले जाकर वरपक्ष को देते थे जिससे वर-पक्ष के यहाँ शादी का कार्यारम्भ होता है । ज्ञातव्य है कि गरीब से गरीब के यहाँ भी यह वरतूई होती है और हल्की ही सही पर सोने की अंगूठी देते हैं । मनीषियों की सूझबूझ, दूरदर्शिता का परिचायक यह उत्कृष्ट और मर्यादित रिंग शिरोमणि है ।

प्रस्तुति - मधुसूदन राम, झुमरीतिलैया

सम्मानोपाधि

मगध माहुरी महामण्डल ने रामचन्द बाबू को जाति शिरोमणि बाबू प्रभुचन्द गुप्त को माहुरी कुलभूषण और बाबू गोपीचन्द गुप्त को कवि शिरोमणि की सम्मानोपाधि दी थी ।

माहुरी वैश्य महामण्डल गिरिडीह ने बाबू कमलापति राम तरवे को जाति रत्न और बाबू सदानन्द प्रसाद भदानी को समाज रत्नाकर की सम्मानोपाधि दी है ।

खाता एवं गोत्र का विवरण

पचम्बा निवासी बाबू गया राम भदानी द्वारा लिखित एवं प्रकाशित "माहुरी भूषण" नामक पुस्तक जो १८९२ में मुंशी नवल किशोर (सि०आई०ए०) के छापे खाने लखनऊ में छपी है जिसका द्वितीय संस्करण महाउरू वैश्य संघ के प्रकाशक मंत्री श्री वनमाली राम जी ने १९८० में अ०भा० महाउरू वैश्य संघ के प्रधान माननीय श्री सदानन्द प्रसाद भदानी जी के आर्थिक सहयोग से स्टार प्रेस झरिया से प्रकाशित कराये हैं । उस से अपने समाज के गोत्र एवं खाता का परिचय मिलता

है जो नीचे लिखे मुताबिक है (माहुरी भूषण द्वितीय संस्करण के पेज १८ एवं १९)

	खाता	गोत्र
1.	सेठ	कमल मुनि
2.	भदानी	कुशा मुनि
3.	कपसिमे	शांदिल मुनि
4.	तरवे	वरस मुनि
5.	कन्धवे	कश्यप मुनि
6.	लोहानी	कपिल मुनि
7.	नवदियम	भारद्वाज मुनि
8.	वरहपुरिया	वसिष्ठ मुनि
9.	अठघरा	चन्द्र मुनि
10.	कुटरियार	शरण मुनि
11.	बड़गवे	कन्त मुनि
12.	आराम राम	कश्यप मुनि
13.	चरण पहाडी	सर्व मुनि
14.	साहु	सूर्य मुनि

नोट:- कन्धवे एवं आराम राम का गोत्र कश्यप है अर्थात् दोनों का गोत्र समान ही है । उपरोक्त 14 खाते से पुन: उप खाता भी बना है पर गोत्र वही रहा जैसे -

1. अठघरा से एकघरा एवं वरविगहिया
2. साहु से पवन चौदह
3. सेठ से उतरगिया, मंझवे
4. नवदिया से वैशखियार

तिथि : 14.6.92 प्रस्तुति - आशुतोष कु० भदानी

माहुरी समाज और भाट वृन्द

स्वातंत्र पूर्वकाल खण्ड में पारिवारिक समारोह में भाट और जटवा छन्द बद्ध रचनाओं के माध्यम से परिवार की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं जाति गोत्र खाता गत विशेषताओं का मौखिक बखान करके लोगों को वंशगत स्थितियों से अवगत कराने का भावात्मक स्वरुप प्रदर्शित करते थे । भाट लोग शुभ समारोहों यथा विवाह, मुण्डन आदि संस्कारों में और जटवा श्राद्ध कर्म में स्वयं उपस्थित हो जाते थे । यह परंपरा पूर्ण रुप से समाप्त हो गई है ।

सिरही पूजा और सिद्धि दात्री माँ मथुरासिनी

माहुरी के प्रत्येक घर में सीरा घर होता है । सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण अवसरों पर इस घर में पूजा होती है । इसी क्रम में सिरही पूजा का भी विधान संपन्न होता है ।

भाषा विज्ञान के अनुसार प्रत्येक शब्द के उद्‌भव का इतिहास होता है । ऐसा प्रतीत होता है कि उच्चारण लाघव के नियमानुसार कुलदेवी माँ मथुरासिनी का अंतिम अंश सिनी घिसते-घिसते सिरही, सीढ़ी या सिनी हो गया है ।

माँ मथुरासिनी माहुरियों की कुलदेवी है । मथुरा वासिन से मथुरासिनी बन गया । मथुरा में माँ मथुरासिनी देवी के खोज के क्रम में महाउरु वैश्य संघ के यशस्वी अध्यक्ष श्री सदानन्द भदानी माहुरी मयंक संपादक श्री शिव प्रसाद लोहानी, समाज सेवी श्री ओम प्रकाश विद्यालंकार डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त के साथ मथुरा पहुँचे और माहुरै पौरी गली में मथुरा देवी के मंदिर का पता लगाया । तत्पश्चात् जातिरत्न श्री कमलापति राम तरवे एवं समाज चिन्तक श्री प्रभुराम (मिनीगँज) जी के साथ मैं (अर्थात् बनमाली राम) भी वहाँ गये । अब तो मथुरा भ्रमण करने वाले सभी माहुरी मथुरा देवी के मंदिर में प्राय: जाते हैं । उक्त मथुरा मंदिर के बारे में ज्ञात हुआ है कि जब औरंगजेब मंदिरों को तोड़ते हुए वहाँ पहुँचे तो इसे अपवित्र नहीं कर पाए । उसे निराश लौटना पड़ा था । मंदिर में

एक खोह है जो कृष्ण जन्मभूमि तक अंदर अंदर जाती है । कहा जाता है कि उसी खोह से मथुरादेवी वहाँ से अलोप हो गई थी । खोह के अवशेष अभी भी विद्यमान हैं । उसी मथुरा देवी की आराधना में मथुरासिनी के अंतिम अंशसिनी के आधार पर सिनी, सिरही या सीढ़ी पूजा की जाती है । मथुरा देवी के प्रतीक के रुप में किसी लकड़ी या मिट्टी को माधार मानकर पूजा करने का विधान है । विवेचन के आधार पर यह कहा जाना समीचीन है कि यह हमें मथुरासिनी महादेवी की ओर इंगित कराती है ।

इस अधिष्ठात्री देवी माँ मथुरासिनी की पूजा तो धूम-धाम से उसी रुप में की जानी थी जिस रुप में अग्रवाल लोग प्रतिवर्ष अग्रसेन जयन्ती, जैन बन्धू महावीर जयन्ती और कायस्थ लोग चित्रगुप्त पूजा का महोत्सव मनाते हैं । इसके लिए मैंने झुमरीतिलैया, गया, चन्दौरी आदि स्थानों में सामाजिक महोत्सवों में मथुरासिनी जयन्ती वर्ष में एक दिन मनाने की आवश्यकता बतायी । सर्वप्रथम बोकारो केन्दुआ करकेन्द मण्डल ने इसका श्रीगणेश किया । श्री निखिल चन्द्र गुप्त ने झरिया में और स्थानीय समाजसेवियों ने परसाबाद में उसका अनुकरण किया । अब तो माहुरी की महानगरी गया में बड़े ही धूम-धाम, ताम-झाम से प्रत्येक वर्ष यह उत्सव मनाया जाता है ।

इस मथुरासिनी महोत्सव को अभी भी गाँव-गाँव, नगर-नगर में मनाये जाने की आवश्यकता है । सिरही पूजा से संबंध माँ मथुरासिनी का वर्षीय महोत्सव एक दिन जाति के गौरव का लोगों को अहसास कराएगा । इस महोत्सव को उन सभी प्रदेशों की राजधानियों में जहाँ माहुरी है राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भी मनाया जाना चाहिए ।

प्रस्तुति- **बनमाली राम, झुमरीतिलैया**

धार्मिक भावना

माहुरी जाति का धर्म अध्ययन से लगाव प्रारंभ से हो रहा है । इसलिए महामण्डलों के प्रमुख उद्देश्यों में धर्म प्रचार भी रहा है और

इसका उल्लेख अध्यक्षों के भाषण में बराबर रहता आया है । धार्मिक आध्यात्मिक चेतना को प्रभावित और निरन्तरता प्रदान करने में संगतों, धार्मिक स्थानों की अहम भूमिका रही है ।

राजगिरी संगत के महंत श्री श्री १०८ हंसदेव मुनि जी का बड़ा संगत माहुरियों के तीर्थ स्थल के रुप में जाना जाता है । श्री १०८ महंत हंसदेव मुनि जी के पूर्व के कई पीढ़ियों में माहुरी समाज की धार्मिक चेतना को बलवती बनाया है । श्री १०८ महंत हंसदेव मुनि जी यद्यपि राजगिर छोड़कर हरिद्वार चले गए, वहां से भी वे अक्सर बम्बई प्रवास में रहते हैं । फिर भी माहुरियों से लगाव छूटा नहीं है । वे बहुधा गया आकर अपने शिष्यों को कथा आदि कहकर आत्मिक शांति प्रदान करते रहते हैं । ये बहुत बड़े विद्वान और गंभीर अध्येता हैं । धर्म को विज्ञान से जोड़कर वैज्ञानिकता प्रदान करने में पटु हैं । इनकी कई विचारोत्तेजक पुस्तकें भी छपी हैं । मथुरासिनी चालीसा लिखकर इन्होंने माहुरी समाज को लाभान्वित किया है । गया के पार नदी जनकपुर मोहल्ले में माँ मथुरासिनी का भव्य मंदिर विस्तृत भूखण्ड पर इन्होंने बनवाया है और उसे माहुरियों का ट्रस्ट बनाकर माहुरी जाति को समर्पित कर दिया है । मथुरासिनी चालीसा का प्रकाशन गया के श्री केदारनाथ भदानी ने अपने खर्च से कराया है ।

राजगिरी बड़ी संगत के वर्तमान महंत
श्री १०८ शुकदेव मुनि जी

श्री १०८ हंसदेव मुनि जी ने राजगिरी बड़ी संगत को महंत श्री १०८ स्वामी श्री सुखदेव मुनि जी को सौंप दिया है । जिस दिन ये महंत बनाये गए थे उस दिन माहुरी समाज के मूर्द्धन्य नेता बाबू उमाचरण लाल तरवे, श्री श्याम बिहारी मुखिया, श्री शिव प्रसाद लोहानी तथा माहुरी समाज के अन्य पुरुष एवं महिलायें वहाँ उपस्थित थे और इन्हीं लोगों के समक्ष इन्हें संगत का महंत बनाया गया । श्री मुनि जी पटना विश्वविद्यालय से एम०ए० हैं और काफी सुलझे हुए विचार के युग पुरुष हैं ।

रजौली संगत

पूर्व पृष्ठों में रजौली संगत के महंत श्री १०८ गोपाल कृष्ण जी एवं श्री १०८ श्री कृष्ण बक्स दास जी की चर्चा हुई है क्योंकि इन महंतों ने माहुरी जाति की आध्यात्मिक भावना को बलवती बनाते हुए जाति संगठन को बढ़ावा देने में सक्रिय सहयोग दिया था। खेद है कि आज इस संगत की स्थिति अच्छी नहीं है।

अम्बेर संगत

अम्बेर बिहारशरीफ का एक मोहल्ला है जो कि नालन्दा समाहरणालय के निकट स्थित है। इस संगत से माहुरी जाति का पुराना लगाव रहा है। यहाँ के विशाल भवन का निर्माण मुख्यतः इसी जाति के लोगों ने दान देकर कराया था। इस संगत के महंतों का समाज में बड़ा आदर था और उन्हें बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था। माहुरी जाति के सैंकड़ों परिवार के ये गुरु थे किन्तु अब इस संगत की स्थिति बड़ी दयनीय है और यह संकीर्णता के घेरे में आ गया है। फिर भी माहुरी जाति के कुछ लोगों का आवागमन जारी है।

धनियापहाड़ी संगत

तीर्थ स्थल राजगिरी के दक्षिण ओर वनगंगा नदी है। दक्षिणी पर्वत श्रेणी का यह अंतिम छोर है। इसी के किनारे एक सड़क है। उसी सड़क से धनियापहाड़ी संगत जाया जा सकता है। यह संगत माहुरी जाति के लिए तीर्थस्थल के रुप में है। आज भी श्रद्धालु माहुरी बन्धु इस संगत में आते-जाते हैं।

काको मठ

हजारीबाग जिले में काको संगत है। जहाँ कभी सिद्ध पुरुष रहा करते थे। सी०एच०लि० कोडरमा के संचालकों को यह बहुत ही प्रिय रहा है। इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि संगत के

मनोरम भवन का निर्माण सी०एच०लि० ने कराया है।

केन्दुआ करकेन्द्र मथुरासिनी महोत्सव

श्री युगलकिशोर गुप्ता के नेतृत्व में प्रत्येक वर्ष शीतलाष्टमी के पावन अवसर पर मथुरासिनी महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह केन्दुआ मण्डल एक जीवित और सक्रिय संस्था है। इसके सदस्य दूसरे सदस्यों को विपत्ति या संकट में एक होकर सहायता करते हैं। लोगों में मेलजोल और सौहार्द बहुत सराहनीय है। प्रत्येक वर्ष वहाँ से एक स्मारिका का प्रकाशन होता है।

पटना मण्डल का नववर्ष महोत्सव

प्रत्येक वर्ष जनवरी के महीने में किसी रविवार को पटना के जैविक उद्यान बांकीपुर में सभी माहुरी बन्धु एवं महिलाएं एकत्र होती हैं। सभी लोग अपने घरों से पूड़ी-सब्जी बनाकर लाते हैं और मिलजुल कर खाते-खिलाते हैं। खेल-कूद, वाद-विवाद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इस मिलन समारोह की प्रतीक्षा लोग महीनों पूर्व से करते रहते हैं। यदा-कदा किसी बाहरी विशिष्ट व्यक्ति को भी बुलाया जाता है।

गया का मथुरासिनी महोत्सव

शीतलाष्टमी के अवसर पर प्रत्येक वर्ष गया में मथुरासिनी महोत्सव मनाने की परम्परा चलायी गयी है जो कि बड़े अच्छे ढंग से संपन्न होता है। इस अवसर पर जुलुस भी निकाला जाता है।

झरिया माहुरी संघ का मथुरासिनी महोत्सव

प्रत्येक वर्ष शीतलाष्टमी के अवसर पर झरिया में बड़े धूम-धाम से माँ मथुरसिनी का पर्व मनाया जाता है।

बाकारो माहुरी संघ का मथुरासिनी महोत्सव

शीतलाष्टमी के पावन अवसर पर यहाँ मथुरासिनी महोत्सव धूम-धाम से मनाया जाता है । पूजा-अर्चना के बाद कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं ।

स्वागत सत्कार एवं आकस्मिक आवास

चाय सर्वमान्य स्वागत का माध्यम बन गया है । गर्मी के दिनों में अक्सर ठंडा पेय भी चलता है । साधारण लोगों में शर्बत का भी प्रचलन है ।

आजादी के पूर्व कालखण्ड में दो तीन निकट के रिश्तेदार मिलकर एक साथ नाश्ता करते थे और एक ही गिलास में पानी पीते थे । किन्तु अब यह पूर्ण रुप से खत्म हो गया है जो कि स्वास्थ्यप्रद है । माहुरियों में कचौड़ी हलुआ नाश्ता का अच्छा माध्यम बन गया है ।

पूर्व में मकान बड़े होते थे । होटल का रिवाज नहीं था इसलिए सामान्यत: लोग रिश्तेदारों एवं परिचितों के यहाँ रहते थे । अब यह प्रथा प्राय: समाप्त हो गयी है । लोग अब नगरों में स्थित होटलों में ठहरते हैं क्योंकि सामान्य आदमियों को आवास की कमी हो गयी है । फलत: नजदीकी रिश्तेदारों को छोड़ बाकी को होटलों का ही सहारा लेना पड़ता है । हालांकि पहले धर्मशालाओं में व्यक्ति ठहरते थे, परन्तु अब इसकी स्थिति अच्छी नहीं है । अत: लोग इसमें रहने से कतराते हैं ।

मकानों के निर्माण में माहुरियों की कोई खास पहचान नहीं बनी है । क्षेत्र के भौगोलिक स्वरुप के अनुसार ये लोग मकान का निर्माण करते आए हैं । २०वीं शदी के प्रारम्भ में मिट्टी के मकान होते थे । खपड़े से उसे छाया जाता था । कुछ मकानों में छत होते थे जिसे बनाने में हफ्तों सुर्खी से कुटाई होती थी, इसे जल-छत कहा जाता था । ईंट से बने मकानों के दरवाजे जहाँ तहाँ ऊँचे होते थे किन्तु मिट्टी और ईंट के मकानों के दरवाजे की ऊंचाई ४ फीट के आसपास होती थी । खिड़की

नहीं होती थी । जहाँ-तहाँ सुराख व भंभाड़ी होते थे ।

दीवाल की मोटाई प्राय: बीस-चौबीस ईंच होती थी । ग्रामीण क्षेत्रों में किसी-किसी मकानों में ही शौचालय होते थे । स्नानघर की प्रथा नहीं थी । शदी के तीसरे-चौथे दशक से १०"Xढ़ाई ईंच की बड़ी ईंटें लगायी जाने लगी । गारा (मिट्टी) पर ये ईंट लगाये जाते थे । दरवाजे कुछ ऊंचे और छोटी-छोटी खिड़कियाँ भी लगने लगीं । आजादी के बाद इस स्थिति में पूरा बदलाव आया और १९९६ ई० तक दीवालें सीमेंट से १० और ५ ईंच लगने लगी । दरवाजे साढ़े ५ फीट की और खिड़कीयाँ बड़ी लगने लगी । घरों में शौचालय, स्नानघर, कुँआ या चापाकल लगने लगे हैं ।

माप तौल के वटखरा

१००० मिलीग्राम का १ ग्राम, १००० ग्राम का १ किलो होता है । १००किलो का १ क्विंटल कहा जाता है । तरल पदार्थों के लिए मिलीलीटर, लीटर होता है । स्वातंत्र पूर्व काल की तौल की निम्नतम ईकाई भरी होती थी । पाँच भर का १ छटाक और १६ छटाक का १ सेर होता था । पाँच सेर की पसेरी एवं ४० सेर का १ मन होता था । सोना, चाँदी और दवाईयों की तौल की निम्नतम ईकाई रत्ती होती थी । ८ रत्ती का एक मासा और १२ मासा का एक तोला अर्थात् भरी होती थी ।

आम तौर पर ८० भरी का सेर चलता था किन्तु कहीं ७६ भर का और कहीं १०० भर का सेर होता था । तरल पदार्थों के लिए औंस होता था, १६ औंस का एक पौण्ड बनता था । माप के लिए ३६" का गज था । कहीं-कहीं १" कम भी होता था । इन दिनों मीटर पद्धति सारे देश में प्रचलित है ।

बर्तन

अभी स्टेनलस स्टील के बर्तन का प्रचलन है । पूर्व में पीतल, कांसा, ताम्बा, भरीत के बर्तनों का प्रयोग होता था । मिट्टी के बर्तन में

भी भात-दाल बनते थे । मिट्टी की कढ़ाई भी चलती थी । आज भी माहुरियों के यहाँ सुप्पु मिट्टी की कढ़ाई में ही बनती है ।

कलम, दवात, कागज

१९९६ ई० आते-आते साधारण तौर पर लिखने के लिए बॉल-पेन और यदा-कदा फाऊन्टेन पेन लिखने के काम में आता है । इसके पूर्व सरी सरकंडा आदि की कलम चाकू से छीलकर बनाई जाती थी । दवात में कपड़ा ठूंसकर स्याही दी जाती है । स्थानीय तौर पर लोग स्वयं स्याही बना लेते थे । काठ की पेन्सिल छीलकर काम में लायी जाती थी और कार्बन आदि के लिए इसी का प्रयोग किया जाता था । हिसाब-किताब के लिए बही के मोटे पीले कागज होते थे वही आज भी कहीं-कहीं काम में लाया जाता है । शेष कामों के लिए फुलस्केप कागज का प्रचलन था और है ।

रुप, रंग, डील-डौल

सामान्य माहुरी नर-नारी के रंग गेहुँआ, दुधिया गोरी और ललहून गोराई होती है । सामला ओर काला भी कहीं-कहीं दिखाई देते हैं । लड़कियों की औसत ऊंचाई ५ फीट और लड़कों का ५ १/४ फीट होता है । इससे कम और अधिक लम्बाई के लोग भी कहीं-कहीं पर पाए जाते हैं । आम तौर पर माहुरी जाति के नर-नारी के रुप, रंग, डील-डौल अच्छे होते हैं । इससे जाति की पहचान आसान हो जाती है ।

स्वास्थ्य सफाई

सफाई में माहुरी जाति का कोई मिशाल नहीं है । कच्चे घरों की मिट्टी गोबर से नियमित पोताई एवं पक्के घरों की रोज धुलाई बिना नहाये-धोये कोई वस्तु को न छूना, रोज स्नान करना, बाहर से गंदे वातावरण में खेलकर आए बच्चे को नहलाना प्राय: आवश्यक है किन्तु कभी-कभी इतना अधिक विचार लोग करने लगते हैं कि ठंड में भी नहलवा कर स्वास्थ्य को खराब कर देते हैं ।

बिहार के अन्य वैश्य उपवर्ग और माहुरी

जिन कस्बों या नगरों में माहुरी बसे हैं उनमें तेली, सूढ़ी, हलवाई, वर्णवाल, सुनार, ठठेरा, कसेरा, अग्रवाल, ताती, रोगियार, कसरवानी, कमलापुरी वैश्य आदि रहते हैं । प्राय: सभी आमिष भोजी हैं । माहुरी पूर्णत: निरामिष भोजी है ।

माहुरी समाज की सम्पत्तियां

माहुरी समाज की अन्य सम्पत्तियां इस प्रकार है :-

गया : गया शहर में दो मंजिला भवन को माहुरी भवन के नाम से जाना जाता है । यह गुरुद्वारा रोड गोसाईबाग में उपस्थित है । गया नदी पार में सिद्धिदात्री माँ मथुरासिनी का भव्य मंदिर एवं पर्याप्त खाली जमीन है । जिसे ट्रस्ट बनाकर पूज्य पाद श्री १०८ श्री हंस मुनिदेव जी ने माहुरी समाज को दिया है ।

बरबीघा : बरबीघा में एक विशाल भवन का निर्माण वहाँ के समाजसेवियों द्वारा किया गया है । जिसमें गद्दा, बर्तन, जेनरेटर आदि सारी सुविधाएं मौजूद है ।

वजीरगंज : यहाँ पर भी एक भवन समाजसेवियों द्वारा निर्मित किया गया है । इसमें कुछ काम बाकी है ।

मिर्जागंज : यहाँ एक विधवा मसोमात महिला ने अपना मकान एवं जमीन समाज को दान में दिया है जो समाज के बन्धुओं के काम में आ रहा है ।

रानीगंज : यहाँ एक भवन का निर्माण स्थानीय समाजसेवियों द्वारा किया गया है जो वहाँ के स्व-जातिय बन्धुओं द्वारा संचालित है ।

झुमरीतिलैया : यहाँ भवन हेतु प्रयाप्त जमीन सी०एच०लि० ने दान में दी है । जिसे चारों ओर से समाज के लोगों ने घेर दिया । इसमें धर्मशाला बन रहा है, करीब-करीब पूरा हो गया है ।

गिरीडीह : यहाँ सी०एच०लि० ने माहुरी छात्रावास के लिए भवन और

खाली जमीन दान में दी है । सामाजिक बैठकें और अधिवेशन इसमें सम्पन्न होते हैं ।

अकबरपुर : एक स्वजातीय विधवा ने धर्मशाला के लिए जमीन दान में दी है जिसकी नींव पड़ गयी है ।

हिसुआ : यहां के समाज सेवियों ने समाज हित के लिए एक बना-बनाया विस्तृत मकान खरीद लिया है जिसमें सामाजिक गतिविधियाँ हो सके ।

खण्ड - ४

अध्याय - २

उल्लेखनीय प्रसंग (उद्योग व्यवसाय)

वैज्ञानिक उपलब्धियों के ऐसे-ऐसे विस्मयकारी एवं चकित कर देने वाले स्वरुपों की स्थिति आज विश्व में है जिनके निर्माताओं को सहसा नमन करने की स्वाभाविक वृत्ति जाग उठती है । उन वैज्ञानिक वस्तुओं में जिन चीजों की आवश्यकता पड़ती है उनके उत्पादकों का भी इसमें महत्वपूर्ण योग है । ऐसी वस्तुओं की उपलब्धता संस्कार और उपयोग योग्य बनाकर ये निर्मातागण उन महान वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्रत्यक्ष सहायता करते रहे हैं ।

ऐसी ही एक अत्यन्त उपयोगी वस्तु है अभ्रक जिनके बिना शायद ये वैज्ञानिक उपलब्धियाँ इतनी सकारात्मक नहीं हो पाती । अभ्रक का खनन संस्कार और इसे उपयोग में बनाने लायक की कला कम महत्व नहीं रखती । यद्यपि अभी इनके सहयोग से और निम्न कोटि के तिरस्कृत अभ्रक से अभ्रक पेपर और ततुल्य वस्तुएं निर्मित हो गयी हैं, जिनके उपयोग छोटी-मोटी वैज्ञानिक उपकरणों में की जाती है । यद्यपि स्तरीय विज्ञान के चमत्कारी वस्तुओं में अभी भी अभ्रक की आवश्यकता निर्विवाद है और निर्विवाद रहेगा तब तर्क जब तक अभ्रक की उपलब्धता बनी रहेगी ।

ज्ञात हो कि संसार में जितनी अभ्रक की खानें हैं और उनमें से जितना उत्पादन होता है उसका ८० प्रतिशत भाग भारतवर्ष में होता है । उसमें ६० प्रतिशत बिहार में होता है और वह भी हजारीबाग जिले के कोडरमा क्षेत्र में ।

विज्ञान को अभ्रक के रुप में एक ऐसी वस्तु मिल गयी जो कि न तो आग से जलती और न ही पानी से गलती या सड़ती है । विद्युत चालन को संतुलित करने में यह अत्यन्त उपयोगी रहा है । इस वस्तु को पाकर वैज्ञानिक धन्य हो गये । प्रकृति ने एक ऐसी उपयोगी वस्तु का वरदान मानव को दिया जिसकी वजह से मानव की सुख समृद्धि बढ़ी है

। ऐसी महत्वपूर्ण वस्तु के उद्योग व्यवसाय में माहुरी जाति की प्रमुख भूमिका रही । प्रारंभ में तो विधिवत उत्खनन नहीं होते थे । अभ्रक पहाड़ों के सतह पर या चार-छः फीट की खुदाई पर ही मिल जाते थे और व्यवसायी इसे खरीदते थे । खनन एवं विक्रय के लिए किसी प्रकार का लाईसेंस की जरुरत नहीं होती थी, जब अभ्रक का ऊपरी सतह पर मिलना बंद हो गया तो इसकी खुदाई विधिवत रुप से होने लगी । इस खुदाई और व्यवसाय में उन दिनों ९० प्रतिशत माहुरी बन्धु थे । यों कहें कि अभ्रक खनन और व्यवसाय पर माहुरियों का एकाधिकार था तो असंगत नहीं होगा ।

कोडरमा और गिरिडीह में तो इस व्यापार पर माहुरियों का अधिपत्य जैसा ही था । गिरिडीह और कोडरमा क्षेत्र के चंदौरी, भरकट्ठा, डोरण्डा, भगडीहा, सीरामपुर, मिर्जागंज आदि गाँवों में माहुरी बन्धु ही मुख्य रूप से इसकी कटाई-छटाई और इसे निर्यात योग्य बनाने का कार्य करते थे । कोडरमा से अभ्रक का निर्यात का कार्य यहाँ जोरों पर होता था और इसमें माहुरियों की भागीदारी सर्वोपरि थी ।

अभ्रक के कार्यों में छट्ठूराम, होरिलराम का सबसे अधिक महत्व था । किन्तु माहुरी भाइयों में ऐसे आज बहुत से खान और व्यवसायी थे जिनकी चर्चा करना आवश्यक है । इसमें लेखाराम, सोनाराम मल्हो, गुरुचरण राम एण्ड संस कोडरमा, माईका कंपनी ऑफ इण्डिया गिरिडीह, कमलापति राम तरवे गिरिडीह, रामेश्वर प्रसाद तरवे गिरिडीह, प्रभुदयाल गुप्ता गिरिडीह, ग्लोब माईका स्टोन, खुशीराम मनीराम गिरिडीह, एच०आर० गुप्ता मुख्य हैं । किन्तु छोटे-छोटे अभ्रक खनन की ठेकेदारी और व्यवसायों में हजारों लोग लगे हुए थे । एक प्रकार से अभ्रक गृह उद्योग की तरह कोडरमा और गिरिडीह क्षेत्र में चल रहा था ।

छट्ठूराम होरिलराम प्रा० लि०

छट्ठूराम होरिलराम प्रा०लि० की विधिवत स्थापना सन् १९२६ में हुई । प्राइवेट लिमिटेड बनने के पूर्व १९०८ से फर्म के रुप

स्व० छट्ठू राम भदानी

स्व० होरिल राम भदानी

में यह प्रतिष्ठान कार्यरत था । किन्तु कार्य के विस्तार को बेहतर स्वरुप और व्यवस्था देने की गरज से इसे प्राइवेट लिमिटेड बनाया गया । यह दूरदर्शितापूर्ण कदम था, क्योंकि यदि इसे यह रुप नहीं दिया गया होता तो कब की यह कम्पनी बिखर जाती । छट्ठूबाबू और होरिल बाबू की साझेदारी का काम था । दोनों की सुझबूझ कर्मठता और परिश्रम ने कम्पनी को ऊंचे स्थान पर लाकर खड़ा किया । अब ये दोनों परलोक वासी हैं और अपने कर्तव्य के कारण स्मरणीय हैं ।

सन् १९२६ में ही कम्पनी का सहयोगी फर्म छट्ठूराम दर्शन राम (सी०डी०) की स्थापना हुई । इन दोनों प्रतिष्ठानों ने अभ्रक के क्षेत्र में बड़े नाम कमायें और सम्पत्ति अर्जित की ।

होरिल बाबू का १९२६ में देहावशान हो गया । इनकी मृत्यु के उपरान्त इनके भ्राता दर्शन बाबू ने बागडोर संभाली । इन विभूतियों ने अपनी कुशाग्र बुद्धि के परिणाम स्वरुप इतना बड़ा उद्योग और व्यवसाय स्थापित किया । यह वास्तव में उदाहरण के रुप में रखा जाता रहेगा । उनकी जीवनी के महत्वपूर्ण पहलुओं को जानने की जिज्ञासा होना स्वाभाविक है । इसलिए इन परिवारों के कुछ शीर्ष एवं महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बारे में चर्चा करना असंगत नहीं होगा ।

बाबू छट्ठूराम भदानी :-

बाबू छट्ठूराम का जन्म नवादा वारसलीगंज सड़क पर स्थित कोशी ग्राम में हुआ था । इनके पिता का नाम बाबू रुपन राम था । देहात का वातावरण इनको रास नहीं आया, वहां आदमी किसी तरह अपना पेट भर सकता था परन्तु उन्नति कर पाना बालू से तेल निकालने के बराबर था । अतएव पिता पुत्र दोनों अच्छी आजीविका की खोज में चल पड़े और राजधनवार (हजारीबाग) में आकर रहने लगे । कोशी की जगह यह

जगह बहुत अच्छी थी, क्योंकि यह एक कस्बा था । फिर भी इनकी उन्नति कामी मन को यह अनुकूल नहीं लगा । अत: ये कोडरमा में तत्पश्चात् फिर झुमरी गाँव में आ गये । यहाँ इनके पूज्य पिता निकटवर्ती गाँवों के हाटों में जाकर छोटा-मोटा धन्धा करने लगे । उन्नति के हिमालय पर चढ़ने का स्वप्न देखने वाले छट्‌टूराम बाबू को यह काम इसलिए पसन्द नहीं आया कि इससे सामान्य ढंग से गुजर बसर तो होता किन्तु जिस ऊंचाई पर पहुँचने के लिए इनका अन्तर्मन आकुल था वहाँ जा पाना इससे संभव नहीं था । पहले लिखा जा चुका है अनेक माहुरी लोग जीविका अर्जन के लिए वर्मा जा रहे थे । इनकी इच्छा भी वर्मा जाने की हुई पर इनके पिता ने मना कर दिया ।

उस समय अभ्रक उत्खनन गाँववासी अपने ढंग से करते थे । झुमरीतिलैया के अभ्रक के व्यवसायी उन्हीं गाँववासियों से अभ्रक खरीदते थे । छट्‌टू बाबू ने इसे देखा और अन्य लोगों की भाँति ये भी साईकिल पर गाँव-गाँव घूमने लगे और गाँववासियों से अभ्रक खरीदकर नफे के साथ दुकानदारों को बेचने लगे ।

इन्हीं की तरह साईकिल पर माल लाकर बेचने वाले एक-दूसरे सज्जन बाबू होरिल राम भदानी थे । इनसे छट्‌टू बाबू का परिचय हुआ तो दोनों मिल बैठकर तय किया कि दोनों व्यक्ति साझेदारी में काम करें और अच्छे माल को रोक कर रखें तो माँग होने पर इसकी मनमानी कीमत वसूल की जा सकेगी ।

बाबू होरिल रामजी :-

बाबू होरिल राम जी भदानी का जन्म हजारीबाग माहुरी महामण्डल के अन्तर्गत भरकट्ठा के निकट केशरीडीह ग्राम में हुआ था । जहाँ छट्‌टू बाबू भाईयों में अकेले थे वहीं होरिल बाबू पाँच भाई थे । होरिल राम, दर्शन राम, किसुनचंद राम, बन्धनराम और झरी राम । झरी बाबू सबसे छोटे थे और उनकी पढ़ाई का समय जब हुआ तो होरिल बाबू की किस्मत जाग चुकी थी । अतएव उन्हें विश्वविद्यालयी शिक्षा दी गयी और उन्होंने बी०एस०सी० की परीक्षा पास करके परिवार को गौरवान्वित किया । इन

पाँचों भाईयों में आपसी सौहार्द था । इस कारण परिवार की गाड़ी के साथ-साथ छट्‌टूराम होरिल राम के काम में ये भी निष्ठापूर्वक जुट गये । उधर छट्‌टूराम के ज्येष्ठ पुत्र हरी बाबू, मंझले पुत्र परमेश्वर बाबू, संझले पुत्र रामचन्द्र बाबू भी काम में सहयोग देने लगे थे । छट्‌टू बाबू के शेष पुत्र कॉलेजों में ज्ञानार्जन कर रहे थे ।

इस कम्पनी ने अभ्रक के उत्खनन उद्योग और व्यापार में अपने समय में शीर्ष स्थान प्राप्त किया । कोडरमा के अलावे मद्रास और राजस्थान में भी इनके द्वारा अभ्रक के खान चलते थे । इस क्षेत्र में इनकी कुशलता को मापकर अन्य देशों से भी अभ्रक खनन के लिए आमंत्रण मिले थे किन्तु ये नहीं गये । इन्हीं कारणों से इन्हें उस समय अभ्रक सम्राट (माईका कींग) भी कहा जाने लगा था ।

उत्खनन कार्य को सुव्यवस्थित बनाने के लिए इस कम्पनी ने मुख्य कार्यालय से सभी खानों में निजी टेलीफोन लगवाये थे । निजी बिजली आपूर्ति की व्यवस्था भी थी । उत्खनन कार्य को गतिशील बनाने के लिए सभी प्राय: मशीनरियों का आयात किया गया था । कम्पनी दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी । इंग्लैंड में इसकी शाखा खुली अन्य देशों में भी अनेक प्रतिनिधि नियुक्त थे । वर्षों तक बाबू उमाचरण लाल तरवे बी०ए० इस कम्पनी के मैनेजर थे । १९३० में छट्‌टूराम के ज्येष्ठ पुत्र हरी बाबू को लेकर ये इंग्लैंड गये । अभ्रक की बिक्री को व्यवस्थित करने का यह सफल प्रयास था ।

जब ये अभ्रक के उद्योग व्यापार में पूर्ण रुप से स्थापित हो गये तो अन्य क्षेत्रों में भी पदार्पन करने की ठानी । गया में सी०एच०लि० और जाति शिरोमणि रामबहादुर, रामचन्द्र राम की साझेदारी में गया काटन मिल्स की स्थापना की । कई चरणों के बाद अन्त में छट्‌टू बाबू का इस पर स्वामित्व हुआ । तदन्तर सरकार ने इसे अधिग्रहीत कर लिया । छट्‌टू बाबू ने अहमदाबाद में गुजरात काटन मिल्स लिया । दूसरे साझेदारों होरिल बाबू के उत्तराधिकारियों ने इसी प्रकार बम्बई में हिरजी मिल्स लिया । ये सभी कारखाने अच्छे रुप में चले । किन्तु कई कारणों से ये कारखाने

पीछे आकर ठीक से नहीं चले । इसके पीछे सरकार की गलत नीति और इन उद्योगों में पूर्व से स्थापित कारखाने दारी की ईष्यालु वृत्ति थी । दूसरे लोगों को इस उद्योग में स्थापित होना या बढ़ने देना नहीं चाहते थे ।

कोडरमा में ही होरिल बाबू के भाई-भतीजों द्वारा इन्डिया माईका एण्ड माईकानेट इण्डस्ट्रीज लि० की स्थापना की गयी थी जो कि उस समय और अभी भी देश का पहला कारखाना है । जहाँ अभ्रक के बेकार और छोटे-छोटे टुकड़ों को जोड़कर काम लायक बड़े टुकड़े बनाये जाते हैं, उपयोगी और काम के लायक ।

सी०एच०लि० के संस्थापक संचालकों को संभवतः बड़े खनन उद्योग व्यवसाय में ऊंची शिक्षा का अभाव खटका । अतः उन्होंने अपने परिवार के दूसरे पीढ़ी के बच्चे-युवकों को ऊंची विश्वविद्यालयी शिक्षा दिलाने के लिए कटिबद्ध हुए । साथ-साथ समाज के वैसे होनहार छात्रों को भी आर्थिक सहायता देकर ऊंची डिग्री और प्रमाण-पत्र लेने को प्रेरित किया । इसी का यह सुपरिणाम है कि सी०एच०ली० के संस्थापकों की दूसरी पीढ़ी जिनके हाथों में उसका बागडोर आया विश्वविद्यालयी डिग्री से युक्त काम में डटी है ।

आज की हालत तो यह है कि डिग्रीधारी युवक तो बहुतायत से मिलेंगे, किन्तु सरकारी सेवायें नहीं मिलतीं । चालीस-पचास के दशकों में बात उल्टी थी । सरकारी सेवायें तो बहुत थी किन्तु उच्च डिग्रीधारी युवक बहुत कम थे । होनहार और हौसला वाले बहुत से स्वजातीय छात्र आर्थिक तंगी के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असफल थे । ऐसे छात्रों के लिए सी०एच०लि० का दरवाजा खुला था । परिस्थिति के अनुसार ऐसे छात्रों को सम्पूर्ण या आर्थिक सहायता देकर इस कम्पनी ने इन्हें विश्वविद्यालयी उच्च डिग्री प्राप्त करने में सहयोग किया । इस व्यवस्था से दर्जनों छात्रों ने लाभ उठाया और इनमें से कई उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हुए । इसे बीज रुप में देखा जाय तो यह कहना शायद असंगत नहीं होगा कि उच्च पदों पर स्थापित इन व्यक्तियों के परिवार निकट सम्बन्धी और जाति के अन्य लोग इनसे प्रेरणा ग्रहण करके ऊंची शिक्षा

प्राप्त कर सके । आज समाज में अनगिनत डॉक्टर इंजीनियर एवं अन्य उच्च सेवाओं में देखे जाते हैं । बहुलांश में ऊपर रूप में शिक्षा प्राप्त किये लोगों से प्रेरित हैं । ज्ञात हो कि इसी सी०एच०लि० द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त व्यक्ति प्रोफेसर, डॉक्टर, उच्च सेवा में योग देने वाले विक्रयकर आयुक्त, केन्द्रीय सचिवालय में अन्डर सिक्रेटरी आदि महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हुए थे । सी०एच०लि० के इस छात्र सहायंता योजना को सुव्यवस्थित ढंग से कार्यान्वित करने में इस.कम्पनी के तत्कालीन मैनेजर एवं प्रख्यात समाजसेवी उमाचरण लाल तरवे का महत्वपूर्ण योगदान था ।

कोडरमा क्षेत्र के पिछड़े इलाकों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए कम्पनी ने छट्ठूराम, होरिलराम उच्च विद्यालय की स्थापना भी की । विस्तृत भू-खण्ड पर निर्मित इस विद्यालय का भव्य भवन और रमणीक स्थल दूर से ही लोगों को आकृष्ट करता है । इसका स्तरोन्नयन हो गया है और अब यह इण्टरमिडिएट कॉलेज बन गया है । दूसरी संस्था सी०डी० उच्च विद्यालय में लड़कियों को मैट्रिक तक अच्छी शिक्षा देने की व्यवस्था की है । कम्पनी ने अब एक विस्तृत भूखण्ड तथा भवन निर्माणादि के लिए विपुल खर्च करके स्नातक स्तर तक की लड़कियों की शिक्षा प्रदान करने की योजना बनायी है ।

गिरिडीह में दशकों पूर्व माहुरी छात्रावास हेतु एक विशाल भवन और मनोरम भूखण्ड उपयोग हेतु दिया है जिसमें माहुरी के छात्र रहकर गिरिडीह में अध्ययन करते हैं । इसी भवन में माहुरी वैश्य महामण्डल गिरिडीह का प्रधान कार्यालय है । यह भवन एवं विशाल भूखण्ड सामाजिक कार्यकलापों का अनुपम एवं पावन स्थल है ।

झुमरीतिलैया में ही पूर्णिमा विद्या मंदिर कम्पनी ने खोला है जिसमें मान्टेसरी पद्धति से बच्चों को शिक्षा दी जाती है ।

आजादी की लड़ाई की पहली पंक्ति में जेल की यातनायें सहने वाले जान को हथेली में लेकर क्रांतिकारी लोग हैं । दूसरी पंक्ति में वे लोग हैं जो इसमें शारीरिक रुप से नहीं जुड़कर मानसिक रुप से जुड़े हैं । ऐसे मानसिक रुप से जुड़े लोग सामान्य नागरिकों के बीच आजादी

की आवश्यकता की बात लोगों को बताते थे । कुछ लोग आर्थिक सहायता प्रदान कर आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाने में योगदान करते थे । ऐसे ही लोग सी०एच०लि० के संचालकगण थे । आजादी की लड़ाई में सक्रिय लोगों को इस कम्पनी ने आर्थिक रुप से बराबर सहायता दी । छोटे स्लिप लिखकर ये अक्सर धन माँगते थे जिससे उनकी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती थी ।

१९४० में संपन्न रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में तो कम्पनी ने खुलकर सहायता की । रायबहादुर राम चन्द राम और सी०एच०लि० की साझेदारी वाले गया काटन मिल्स की ओर से एक शक्तिशाली जेनरेटर विदेश से मँगाकर दिया गया । इसी से अधिवेशन स्थल को बिजली की आपूर्ति की गयी । महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरु, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद एवं अन्य नेताओं के लिए सी०एच०लि० की ओर कार मुहैया करायी गयी । अन्य प्रकार की कई समस्याओं का भी आर्थिक समाधान किया गया ।

ज्ञात हो कि यह कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन था । करो या मरो, भारत छोड़ो की आधार शिला यहीं रखी गयी जो कि १९४२ में फलदार बनी ।

सामाजिक क्षेत्र में सी०एच०ली० ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है । इस विशाल कम्पनी ने प्रारम्भ से ही इस बात का ध्यान रखा है कि जिम्मेदारी के पदों पर स्वजातीय बन्धुओं को रखा जाय ।

सी०एच०ली० के संस्थापकों एवं उनके उत्तराधिकारियों ने तो सामाजिक और सार्वजनिक हित के अन्य कार्य भी किये हैं । उनमें कुछ की चर्चा करना अप्रसांगिक नहीं होगी ।

बाबू गोपी चन्द लाल गुप्त ने "माहुरी मण्डल नाटक लिखा जिसका सफल मंचन बरविघा के मगध माहुरी महामण्डल के अधिवेशन में किया गया । इसका प्रकाशन सी०एच०लि० की ओर से सन् १९२३ में किया गया । इस पुस्तक में करीब ७५ प्रतिशत शब्द मगही भाषा के हैं । मगही के विकास और अभ्युदय के वर्तमान काल में इस पुस्तक का

ऐतिहासिक महत्व हो गया है, क्योंकि सन् १९२३ के पहले की कोई छपी कृति प्राप्त नहीं है ।

औषधि उद्योग

आजादी के बाद औषधि उद्योग बहुत ऊंचाई पर पहुँच गया है । माहुरी समाज में इस उद्योग के शीर्ष में श्री डीलचन्दराम चरणपहाड़ी कोडरमा है । इन्हीं के भ्राता की भी दवा निर्माता कम्पनी ऐंथिकली लेबोरेटरी और इनके पुत्र ऐंग्लों आर्युवेदिक मैन्युफैक्चरिंग चलाते हैं । गया के समाजसेवी विजय बाबू के सुपुत्र का फर्मा प्रोडक्ट नाम का ऐलोपेथिक दवाएँ बनाने का जाति में एक मात्र कारखाना है । इस कारखाना के संचालक श्री अजय कुमार भदानी स्वयं एम० फर्मा की डिग्री रखते हैं जो कि ऐलोपैथिक निर्माण की सर्वोच्च डिग्री है । यदि इनका कारखाना किसी बड़े स्थान में होता तो ये बहुत बड़े फर्म के संचालक बनते ।

डी०एल० चरण पहाड़ी एण्ड कम्पनी, कोडरमा

अपने समाज की यह एक मात्र दवा निर्माण की कम्पनी है जहाँ आयुर्वेदिक और ऐलोपैथिक, दोनों की सर्वोत्तम औषधियाँ निर्मित होती हैं । इस फर्म की दवायें इतनी लोकप्रिय हैं कि दक्षिण बिहार के गाँव-गाँव में प्रचलित है । दवायें गुणकारी होने के कारण बहुत उपयोगी हैं । उपयोगी होने की वजह यह है कि दवायें विधिवत निर्मित की जाती हैं । डीलू बाबू इस कम्पनी के जनक हैं जिन्होंने करीब ७५ वर्ष पूर्व इसकी स्थापना की थी । बहुत थोड़ी पूंजी के साथ इन्होंने इस उद्योग को स्थापित किया किन्तु इनकी लगनशीलता, कर्मठता ने इन्हें इस मुकाम पर पहुंचा दिया कि यह बिहार की अच्छी दवा निर्माता कम्पनियों में गिनी जाने लगी । ऐसी बातें नहीं कि ये केवल उद्योग के क्षेत्र के कारण ही लोकप्रिय हुए हैं । वरन् इनकी सामाजिक भावना इतनी बलवती थी कि कोई भी अपने समाज का व्यक्ति इनके यहाँ सहायता के लिए पहुँचता सभी को संभावित सहयोग करते थे । प्रत्येक वर्ष लगन के टाइम में वह बेटी के बापों को आर्थिक सहयोग तो करते ही थे उनके कार्यों को संपन्न

कराने में भी काफी सहयोग करते थे । उनके निधन से न केवल कोडरमा ने एक महान व्यक्ति खो दिया बल्कि संपूर्ण समाज को इससे अपूरणीय क्षति हुई ।

डीलू बाबू के निधन के बाद इनके योग्य पुत्र श्री नरेन्द्र प्रसाद चरण पहाड़ी अपने छोटे भाई की सहयोग से फर्म का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं । डीलू बाबू द्वारा स्थापित परम्परा का निर्वाह नरेन्द्र बाबू कर रहे हैं । यही कारण है कि माहुरी जाति के विवेचनात्मक इतिहास के संबंध में जो प्रारंभिक सभा हुई थी, इसका आयोजन अपनी फैक्ट्री में इन्होंने ही किया था । इतना ही नहीं इतिहास प्रकाशन के लिये समुचित आर्थिक सहायता भी दी है ।

विशिष्ट औषधि निर्माता कतरीसराय के बन्धुगण

आज़ादी के पूर्व से ही कतरीसराय के डॉ० अखिलेश चन्द्र अ० सिवील सर्जन के पिता बाबू अखिल किशोर राम ने श्वेतकुष्ठ की जड़ी बूटी वाली दवा का आविष्कार किया, इनके विज्ञापन देश के सभी भाषाओं के मुख्य पत्रों में छपते थे । इनकी जी कतरीसराय में अनेक बन्धुओं ने इस क्षेत्र में पदार्पण किया । इनमें प्रमुख हैं श्री सतीस कुमार, श्री गणेश शंकर प्रसाद इन बन्धुओं की दवाओं के विज्ञापन आज देश के सभी भाषाओं के समाचार पत्रों, मासिक पत्रिकाओं में निकलते हैं । इनके कार्य विस्तार का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कतरीसराय के सब पोस्ट ऑफिस में करीब २० किरानी कार्यरत हैं जो इनके पार्सलों को लेते और रूपयों को भुगतान करते हैं । लाखों रूपये का वी०पी०पी० की राशि यहां आती है । ये रूपये मुख्यतः डाक द्वारा भेजी जाती है ।

गुरुचरण राम एण्ड सन्स, कोडरमा

अभ्रक खनन उद्योग एवं व्यवसाय में संलग्न इस फर्म का महत्व सामाजिक धार्मिक कार्यों के लिये उतना है जितना कि अर्थोपार्जन के क्षेत्र में । इसके संचालक श्री दुपलाल राम, श्री परमेश्वर प्रसाद, श्री श्याम बिहारी प्रसाद एवं श्री विनोद प्रसाद ने कोडरमा में इतना भव्य मंदिर

का निर्माण कराया है जो कि एक दर्शनीय स्थान है । इसके अलावे परमेश्वर बाबू सभी प्रकार के सामाजिक कार्यों में बराबर जुटे रहते हैं । बिना परमेश्वर बाबू के सहयोग के कोडरमा में सामान्यतः कोई भी सामाजिक कार्य नहीं होता । यह माहुरी वैश्य महामण्डल के मनोनित सभापति भी रह चुके हैं ।

कमलापति राम एण्ड सन्स, गिरिडीह

समर्पित समाजसेवी जाति रत्न श्री कमलापति राम सर्वे १९४५ से अभ्रक उद्योग एवं व्यवसाय से संबंधित हैं । अभ्रक के विदेश निर्यात में मूर्द्धन्य स्थान प्राप्त इस फर्म को विदेशों में निर्मित अभ्रक की पूरी सोहरत है । श्री कमलापति राम जी विहार माईका एक्सपोर्ट कौंसिल के वर्षों तक अध्यक्ष रहे । इनके ज्येष्ठ पुत्र श्री कालीचरण राम जी झुमरीतिलैया माईका के वृहद व्यवसाय में लगे है । दूसरे पुत्र श्री वासुदेवराम जी कलकत्ते में रहकर विविध वस्तुओं का विदेशों में निर्यात करते हैं । एक पुत्र श्री प्रदीप कुमार दिल्ली में अभ्रक के योग से बना इलेक्ट्रानिक सामानों का निर्माण करते हैं । सुपुत्र श्री मधुसूदन राम जी गिरिडीह में अभ्रक निर्यात का काम संभालते हैं ।

प्रस्तुति : श्री गोपाल राम अठघरा एवं
ओम प्रकाश सेठ, गिरिडीह

❋ ❋
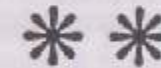
खण्ड - ५

अध्याय - १

उल्लेखनीय व्यक्ति (क)

जाति रत्न श्री कमलापति राम तरवे भरकट्ठा गिरिडीह : ये भरकट्ठा में अक्टूबर १९१० में जन्मे । इनके पिता थे बाबू बैजनाथ राम । व्यवसाय हेतु भरकट्ठा से गिरिडीह चले गये । वहाँ अपना अभ्रक का उद्योग करते हुए राजनीति में भाग लेने लगे । कांग्रेस में सक्रिय रहकर पुनः जनसंघ में चले गये । जनसंघ से कई बार विधानसभा का चुनाव लड़े । जनसंघ के वर्षों जिलाध्यक्ष रहे । केन्द्रीय एवं प्रान्तीय समिति के भी वे सदस्य रहे । पश्चात् भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय नेता रहे । पूर्व के जनसंघ एवं भाजपा के अधिकांश उच्च पदस्थ नेताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क में रहे ।

१९५८ में ये भरकट्ठा में संपन्न महामण्डल के अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष हुए । तब से लेकर ये इस संस्थान से जुड़े रहे और अब तक एक कर्मठ नेता के रुप में विख्यात है । इन्होंने रुचि लेकर महामण्डल को आगे बढ़ाया । फलतः इन्हें स्थायी अध्यक्ष वर्षों पहले चुना गया । इनके महत्वपूर्ण कार्यों को देखकर १९८२ में महामण्डल ने इन्हें जाति रत्न की उपाधि से विभूषित किया ।

इनकी धार्मिक वृत्ति का परिचय इसी से मिलता है कि भरकट्ठा में इन्होंने १९९० में एक विशाल मंदिर की स्थापना की ।

ये बहुत बड़े शिक्षा प्रेमी हैं । भरकट्ठा में १९३१ में मिडिल स्कूल एवं हाई स्कूल बनवाया । गिरिडीह के मकतपुर में हाई स्कूल और वानांचल कॉलेज बनवाया । गिरिडीह में सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना इन्हीं के द्वारा हुई ।

झुमरीतिलैया में १९८४ में अ०भा० महाउरु वैश्य संघ के ऐतिहासिक अधिवेशन के ये स्वागताध्यक्ष थे । शिरोमणि माहुरी वैश्य

महामण्डल के भी अध्यक्ष हैं ।

इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उस महामण्डल के पूर्व महापुरूषों से कुछ आगे बढ़कर ही समय के अनुसार संतुलित रूप से मण्डलों की संरचना की । मण्डलों के मुख्यालयों के अतिरिक्त इन्होंने मण्डलों के अन्तर्गत को, गांवों का भी भ्रमण किया और उन्हें ढंग से जीवन जीने, शिक्षा ग्रहण करने कराने और जीविकोपार्जन के पाठ पढ़ाये ।

जीविकोपार्जन के क्रम में इन्होंने अपनी माताओं को भी प्रारंभिक व्यावसायिक कला में निष्णात कराया । तत्पश्चात् अपने सभी ६ पुत्रों को यथास्थान बैठाकर, व्यवसाय का व्यावहारिक गुर बतलाकर इतना निपुण बना दिया कि इनके द्वारा व्यावसायिक कला को इन्होंने बहुत ही सुसंगठित रूप में गतिवान बनाया । ज्येष्ठ पुत्र श्री कालीचरण राम तरवे को झुमरीतिलैया में विश्वस्त अभ्रक निर्यातक के रूप में प्रस्थापित किया । मंझले पुत्र वासुदेव बाबू को कलकत्ता में विविध वस्तुओं का निर्यातक बनाया । श्री प्रदीप तरवे को दिल्ली में अभ्रक सम्बन्धित उद्योग लगवाया है । शेष तीन पुत्र श्री मधुसूदन राम, श्री शक्तिचरण तरवे, श्री दुर्गा चरण तरवे गिरीडीह में पुराने फर्म विख्यात कमलापति राम एण्ड कम्पनी का कार्य संभाल रहे हैं । सबसे बड़ी बात इन लड़कों में यह है कि सामाजिक कार्यों में भी तन्मयतापूर्वक कार्यरत रहते हैं ।

प्रस्तुति- गोपाल राम अठघरा एवं
ओम प्रकाश सेठ, गिरिडीह

श्री सदानन्द प्रसाद भदानी, झुमरीतिलैया :

सन्तुलित विचारों के धनी श्री सदानन्द प्रसाद भदानी अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध राजनीतिविद समाजसेवी और अभ्रक उद्योग की जानी मानी हस्ती हैं । समाज को राष्ट्रीय स्वरुप प्रदान करनेके लिए इन्होंने उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान के बिछुड़े भाइयों को मिलाकर एक व्यापक संगठन बनाने का अस्सी के अन्त और नब्बे के पूर्वार्द्ध के दशक में जो प्रयास किये वह ऐतिहासिक तथ्य है । वैचारिक ऊर्जा आज भी पूर्ववत् है किन्तु शारीरिक ऊर्जा की कमी से ये अपने परिपक्व और सन्तुलित

विचार को मूर्तरुप देने में सक्षम नहीं हैं । ये आशावान हैं कि इनके इस कार्य को कोई न कोई, कभी न कभी अंजाम जरुर देगा । प्रसंगवसात इनकी चर्चा कई स्थान में हुई है । इनकी अवस्था ७५ वर्ष की है । माहुरी वैश्य महामण्डल के १९९५ ई० के झुमरीतिलैया अधिवेशन में इन्हें समाज रत्नाकर की उपाधि से विभूषित कर रजत पदक प्रदान किया ।

स्व० हरी राम एम०ए०सी० - भौतिक शास्त्र के दरभंगा में प्रोफेसर का पद छोड़कर ये बिहार बिक्रीकर विभाग में पदस्थापित हुए जहाँ से संयुक्त आयुक्त के पद से अवकाश ग्रहण किया । छात्र जीवन से ही ये माहुरी मयंक से जुड़े रहे और बाद में पटना में पदस्थापित हुए । उस समय माहुरी महामण्डल के अध्यक्ष भी बने । ऐसे महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होने वाले समाज के ये गिने चुने हस्तियों में हैं । एक समय ये माहुरी वैश्य महामण्डल गिरिडीह और मगध महामण्डल के एक साथ अध्यक्ष रहे जो अपने में एक मिशाल है । इनका देहावसान १९९६ में हो गया ।

श्री बनमाली राम, खरगडीहा, झुमरीतिलैया -माहुरी वैश्य महामण्डल के संस्थापक मन्त्री एवं समर्पित जाति सेवक बाबू टेकनारायण राम भदानी के कनिष्ठ पुत्र हैं । ये समाज के चिन्तक एवं ओजस्वी वक्ता हैं । विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक के स्वयं सेवक, १९५८ में जनसंघ के अम्बाला अधिवेशन में ये पूरे छोटानागपुर का प्रतिनिधि रहे । शिरोमणी माहुरी वैश्य महामण्डल के प्रेरक अ० भा० महाउरू वैश्य संघ के पुनर्जागरण में मूख्य भूमिका प्रस्तुत की । झुमरीतिलैया नगर में वार्ड कमिश्नर भाजपा के जिला उपाध्यक्ष आदि पदों पर रहे । राजनीतिक आध्यात्मिक एवं ज्योतिष पर इनका सतत चिन्तन चालू रहता है । इतिहास प्रकाशन की महत्ता को पहिले इन्होंने ही महसूसा । वर्त्तमान में मार्गदर्शक मण्डल में अहम् भूमिका निभा रहे हैं ।

पतरुराम कन्धवे पचम्बा - महामण्डल (गिरिडीह) के सभापति रहे ।

महादेवराम लेदा (१९०२ ई० १९८५) - धार्मिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक भावना से परिपूर्ण जाति हितैषी हैं ।

वैद्य चुण्डी राम लेदा (१९०९-१९८८) - पंचायत के दशकों सरपंच

रहे, कुशल वैद्य, आजादी की लड़ाई में सहयोगी, समाज हितैषी सेवक ।

चूल्हन राम कन्धवे, पचम्बा - हजारीबाग महामण्डल के सुप्तावस्था में सभापति रहे । गिरिडीह नगरपालिका के वार्ड कमिश्नर और गौशाला के मंत्री कई बार रहे । स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की सहायता की । इन्ट्रेक्स पास थे । ६० वर्ष में निधन ।

बुधनराम एवं मंगल राम, डोरन्डा - दोनों स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा समाजसेवी थे ।

प्रस्तुति - **सत्यनारायण तरवे, पचम्बा**

नानक चन्द राम, गया - चुटीली व्यंग्य कविता के लिए मशहुर, पाण्डे का पन्जा शीर्षक कविता ने ख्याति अर्जित की । इस समाजसेवी की असमय करीब ४५ वर्ष में निधन ।

दुलार चन्द राम कपसिमे, गया - १९५७ के ऐतिहासिक महामण्डल अधिवेशन के स्वागत मंत्री, मंडल मयंक एवं अन्य सामाजिक कार्यों में संलग्न । रा०स्व० के संघ के बचपन से सदस्य । जनसंघ एवं मगध के जिला कोषाध्यक्ष रहे । कृषि उत्पादन बाजार गया के उपाध्यक्ष रहे । बिहार राज्य खाद्यान्न व्यवसायी संघ के संस्थापकों में एक । निजी खाद्यान्न तेल का व्यवसाय ।

मदनलाल माथुरी बरबिघा, बिहारशरीफ, गया - दो दशकों तक गया के जातिय कार्यों की सबल धुरी रहे । ये स्वयं में एक संस्था । मथुरा क्षेत्र एवं बिछुड़े भाइयों से मिलने-मिलाने के आग्रही । असमय करीब ६५ वर्ष की आयु में निधन ।

डॉ० विनोदनी तरवे एम०ए०, पी०एच०डी०, गया - वास्तव में डॉ० तरवे ने अपने परिश्रम अध्यवसाय और विद्वता के प्रताप से हजारीबाग बिनोवा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति बनी हैं । माहुरी जाति के लिए गौरव की बात है क्योंकि इसके पूर्व जाति का कोई भी व्यक्ति कुलपति नहीं बना था । इसके पूर्व वे राँची के महिला विद्यालय से प्रिंसपल से अवकाश ग्रहण किया था । राँची के पूर्व वे चाईबासा, धनबाद के महिला कॉलेज में प्रिंसपल थीं । ये समर्पित समाजसेवी, उमाचरण लाल तरवे की पुत्री ।

१९९६ ई० के माहुरी वैश्य महामण्डल के मनोनीत अध्यक्ष ।

रामेश्वर प्रसाद एडवोकेट जनरल, गया - पटना उच्च न्यायालय में वकालत करने वाले ये पहिले एडवोकेट हैं । इन्होंने अपने परिश्रम एवं लगन से अच्छी ख्याति हासिल की । १९९३ में इन्हें बिहार सरकार के एडवोकेट जनरल बनाया गया और ये कार्यरत हैं । पटना माहुरी मण्डल एवं पटना में सम्पन्न दोनों अधिवेशनों में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । माहुरी मण्डल से भी ये जुड़े रहे हैं ।

श्री दर्शन राम कपसिमे, झुमरीतिलैया - कष्टों को दूर करने में, उत्पीड़न दूर करने में कांग्रेस (ई) के सक्रिय कार्यकर्ता श्री दर्शन राम जी का विकल्प झुमरीतिलैया में ढूँढ़ना कठिन है । ये समाज की पीड़ा का अहसास करने और उसे दूर करते रहे हैं । झुमरीतिलैया में धर्मशाला के निर्माण में सहयोगियों के साथ मिलकर उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है । कोई भी सामाजिक हित का कार्य हो ये उसमें लगे रहना अपना कर्तव्य समझते हैं ।

श्री दशरथ राम, झुमरीतिलैया - ये समाज के मूक सेवक हैं । स्थानीय मण्डल के मंत्री के रुप में इन्होंने अच्छा काम किया है ।

श्री शिवप्रसाद राम (मुंशीजी), झुमरीतिलैया - लीख से लाख की कहावत को चरितार्थ करने वाले श्री मुंशीजी सामाजिक कार्यों में दान देकर अपनी सामाजिक वृत्ति का निर्वाह करते रहे हैं, स्थानीय धर्मशाला के निर्माण कलाओं में एक । समाजसेवकों को प्रतिष्ठा देना इनका प्रशंसनीय कार्य है ।

श्री हरिहर प्रसाद कपसिमें, झुमरीतिलैया - सी०एच० कॉलेज के अध्यापक पद से अवकाश प्राप्त हरिहर बाबू ने शिक्षण सेवा को व्यवसाय नहीं कर्तव्य समझा । यही कारण है कि इनसे अनेकानेक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति इन्हें आदर के साथ

देखते हैं । ये सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं ।

स्व० बच्चू राम कपसिमे, झुमरीतिलैया- यों तो समय-समय पर इन्होंने समाज की सेवा की किन्तु अ०भा० महाउरु वैश्य संघ के प्रचार मंत्री के रुप में जो इन्होंने कार्य किया उसे भुलाया नहीं जा सकता ।

स्व० दामोदर प्रसाद कन्धवे, झुमरीतिलैया - आप हिसुआ के जमींदार थे । ज्योतिष में इनकी बड़ी अच्छी पकड़ थी ।

श्री कपिल देव नारायण, धनबाद - समाज के सिद्धहस्त कवियों की कमी की पूर्ति करने वाले श्री कपिल देव नारायण समाज के हित चिन्तन में लीन महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं । इन्हें माहुरी मयंक के पूर्व संपादक बाबू गोपीचन्द लाल के निज भांजा होने के कारण उनके निकट सम्पर्क में रहने का सौभाग्य मिला था । इस वजह से जाति सेवा की घूटी ये बचपन से ही पीते रहे हैं । इधर श्री शिवप्रसाद लोहानी के सफल संपादन काल में ये वर्षों से संपादन के रुप में फिर मयंक समिति के अध्यक्ष के रुप में अपनी सेवायें अर्पित की है ।

श्री सदानन्द राम बुधवारा, पटना - पटना मंडल के मयंक समिति के अध्यक्ष के अलावे सभी प्रकार की सामाजिक गतिविधियों में इनकी सदा सक्रिय भागीदारी रही बिहार लोक सेवा आयोग में यह महत्वपूर्ण पद पर वर्षों से रहने के कारण शिक्षित युवकों का इनके यहाँ तांता लगा रहता है । अपने ढंग से ये उन्हें प्रोत्साहन संभावित सहायता करते रहे हैं ।

श्री दामोदर प्रसाद बुधवारा, पटना - रिजर्व बैंक पटना में वर्षों एक पदाधिकारी के रुप में कार्यरत रहे । अब प्रोन्नति पाकर जयपुर चले गये हैं । सामाजिक कार्यों में ये सदा रुचि लेते रहे हैं और अपना सहयोग दिया ।

श्री अर्जुन प्रसाद हिलसा, पटना - पटना माहुरीमण्डल के वर्षों मंत्री पद पर रहकर इन्होंने मण्डल को जिस ऊंचाई तक पहुँचा दिया वहीं इनकी सक्रिय कार्य पद्धति का परिचायक है । ये पटना के युनाइटेड बैंक में पदस्थापित हैं । पटना में किसी भी सामाजिक कार्य की कामना इनके बिना

नहीं की जा सकती ।

बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल के विशिष्ट व्यक्ति

दामोदर गुप्ता, झरिया – गुप्ता जी की सामाजिक चेतना बलवती थी । आपसी मेल-जोल बढ़ाकर माहुरी नाम से जानी जाने वाली जाति की चट्टानी एकता के ये प्रबल समर्थक थे । पश्चिम के बिछुड़े बन्धुओं से मिलकर संख्या की वृद्धि करने का इनका इरादा प्रशंसनीय था । इसी हेतु इन्होंने आगरा एवं अलवर के महाउरु वैश्य संघ के अधिवेशनों में योगदान किया । इनके परिवार के कई वैवाहिक संबंध भी उधर हुए ।

राम नारायण गुप्ता फतुहा, राँची – हिन्दुस्तानं कॉमर्शियल बैंक के मैनेजर से अवकाश प्राप्त करके राँची में बस गये । सामाजिक एकता के लिए इन्होंने अथक प्रयास किया ।

श्री वासुदेव प्रसाद, राँची – अपने वर्ग के माहुरी भाइयों को संगठित करने के लिए इन्होंने बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल की स्थापना के लिए बहुत प्रयास किया । ये बिजली विभाग के चीफ इंजीनियर के गौरवशाली पद से अवकाश ग्रहण करके राँची में अपना निवास बना लिया । इन्होंने पुत्रों-पुत्रियों के वैवाहिक संबंध उत्तरप्रदेश में करके संख्या विस्तार कार्य को आगे बढ़ाया है ।

श्री कांशीराम गुप्ता, पावापुर – बिहार माहुरी मण्डल के ये समर्पित नेता हैं । ये बड़े प्रगतिशील विचार के मनीषी हैं ।

श्री विष्णु राम गुप्ता, पावापुर – ये विश्वविद्यालयों के वित्त पदाधिकारियों के पद पर रहकर समाज की सेवा में भी लगे रहे ।

श्री सरयुग प्रसाद, नगरनौसा – मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक के रुप में सेवानिवृत्त होकर समाज सेवा में जुट गये । समाज को जोड़ने में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । १९९१ में इनका निधन हो गया ।

सेलटैक्स पदाधिकारी – श्री हरी राम विशाद एम०एस०सी०, संयुक्त आयुक्त सेल्स टैक्स से अवकाश प्राप्त किया, श्री सरयू राम सहायक आयुक्त सेल्स टैक्स राँची, श्री जय प्रकाश गुप्त अकबरपुर निवासी । राँची

के सेल्स टैक्स ऑफिसर ।

केन्द्रीय सचिवालय – स्व० राजेन्द्र प्रसाद बरहपुरिया (नूरसराय निवासी) केन्द्रीय सिंचाई विभाग के सहायक सचिव पद से अवकाश प्राप्त । सामाजिक कार्यों में बराबर रुचि लिया । निधन १९९६ ।

केन्द्रीय आबकारी अधिकारी – श्री लखन राम जी बोकारो सुपरिंटेन्डेण्ट पद से अवकाश प्राप्त । श्री उमेश प्रसाद सिलाव इन्सपेक्टर से अवकाश प्राप्त ।

आयकर अधिकारी – श्री शिवनन्दन प्रसाद लोहानी, पटना इन्सपेक्टर आयकर गया, श्री ध्रुवनारायण भदानी, पचम्बा, इन्सपेक्टर आयकर, राँची ।

बोकारो स्टील फैक्टरी – स्व० फकीरचन्द राम परचेज पदाधिकारी पद से अवकाश ग्रहण किया श्री अनिल कुमार लक्खीसराय, वरिष्ठ इंजीनियर, श्री प्रबोध राम इंजीनियर इस्लामपुर, श्री बलदेव लोहानी सोहसराय ।

अन्य पदाधिकारी – श्री रामशरण राम ऑडीटर, बिहार, अवकाश प्राप्त केन्द्रीय सुरक्षा से लेखा परीक्षक श्री राधेश्याम खुदागंज (अवकाश प्राप्त), श्री मदन किशोर भदानी, परबलपुर । बिहार विद्युत बोर्ड स्व० ब्रजेश्वर प्रसाद डिप्टी चीफ इंजीनियर पद पर रहते मृत, स्व० नवल किशोर कन्चवे किरानी पद में रहते मृत, श्री राम प्रसाद गुप्ता, एकाउन्टेण्ट श्री मदन राम, श्री सत्यनारायण प्रसाद, श्री रामप्रकाश गुप्त बिजली विभाग में लेखापाल, नरेन्द्र कुमार गुप्ता, गिरिडीह ।

बिहार सांख्यिकी विभाग – श्री गोपाल प्रसाद लोहानी जिला सांख्यिकी पदाधिकारी से अवकाश प्राप्त श्री सत्यदेव प्रसाद, दीपनगर श्री अनिरुद्ध प्रसाद, गया (अवकाश प्राप्त) ।

डॉक्टर, इंजीनियर, भेटनरी डॉक्टर, प्रोफेसर, शिक्षक एवं एडवोकेट तथा अन्य विशिष्ट योग्यता प्राप्त व्यक्ति – स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तकनीकी पठन-पाठन तेजी से वृद्धि हुई क्योंकि देश के विकास में डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, लेक्चरर, प्रशासनिक एवं न्यायिक पदाधिकारियों की आवश्यकता थी । फलतः अनेकानेक शिक्षण संस्थायें इन विषयों की शिक्षा के लिए खुलीं । माहुरी जाति के युवकों ने खासी

अच्छी संख्या में इसमें प्रशिक्षण ग्रहण किया । एक अनुमान के आधार पर उपर्युक्त विषयों के सैकड़ों लोगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । इनके नाम और पते प्राप्त करने के लिए गंभीर प्रयास किया गया । किन्तु बहुत कम लोगों ने इसमें रुचि दिखायी और कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मिल बैठकर सूची बनायी वह बहुत ही कम है । उक्त रुप में जो जानकारी मिली उसके अनुसार निम्न सूची प्रकाशित की जा रही है । यदि इस दूसरा संस्करण या परिशिष्ट अंक निकाला जा सका तो अधिक लोगों की सूची छापी जा सकेगी । इन पंक्तियों के द्वारा अनुरोध किया जाता है कि जिन सज्जन को ऐसे लोगों की जानकारी मिले इसके प्रकाशक के पास भेजते जांय ।

डॉक्टर - (१) राजेश्वर प्रसाद, सिलाव-जमशेदपुर । ये समाज में एक मात्र एम०आर०सी०पी० डॉक्टर हैं और टाटा अस्पताल के महत्वपूर्ण पद पर रहकर अवकाश प्राप्त किया है । एम०आर०सी०पी० संसार का सबसे बड़ा मेडिकल डिग्री है । (२) स्व० रमाचरण, हिसुआ गिरिडीह (३) अखिलेश चन्द्र, एम०एस० कतरीसराय झुमरीतिलैया अवकाश प्राप्त सिविल सर्जन (४) सुरेश चन्द्र एम०एस० शेखपुरा गया अवकाश प्राप्त सिविल सर्जन (५) अर्जुन प्रसाद, एम०एस० पारथू अवकाश प्राप्त मेडिकल ऑफिसर गया अस्पताल (६) उमानाथ भदानी, एम०डी० गया ख्याति प्रख्यात शिशु रोग विशेषज्ञ पूर्व मंत्री माहुरी शिक्षा न्यास (७) उमेश चन्द्र भदानी, एम०एस० पारथू गया मुजफ्फर मेडिकल कॉलेज में अ० प्रोफेसर नेत्र विभाग (८) सच्चिदानन्द प्रसाद, बरबिघा बिहारशरीफ लंदन से हृदय एवं छाती रोगों में प्रशिक्षण प्राप्त (९) सीताराम, एम०डी० तुंगी गया बिहार सरकार की सेवा में (१०) स्व० हरीनारायण, एल०एम०पी० पारथू गया अपने समय के ख्याति प्राप्त चिकित्सक इनके चार पुत्र डॉक्टर एक वैज्ञानिक हैं (११) अर्जुन प्रसाद, सिलाव बिहार सरकार की सेवा में कार्यरत (१२) उपेन्द्र भदानी, एम०डी० बरबिघा झुमरीतिलैया नेत्र रोग विशेषज्ञ सरकारी सेवाएँ (१३) जगत प्रसाद झुमरीतिलैया पैथोलॉजिस्ट (१४) सुधीर सेठ, गया झुमरीतिलैया शिशु रोग विशेषज्ञ (१५) अरविन्द प्रसाद, शेखपुरा सिकन्दरा बिहार सरकार की सेवा में (१६) दीनानाथ

प्रसाद, हिलसा जेल के डॉक्टर (१७) दिनेश भदानी, पारथू गया (१८) उमेश कुमार चन्दा, कतरीसराय गया स्वतंत्र चिकित्सक । ये समाज सेवी हैं और वर्षों तक "माहुरी मयंक" के प्रकाशक के रुप में समाज की सेवा की है (१९) अनिल कुमार, शेखपुरा गया बिहार सरकार की सेवा में (२०) सुषमा, चाईबासा (२१) करण बरहपुरिया, एम०वी०सी०जी० लक्खीसराय पटना, पटना की प्रख्यात महिला रोग विशेषज्ञ और सर्जन (२२) प्रमिला भदानी, गया स्वतंत्र चिकित्सक (२३) मंजू सेठ, बरबिघा सरकारी सेवा में (२४) ठाकुर प्रसाद, आई०एम०एफ० कतरास (२५) पुरुषोत्तम चन्द्र, शेखपुरा (२६) अशोक कुमार, नवदिया (२७) राजेन्द्र प्रसाद भदानी, नगरनौसा (२८) डॉ० प्रकाश नारायण, धनबाद बम्बई (२९) डॉ० नीरज चन्द्र, गया (३०) डॉ० दीनेश भदानी, पचम्बा ।

उपर्युक्त सभी डॉक्टर एम०बी०बी०एस० है जिनकी विशेष योग्यता उनके नाम के आगे डिग्री लगाकर व्यक्त किया गया है । संभावना है कि जानकारी के अभाव में कुछ डॉक्टरों की विशेष योग्यता उनके नामों के आगे नहीं की गयी । जानकारी मिलने पर अगले संस्करण में सुधार कर दिया जायेगा । बिहार सरकार की सेवा का तात्पर्य असिस्टेण्ड सर्जन से है ।

भेटनरी डॉक्टर - (१) दुर्गा प्रसाद, बरबिगहिया बिहारशरीफ चाईबासा (२) धनन्जय कुमार, हिलसा (३) श्री राम, मुल निवासी मिर्जागंज वर्तमान पता- फुसरो, बेरमो ।

फीजियोथैरापिस्ट -

डॉ० संजय कुमार, राउरकेला, कटक । संभवतः समाज के ये पहिले फीजियोथेरापिस्ट हैं जिन्होंने कटक मेडिकल कॉलेज से इसकी डिग्री पायी है, कटक में क्लीनिक चलाकर निजी प्रेक्टिस कर रहे हैं । ये अपने पेशे में सफल व्यक्ति हैं ।

कॉलेज के अध्यापक - शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ ही समाज में कॉलेज के व्याख्याताओं, रीडरों और प्रोफेसरों एवं स्कूल के शिक्षकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है कॉलेज के अध्यापकों में डॉ० केदार

राम गुप्ता, डॉ० भगवान दास, श्री अखिलानन्द राम, डॉ० रामलखन राम, डॉ० सूरज नारायण भदानी, श्री राजेन्द्र कुमार, श्री अरुण कुमार, डॉ० शिवशंकर गुप्ता, डॉ० देवेन्द्र प्रसाद, अरुण कुमार, जगदेव प्रसाद, त्रिपुरारीशरण, डॉ० उमेश भदानी, सदानन्द प्रसाद, गया, डॉ० सदानन्द राम (गोरखपुर) उमाशंकर जी, हिसुआ, जुगलकिशोर जी, महेश प्रसाद, रविशंकर जी, देहरी, भागीरथ सेठ, बरबिघा ।

स्कूल के शिक्षकों में झुमरीतिलैया के सर्व श्री हरिहर प्रसाद कपसिमे, रामेश्वर प्रसाद, अर्जुन प्रसाद, श्रीमति निर्मला बरहपुरिया झुमरीतिलैया के सर्वश्री चन्द्रिका प्रसाद भदानी, गिरिडीह के सर्वश्री गोपाल राम अठघरा मधुसूदन राम ।

एम०एल०ए० एम०एल०सी० बाबू रघुनन्दन राम, गिरिडीह एम०एल०ए०, श्रीमती पार्वती देवी, रजौली गया एम०एल०सी०

मेम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड - बाबू भगवान दास, नवदिया, सिलाव, बाबू टेक नारायण राम, खरगडीहा एवं बाबू गौरी शंकर पण्डरी ।

प्रखण्ड प्रमुख - श्री ईश्वर राम लोहानी, डुमरी-इसरी, श्री सदन राम, अकबरपुर, स्व० देवकी नन्दन राम पण्डरी ।

मुखिया एवं सरपंच - श्री श्याम बिहारी प्रसाद, मखदुमपुर, श्री हरिहर प्रसाद, परबलपुर, श्री हरीराम, भरकट्ठा, श्री योगेश्वर राम सेठ, परसाबाद, श्री यमुना प्रसाद, हिलसा ।

म्युनिसिपल कमिश्नर - श्री सत्यनारायण तरवे, पचम्बा, श्री पूर्णानन्द तरवे, गया, श्री रामकिशोर कन्धवे, पचम्बा, श्री बनमाली राम, कोडरमा, श्री आदित्य तरवे, कोडरमा, श्री दयानन्द भदानी, कोडरमा, श्री अर्जुन प्रसाद, बिहारशरीफ ।

एडवोकेट जनरल बिहार - श्री रामेश्वर प्रसाद, पटना ।

वाइस चान्सलर - विनोदिनी तरवे, हजारीबाग ।

स्वतंत्रता सेनानी - श्री टेकनारायण भदानी, कोडरमा, बाबू चुल्हन राम चन्दोरी, बाबू चमारी राम, कोडरमा, बाबू प्रताप लोहानी, कोडरमा,

प्रभुराम, कोडरमा ।

सिविल सर्जन - श्री अखिलेश चन्द, कतरीसराय, श्री सुरेश प्रसाद, शेखपुरा गया ।

प्रेस रिपोर्टर - श्री शिव प्रसाद लोहानी, नुरसराय, श्री विश्वनाथ भदानी, इसरी बाजार । श्री सहदेव प्रसाद लोहानी, हजारीबाग, श्री भोला प्रसाद चरण पहाड़ी, बिहारशरीफ ।

न्यायिक सेवा - न्यायिक सेवा में लगे लोगों में सर्वप्रथम सिलाव के बाबू दामोदर प्रसाद नवदिया थे जो कि जिला जज होकर अवकाश ग्रहण किया । लक्ष्मीचरण, मोतीराम भी अ० जिला जज होकर अवकाश ग्रहण किया शिवकुमार प्र० जी सोहसराय में श्री सत्यनारायण चरण पहाड़ी झुमरीतिलैया, श्री नन्द कुमार खरगडीहा जज के रुप में कार्यरत हैं ।

एम०बी०ए० - नीतेश चन्दा, दिल्ली, अनुपम कुमार, नूरसराय ।

अधिवक्ता (एडवोकेट) -

अधिवक्ताओं की संख्या में शनैः शनैः बढ़ोत्तरी हो रही है । उपर्युक्त न्यायिक सेवा में जिनकी चर्चा की गयी है वे भी प्रारम्भिक अवस्था में वकालत करते थे । अधिवक्ताओं में पटना हाईकोर्ट में सम्प्रति श्री रामेश्वर प्रसाद जी अभी बिहार के एडवोकेट जनरल है । इनके अलावा गया में श्री सुरेश प्रसाद, श्री सच्चिदानंद प्रसाद, झुमरीतिलैया में किरण कुमारी, श्री सच्चिदानंद पहाड़ी, श्री जय प्रकाश सेठ, बिहारशरीफ में, श्री राम मनोरम प्रसाद, स्व० कामता प्रसाद अठघरा, हजारीबाग में स्व० विन्देश्वरी प्रसाद लोहानी, गिरिडीह में, स्व० गिरधारी राम, स्व० पुनीचन्द राम, श्री चन्दन राम, श्री द्वारिका प्रसाद, चाईबासा, श्री भगवान राम नवादा, श्री यदुनन्दन राम, स्व० उमेश प्रसाद, श्री अनिल चन्द्र, पटना हाईकोर्ट, मुकेश चन्द्र, गया ।

इंजीनियर - सर्वश्री श्यामलाल कुटरियार, पटना, अनिल् कुमार, बोकारो, प्रबोध राम, बोकारो, शुकदेव जी, गिरिडीह, ब्रजेश्वर प्रसाद, सिलाव, अरविन्द कुमार, सिलाव, कमल कुमार, सिलाव, नवदेश्वर प्रसाद, बरबिघा, बच्चू बाबू, सत्यनारायण प्रसाद, बिहारशरीफ, राकेश नारायण, धनबाद,

दशरथ राम, मिर्जागंज, विजय प्रसाद, नुरसराय, मुरली मनोहर भदानी, झुमरीतिलैया, शिवनारायण भदानी, झुमरीतिलैया, कृष्णा शरण भदानी, झुमरीतिलैया, अर्जुन प्रसाद, शेखपुरा, मदन प्रसाद, बिहारशरीफ, बलदेव प्रसाद, शेखपुरा, ब्रह्मदेव प्रसाद, सिलाव, मुन्नीलाल, गया, देवदास बरहपुरिया, चाईबासा, मनोज भदानी, विनय दीवान, पटना, राजेश चन्द्र, अमेरिका, अनुराग दास, अमेरिका, देवेश चन्द्र, कलकत्ता, अर्जुन राम कन्धवे, पचम्बा ।

बैंक सेवा - १. श्री गोपाल प्रसाद, दिल्ली (शाहदरा दिल्ली में सेन्ट्रल बैंक के मैनेजर) २. श्री वीरेन्द्र प्रसाद, गया (बैंक ऑफ इण्डिया में मैनेजर) ३. श्री गंगा प्रसाद (बैंक ऑफ इण्डिया के मैनेजर) ४. श्री कृष्णा प्रसाद बेगावाद (युनाइटेड बैंक में मैनेजर) ५. श्री डोमन राम मिर्जागंज (युनाइटेड बैंक में मैनेजर) श्री योगेश प्रसाद, गया (स्टेट बैंक में मैनेजर) श्री दामोदर प्रसाद, बुधवारा (रिजर्व बैंक जयपुर में अधिकारी) श्री अरविन्द लोहानी, बरबीघा (विजया बैंक में पदाधिकारी)

किरानी कैसियर - सर्व श्री अर्जुन प्रसाद, हिलसा पटना, अरुण कुमार माथुरी, अशोक कुमार सोहसराय ।

जाति शिरोमणि राय बहादुर रामचन्द राम भदानी, गया - जहानाबाद के निकट के ढोढा गाँव से १८७७ ई० में गया आये । नमक के कारोबार से व्यापार में पदार्पण किया । धीरे-धीरे बिक्री की चीजों की संख्या बढ़ती गयी । मसाला, सूता, चाँदी-सोना, कपड़ा, लकड़ी, लोहा, चीनी, करुआ तेल, पेट्रोल, किरासन पम्प, सीमेन्ट, पेन्ट, हार्डवेयर आदि की दर्जनों दुकानें गया में थोक व खुदरा बिक्री के लिए खुलीं । कलकत्ता, जहानाबाद, वारसलीगंज, नवादा हसुआ आदि अनेक स्थानों पर भिन्न-भिन्न वस्तुओं के कारोबार की खुलीं । माहुरी महामण्डल में इनकी सेवाओं की चर्चा पूर्व के पृष्ठों में हुई है ।

इन्होंने रामपुर और गया में सिंगरा स्थान तथा टेकारी रोड में धर्मशालायें बनायीं । राजगीर संगत का जीर्णोद्धार किया ।

विष्णु प्रसाद भदानी, गया - जाति हित में रुचि लेते रहते थे । अपनी रुचि के अनुसार अपने ढंग से जाति के लोगों को सहायता करते रहते थे ।

युगल किशोर भदानी, गया - माहुरी मंडल भवन, गया की जमीन की बिना कुछ लिये रजिस्ट्री करके इन्होंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है । अन्य रुपों में भी ये जाति को लाभान्वित किया है ।

जगदीश चन्द गुप्ता रहुई, गया बोकारो - लाला गुरुशरण लाल के प्राइवेट सेक्रेटरी, मयंक के लेखक और महामण्डल के पुर्नजागरण काल के सामाजिक संचालक, जाति सेवा में सदा तत्पर । जहानाबाद जिला में बसे सर्वश्री सच्चिदानंद प्रसाद, श्री लक्ष्मी नारायण भदानी, श्री रघुनाथ राम उल्लेखनीय है । मखदुमपुर के मुखिया श्री श्याम बिहारी प्रसाद, स्व० महादेव राम, स्व० प्रभुचन्द राम एवं नरसिंह राम रहुय के श्री अयोध्या प्रसाद, श्री सीताराम, बेलागंज के श्री श्रीचन्द्र प्रसाद, श्री मोती राम, श्री केशो राम ।

परसाबाद - श्री योगेश्वर राम पूर्व अध्यक्ष महामण्डल गिरिडीह और समर्पित समाज सेवी हैं । प्रारंभ से ये सरपंच हैं । शिक्षा प्रेमी होने के नाते परसाबाद में उच्च विद्यालय की स्थापना में योगदान दिये । जयनगर प्रखण्ड में कांग्रेस पार्टी के सभी कार्यकर्त्ता उन्हें पार्टी के अभिभावक के रुप में समझते हैं ।

लाला गुरुशरण लाल -रामचन्द्र बाबू के एकमात्र पुत्र लाला गुरुशरण लाल ने पिता के व्यावसायिक साम्राज्य में उद्योगों की बढ़ोत्तरी करके अपार यश अर्जित किया । १९२३ ई० में साझेदारी में रामचन्द्र राम नागाराम प्रा०लि० के नाम से वहाँ तेल, दाल, चावल और वर्कशौप का उद्योग खड़ा किया । १९३९ में सी०एच०लि० के साथ गया कॉटन

मिल, १९४० में कलकत्ता में सोदपुर ग्लास वर्क्स खरीदा । इस ग्लास वर्क्स को आधुनिक स्वरुप प्रदान करके भारत पहली बार सीट ग्लास का निर्माण किया । इस समय फैक्टरी का अधिग्रहण किये जाने पर भी स्थान का नाम भदानी नगर है ।

कृष्णा केमिकल्स लि०, लैक प्रोडक्ट लि० मधुसूदन मिल्स लि० बम्बई, कोल फिल्ड के मैनेजिंग डायरेक्टर और स्वामित्व प्राप्त किया । कई कम्पनियों के डायरेक्टर रहे । १९३३ में युगल सुगर मिल की स्थापना । १९४६-४७ में इन्टरनेशनल चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष रहे । गया कॉलेज, राजेन्द्र विद्यालय एवम् गया हॉस्पीटल के निर्माण में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है ।

१९४२ के अकाल में बिहार गवर्नर (अंग्रेज) ने इन्हें ट्रेड बनाया । इसके माध्यम से इन्होंने अकाल पीड़ीतों की सहायता की । इनके इस पद से कई जाति के कई लोगों ने भी यश और धन कमाया । मिल एसोसिएसन के चेयरमैन, बिहार चैम्बर आफ कॉमर्स के अध्यक्ष फीक्की (फेडरेशन ऑफ इण्डियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज) के अध्यक्ष और चैम्बर्स के उपाध्यक्ष भी रहे ।

औद्योगिक जगत में धन एवं यश की शोहरत से उद्योग में लगे पुराने लोग घबड़ा गये और सोचा कि यदि इनके पर नहीं कतरे गये तो ये संसार प्रसद्धि उद्योगपति बन जा सकते हैं । इसीलिए प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से इनके पर कतरने में लगे और सफल भी हुए । किन्तु इनकी यशगाथा आज भी है कि बिना किसी बड़ी हस्ती के सहयोग से इन्होंने इतनी बड़ी ख्याति अर्जित की थी । ३१ दिसम्बर १९५५ ई० को काल कवलित हुए ।

श्री कृष्ण प्रसाद भदानी, गया -केवल इसलिए नहीं किये मद्धमण्डल को आजन्म अध्यक्ष राय बहादुर रामचन्द्र राय के पोते और ख्याति उद्योगपति लाला गुरुशरण लाल के पुत्र हैं, इसलिए भी कि मानव कल्याण के व्यापक कार्य में ये यथावर

लगे रहते हैं । रोटरी क्लब के माध्यम से चक्षुदान, पोलियो रोग के इलाज की व्यवस्था की । रोटरी का उच्च गवर्नर का पद प्राप्त किया १९८४-८५ के सत्र में । १९७४ में इन्टरनेशनल रोटरी ने इन्हें अमेरिका भेजा । पिता का असामयिक निधन से रिक्त स्थान को भर और औद्योगिक साम्राज्य की देखभाल अच्छे रुप में करके परिवार को उचित स्थान पर रखा । कई उद्योग व्यवसाय को संचालन में रत रहे । स्नातक कृष्णा बाबू का जन्म १९३३ ई० में हुआ । माहुरी समाज के उन्नतशील बनाने में समय-समय पर सहायता करते रहते हैं ।

बाबू लक्ष्मी नारायण भदानी, गया - समाज के जानी मानी हस्ती के रुप में विख्यात १९१० ई० में जन्में और १९८२ में कालकवलित हुए । राजगिरि संगत की व्यवस्था में सक्रिय रहे । गया के मधुरासिनी मंदिर में दो दूकानें बनवायीं । शिक्षा प्रेमी होने की वजह से बेटों को डॉक्टर-इंजीनियर बनाया । सिद्धहस्त व्यवसायी श्री बाबू, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ उमा नाथ भदानी, सफल व्यवसायी श्री केदार नाथ भदानी एवं इंजीनियर श्री रवीन्द्र नाथ इनके पुत्र हैं ।

श्री केदार प्रसाद भदानी, गया - 'इनकी सामाजिक चेतना का यह प्रभाव है कि इन्होंने श्री १०८ होरिल मुनि जी द्वारा रचित मधुरासिनी चालीसा का प्रकाशन कराया । इसकी सैंकड़ों प्रतियाँ लोगों को बिना मूल्य वितरित करायी ।

पुरोहित आचार्य - पुरोहित घर के सदस्य के रुप में जाने जाते थे । जो पुरोहित काम नहीं करा सकते थे तो उनके प्रतिनिधि के रुप में आचार्य काम कराते थे, किन्तु पुरोहिताई अंश उन्हें मिलता ही था । विवाह में लड़का-लड़की के ढूंढने और यजमान को सारी बातें बताने के पश्चात् वे जाकर शादी पक्की कर देते थे और थीला ले लेते थे । बेयाना की तरह का शब्द है थीला । रुपया- दो रुपया लड़का या लड़की वाले दूसरी तरफ वाले को देकर काम पक्का करता था । कभी-कभी जल्दबाजी में या यजमान का अधिकार पाकर बिना यजमान के कहे भी थीला लेकर काम पक्का कर देते थे । इतना ही नहीं लड़की के पक्ष से वरपक्ष के यहाँ जाकर कन्यादान की रस्म भी पुरोहित जी ही पूरा करते थे । आज भी यह कम

संख्या में प्रचलित है । पिता द्वारा कन्यादान करने की प्रथा धीरे-धीरे बढ़ती गयी । अब भी करीब ८० प्रतिशत विवाह इसी रुप में होते हैं । आवागमन के खर्च के लिए पुरोहित जी अपने सभी यजमानों से जिनके यहाँ लड़का या लड़की की शादी होती थी, एक, दो, चार रुपया मात्र खर्च कर लेते थे । आजादी के पूर्व तक यही प्रथा प्रचलित थी । अब धीरे-धीरे यह खत्म हो गया और यजमान स्वयं दो-तीन आदमियों के साथ लड़का खोजने को निकलते हैं । पूर्व के नियम में लड़की वालों की न तो दुकानें बन्द होती थीं और न कोई परेशानी थी । हाँ इतना जरुर था कि अरुचिकर संबंध होने पर माथा पीटते थे और पुरोहित जी को कोंसते थे । शादियाँ पहले बैसाख, जेठ, आषाढ़ में होती थी । पुरोहित लोग जाड़ा में जड़ावार लेने यजमान के निकट संबंधी के यहाँ जाते थे । उसी क्रम में वे इस बात का पता लगा लेते थे कि कौन लड़का या लड़की किसके योग्य है । आवागमन में खर्च की बढ़ोत्तरी और यजमानों की पुरोहितों से दुराव इस प्रथा को नष्ट कर रही है । बहुत से पुरोहित के उत्तराधिकारी इस वृत्ति को छोड़ भी रहे हैं ।

महामण्डलों के अधिवेशनों के समय बहुधा माहुरी पुरोहितों की भी सभायें होती थी । वे प्रस्ताव पास करके महामण्डल को देते थे और महामण्डलों में जो इनसे संबंधित प्रस्ताव होते थे इन दोनों पर लोकतांत्रिक ढंग से विचार होकर सर्वमान्य निर्णय किये जाते थे । पुरोहितों की बैठकें शीतलाष्टमी के अवसर पर मघड़ा (नालन्दा) में होती है । यहाँ एक दूसरे से विवाह योग्य लड़के-लड़कियों की जानकारी मिलती है जिसे वे अपने यजमानों को बताते हैं । उपर्युक्त परम्परा में शिथिलता आती जा रही है ।

कुछ मुख्य पुरोहितों-आचार्यों के नाम ये हैं - नूरसराय, पं० रामेश्वर दत्त शर्मा, महावीर पाण्डेय, चन्द्रमणि पाण्डेय, केशो पाण्डेय, वासुदेव पाण्डेय, बैरागी पाण्डेय, उदित पाण्डेय, राजेश्वर पाण्डेय, बद्री पाण्डेय, कैलास पाण्डेय, उमेश पाण्डेय, प्रदीप पाण्डेय, मुरलीधर पाण्डेय, अर्जुन पाण्डेय, मथुरा पाण्डेय, महुरी के फौदी पाण्डेय, अकबरपुर के घनश्याम पाण्डेय, द्वारिका पाण्डेय, कपिल पाण्डेय, डोभी पाण्डेय, खिजरसराय के हरीपाण्डेय, खोदागंज के शिवदानी जी, भुवनेश्वर जी, मघड़ा के युगल पाण्डेय ।

श्रीमान् बाबू जगन्नाथ रामजी

स्व० प्रीतम राम

श्रीमान् किसुनचन्द रामजी

राजकुमार भदानी

मधुसूदन राम तरन

श्री गंगा प्रसाद गुप्ता

रामप्रसाद राम कुटरियार

अरुण कुमार गुप्ता

अवधेश कुमार 'उन्मन'

अरुण कुमार गुप्ता

श्री ठाकुरचन्द राम

वंशी रामजी (बंगाबाद)

देवेन्द्र प्रसाद कश्यप

रामेश्वर राम वैश्यकियार

माहुरी जाति का विवेचनात्मक इतिहास
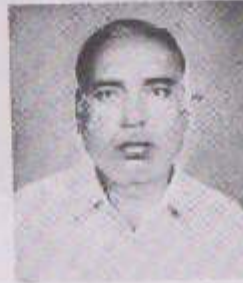
खण्ड - ५

अध्याय - २

उल्लेखनीय व्यक्ति

माहुरी संगठन के प्रेरणा स्त्रोत पं० गंगा प्रसाद चतुर्वेदी एवं उनके वंश के लोग -

स्वतंत्रता पूर्व काल में मथुरा के चौबे जी माहुरियों के यहाँ घूम-घूम कर अपनी यजमानी वृत्ति वसूल करते थे । इस वृत्ति को चौटक्की भी कहा जाता था । जो शादी व्याह के अवसर पर महामण्डल के पास प्रस्ताव के अनुरुप होता था । सामान्य दिनों में अधिकांश माहुरी घरों में रसोई बनाने के समय मुठिया, चावल, मथुरासिनी चौबे जी के

नाम पर निकाला जाता था जिसे चौबे जी साल छः - मास में आकर ले जाते थे । हम लोगों के बचपन में (तीस-चालीस के दशक में) मथुरा के कुन्दन चौबे जी बरबीघा आया करते थे । हमारे यहाँ उनके ठहरने का इन्तजाम रहता था । वे बहुत ही वृद्ध थे इसलिए हम लड़के उनकी सेवा करते थे । उनके बाद नारायण चौबे जी मथुरा से आते थे । जो हमारे खास पुरोहित थे वे पं० गंगा प्रसाद जी चतुर्वेदी । ये बहुत बड़े विद्वान थे इन्हीं के प्रयास से हजारीबाग एवं मगध में माहुरी महामण्डल की स्थापना हुई थी । इन्होंने गाँव-गाँव घूमकर सभी माहुरी भाइयों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास-किया था । एक बार घूमते-घूमते ये हिसुआ गये और उस समय के नामी जमींदार बाबू दृगपाल लाल जी के यहाँ पहुँचे । दृगपाल बाबू ने खूब आवभगत की और अपने मैनेजर को हुक्म दिया कि उन्हें अच्छी से अच्छी जगह पर डेरा लगाकर खानपान की उत्तम व्यवस्था करें । मैनेजर उन्हें साधारण व्यक्ति समझ कोई ध्यान नहीं दिया और बहुत साधारण डेरे में रखा । दूसरे दिन दृगपाल बाबू से भेंट होने पर उन्होंने पूछा आराम से तो हैं । इस पर उन्होंने यह कविता बाँची । इसकी

कुछ पंक्तियाँ ही मुझे याद है, स्व० पंडित गंगा प्रसाद जी चतुर्वेदी जहाँ कभी मुड में आते थे, सुनाते थे ।

फूस नहीं घांस, जहाँ छप्पर नहीं बाँस
वहाँ झिंगुर झरांया करे ।
मकड़न की रेल पेल, छुछुन्दर करे खेल,
कीटों का मकान, जहाँ भूत घूमा करे,
वहाँ हरदम जी डरा करे ।
दीवाल आर-पार है, सुराख लाख चोर है ।
वहाँ चौबे जी रख डेरा क्या करें
सीधा तो ऐसा मिले जैसे सत अनजा मिले
इससे भली बात गर दूध पेड़ा खवाये जाय ।

इसे सुनते ही जमींदार दृगपाल बाबू मैनेजर पर आग बबूला हो गये और मैनेजर को समुचित दण्ड दिया गया । यह कि वे सिद्ध-हस्त कवि और विद्वान थे । पं० गंगा प्रसाद जी चतुर्वेदी ने माहुरी जाति को एक सूत्र में बांधने के लिए सारा जीवन माहुरी जाति को समर्पित कर दिया ।

उनके स्वर्गारोहण के पश्चात् गोवर्धन चौबे जी आते थे । उनके बाद उन्हीं के परिवार के शिव प्रसाद चौबे जी ने पद भार संभाला । ये जमुई के निकट मलयपुर में मकान बनवाकर रहने लगे । गिद्धौर के महाराज चौबे जी के शिष्य थे । इन्होंने ही मलयपुर में चौबे जी को जागीर भी दिया था । उस समय गिद्धौर महाराज के खजान्ची माहुरी जाति के नूरसराय निवासी बाबू काशी राम जी बरहपुरिया थे । स्वभावत: चौबे जी एवं बरहपुरिया जी में अच्छा सम्पर्क रहा होगा । शिवप्रसाद जी चौबे के पुत्र किशोरी चौबे जी थे । ये भी बराबर आया जाया करते थे । इनका निधन पाँच वर्ष पूर्व हो गया । इनके निधन के बाद किन्हीं का सम्पर्क अब माहुरी के साथ नहीं रहा । ज्ञातव्य है कि इन्हीं चौबे जी के खानदान में हिन्दी के हास्य रस के सिद्ध-हस्त कवि लेखक हास्य रसावता पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी थे ।

प्रस्तुति : **श्री प्रसाद लोहानी, बरबिघा**

बाबू कारु राम अठघरा : हजारीबाग माहुरी महामण्डल के संस्थापक बाबू

कारुराम अठघरा जन्म १८७४ ई० मृत्यु १९२५ ई० पिता मुड़डिल राम थे और जन्म स्थान सिलाव था । जीवन का आरम्भ शिक्षक के रुप में तत्पश्चात् स्कूल अपर निरीक्षक बनियाडीह (हजारीबाग) के रुप में कार्य किया । वहीं से सेवा निवृत्त हुए ५० वर्ष की उम्र में । जहाँ जाते थे आग्रह पूर्वक माहुरियों से परिचय प्राप्त करते थे । राजगीर के वार्षिक सत्संग सभा में वे अवश्य जाते थे । उन्होंने ही सर्वप्रथम १९१२ में राजगीर में माहुरी मण्डल नाम से संगठन बनाकर स्वजाति बन्धुओं का संगठन करना प्रारम्भ किया ।

श्री पं० गंगा प्रसाद चतुर्वेदी जी के निमंत्रण पर खरगडीहा में १९१३ में हजारीबाग माहुरी महामण्डल की स्थापना की । इसमें इनके प्रयत्न से ८०० स्वजाति बंधु एकत्रित हुए थे । लगातार १२ वर्षों तक इन्होंने महामण्डल को संगठित किया । इनकी कर्मठता के कारण हजारीबाग माहुरी वैश्य महामण्डल की वार्षिक अध्विेशन होता रहा । माहुरी महामण्डल के तीन उद्देश्य विद्या प्रचार, समाज सुधार तथा धर्म प्रचार इन्हीं के चिन्तन की देन है ।

बाबू राम प्रसाद अठघरा : माहुरी वैश्य महामण्डल को पुन: जीवित करने वाले महापुरुष अदम्य कर्मयोगी तथा योग्य पिता के योग्य पुत्र थे । इनका जन्म १९०० ई० में तथा स्वर्गवास १९७४ ई० में १८ जनवरी । इनका जन्म स्थान गाडेय था । पिता के समाज ही शिक्षण वृत्ति अपनाकर पचम्बा, धरियाडीह, बरगंडा, मकतपुर आदि के विद्यालयों में कार्य करते ६० वर्ष की आयु में सेवा निवृत्त हुए । १९४१ ई० में माहुरी वैश्य महामण्डल का कार्य धीमा पड़ने लगा तो इन्होंने महामण्डल को जागृत करने का भार उठाया और अनवरत परिश्रम कर १९५२-५३ में गिरिडीह में महामण्डल का अधिवेशन कराया । मृत्यु के चार दिन पहले तक तत्कालीन सभापति श्री सत्यनारायण राम जी से महामण्डल को सुचारु रुप से चलाने का आश्वासन पाकर ही संतुष्ट हुए । ऐसे कई अवसर आये,

जबकि १०२ डिग्री बुखार से पीड़ित रहने पर भी मंडल के भ्रमण कार्यक्रम में सहयोग दिया । इन्होंने गाण्डेय के वार्षिक अधिवेशन में सभापति का पद सुशोभित किया ।

प्रस्तुति : **गोपाल राम अठघरा**

श्री गोपाल राम : इनके सुपुत्र श्री गोपाल राम भी समाज सेवा कार्य में दीर्घ काल से लगे हुए हैं तथा अद्यावधि निरन्तर दौरों के द्वारा मण्डल की अलख जगाये जा रहे हैं । ये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से किशोरावस्था से ही जुड़े हुए हैं । मीसा के अन्तर्गत ये मीसा से प्रारम्भ तिथि से लेकर अन्तिम तिथि तक हजारीबाग कारागार में बन्दी रहे । सम्प्रति विश्व हिन्दू परिषद के गिरिडीह जिला अध्यक्ष हैं । इनकी वृत्ति शिक्षण की है । श्री राम प्रसाद राम जी के अनुज श्री कृष्णराम अठघरा ये भी शिक्षण से आजीवन जुड़े रहे । इन्हीं के सद्प्रयास से सर्वप्रथम स्थानीय जैन विद्यालय में दो कमरे लेकर माहुरी छात्रावास प्रारम्भ किया जो आज भी अपने संवंधित रुप में इनकी कीर्ति ध्वजा फहरा रहा है ।

कुछ विशिष्ट व्यक्ति : "स्वर्गीय समाज सेवी" शीर्षक से मगध माहुरी महामण्डल के पूर्व मंत्री बाबू हरिहर प्रसाद लोहानी का 'माहुरी मयंक' के जुलाई १९५७ अंक में लेख छपा है उसे उद्धृत किया जा रहा है- इस लेख में यह प्रयास किया गया है कि वैसे कुछ समाज सेवी जो स्वर्गवासी हो गये और जिन्होंने महामण्डल की सेवाकर समाज को लाभ पहुँचाया है उनकी उन सेवाओं का उल्लेख किया जाय । उनकी विस्तृत जीवनी से इस लेख का संबंध नहीं है । इसमें कपोल कल्पित तथा मिथ्या आडम्बरों की भरमार नहीं है वरन् यथार्थता का ही दिग्दर्शन है । महामण्डल के सभी पदों पर वर्षों तक कार्य करने के कारण लोहानी जी की बातें स्व अनुभव की है ।

श्री मधुसूदन प्रसाद, गया : आप शुद्ध तथा सच्चे समाज सेवी थे ।

आपका देहावसान हुए लगभग ४० वर्ष हो गया । आप प्रथम बार महामण्उल के मंत्री चुने गये । आपके समय महंत रजौली श्री गुरु बक्स दास जी महामण्डल के प्रथम सभापति थे । आपके समय में जाति सुध ार का विशेष कार्य हुआ जाति के मांसाहारियों के साथ आपकी कई बार भिड़न्त हुई । सारांश यह कि आप मानव समाज के प्रेमी सेवक थे न केवल जाति के वरन् कई अन्य संस्थाओं के आप अधिकारी एवं प्रेमी थे । आप लेखक के मामा लगते थे । किन्तु एक प्रकार के पूर्व जन्म के पिता थे । आपने लेखक को अपने यहाँ रखकर विद्याध्ययन, अपने खर्च से कराया । पुत्रवत बर्ताव किया । मृत्यु के पश्चात् अपने धन का उत्तराधि कारी भी बता दिया । लेखक उनका आजन्म आभारी हैं । समाज सेवा में जो कुछ उत्साह इस लेखक में रहा वह उनके उज्जवल चरित्र कार्य के अनुकरण का ही फल है ।

श्री केशव लाल जी, गया : आप श्री मधुसुदन प्रसाद जी के चचेरे भ्राता थे और ये प्रसिद्ध समाज सेवी बाबू उमाचरण लाल जी के पिता आपने बाबू मधुसूदन प्रसाद जी के साथ समाज की सेवा की । इन्हें दो नहीं समझा जाय क्योंकि शरीर में पृथक रहकर भी शुद्ध प्रेम में दोनों बंधे थे । जाति सेवा के प्रत्येक कार्य में दोनों एक मूर्तिवत थे । दोनों के सहयोग से ही समाज का छोटा से छोटा बड़ा से बड़ा काम किया जाता था जो कुछ वर्णन बाबू मधुसूदन प्रसाद जी के प्रति किया गया है । करीब-करीब इनके साथ भी लागू है । इन्होंने भी न केवल समाज की सेवा की वरन अन्य संस्थानों की सेवा की । आप भी लेखक को पुत्रवत मानते थे । जब बाबू उमाचरण अबोध थे उस समय हमसे भी जहाँ तक बन पड़ा उनकी सेवा पित्रभक्ति रुप से की थी । इनके प्रति जो कुछ भी लिखा जाय थोड़ा है अतः लेख विस्तार के भय से हम कलम बन्द कर रहे हैं ।

श्री दुलचन्द राम, हिसुआ - आपने समाज में एक बड़ा काम किया वह है नियमावली तथा सामाजिक प्रथा को सुन्दर रुप प्रदान करना । आप समाज में रुपये के धनी तो नहीं परन्तु ज्ञान के धनी थे । जो कुछ वैवाहिक चढ़ुआ विवाह तथा अन्य प्रथाओं में सुधार इस समय तक देख रहे हैं और जो चालू हैं सब इन्हीं के मस्तक का प्रकाश है । प्रमुख स्थानों के

वैवाहिक कार्यक्रम में आप विशेष रुप से आमंत्रित किये जाते थे । आप उन स्थानों में प्रथाओं के आचार्य बनाये जाते थे । उन्हीं के आदेश से ब्राह्मण आचार्य कार्य संपादन करते थे । नियमावली संबंधी अड़चनों में धनी-मानी लोग भी आप के समक्ष सिर झुकाते थे । समाज के प्रतिष्ठित एवं मध्यस्थ व्यक्तियों में आपकी गिनती है ।

श्री नेमचन्द राम, बिहारशरीफ : आप महामण्डल के प्रथम कोषाध्यक्ष बनाये गये । कोष को सुरक्षित रखकर उसका नियमोचित हिसाब-किताब रखा करते थे । चूँकि उस समय तो अकेले थे और व्यापार का काम उनके हाथ में था, इधर भ्रमण करने में अधिक समय नहीं दे सके । परन्तु स्थानीय मण्डल की उचित व्यवस्था करते थे और जब तक जीवित रहे बिहार मण्डल कभी शिथिल नहीं पड़ा बल्कि इनके प्रयत्न से कई व्यक्ति सोह में, बिहार में, नईसराय में उत्साहित होकर समाज की सेवा में उद्यत हो गये थे ।

श्री रामकृष्ण लोहानी, नूरसराय - आप वर्तमान मयंक संपादक श्री शिव प्रसाद लोहानी के पिता थे । आप बड़े उत्साही समाज सेवी व्यक्ति थे । ऐसी कोई बैठक संभवतः मण्डल की नहीं हुई जिसमें वह उपस्थित न हुए हों । आप समय तथा परिश्रम का ध्यान न देकर सभी जगहों में उपस्थित होकर उचित सहयोग दिया करते थे, वह एक विचारवान व्यक्ति थे । जटिल समस्याओं के अवसर पर इनका विचार बड़ा ही महत्व का होता था । वह शान्त स्वभाव की प्रत्यक्ष मूर्ति थे । वह महामण्डल की कार्य कारणी समिति के बराबर सदस्य बने रहे तथा समाज की सेवा उचित निःस्वार्थ भाव से की । हमारा उनसे सम्पर्क उनकी मृत्यु पर्यन्त तक रहा ।

श्री मुरलीधर जी, शेखपुरा - आप रा०ब० रामचन्द्र जी सभापति के सहयोगी थे । जहाँ रामचन्द्र बाबू समाज सेवा के लिए जाया करते थे वहाँ भी ये उनके साथ जाया करते थे और महामण्डल के कार्य में बराबर उनकी सहायता करते थे ।

श्री नांगा राम, गया - आप गया मण्डल के सभापति थे । आप समाज

प्रेमी तथा उदार प्रकृति के सज्जन थे । जब तक आप जीवित रहे, गया मण्डल में शिथिलता नहीं आने दी । आप जाति उन्नति के लिए प्रगाढ़ चेष्टा करते रहे । समयानुसार आप महामण्डल के कार्य में उचित सहायता देते थे । जब कभी हमें किसी प्रकार की सहायता की विशेष आवश्यकता पड़ी उस समय उन्होंने इन्कार नहीं किया, सदा प्रस्तुत रहे । इनकी मृत्यु से गया मण्डल के एक प्रमुख रत्न का लोप हो गया ।

श्री चैतूलाल जी, बरबिगहा - आप बरबिगहा मण्डल के सभापति थे । आप ही सभापतित्व के समय बरबिगहा में विगत सम्मेलन हुआ था, अनुमान से अधिक संख्यक लोगों के आने पर भी आप धैर्य तथा सफलतापूर्वक निर्वाह किया । आप जाति सेवक और प्रमी भी थे । प्रो० केदार राम गुप्त, एम०कॉम० साहित्य रत्न के आप पूज्य पिता थे ।

श्री बोधकिसन दास, वारसलीगंज - आप वारसलीगंज के सभापति और प्रतिष्ठित सज्जन थे । आपके साथ एक मंत्री थे जो बड़े ही उत्साही पुरुष थे और जाति कार्य में निरन्तर हाँथ बंटाते थे । आप ही के प्रयास से वारसलीगंज मण्डल उत्साही बना रहा ।

श्री रामदास, खिजरसराय - खिजरसराय मण्डल के ये सभापति थे सुसम्पन्न मध्यस्थ में उस समय गिने जाते थे । कार्यकारिणी की बैठक जब-जब वहाँ हुई आप बड़ी श्रद्धा के साथ लोगों को संभाषण करते थे । कभी-कभी जाति उलझनों को बड़ी युक्ति के साथ आप सुलझा लेते थे ।

प्रस्तुति : बाबू हरिहर प्रसाद लोहानी जी, गया

बाबू हरखू राम सेठ, खरगंडीहा - जिन थोड़े से लोगों ने अपने जीवन काल में हजारीबाग माहुरी महामण्डल को सक्रिय बनाये रखने में अपना अमूल्य समय दिया उनमें सशक्त हस्ताक्षर है खरगडीहा के बाबू हरखूराम सेठ । ये हजारीबाग माहुरी महामण्डल के प्रथम स्थायी अध्यक्ष रहे हैं और आजन्म इस पद पर बने रहे । इनका जन्म

विक्रम सम्वत् १९३८ में और निधन सं० २००० में हो गया । ये अनूठे चिन्तक मानवीय संवेदनाओं से भरपुर सम्मान के पात्र थे । कई स्थानों पर उनकी जमींदारी थी । खरगडीहा का महादेव मंदिर का इन्होंने निर्माण कराया जो अभी भी विद्यमान हैं । खरगडीहा उस समय महामण्डल का केन्द्र स्थल था और वहीं के प्रसिद्ध समाज सेवी बाबू टेक नारायण राम भदानी महामण्डल के मंत्री पद को वर्षों सुशोभित किया ।

प्रस्तुति : अरुण कुमार सेठ (नईटांड़)

बाबू टेकनारायण राम भदानी - इनके पूर्व पुरुष मानसिल राम भदानी, नवादा जिला के गोविन्दपुर से खरगडीहा आये । इनके चार पुत्र थे जिन्होंने परिश्रम करके वहाँ जमींदारी हासिल की । इन चारों में बड़े भाई चिन्तामणि राम की पीढ़ी में झरीराम भदानी हुए । इन्हीं के पुत्र थे स्वनामधन्य टेकनारायण राम भदानी । इनकी शिक्षा मिडिल तक हुई किन्तु राष्ट्रीय सामाजिक कार्यों में इनकी रुचि विशेष थी । थाना कांग्रेस कमेटी के मंत्री यूनियन बोर्ड के सदस्य और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य रहे थे । उन दिनों डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का सदस्य होना एम०एल०ए० होने के बराबर माना जाता था । हजारीबाग माहुरी महामण्डल की स्थापना काल से ही ये सक्रिय रुप से जुड़े रहे और वर्षों तक उसमें मंत्री रहकर गाँव-गाँव में समाज संगठन का बिगुल बजाया । महामण्डल के सुप्तावस्था में भी उन्होंने गिरिडीह में माहुरी छात्रावास खोलकर शिक्षा प्रसार को गति दी । लड़कियों की शिक्षा के लिए स्व० बाबू झरीराम भदानी झुमरीतिलैया से मिलकर अनुदान में एक बस प्राप्त किया जिसके द्वारा पचम्बा, करहरखारी, बददीहा आदि गाँवों की स्वजातीय लड़कियाँ गिरिडीह आकर शिक्षा ग्रहण करती थी ।

आजादी की लड़ाई के कर्मठ हस्ताक्षर सर्वश्री कृष्ण बल्लभ सहाय, रामनारायण सिंह, सुरुलाल सिंह बिहार केसरी डॉ० कृष्ण सिंह, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, शौकत अली, सभी इनके गाँव घर में रहकर इनकी सेवा को सराहा । क्षेत्र के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता बजरंग सहाय जी से इन्होंने कहा कि

महात्मा गाँधी को खरगडीहा में लाया जाय । सहायजी ने कहा कि यदि गाँव में ४० चरखा चलवा दें तो उनकी इच्छा पूरी होगी । इन्होंने यह पूरा कर दिया तो सचमुच खरगडीहा में महात्मा गाँधी का पर्दापण ३-४-१९२५ को हुआ । आध्यात्म प्रचार में इनकी रुचि विशेष थी । श्री १०८ श्री योगानन्द श्री से इनका निकट का संबंध था ।

७३ वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते इनका नश्वर शरीर जर्जर हो चुका था, किन्तु कष्ट सहकर सूर्य उत्तरायण होते ही १४ जनवरी १९५७ ई० को अपनी जीवन लीला समाप्त की ।

सभी जीते और मरते हैं अधिकांश लोगों की कमाई के प्रतीक, घर वैभव, सम्पत्ति, स्वर्ण चाँदी, हीरे जवाहरात देखे जाते हैं, किन्तु उन्होंने ये चीजें हासिल नहीं की । हासिल की तो जनसेवा और समाज सेवा का पुनीत कार्य ।

इनके दो पुत्र श्री मधुसूदन राम जी एवं श्री बनमाली राम जी इन्हीं के पदचिन्हों पर मूल रुप से चल रहे हैं । पहिले है ज्योतिषी और दूसरे ख्याति प्राप्त समाज सेवी बनमाली राम धन दौलत और वैभव के स्वामी ये भी नहीं है ।

प्रस्तुति : श्री डोमन राम, झुमरीतिलैया

माहुरी कुल भूषण बाबू प्रभुदयाल गुप्त, एक परिचय - कोयलांचल वासी स्व० प्रभूदयाल गुप्ता का जन्म मुँगेर जिले के शहर शेखपुरा में हुआ था । इनके पिता का नाम दुलीचन्द दास था । प्रभुदयाल जी एक महत्वाकांक्षी व प्रतिभाशाली पुरुष थे । अतः कुछ ही समय में झरिया कोयलांचल के महत्वपूर्ण व्यक्ति माने जाने लगे । आप ओजस्वी पूर्ण भाषण देने में अद्वितीय थे । अतः नागरिकगण बोर्ड की मीटिंग इनके बिना नहीं करते थे । आप उस समय के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के असाधारण सदस्य बिहारी समाज के अग्रणी तथा अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओं से जुटे थे । माहुरी जाति के

अग्रणियों जाति शिरोमणि राय बहादुर रामचन्द्र राम, गया, राधाकान्त कन्ध वे रमना, कवि गोपीचन्द हिसुआ एवं अन्य जाति नेताओं के साथ इनकी घनिष्टता थी ।

उस समय माहुरी जाति के लोग मगध व हजारीबाग में विभाजित थे । आपस में वैवाहिक संबंध नहीं करते थे । गया के एक अधिवेशन में अपने भाषण में इन्होंने इस बात पर दुख प्रगट किया । आप इस कार्य में अग्रणी होकर अपने अनुज झरीलाल व चचेरे अनुज विक्रम लाल गुप्त का वैवाहिक संबंध हजारीबाग जिले के बरकट्ठा व सरंडा में किया । इन्हीं संबंधों के कारण पिछले ७० वर्षों से मगध व हजारीबाग में निःसंकोच वैवाहिक संबंध हो रहा है ।

प्रभु दयाल जी ने जाति के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो किया वह "माहुरी मयंक" का प्रकाशन था । आपने जातीय संगठन के लिए एक पत्रिका का होना अति आवश्यक समझा । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपने इंग्लैंड से मशीने मँगवाकर 'कमला प्रेस' खोलकर 'माहुरी मयंक' का प्रकाशन सन् १९१४ में प्रारंभ किया । आपने यह मासिक पत्रिका कुछ दिनों तक निः शुल्क वितरित कर जाति संगठन में एक अहम भूमिका प्रारम्भ किया ।

बरबिघा उस समय माहुरियों का गढ़ था । बरबिघा वार्षिक अधिवेशन का सभापतित्व किया । झरिया से जब प्रभु दयाल जी बरबिघा पहुँचे तो इनके दर्शन हेतु अपार भीड़ उपस्थित होकर इनका स्वागत किया । इसी अधिवेशन में कवि गोपीचन्द द्वारा लिखित 'माहुरी मण्डल नाटक' का विमोचन किया गया था जो 'माहुरी मयंक' में भी प्रकाशित हुआ है । इस अधिवेशन में प्रभुदयाल जी ने अपने ओजस्वी भाषण से सब को अत्यन्त ही प्रभावित किया और लोगों ने उन्हें 'माहुरी कुलभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया । ऐसे महत्वपूर्ण अधिवेशन अपनी जाति का शायद नहीं हुआ है और न किसी अन्य को ऐसी उपाधि दी गई है ।

प्रस्तुति : **निखिल चन्द गुप्त, झरिया**

बाबू गिरवर नारायण मुख्तार – १८७५ ई० को १८ जून एक ऐतिहासिक

दिवस था जिस दिन शेखपुरा (मुँगेर) के बाबू गिरवर नारायण जी के मुख्तारी परीक्षा में सफल होने का समाचार माहुरी समाज में बिजली की तरह व्याप्त हो गया । उस समय ये करीब २० वर्ष के थे । इस हिसाब से उनका जन्म १८५५ ई० में हुआ होगा ।

ये कुशाग्र बुद्धि के कानून विशेषज्ञ थे । इनके यहाँ दूर-दूर से लोग कानूनी सलाह लेने के लिए और मुकदमा तथा अन्य कार्यों के मशविरा हेतु आते थे । ये बहु आयामी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे ।

इन सब के अतिरिक्त इनकी कार्य साधना महत्वपूर्ण थी । उस समय कचहरी कार्य सामान्यत: अंग्रेजी या उर्दू में होते थे । 'मशविदा' रुक्का, दस्तावेज उर्दू में ही लिखने की प्रथा थी । अतः इनकी काव्य साधना उर्दू भाषा में ही हुई जिसकी लिपि अरबी थी । २६ वर्ष की आयु में इन्होंने 'जगन्नाथ महातम' नामक पुस्तक की रचना की वे इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं ।

हुआ फिर शोक मुझको ऐ नेक किरदार ।
करुं फिर कोई दूसरा नुस्खा तैयार ॥
कि भगवत का नाम भी उसमें वयां हो ।
गरज नारायण का कोई रास्ता हो ॥
पुराणों में एक स्कन्ध पुराण है ।
उसी के उत्र खण्ड का दास्तां है ॥
न भाषा अब तलक इसका हुआ है ।
सराया फैजो तहसी से भरा है ॥
सुने पोथी का मेर नाम इन हम ।
"जगन्नाथ" लफ्ज के बाद है महातम ॥

इसके पूर्व उन्होंने सीता स्वयंवर नामक पुस्तक की रचना की थी– शायद मुख्तारी प्रारंभ करने के कुछ बाद ही । वे लिखते हैं –

हुये मुख्तारी करते जबकि सात माह ।

दिखाई अक्ल ने यह एक दिन राह ॥
बनाऊं एक शेऐजी जो बेशक ।
रहे कायम व दायम वह अषद तर ॥
पिरोया हासे शादिये सीता है सिक्खा ।
रखा सीता-स्वयंवर नाम उसका ॥

समय-समय पर अवसर के अनुरुप भी इन्होंने काव्य रचना की है । पूज्यनीय माता की मृत्यु पर इनकी लब से ऐसी रचना प्रस्फुटित हुई -

नहीं है कुछ बकाए जिन्दगानी ।
जमीनों आसमां यह सब हैफानी ॥
नहीं कायम रहेंगे माहा खुर्शीद ।
रहेंगे यह कवाकिब मीन जावेद ॥

अब तक जो भी जानकारी प्राप्त हुई है इसके अनुसार यह स्पष्ट है कि बाबू गिरिवर नारायण जी माहुरी जाति के पहिले कवि साहित्यकार हैं । ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व को पाकर माहुरी जाति गौरवान्वित हुई है ।

स्व० हरी भगत जी :-

सेवा ही जिनका धर्म है, सेवा ही जिनका कर्म है और जो आज की तरह अर्थ और ख्याति पाने के लिए सेवा का स्वांग नहीं करते अपितु अपना कर्तव्य और मानव की पीड़ा को दूर करने के लिए सेवाव्रती है ऐसे महान व्यक्तित्व को समाज भूल जाता है । पर इतिहास की आँखों से यह नहीं बच सकता ।

माहुरी समाज के एक ऐसे ही विलक्षण सेवा पुरुष थे स्व० हरी भगत जी । लोग इन्हें भूल चुके से ज्ञात होते हैं । किन्तु पिछले दशकों के 'माहुरी मयंक' के पन्ने जब उल्टे गये तो इनका जिक्र मिला । माहुरी मयंक के सितम्बर-अक्टूबर १९७३ और नवम्बर-दिसम्बर १९७३ (दोनों क्रमांक) में क्रमागत रुप से हरी भगत जी के बारे में लेख छपे हैं । उस

लेख के महत्वपूर्ण अंश को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है । लेखक श्री गोवर्द्धन लाल गुप्ता माहुरी नहीं है किन्तु इनकी भावनायें और विचार इनकी गुण ग्राहकता का परिचायक है ।

माहुरी कुल कमल दिवाकर - स्व० श्री हरी भगत :-
(सिपाही, सेवक, साधक तथा नायक)

श्री गोवर्द्धन लाल गुप्त, गया : -मेरी उम्र बुढ़ापे तक पहुँच गयी है और मेरी स्मरण शक्ति भी कमजोर पड़ गयी है इसलिए करीब-करीब मैं कलम से सन्यास ले चुका हूँ । लेकिन ऐसी स्थिति में भी मेरे हिताहित पर स्नेहपूर्ण दृष्टि रखने वाले गया के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक आन्दोलनों के निःस्वार्थ सिपाही स्वर्गीय श्री हरि भगत का मेरे ऊपर एक महान ऋण है और तथागत की इस पुण्यमय तपोभूमि को विष्णु नगरी में इस पितृपक्ष के शुभ अवसर पर उस अस्तंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धा का पिण्डदान कर अपने को उऋण करना चाहता हूँ ।

गया नागरिकों के अकिंचन सेवक स्वर्गीय श्री हरि भगत से मेरी पहली मुलाकात १९२२ के अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में हुई । स्वर्गीय श्री सी०आर० दास (चित्तरंजन दास) की स्वागत तैयारी में जुटे थे । उनसे कुछ देर बातचीत हुई थी । फिर सर्वदा उनसे मिलते रहते । कट्टर कांग्रेसी और उसके आदर्शों के सच्चे अनुयायी की हैसियत से वे सदा स्वदेशी आन्दोलन, विदेशी बहिष्कार, नशाबन्दी, अछूतोद्धार तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के हिमायती और कार्यकर्ता रहे । इन कामों के लिये वे पीर- बावर्ची भिश्ती खर थे । जब जहां जैसी जरुरत पड़ी, तब तहाँ वे अपने आप को उसी के अनुकुल उसके साँचे में ढाल लिया । कहीं उन्हें देखिये तो अपनी टूटी-फूटी छन्द-रचना में राष्ट्रीयता का गान गा रहे हैं । कहीं अपनी विलक्षण शैली में भाषण दे रहे हैं । कहीं गले में ढोल डालकर एलान कर रहे हैं कहीं जुलूस का नेतृत्व कर रहे हैं । कहीं सरकारी इमारतों पर झण्डा फहरा रहे हैं । कहीं पलटन की गोली खाने के लिए सीना ताने खड़े हैं । कहीं हाथ में झाड़ू लेकर नगर के कूड़ा-करकट साफ कर रहे हैं । कहीं अछूतों के साथ

भाई-चारे का नाता जोड़कर उनकी करुण कहानी सुन रहे हैं । कहीं अबलाओं की करुण पुकार और फरियाद सुन कर बेचैन हो रहे हैं । कहीं पुलिस और पलटन की बूटों की ठोकरें खाकर बेहोश पड़े हैं । कहाँ तक लिखूँ । उनका जीवन था दीपक शिखा पर मरने वाले पागल परवाने का । खाली पेट में इतना प्रबल मनोबल भरा था कि बड़े-बड़े अफसर देखकर दंग रह जाते थे । २० घण्टे तक लगातार मैंने उन्हें असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन में काम करते देखा । बरसों जेल में यातना भोगे लेकिन जेल से लौटने पर सीता की अग्नि परीक्षा के सदृश प्रखर बनकर निकले । जब कभी देश-रत्न डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, गया आते थे तब वे विशेष रुप से श्री हरि भगत से मिलते और मिलकर गद्-गद् हो जाते । गया का कोई भी ऐसा समारोह, आन्दोलन, उत्सव, अनुष्ठान न था जो उनके सहयोग की अपेक्षा न करता हो न सहयोग प्राप्त करता हो । बिना श्री हरि भगत के सारा महायज्ञ अधूरा पड़ा है । आज नगर में श्री लाला लाजपत राय का शुभागमन है । श्री स्वामी श्रद्धानन्द का शुभागमन है । श्री सत्यदेव परिब्राजक का शुभागमन है । श्री लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़ का शुभागमन है । आज श्री जगत नारायण लाल के साथ श्री महामना मालवीय का पदार्पण गया में ही हो रहा है । आज सनातन धर्म महामण्डल का वार्षिक अधिवेशन गया में हो रहा है । आज आर्य समाज गया का वार्षिक अधिवेशन हो रहा है । बस मत पूछिये फिर श्री हरि भगत का चमत्कार देखिये । उनकी आवाज गूँज रही है और उनकी आवाज के जादू से अपारजन समूह नगर में उमड़ पड़ता था । गया रमना का मैदान और राय हरि प्रसाद लाल का चौंक का फाटक । वहाँ देखिये तो अली बन्धु श्री शौकत अली और श्री मुहम्मद अली आये हुए हैं तो वहाँ श्री हरिभगत समान भाव से गया की गर्मी से तड़पते हिन्दू-मूसलमान भाइयों की समभाव से पानी पिला रहे हैं । भगवान ने श्री हरि भगत को जनता जनार्दन की सेवा हेतु ही जन्म दिया था । आप प्रिय पाठकों से मैंने पूर्व में कहा है कि गया कोई भी सार्वजनिक अंग न था जिसमें स्वर्गीय श्री हरिभगत के महान व्यक्तित्व की महान झांकी न मिलती हो । क्या लिखूँ आज तो प्रोपैगंडा का युग

है । इसी निगोड़ी प्रोपैगंडा के बल पर आज कितने तितली और छछुन्दर शीशमहल में सोते हैं । जो एक दिन भूल से जेल गये वे जिन्दगी भर २००/- रुपया सरकारी वजीफा का हकदार बनकर मूँछ पर ताव देकर मौज उड़ा रहे हैं । कांग्रेस दफ्तरों में उनकी फोटो लगी टँगी है । कितने लोग एम०पी० और एम०एल०ए० बनकर चैन की बंशी बजा रहे हैं । देश के इतिहास में उनकी जीवनियाँ छपती है । मुझे बहुत दुख के साथ लिखना पड़ता है कि "माहुरी मयंक" ने भी उनके जीवन पर आज तक कोई प्रकाश नहीं डाला । जिस जाति और समाज के जगमगाते सितारे थे वह आसमान आज अँधेरा है । मुझे वे दिन अच्छी तरह याद है जब आर्य समाज के स्तम्भ श्री स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या एक पागल मुसलमान द्वारा दिल्ली में शुद्धि संगठन आन्दोलन के कारण हुई थी । तब उस समय दिल्ली के ख्वाजा हसन निजामी का तबलीग और तंजीम का तहरीक शिखर पर था और देश भर में तिरस्कृत हिन्दू अबलाएँ प्रबल रुप से विधर्मिणी बनायी जाती थी । तब उस समय गया में स्वर्गीय श्री हरिभगत ने एक विधवा आश्रम खोलकर असंख्य हिन्दू अबलाओं को विधर्मिणी होने से बचाया । असंख्य माहुरी समाज के अविवाहित नवयुवक जिन्हें जीवन पर्यन्त नारी गठबन्धन की गयी आशा न थी उनका गठबन्धन श्री हरिभगत की बदौलत हुआ और अपना सुखी वैवाहिक सामाजिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं । उनके कार्य क्षेत्र की पृष्ठभूमि को जिन्होंने देखा समझा है वे जानते हैं कि सार्वजनिक जीवन में एक प्रभावकारी आकर्षण बनकर वे काम करते रहे हैं । आज उन्हीं की तपस्या का फल है कि माहुरी समाज में जागृति की लहर आयी है ।

आज हमारे देश को जरुरत है ऐसे ही सर्वतेजोमय व्यक्तित्व की, जिनके अपने त्याग, तप, बल और बलिदान के अलावा मानवता की भावनाओं को ऊंचा उठाने की शक्ति मौजूद हो, और जो अपने संघर्षशील जीवन की तपश्चर्या से वर्ग विशेष की बपौती के गढ़ को धाराशायी करने और बंधन मुक्त जीवन के आदर्शों को अपनाने की भी प्रेरणा दे सकते हों ।

-माहुरी मयंक से स्व० हरीभगत जी के इस उदात्र चरित्र का

विशेष रुप से छानबीन करके उनके बारे में विशेष बातें जानने और प्रकाश में लाने का दायित्व महामण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष, मंत्री का था । यदि इन लोगों ने इसे अनदेखा कर दिया तो "माहुरी मयंक" के तत्कालीन संपादक (शिवप्रसाद लोहानी) का यह कर्तव्य था कि स्व० हरिभगत जी के बारे में विशेष बातें पता लगाकर 'मयंक' में प्रकाशित करते । निःसंदेह ये सभी इनको उपेक्षा के सहभागी हैं और इन्हें इसके लिए समाज माफ नहीं करेगा, धिक्कार है इन सभी लोगों को जिन्होंने अपने कर्तव्य का परिपालन नहीं किया ।

– इतिहास लेखक की टिप्पणी

बाबू दृगपाल लाल जमींदार हसुआ एवं उनके वंशज

हसुआ नरेश और गया के राजा से अभिहित बाबू दृगपाल का जन्म १८५३ ई० में मृत्यु १९०७ में हुआ । चूँकि ये बहुत भ्रमण करते थे और मुक्त हस्त से दान करते थे इनकी प्रसिद्धि देश के प्रायः सभी बड़े स्थानों में व्याप्त थी । फारसी और थोड़ी अंग्रेजी की शिक्षा मिली किन्तु स्वाध्याय के बाल पर ही ज्ञानार्जन किया था जिसकी धाक सर्वत्र जमी थी । जमींदारी का प्रबन्ध इतना बढ़िया था कि दूसरी जाति के जमींदार इनकी नकल करते थे । एक बार तत्कालीन अंग्रेज गवर्नर भी इनसे मिलने हसुआ आये थे । मगध माहुरी महामण्डल के संस्थापक बाबू भगवानदास जी नवदिया इनके जामाता थे । सुपुत्र बाबू राधाकान्त जी ने तीन वर्षों तक प्रारंभिक काल में मगध माहुरी महामण्डल की अध्यक्षता की थी । बाबू राधाकान्त जी के सुपुत्र बाबू श्रीकान्त लाल भी मगध माहुरी महामण्डल के अध्यक्ष रहे और "माहुरी मयंक" को दान देकर वर्षों तक संचालित किया । इस प्रकार इन सभी लोगों ने समाज की सेवा की ।

इनके पुरोहित थे मथुरा के चौबे पंडित गोवर्धन चौबे जो कि आशु कवि की योग्यता रखते थे । एक बार दृगपाल बाबू ने कहा – कहिये चौबे जी कैसा है । उन्होंने तत्काल यह कविता कही –

बाबू राधाकान्त लाल चतुर प्रवीन अति
पाँचों इल्म जानें पर सोहरत बंगाल में

कहत गोवर्धन चौबे जियो मेरे राजा बाबू
हसुआ की रोशनी है बाबू दृगपाल में ।

बाबू उमाचरण लाल तरवे, गिरिडीह-गया – इस पुस्तक के पूर्व पृष्ठों से यह परिज्ञात होगा कि बाबू उमाचरण लाल महामण्डल "माहुरी मयंक" से आजन्म जुड़े रहे । तीसरे नब्बे के दशक तक वे इन पर छाये रहे । माहुरी उत्थान की ज्वाला उनके अन्तस में जलती रहती थी । सर्वप्रथम एक शिक्षक थे । तद्नन्तर सी०एच०एल० के जनरल बने । उसके बाद गिरिडीह और एक अमेरीकन कम्पनी के प्रतिनिधि बने और फिर निज का अभ्रक निर्यात का व्यवसाय किया । गिरिडीह में रहकर सुप्त महामण्डल को जागृत किया । अंतिम दिनों में वे गया गये और यहाँ भी समाज के विभिन्न कार्यों से जुड़े रहे । इनका निधन परिपक्व आयु में हुआ ।

बाबू हरिहर प्रसाद लोहानी, गया :- १९२१ ई० से स्वातंत्र्य प्राप्ति काल तक इन्होंने महामण्डल के मंत्री, माहुरी मयंक के प्रकाशक आदि भिन्न-भिन्न पदों पर रहकर समाज की जो सेवा की उसे भूलना सामाजिक, कृतघ्नता होगी । ये मानवोचित गुणों से भरपूर थे और ये सहिष्णुता, मितव्ययता और सादगी की प्रतिमूर्ति । थियोसॉफिकल सोसायटी से ये सम्बद्ध थे और उनके सिद्धांतों में इनकी पूरी निष्ठा थी ।

बाबू हरिहर प्रसाद अठघरा, अकबरपुर-गया :- यों तो कार्यक्षेत्र में प्रविष्ट होने के बाद से ही इन्होंने 'माहुरी मयंक' में लिखना प्रारंभ कर दिया था किन्तु स्वातंत्र्योत्तर में जब 'माहुरी मयंक' का पुनर्प्रकाशन श्री शिव प्रसाद लोहानी के संपादन में प्रारंभ हुआ, प्रकाशक और व्यवस्थापक के रुप में इन्होंने जो सेवायें की और जिस भव्य रुप से मयंक का प्रकाशन किया उसका अहसास लोगों को तब तक होता रहेगा जब तक 'माहुरी मयंक' की प्रकाशन काल की प्रतियाँ पढ़ी जायेंगी । कहना असंगत नहीं होगा कि उस कालखण्ड में 'मयंक' का स्वरुप तत्कालीन अच्छी मासिक पत्रिकाओं के समकक्ष थी । देश की किसी भी समाज की पत्रिका से इसका कलेवर और पठनीय सामग्री इतनी अच्छी थी कि इसने उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली के पिछड़े बन्धुओं को इस जाति के गौरव

का अहसास करा दिया । स्व० अठघरा जी गार्हस्थिक झमेलों से मुक्त थे और वर्षों तक इन्होंने मयंक को ही सारा समय दिया । मरणोपरान्त 'माहुरी मयंक' के संपादक श्री शिव प्रसाद लोहानी ने हरिहर प्रसाद अठघरा स्मृति अंक निकालकर इनकी सेवाओं का विशद विवेचन किया है । करीब ७२ वर्ष की आयु में इनका निधन हुआ ।

बाबू श्यामलाल कुटरियार, अकबरपुर-पटना :-

अपनी कर्मठता के बल पर ओवरसीयर से डिस्ट्रीक्ट इंजीनियर के पद पर पहुँचने वाले कुटरियार जी की रचना चौथे दशक से लेकर अस्सी के दशक तक "माहुरी मयंक" के पृष्ठों में पढ़ी जा सकती है । ये बहुआयामी व्यक्तित्व के निस्वार्थ समाजसेवी थे । उद्योग के विस्तृत स्वरुप के लेखों को मयंक में छपवाकर इन्होंने अनेकों युवकों को उद्योग में लगाने की प्रेरणा प्रदान की । ये महामण्डल के उपाध्यक्ष पद पर भी रह चुके थे । करीब अस्सी वर्ष की अवस्था में १९९१ में इनका निधन हो गया ।

बाबू इन्द्रजीत लाल कुटरियार, अकबरपुर-गया :-'माहुरी मयंक' के गंभीर पाठकों को यह अहसास होगा कि करीब १९३० से लेकर १९६० के आसपास तक जीवन लीला समाप्त होने तक माहुरी जाति की सेवा में लगे रहे । ये डाक विभाग में सुपरवाइजर थे । जो भी काम इन्हें सौंपा गया, जो भी काम इन्होंने करना पसंद किया निष्ठा और पूरी ईमानदारी से किया । छठे दशक में जब महामण्डल मयंक का पुनर्गठन हुआ तो इन्होंने गाँव-गाँव में घूमकर मंडलों को जीवित और मयंक के ग्राहक बनाने का प्रशंसनीय काम किया । मूत्र रोग से पीड़ित पेशाब की रबर की थैली पॉकेट में रखे हुए जिस रुप में ये अकेले भ्रमण करते हुए समाज को जागृत किया उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी होगी । मृदुभाषी मितव्ययी सादा जीवन जीने वाले समाजसेवी थे ।

डॉ० राम लखन राम, गया-भागलपुर-पटना :- भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर डॉ० रामलखन राम एम०एस०सी०, पी०एच०डी० वर्षों टी०एन०बी० कॉलेज भागलपुर में व्याख्याता, रीडर, प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे ।

बेगुसराय, कटिहार और मुँगेर में इन्होंने वर्षों प्रिन्सपल का पद भी सुशोभित किया । अनेकानेक स्वजातीय छात्रों को भिन्न-भिन्न तरीके से सहायता की ।

बाबू जनक देव आर्य, बिहारशरीफ-झुमरीतिलैया :- मुलतः ये बिहारशरीफ के निवासी थे और पीछे जाकर जीविकोपार्जन की अच्छी स्थिति निर्माण के लिए झुमरीतिलैया चले गये । जब से इन्होंने सामाजिक जीवन में प्रवेश किया करीब १९२७ ई० से ही "माहुरी मयंक" में लिखना प्रारम्भ किया । चूँकि ये पक्के समाज सुधारक थे, पक्ष-विवाद के घेरे में रहे । "माहुरी मयंक" में छपे अनेकानेक रचनायें इसके प्रमाण है । झुमरीतिलैया में जो महामण्डल और 'मयंक पुनर्जीवित' करने की योजना १९५५ ई० में बनी उसके प्रेरणा स्त्रोत यही थे । मयंक पुनर्प्रकाशन काल में इन्होंने देवानन्द कर्वे के नाम से देवानन्द करवे की चिट्ठी व्यंग्यात्मक लहजे में लिखा जो चर्चित हुए थे । ६० वर्ष की आयु में इनका निधन हुआ ।

बाबू किशोरी लाल बरहपुरिया, सिलाव :- ये प्रतिभावान संकीर्तन गायक और धार्मिक पुरुष थे । सीतापुर उत्तरप्रदेश के अ०भा० संकीर्तन सम्मेलन जो चालीस के दशक में सम्पन्न हुआ धूम मचा दी और दर्जनों स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त किया । जीवन के अन्तिम समय में ये उत्तरप्रदेश में निवसित रहे और १०८ स्वामी नारदानन्द के सानिध्य में आध्यात्मिक जीवन जिया वहीं ये काल कवलित हुए ।

गंगा प्रसाद अठघरा, सिलाव :- श्री अठघरा चौथे दशक में जाति हित के कार्यों में सक्रिय भागीदारी करते रहे थे । राजगृह में इसी दशक में सम्पन्न हुए अधिवेशन में ये स्वागताध्यक्ष भी थे । सिलाव घराने का यथा स्थितिवाद के ये पूर्ण समर्थक थे । १९९५ के मई माह में यह स्वर्ग सिधार गये ।

श्री महावीर राम सेठ, दीपनगर-बिहारशरीफ :- महावीर बाबू अपने बुढ़ापे की परवाह न करते हुए विपरीत स्वास्थ्य की स्थिति में जातीय सभाओं, गोष्ठियों में निश्चित रुप से भाग लेते रहे । युवा और प्रौढ़ावस्था

में तो किसी भी सामाजिक जिम्मेदारी की निर्वाह ये सफलतापूर्वक करते थे । पुरातन ढोंगी पंथी के ये कट्टर विरोधी हैं । ये करीब ७५ वर्ष की आयु के हैं । ये माहुरी समाज के महान सेवक हैं ।

बाबू कृष्णा प्रसाद अठघरा, बिहारशरीफ :- स्व० कृष्णा बाबू का समाज प्रेम सराहनीय था । महाउरु वैश्य संघ का दिल्ली, ग्वालियर, आगरा, हरिद्वार आदि के विशिष्ट व्यक्तियों का भ्रमण जब इस प्रदेश में हुआ तो बिहारशरीफ में अपने आवास में इन्होंने जो व्यवस्था की थी उसकी स्मृति उन लोगों को आज भी ताजी है । करीब ६२ वर्ष की आयु में पिछले साल १९९४ में इनका असामयिक निधन हो गया ।

बाबू योगेश्वर प्रसाद नवदिया, एम०एस०सी०, सिलाव, गया -बोकारो :- भौतिक शास्त्र में (एम०एस०सी०) स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करनेवाले संभवतः ये पहले व्यक्ति हैं । सूझबुझ, विद्वता और चिन्तन के क्षेत्र में अप्रतिम होने के बावजूद सिलाव घराने का यथा स्थिति बाद ने इनका पिण्ड नहीं छोड़ा । महामण्डल माहुर मयंक के पुनुरुत्थान काल में इनका महामण्डल का मंत्री तत्पश्चात् अध्यक्ष बनना एक मायने रखता है । इनकी मान्यता रहीं कि शिक्षा ही वह अमृत है जिसे पान करके सभी को उन्नत बनाया जा सकता है । तकनीकी शिक्षा को समाज में स्थापित करने के लिए इन्होंने माहुरी शिक्षा न्यास की स्थापना में सक्रिय सहयोग प्रदान किया । इन सभी संस्थाओं के सँविधान बनाकर उन्हें जनता हित पद्धति से कार्य करने की पद्धति निर्मित की । निधन वर्ष १९९६ ई० ।

के०एल०गुप्ता, गया :- बाबू गोपी चन्द लाल के संपादन काल में "माहुरी मयंक" के सह संपादक रहे । यौवन की दहलीज पर पहुँचकर इन्होंने अपनी ऊर्जा धन अर्जन में लगायी और लेखन कार्य से अधिक सफलता प्राप्त की । पुनः वृद्धावस्था में इन्हें साहित्य से लगाव हुआ जिसका सुफल "माहुरी मंडल नाटक" के पुनर्प्रकाशन के रुप में सामने आया । श्री शिव प्रसाद लोहानी के साथ इन्होंने विचार किया था कि इसके बाद वे सामाजिक साहित्य के अन्य पुस्तकों के प्रकाशन में हाथ बँटायेंगे किन्तु काल के क्रूर पंजों ने इन्हें इसी समय दबोच लिया ।

पं० छेदी लाल झा :- यद्यपि पण्डित छेदी लाल जी ग्राम वंशीपुर पो०

पटियाडीह भागलपुर जिला के निवासी थे, किन्तु तीन दशक तक लगातार सिलाव और बिहारशरीफ विद्यालयों में कार्यरत रहे । सिलाव में प्रसिद्ध समाज सेवी और मगध माहुरी मण्डल के संस्थापक बाबू भगवान दास नवदिया के सान्निध्य में रहे । माहुरी जाति के सभी सामाजिक नेताओं, कार्यकर्ताओं माहुरी मयंक के संपादकों से इनका प्रगाढ़ संबंध रहा । सच तो यह है कि स्वर्गीय झा जी को माहुरी समाज की जितनी जानकारी थी उतनी बहुत कम लोगों को थी । माहुरी मयंक का उन्होंने सक्रिय सहयोग प्रदान किया था ।

बाबू काली प्रसाद चौधरी मीत :- "मीत" जी बहुत अच्छे कवि थे । गोपी चन्द बड़गवे जी और हिसुआ के विख्यात माहुरी जमींदारों के संपर्क में रहने के कारण ये माहुरी जाति के शुभ चिन्तक बन गये । इनकी अनेकों रचनायें बड़गवे जी द्वारा संपादित माहुरी मयंक में छपी थीं । मीत जी के सुपुत्र सिद्धेश्वर प्रसाद चौधरी 'मंजू' गया के गया प्रिन्टर्स में नियुक्त थे । श्री शिव प्रसाद लोहानी द्वारा संपादित माहुरी मयंक वहीं से छपता था और मंजू जी प्रूफ रीडर के रुप में माहुरी मयंक की भाषा और प्रेस की बुराइयों को ठीक कर मयंक को सुवाच्य बना देते थे ।

आचार्य पण्डित सुदामा दत्त शर्मा :- बैकुण्ठपुर निवासी आचार्य पं० सुदामादत्त शर्मा साहित्याचार्य का माहुरी जाति से प्रगाढ़ संबंध था । पंडा वंश का होने के कारण बहुत से माहुरी परिवार इनके यजमान भी थे । माहुरियों की कई सभाओं में इन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाकर लोगों को सामयिक उद्बोधन किया । "माहुरी मयंक" में इनकी रचनायें अक्सर छपती थी ।

बाबू गया राम भदानी, पचम्बा :- माहुरी भूषक नामक पुस्तक के रचयिता बाबू गया राम भदानी इण्ट्रेन्स पास थे । गिरिडीह उच्च विद्यालय में कुछ समय अध्यापन कार्य किया । पचम्बा में थोक गल्ला के व्यवसायी थे ; अपना व्यवसाय सरिया में भी फैलाया । इसी पुस्तक में अन्यत्र माहुरी भूषण की विशद चर्चा है ।

प्रस्तुति : सत्य नारायण तरवे

गोपाल राम तरवे, बिहारशरीफ :- स० १९३५ ई० में जन्मे देश, जाति, समाज की सेवा में तत्पर, विद्या और विद्वानों का सम्मान देने में अग्रणी थे । बिहारशरीफ आर्य समाज के प्रथम प्रधान रहे । ख्याति प्राप्त समाज सेवी जनक देव आर्य और भीष्मदेव आर्य के पिता थे ।

प्रस्तुति : **श्री प्रसाद लोहानी, बरबिघा**

प्रीतम राम जी, चन्दौरी :- १९८३ ई० में मृत प्रीतम राज जी ने अभ्रक व्यवसाय में अच्छी उन्नति की, तदर्थ विदेश गये । हजारीबाग महामण्डल के वर्षों महामंत्री रहे । जय माईका सप्लाई फर्म खोला ।

चुल्हन राम जी, चन्दौरी :- ८३ वर्ष की आयु में १९६८ ई० में निधन । कांग्रेस के जिला सदस्य, स्वतंत्रता सेनानी, जेल गये । बरमरिया हाई स्कूल स्थापित किया । १९५८ के चन्दौरी महामण्डल अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष रहे ।

प्रस्तुति : **शिव प्रकाश राम एकघरा**

ओम प्रकाश राम सेठ, गिरिडीह :- समाज सेवा में गहरी रुचि के कारण महामण्डल के अन्तरंग समिति के सदस्य । कविवर रघुनन्दन प्रसाद आश्रित के ज्येष्ठ पुत्र । प्रसिद्ध दवा विक्रेता । गिरिडीह जिला केमिस्ट एसोसिएसन के मंत्री, अब प्रेसिडेन्ट । सभी प्रकार के सामाजिक समस्याओं को हल करने में तत्पर रहते हैं । १९९७ के गिरिडीह माहुरी वैश्य महामण्डल अधिवेशन के स्वगताध्यक्ष ।

प्रस्तुति : **बनमाली राम**

बाबू रघूनन्दन राम एम०एल०ए०, पंडरी गिरिडीह :- ये समाज के पहले विधायक थे । कांग्रेस पार्टी से टिकट पर १९६२ एवं १९६७ में बहुमत से चुनाव जीते थे । महामण्डल के अध्यक्ष, नगरपालिका आयुक्त एवं जन परिषद के अध्यक्ष भी रहे । मल्हरवारी और महेशलुण्डी में जल आपूर्ति की सुचारु व्यवस्था कराने में ये सफल रहे थे । उनका असामयिक निधन पिछले दशक में करीब ५५ वर्ष की अवस्था में ही हो गया ।

प्रस्तुति : **ओम प्रकाश सेठ गिरिडीह**

कवि बाबू रघुनन्दन प्रसाद सेठ आश्रित, शेखूपुर-गिरिडीह :- १९११ ई० में जन्में २५ अगस्त ७६ को काल कलवित हुए । आप खड़ी बोली के परम्परावादी कवि थे । इनकी रचनायें अन्य स्थानीय प्रत्र-पत्रिकाओं के अलावे 'माहुरी मयंक' में बराबर छपती थी । इनकी पत्नी श्रीमती चन्द्रावती देवी के नाम से गिरिडीह के अरघाघाट रोड में एक मंदिर है ।

प्रस्तुति : **ओम प्रकाश सेठ**

बाबू दृगपाल राम सेठ, धुग्जी :- १८९४ ई० में जन्मे और १९५९ में स्वर्गवास । मंडल के अध्यक्ष, जिला बोर्ड के सदस्य, कुशल वैद्य, स्वतंत्रता संग्राम सिपाही, हनुमान भक्त, जमींदार, काश्तकार, हजारीबाग महामण्डल के पुनर्जागरण के सक्रिय कार्यकर्ता टेकनारायण बाबू के सहयोगी थे ।

बाबू गोपाल 'आर्य-गोप', वारसलीगंज :- सदी के तीसरे चौथे दशक में 'मयंक' में छपी रचनाओं का व्यावहारिक स्वरुप तब समाज के सामने आया जब इन्होंने गले में 'मयंक' की रसीद आदि से भरे झोले को लटकाये घूमते नजर आये । गले का यह लटकाव किसी को गार्हस्थिक जीवन यौवन का फांसी का फंदा भले नजर आया हो किन्तु यह समाज के लिए तो जनता का गजरा पुष्पहार लगा । ये वर्षों 'माहुरी मयंक' के प्रकाशक रहे और अपने कार्याकाल में इन्होंने गाँव-गाँव, नगर-महानगर में घूमकर 'मयंक' के ग्राहम विशेष ग्राहक और आजीवन ग्राहक बनाये । वर्षों ये समाज के भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों में संलग्न रहे । कुलभूषण प्रभुदयाल के संबंधी थे और उन्हीं के सान्निध्य में बचपन में रहकर जाति-सेवा की प्रेरणा प्राप्त की । कई सामाजिक छन्दोबद्ध छोटी पुस्तिकायें भी छपवायी थी जो प्राप्त नहीं हैं । ये कवि, कहानीकार और लेखक थे । ये मगही में तब लिखते थे जब कि इसे लोग अच्छा नहीं समझते थे ।

बाबू निखिल चन्द्र गुप्ता, झरिया :- लायन्स क्लब और अन्य सामाजिक कार्यों में जुड़े श्री निखिल चन्द्र जी माहुरी जाति की भिन्न-भिन्न स्वरुपों में इन्होंने सेवा की है । बैठकों सभाओं में ये समाज हित के मुद्दे उठाते रहे हैं । माहुरी शिक्षा न्यास के संगठन और संचालन में इनका योग महत्वपूर्ण रहा है । मृत्यु शैया पर महीनों पड़े रहने के पूर्व तक ये माहुरी

हित से जुड़े सभी बैठकों, समारोहों में जाते रहे हैं । १९९५ में निधन ।

श्रीमती हीरा देवी गुप्ता, झरिया :- इसलिए नहीं कि ये समाज सेवी निखिल बाबू की पत्नी थीं, वरन् इसलिए कि सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती थीं । रंगमंच, लायन्स क्लब, राइफल क्लब के अलावे जातीय महिलाओं को संगठित करने में ये अद्वितीय थीं । तिलैया के अधिवेशन में ये महिला समाज (माहुरी) की अध्यक्षा बनी थीं । निधन १९९० ई० ।

श्री राम दास गुप्ता, झरिया :-जातीय संगठन में इनकी भागीदारी विशेष महत्व रखती है । मगध महामण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता और मयंक के अध्यक्ष के रुप में अपनी सेवायें समाज को दी । आगरा के प्रथम महाउरु वैश्य सम्मेलन जो कि १९६४ ई० में हुआ ये भागीदार थे ।

श्री ब्रजनन्दन प्रसाद, शेखपुरा :- छोटे से ग्राम के निवासी होने के बावजूद भी ये बड़े प्रगतिशील विचार के थे । सभी सामाजिक बैठकों में ये निश्चित रुप से आते थे । विधवा विवाह के कट्टर समर्थक थे । शिक्षा प्रेमी इस रूप में थे कि भ्राता पुत्र को प्रोफेसर, डॉक्टर, इंजीनियर बनायें । इनकी मृत्यु ६२ वर्ष की आयु में १९९४ ई० में हे गयी ।

माहुरी वैश्य मण्डल एवं माहुरी युवक कल्याण समिति

केन्दुआ, करकेन्द (धनबाद)

धनबाद जिले में कोयलांचल क्षेत्र केन्दुआ, करकेन्द्र, बड़ी जगह नहीं है किन्तु व्यावसायिक एवं कोयला का महत्वपूर्ण प्रक्षेत्र होने के कारण यहाँ आर्थिक प्रगति के पर्याप्त अवसर है । यहाँ माहुरी युवक कल्याण समिति एक जीवित और सक्रिय संस्था है । जिसके पदाधिकारीगण कर्मठ और समाज सेवा की भावना से भरे पूरे हैं । इनका ज्वलंत प्रमाण दो वर्षों से वार्षिक रुप से प्रकाशित हो रहा है । माँ मथुरासिनी संस्करण स्मारिका है । द्वितीय संस्करण १९९४ ई० में छपा । ऐसा अच्छा

और उपयोगी प्रकाशन के लिए इसके योग्य संपादक श्री युगल किशोर गुप्ता प्रशंसा के पात्र हैं । परामर्श मण्डल में सर्वश्री अरुण कुमार (प्रभाकर) कार्मिक पदाधिकारी बी०सी०सी०एल० श्याम सुन्दर गुप्ता एवं सुरेन्द्र कुमार गुप्ता ही प्रकाशक समिति के सदस्य है । इसकी गुणवत्ता के कारण ही संभवत: दैनिक "आवाज" (धनबाद) के संपादक श्री ब्रह्मदेव सिंह शर्मा बिहार सरकार पूर्व मंत्री श्री ओमप्रकाश लाल ख्याति प्राप्त समाज सेवी एवं विद्वान, डॉ० रामेश्वर दयाल कर्मठ एवं निस्वार्थ समाज सेवी श्री बनमाली राम आदि महानुभावों की शुभकामनायें स्मारिका की प्रशंसा में छपे हैं । इसके संपादक और नि:स्वार्थ समाज सेवी श्री युगल कुमार गुप्ता का व्यावहारिक सहयोग और समाज सेवा की लगन प्रशंसनीय है ।

प्रो० डॉ० देवेन्द्र प्रसाद, गया :- गया माहुरी मण्डल के निर्वाचित अध्यक्ष देवेन्द्र बाबू सामाजिक कार्यों में पूरी दिलचस्पी लेते हैं । ये एक सुयोग्य अध्यापक हैं । अभी ये गया माहुरी मण्डल के अध्यक्ष हैं । इस मण्डल को गतिशील बनाने में जुटे हैं ।

बाबू राधो राम जीभदानी, बिहारशरीफ :- महामण्डल के इतिहास के तीसरे दशक में मन्त्री पद पर बिहारशरीफ के बाबू राधो राम जीभदानी ने कस्बों, नगरों, गाँवों में माहुरी संगठन का जो बिगुल बजाया उसकी ध्वनि आज भी उन लोगों को उसे सुनने को बेताब बता रही है, जिन्हें उसे सुनने का सौभाग्य बचपन में हुआ । मगही भाषा में इनके भाषण इतने जोरदार होते थे कि क्या कहना । लंबी जीवन आयु प्राप्त कर ये करीब ३०-३५ वर्ष पूर्व स्वर्ग सिधार गये ।

बाबू विजय चन्द्र भदानी, गया :- सत्तर के दशक में माहुरी महामण्डल का इतिहास विजय बाबू के बिना अधूरा कहा जाएगा । ये महामण्डल के मंत्री ही नहीं थे वरन् इनके अन्तस में माहुरी उत्थान की वह ज्वाला थी जो अहर्निशि जलती रहती थी । जिन लोगों को इनकी जीवन चर्चा को निकट से देखने का सौभाग्य मिला है वे जानते हैं कि किस रुप में उन वर्षों में जातीय संगठन को जीवंत बनाने की उनकी ललक थी । मंत्री

के नाते इन्होंने महामण्डल के निम्न इकाई मण्डलों में जितना भ्रमण करके जाति संगठन का शंखनाद किया वह भूतो न भविष्यति वाली बात कही जायगी । किसी मण्डल की समस्या को सुलझाने के लिए तुरंत चले जाते थे । हितैषियों को रोता बिलखता छोड़कर करीब पन्द्रह वर्ष पूर्व वे स्वर्ग सिधार गये । वे कुछ अस्वस्थ्य चल रहे थे पर बिगड़े स्वास्थ्य की परवाह न करके वे भीषण गर्मी के दिनों में संगठन के कार्य से परैया गये और उसके बाद ही उनकी लीला समाप्त हुई ।

प्रो० डॉ० केदार राम गुप्ता, एम०कॉम०, पी०एच०डी० साहित्य रत्न, बरबिघा-भागलपुर :- संभवतः समाज के पहिले कॉमर्स के प्रोफेसर हैं जो कि दशकों तक मारवाड़ी कॉलेज हिलसा, भागलपुर में कार्यरत रहे । उसी कॉलेज में प्रिंसिपल रहे और वर्षों श्री चन्द्र उदासीन कॉलेज में सफल प्रिंसिपल पद पर आसीन रहे । ये दो सत्र के लिए मगध माहुरी महामण्डल के अध्यक्ष रहे और निरंतर माहुरी मयंक में छपते रहे ।

ये बहुआयामी व्यक्ति थे । राजनीति, व्यवसाय, समाज शास्त्र के ऊपर गहन अध्ययन था । हिन्दी अंग्रेजी के कवि, कथाकार और सुलेखक थे । भागलपुर के सांस्कृतिक साहित्यिक जीवन के मूर्तिमान रत्न थे । मृत्यु के कुछ ही दिन पूर्व इनकी अनुपस्थिति में इनकी कविता जो पढ़ी गयी वह बड़ी मार्मिक और तलस्पर्शी थी, हिन्दी अंग्रेजी में इनकी कई काव्य रचनायें प्रकाशित हैं । केरागु उपनाम से इन्होंने सैंकड़ों कुण्डलियाँ लिखीं जो बड़ी प्रशंसित हुईं । कई कुंडलियाँ माहुरी मयंक में छपी भी थीं । ये १९९३ में स्वर्ग सिधार गये ।

श्रीमती वीणा रानी गुप्त, एम०ए० भागलपुर :- ये डॉ० केदार राम की सहधर्मिणी थी और घर-गृहस्थी, बाल-बच्चों की देखभाल करती हुई मैट्रिक से एम०ए० तक स्वतंत्र रुप से पढ़कर परीक्षायें पास की । 'माहुरी मयंक' में बराबर लिखती थीं । समाज शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि को प्राप्त करने के लिए सैद्धान्तिक रुप से समाज शास्त्रीय बातों को प्रत्यक्ष जीवन में उतरने का सतत प्रयास किया करती थी । इनका देहावसान १९९५ में हो गया ।

बाबू गोपी चन्द लाल बड़गवे, हिसुआ :- माहुरी समाज के लिए "माहुरी मयंक" के संपादक के रुप में इन्होंने जो सेवा की वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है । पूर्व के पृष्ठों में इसकी विशद चर्चा की गयी है । कवि, चिन्तक, नाटककार के रुप में ये सदा याद किये जायेंगे । चाबुक, प्रेमानन्द प्रवाह, कीर्तनकला और सैंकड़ों स्फूट कवितायें हैं जिनके कारण ये साहित्य जगत में सदा याद किये जायेंगे । अपनी सारी ऊर्जा और जीवन इन्होंने समाज और साहित्य के लिए अर्पित कर दिया । साहित्य और लक्ष्मी से वैर का ये ज्वलंत उदाहरण थे । अपनी सेवाओं और साहित्य के भिन्न-भिन्न विधाओं के रचनाकार के कारण ये अमर हैं । ये मगही लोक भाषा के पहिले नाटककार हैं ।

श्री दुर्गा शरण लाल वाणप्रस्थी, हिसुआ :- मूलतः ये आध्यात्मिक धार्मिक प्रवृत्ति के निःस्वार्थ साधक थे । साधना करते हुए ये माहुरी समाज से जुड़े रहे और एक बार प्रतिनिधि सभा द्वारा माहुरी मण्डल के अध्यक्ष भी चुने गये ।

बाबू राम प्रसाद विशिमल :- रजौली माहुरी मण्डल के श्री विशिमल जी महामण्डल में सदैव उपस्थित होते थे । स्थानीय संस्थाओं से ये सदैव जुड़े रहे ।

बाबू रघुनन्दन राम वेलागंज :- वृद्धा अवस्था में लाठी टेककर भी चलकर महामण्डल एवं अन्य बैठकों में आना उनके हृदय में समाज सेवा की भावना को परिलक्षित करता है । बैठकों के विचार-विमर्श में इनकी सक्रिय भागीदारी सदैव बनी रही । आप जाति सेवा की उत्कृष्ट भावना से परिपूरित थे ।

बाबू भीष्म देव आर्य तरवे, बिहारशरीफ :- आर्य समाज में सक्रिय रुप से जुड़े रहे । इसके अलावा जाति हित के कार्यों में विचार एवं अन्य रुप से सहयोग करते रहे । इनका निधन ८० वर्ष की आयु में हो गया ।

बाबू कामता प्रसाद अठघरा अधिवक्ता, सिलाव :- बिहारशरीफ "माहुरी मयंक" के सहायक संपादक नालन्दा जिला माहुरी मण्डल के अध्यक्ष तो थे ही । किसी तरह की जाति सभा एवं कार्य में अपने को

तत्पर रखते थे । बिगड़े स्वास्थ्य के बिना परवाह करते हुए जहाँ जरुरत होती थी, चले जाते थे । १९९५ ई० में निधन । सुधरे अधिवक्ता थे ।

श्री मथुरा प्रसाद :- बाबू मथुरा प्रसाद अपने जमाने के योग्य बी०ए० थे । इन्होंने संपूर्ण जीवन सी०एच०लि० में बिताया । इन्होंने झुमरीतिलैया मण्डल के मंत्री पद को वर्षों संभाला ।

बाबू काशी राम कपसिमे, झुमरीतिलैया :- माहुरी महामण्डल और माहुरी मयंक के पुनर्जागरण में कोडरमा के जिन लोगों का हाथ था उनमें यह भी एक थे । जब तक बचे जातीय सेवा में जुटे रहे । ये कोडरमा नगरपालिका के अध्यक्ष भी रहे । कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता और स्थानीय नेता थे ।

बाबू भगवती प्रसाद लोहानी, गया :- जब तक जीवित रहे माहुरी हित की संस्थाओं और माहुरी मयंक से जुड़े रहे । मानसिक एवं शारीरिक रुप से संस्था के हित में कार्य करते रहे ।

बाबू बन्धनराम भदानी, झुमरीतिलैया :- सी०एच०लि० के मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में यदा कदा जाति हित में अनेकों कार्य सम्पन्न किये हैं, किन्तु इनकी व्यक्तिगत सामाजिक सेवा उल्लेखनीय रही है । माहुरी वैश्य महामण्डल भरकट्ठा में मनोनीत सभापति रहे तथा इनके कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य हुए ।

बाबू झरी राम भदानी :- औद्योगिक जगत में इनकी जितनी ख्याति बम्बई में हुई उतनी ख्याति समाज के किसी भी व्यक्ति की आज तक नहीं हुई । ये सी०एच०लि० के प्रथम स्नातक हुए । इन्होंने ही समाज में स्त्री शिक्षा के लिए गिरिडीह में एक बस पूरे खर्चे के साथ समाज को प्रदान किया जिससे गिरिडीह, पचम्बा, करहरवारी, महेशलुण्डी आदि की स्वजातीय लड़कियाँ गिरिडीह में शिक्षा प्राप्त करती थीं ।

बाबू फकीर चन्द राम, बोकारो :- इनके असामयिक निधन से

बोकारो माहुरी संघ तो प्रभावित हुआ ही साथ ही समाज की शीर्ष संस्थायें भी प्रभावित हुईं । ये सजग विचारक सूझबूझ वाले व्यक्ति थे जिससे समाज के लोग लाभान्वित होते थे । इनका सहयोग दोनों महामण्डल शिरोमणि तथा संघ को तो मिला ही है साथ ही मथुरासिनी महोत्सव के प्रथम संस्थापक आप ही रहे हैं । अनियत कालीन, चेतना पत्रिका द्वारा विवाह योग्य लड़कों की सूची निकालने का क्रम इन्होंने ही प्रारम्भ किया जिससे अनेकों स्वजातीय व्यक्तियों ने लाभ उठाया ।

बाबू राजेश्वर प्रसाद, गया :- माहुरी मयंक से इनका लगाव अप्रतिम था । रात-दिन पत्रिका के प्रकाशन विवरण एवं अर्थ व्यवस्था की चिन्ता लगी रहती थी । वर्षों पत्रिका के मंत्री पद पर रहे । विभिन्न सूत्रों को जोड़कर 'मयंक' के प्रकाशन में सचेष्ट रहते थे । सिद्धिदात्री मथुरासिनी मंदिर, योग प्राणायाम, सात्विक आहार आदि के प्रशिक्षण की भावना इनके मानस पटल पर कौंधती रहती थी । ये सिंचाई विभाग के एस०डी०ओ० पद पर आसीन थे । इनके असामयिक निधन से लोग मर्माहित हो गये थे ।

रानीगंज के समाजसेवी

बाबू गुरुप्रसाद राम, बाबू कैलाश राम और लक्ष्मी नारायणजी रानीगंज माहुरी मण्डल के प्राण थे । उन्होंने समाज की अमिट सेवा की जिसे भुलाया नहीं जा सकता । ये दोनों महामण्डल की कोई भी बैठक में भाग लेने से नहीं चुकते थे । श्री लक्ष्मी नारायण जी रानीगंज जाति हित में सदैव तत्पर रहते हैं ।

बाबू हरिहर प्रसाद भदानी :- "माहुरी मयंक" के पुनर्प्रकाशन के ये प्रथम अध्यक्ष हुए और जीवन पर्यन्त इस पद पर बने रहे । प्रकाशन के लिए प्रारम्भिक दिनों में जो भी कठिनाइयाँ आयीं उनमें ये अपनी सूझबूझ तथा धन आदि से सहयोग करते रहे । ये सी०एच०लि० के मैनेजिंग डायरेक्टर जीवन के अन्त तक रहे ।

बाबू श्री कान्त लाल, हिसुआ (गया) :- ४० के दशक से बन्द पड़े माहुरी मयंक को पुनर्जीवित करने में आपका सक्रिय सहयोग रहा । इनके

पूज्य पिता बाबू राधाकान्त लाल जी माहुरी महामण्डल के संस्थापकों में से एक थे। विरासत में इन्होंने भी जाति सेवा की भावना ग्रहण की।

बाबू नवल किशोर कन्धवे :- माहुरी मयंक से इनका जुड़ाव लेखक, सहायक संपादक और संपादक के रुप में रहा। साहित्य ज्योतिष और प्रकाशन कार्य में संलग्न रहे। ये बिजली विभाग सेवा में कार्यरत थे। इनकी असमय मृत्यु १९९४ में हुई जिससे समाज की अपूरणीय क्षति हुई। दुर्गा सप्तशति का हिन्दी अनुवाद छपा कर इन्होंने बड़ा काम किया।

नारायण राम, बरहपुरिया, रजौली-झुमरीतिलैया :- माहुरी मण्डल के पुनर्जागरण एवं माहुरी मयंक के पुनर्प्रकाशन के समय से जीवन के अन्तिम सम्‍य तक इन दोनों से जुड़े रहे। माहुरी मयंक के वर्षों अध्यक्ष भी रहे। जातीय सभाओं एवं बैठकों में भाग लेकर लोगों को सदैव प्रेरित करते रहे। ये मूल निवासी रजौली के थे, तथा विश्व विख्यात अभ्रक कम्पनी सी०एच०लि० के फैक्टरी मैनेजर पद पर कार्यरत रहे।

बाबू पुनीचन्द राम, अधिवक्ता :- माहुरी वैश्य महामण्डल से ये जीवन पर्यन्त जुड़े रहे। कभी मंत्री तो कभी कोषाध्यक्ष पदों पर रहकर सेवा देते रहे। महामण्डल के सुषुप्ता अवस्था में भी ये आवश्यकतानुसार जाति हित के लिए काम करते रहे। इनमें जाति सेवा की भावना कूट-कूटकर भरी थी।

बाबू दामोदर प्रसाद भदानी, झुमरीतिलैया :- आप माहुरी वैश्य महामण्डल के अध्यक्ष के रुप में अपनी सेवायें समाज को दी थी। आवश्यकतानुसार वैसे भी समाज को सदैव सेवा देते रहे। ये इण्डिया माईका एण्ड माईकानाईटा के मैनेजिंग डायरेक्टर जीवन पर्यन्त रहे।

बाबू देवकीनन्दन राम, गिरिडीह (पण्डरी निवासी) :- ये आजन्म गाण्डेय प्रखण्ड के प्रमुख रहे, माहुरी वैश्य महामण्डल के कई सत्रों में महामंत्री रहे और समाज सेवा में लगे रहे इनका आकस्मिक निधन १९९५ में हो गया।

स्व० उमेश प्रसाद अधिवक्ता (राजधनवार निवासी) :-
गिरिडीह महामण्डल के महामंत्री के रुप में इन्होंने समाज की बड़ी सेवा की। ये एक अच्छे वकील एवं व्यावहारिक जीव थे, किन्तु इनकी हत्या ईर्ष्यावश कुछ अवांछनीय तत्वों के द्वारा कर दी गयी जो कि इनकी उन्नति से ईर्ष्या करते थे।

बिहारशरीफ

इस शहर में अनेक ऐसे बन्धु हैं जो कि सामाजिक कार्य हेतु दान और समय देने को तत्पर रहते हैं। इनमें श्री दामोदर प्रसाद भदानी, श्री विजय कुमार नवदिया, श्री अर्जुन राम, श्री महेश नवदिया, श्री भोला प्रसाद चरण पहाड़ी, श्री पारसनाथ गुप्ता, कृष्णा प्रसाद अठघरा, श्री प्रेम कुमार बरहपुरिया, श्री सत्यदेव सरदार, श्री कृष्णा प्रसाद, श्री महावीर राम सेठ मुख्यतया प्रशंसा के पात्र हैं।

सोहसराय

यहाँ के श्री कमलेश्वरी प्रसाद, श्री सच्चिदानंद नवदिया, श्री ओंकार भदानी, श्री भगवान दास, श्री चन्द्रशेखर प्रसाद, श्री अवधेश कुमार उन्मन आदि उल्लेखनीय हैं।

श्री ध्रुवनारायण भदानी, झुमरीतिलैया :- ये लगातार तीन वर्षों तक माहुरी वैश्य महामण्डल के मनोनीत अध्यक्ष पद पर रहकर समाज सेवा किये हैं। ये इण्डिया माईका एण्ड माईकानाईट इण्डस्ट्रीज के डायरेक्टर एवं सी०एच०लि० के भागीदार हैं। ये अच्छे विचारक एवं विद्या-प्रेमी हैं। जाति हित की भावना इनमें पूरी तरह है।

श्री रामचन्द्र सेठ (झुमरीतिलैया) :- ये समाज सेवी व्यक्ति ऐसे हैं जो समाज सेवा के प्रत्येक कार्य में सदैव सक्रिय देखे जाते हैं । स्थानीय मण्डल के वर्षों से मंत्री हैं । इन्होंने माहुरी धर्मशाला के निर्माण में जी तोड़ परिश्रम किया है और आज भी कर रहे हैं । झुमरीतिलैया का कोई भी सामाजिक कार्य इनके बिना अधूरा कहा जायगा ।

बाबू पूर्णानन्द तरवे :- ये एक समर्पित समाज सेवी हैं । इन्होंने अभ्रक व्यवसाय से संबंधित कार्यों के लिए विदेश के कई स्थानों में परिभ्रमण किया है । कांग्रेस, भाजपा में सक्रिय स्थानीय नेतृत्व प्रदान किया है । गया में निगम के भी सदस्य रहे हैं । माहुरी वैश्य महामण्डल गिरिडीह के मनोनीत सभापति एवं माहुरी महामण्डल गया के महामंत्री एवं अध्यक्ष के पद पर रहकर समाज-सेवा में रत रहे हैं । अन्य कई तरह की सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी रहे हैं । बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी ये अनेकानेक संस्थाओं से जुड़े होने के कारण व्यस्त रहते थे । माहुरी समाज इनकी सेवाओं को भूल नहीं सकता । निधन वर्ष १९९६ है ।

श्री जवाहर लाल जी, हिलसा-पटना :- छोटी सी किताब की दुकान करीब २० वर्ष पहिले इन्होंने पटना में खोली थी । तद्नन्तर व्यावसायिक विकास की सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते आज उस स्थान पर पहुँच गये हैं जो कि बहुत लोगों की ईर्ष्या और प्रेरणा की वस्तु है । सम्प्रति इनका रुपा डोमेस्टिक, जेजे एण्ड कम्पनी, दनियाबो में डीजल पम्प और रक्सौल में डीजल पेट्रोल की निर्माणाधीन टंकी है । समाज के कार्यों में ये मुक्त हस्त दान देते हैं ।

श्री रामदुलार गुप्ता, रायगढ़ (म०प्र०) :- मध्यप्रदेश के जिला

मुख्यालय रायगढ़ में ये एक जाने माने चर्चित व्यक्ति हैं । इनकी प्रसिद्धि अब माहुरियों के मगध और गिरिडीह अंचलों में भी बढ़ती जा रही है क्योंकि इन्होंने स्वविवेक से आद्योगिक जगत में अच्छी जगह बना ली है । शुन्य से प्रारंभ कर इन्होंने पूर्व में कई अंकों को लगवाकर जो समृद्धि पायी है वह उनकी मेहनत, सूझबूझ और लगन का परिचायक है । इस उगते हुए सूर्य की उष्मा किस स्थिति तक पहुँचती है यह तो समय ही बतायेगा किन्तु इनके निकट जिन्हें कुछ दिनों तक रहने का सौभाग्य मिला है वे इनके बहुआयामी व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते । इन पंक्तियों के लेखक को इस इतिहास की पाण्डुलिपि तैयार करने ८-१० दिन रायगढ़ में लगे और इस दौरान इनकी गुणवत्ता जो परिलक्षित हुई वही व्यक्त करता है कि जाति प्रेम की कितनी अभिलाषा इनमें है । सेवा भाव से परिपूरित इस व्यक्ति की नसों में मानव गंगा प्रवाहित है । धार्मिक कृत्यों में भी इनका विश्वास है ।

इनके पिता जी नौकरी के सिलसिले में रायगढ़ आये थे और यही रामदुलार जी ने स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की । शिक्षणोपरांत बैंक की नौकरी की जहाँ मात्र एक दिन रहकर नौकरी को लात मार दी । वर्षों तक पार्टनरशीप में कागज-कार्पी के व्यवसाय और उद्योग में लगे रहे । तत्पश्चात् कापी आदि की अपनी दो फैक्ट्रीयाँ लगा ली जो कि कई बीघ जमीन में फैली है और जहाँ लगभग एक सौ लोग कार्यरत हैं । इनकी फैक्ट्री का बना माल महाराष्ट्र, आन्ध्र, उड़ीसा, बिहार और मध्यप्रदेश में बिकता है । कागज और इसके उद्योग के ये पारंगत व्यक्ति हैं ।

इनके भाग्य का औद्योगिक दरवाजा तब खुला जब विश्वविख्यात स्टील के निर्माता श्री ओ०पी० जिंदल से साक्षात्कार हुआ । जिंदल साहब की पारखी आँखों ने इनके सुझाव और कर्मठता को समझ इन्हें रायगढ़ इलेक्ट्राड में प्रमुख शेयर होल्डर बनाया जहाँ के ये मैनेजिंग डायरेक्टर हैं । इसमें विश्व के चक्र बनते हैं जो कि स्टील फैक्ट्रीयों में लगते हैं । साथ ही

इसी फैक्ट्री में ४-५ माह पूर्व पहली बार आयरन और वेस्ट से स्पन्ज आयरन निर्मिति होने लगा है । विकास का यही क्रम रहा तो भविष्य में देश की जानी मानी औद्योगिक हस्ती के रुप में प्रस्थापित हो सकते हैं ।

श्री सुरेन्द्र मोहन सिन्दरी :- पहले ये समाज की सभी बैठकों एवं सभाओं में भाग लेते रहकर अपनी समाज सेवा की भावना व्यक्त करते थे ।

श्री काशी नाथ गुप्ता, धनबाद :- माहुरी वैश्य महामण्डल के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर इन्होंने समाज सेवा तो की ही है । वैसे भी ये सामाजिक कार्यों में लगे रहते हैं । बी०सी०सी०एल० के पर्सनल मैनेजर से अवकाश ग्रहण कर उद्योग व्यवसाय में लग गये ।

कुमारी किरण अधिवक्ता, झुमरीतिलैया :-ये माहुरी जाति की एक मात्र महिला अधिवक्ता हैं और अपने क्षेत्र में अच्छी सूझबूझ रखती हैं । ये उपभोक्ता न्यायालय कोडरमा के माननीया सदस्य के रूप में राज्य सरकार द्वारा चयन किया गया है ।

श्री लक्ष्मी नारायण जी, रानीगंज :- ये सुदूर बंगाल के रानीगंज में बसते हुए भी सामाजिक बैठकों में भाग लेते रहते हैं और रानीगंज में समाज हित का कार्य करते रहते हैं ।

श्री किशोरीराम, चाईबासा :-अ०भा० माहुरी महामण्डल के दक्षिणांचल क्षेत्र के समर्पित समाजसेवी हैं । दूर रहकर भी ये प्रायः सभी बैठकों में सक्रिय रुप से भागीदारी करते रहे हैं ।

श्री शत्रुघन प्रसाद, एडवोकेट, कतरास :- पेशा से बिक्रीकर के वकील के अलावे ये समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता हैं ।

श्री युवराज प्रसाद, रजौली :-आर्य समाज के अनुयायी होकर भी माहुरी जाति की उन्नति के चिन्तक हैं ।

श्री सदन राम :- १९९४ ई० के अ०भा० माहुरी वैश्य महामण्डल के पटना अधिवेशन में बहुमत से ये इसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए । कांग्रेस (ई) के युवक संगठन के प्रादेशिक मंत्री हैं और प्रायः सभी दलों के कई

प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय नेताओं के सम्पर्क में वर्षों से हैं तथापि माहुरी जाति में इनकी कोई सामाजिक पहचान नहीं थी । किन्तु अपने तेज तर्रार व्यक्तित्व के कारण अनेकानेक सघन आरोपों प्रत्यारोपों को झेलते हुए समाज के कई कार्य किए हैं । करीब ७५ मंडलों में घूम-घूम कर उन्हें पुनर्जीवित करने का कार्य किया । पटना में मथुरसिनी छात्रावास सह अतिथि निवास को सुसभ्य वातावरण के विशाल भवन में खोलकर इन्होंने वर्षों की जन आकांक्षा को पूरा किया है पर अर्थ के अभाव में यह बन्द हो गया । व्यक्तिगत कारणों से ये अब निष्क्रिय हैं और महामण्डल का काम बन्द सा हो गया है ।

श्री प्रभुदयाल गुप्त, मिर्जागंज :-इनका जन्म जमुआ थाना मिर्जागंज गाँव में हुआ । ये बचपन से ही कुसाग्र बुद्धि एवं विलक्षण प्रतिभा के थे । ये सदैव माहुरी वैश्य महामण्डल से जुड़े रहे । प्रारंभ से ही ये कांग्रेस में रहे । व्यापार के क्षेत्र में भी ये अपना पहचान बनाए हुए हैं । इनके चारों पुत्र भी व्यापारी सफलता के साथ अग्रसर होते जा रहे हैं । महामण्डल में अध्यक्ष पद पर भी ये सुशोभित हो चुके हैं । महामण्डल के कार्यों के प्रति सदैव प्रयत्नशील देखे जाते हैं ।

श्री फूलचन्द राम बरहपुरिया, दीपनगर :-बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल के बिछुड़े परिवार से अपनी कन्या का विवाह करके इन्होंने समाज में फैली रुढ़ि का नाश किया है । सफल कृषि कर्मी और कृषि पंडित की सरकारी उपाधि लिये हुए हैं । कृषि विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तक में इनके ऊपर एक रचना है । देशी-विदेशी कृषक इनके खेत देखने आते रहते हैं ।

श्री साधूशरण भदानी, मारुफगंज, पटना :- ये निःस्वार्थ जाति के हितैषी और यथाशक्ति आर्थिक सहायता देते रहते हैं ।

श्री विनोद कुमार, गया :-बी०डी०ओ०, एस०डी०ओ० के बाद जिला कृषि पदाधिकारी से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं । यथावसर इन्होंने समाज के लोगों को लाभ पहुँचाया है ।

श्री सच्चिदानंद प्रसाद, अधिवक्ता, गया :- पिछले १०-१२ वर्षों से ये लगातार अ०भा० माहुरी महामण्डल के मंत्री के पद पर सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं । इनकी तर्क पूर्ण युक्ति और सक्रियता प्रशंसनीय रही है । कराधान विशेषतया बिक्रीकर के प्रदेशों के जाने माने वकीलों में इनकी गिनती है । फुरसत के समय ये निःस्वार्थ भाव से आपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हैं ।

मारुफगंज, पटना सिटी

पटना में माहुरियों का ये पुराना गढ़ है । कभी इस मुहल्ले में करीब दो सौ परिवार माहुरी के हैं । पूर्व में खांडसाई उद्योग हेतु ये यहां आये पर आज किराना के बड़े-बड़े व्यवसायी यहां हैं । सामाजिक कार्यकर्त्ताओं में श्री साधुशरण भदानी, श्री साधुशरण लोहानी, श्री अशोक कुमार नवरिया, श्री योगेन्द्र लोहानी, श्री उमा प्रसाद, श्री सुरेश कुमार आदि उल्लेखनीय है ।

श्री रामचन्द्र प्रसाद, आर०एस०फैक्टरी, गया :- बहुत कम ऐसे लक्ष्मी पति हैं जो अपने व्यस्त जीवन में से समाज को समय देते हैं राम चन्द्र प्रसाद जी वैसे में से ही एक हैं । समाज के लिए तन, मन, धन से सेवा करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं । महामण्डल, मयंक के कोषाध्यक्ष के रुप में ये बहुत अच्छे ढंग से कार्य कर रहे हैं ।

श्री इन्द्रदेव भदानी, गया :- इनका प्रतिष्ठान जाति के सेवकों के लिए अनुपम जगह है जहाँ लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से समाज हित की बातें खुलकर करते हैं और योजनायें बनाते हैं । मयंक के प्रकाशक और अन्य पदों पर रहकर इन्होंने समाज की अप्रतिम सेवा की है ।

श्री नित्यानंद गुप्त, पटना-लक्खीसराय :- पटना माहुरी मण्डल के

अध्यक्ष के रुप में इन्होंने अच्छा कार्य किया । इन्हीं के कार्यकाल में पटना में अ०भा० माहुरी वैश्य महामण्डल का १९९४ का सफल अधिवेशन हुआ । ये जनता दल से जुड़े हैं ।

श्री रमाशंकर प्रसाद, अकबरपुर-गया :- गया के नवयुवकों में जाति प्रेम का भाव जगाने में सतत तत्पर रहते हैं । गया माहुरी मण्डल के मंत्री के पद पर रहकर कई महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं । इनका विचार है कि जाति प्रत्येक दृष्टि से उन्नत बने ।

श्री सुरेश प्रसाद अधिवक्ता, गया :-वर्षों माहुरी मयंक के प्रकाशक के रुप में इन्होंने अपनी अमूल्य सेवा समाज को दी । गया नगरपालिका के आयुक्त । गया नगर के भाजपा के अध्यक्ष के रुप में इन्होंने अपनी ख्याति अर्जित की है । ये निःस्वार्थ समाजसेवी हैं ।

श्री अनिरुद्ध प्रसाद, गया :- ये सजग सामाजिक कार्यकर्ता हैं, इनके अंदर जाति हित की ज्वाला जलती है । इसी कारण ये थोड़ी सी सामाजिक संस्था के किसी पदाधिकारी की असंगत बातें और गलत कार्यों की स्पष्ट आलोचना करने में नहीं चुकते । विपक्ष की भूमिका ये अच्छे ढंग से निभा रहे हैं । जिला सांख्यिकी पदाधिकारी के रुप में इन्होंने अवकाश ग्रहण कर लिया है ।

प्रो० अखिलानन्द :- समाज के पुनर्जागरण काल से ये सजग सामाजिक सेवक रहे हैं । 'माहुरी मयंक' में आपने लेखों और महामण्डल में अपने विचारों द्वारा समाज को लाभान्वित किया । ये मेसरा बी०आई०टी० के अवकाश प्राप्त लेक्चरर हैं ।

श्री शक्ति चरण तरवे :- ये माहुरी वैश्य महामण्डल गिरिडीह के समर्पित महामंत्री हैं और अपने पद के अनुरुप सामाजिक कार्यों में संलग्न रहते हैं । इनके विचार अत्यन्त सुलझे और तर्कपूर्ण होते हैं ।

श्री श्याम सुन्दर प्रसाद, राजगीर :- राजगिरि की सामाजिक गतिविधि के मूल में विराजमान श्याम सुन्दर जी बड़े कर्मठ और सुयोग्य समाज

सेवी हैं ।

श्री खगपति राम, गिरीडीह :-भिन्न-भिन्न पदों पर रहकर इन्होंने माहुरी वैश्य महामण्डल गिरिडीह के सामाजिक कार्यों का अच्छे ढंग से सम्पादित किया है । ये एक अच्छे अभ्रक निर्यातक भी हैं ।

अकबरपुर

यह माहुरी जाति का ऐसा ग्राम है जहाँ अनेकानेक लोगों ने समाज सेवा में काम किया । संप्रति श्रीमती धर्मशिला देवी, श्री रमाशंकर प्रसाद के नाम लिये जाने चाहिए ।

श्री श्याम सुन्दरराम, गिरिडीह :- ये चाँगाखार के मूल निवासी थे । अब गिरिडीह में बसे हैं । विद्यार्थी जीवन से ही आर०एस०एस० से संबंध और बाद में जनसंघ परिवर्तित नाम भाजपा के समर्पित कार्यकर्ता । आपात काल में लगभग तीन वर्ष तक जेल में बिताए । अब तक अनेकों बार जेल जा चुके हैं । ये भाजपा के जिला अध्यक्ष भी रह चुके हैं । अभी भी ये भाजपा में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं ।

श्री सत्यनारायण तरवे, पचम्बा :-ये विद्यार्थी जीवनको समाप्त कर माहुरी वैश्य महामण्डल से अपने को जोड़े हुए हैं । उन दिनों महामण्डल के प्रधान बाबू उमाचरण लाल तरवे थे । इन्हें उनके नेतृत्व में कई वर्षों तक काम करने का सौभाग्य मिला जो आगे चलकर लगातार (कई वर्षों) तक महामंत्री एवं अध्यक्ष पद पर बने रहे । राजनीतिक क्षेत्र में इनका संबंध कांग्रेस (ई) से प्रारम्भ से ही रहा है । ये गिरिडीह नगरपालिका के वार्ड आयुक्त भी रहे । ये गिरिडीह जिला में जिला के जाने माने राजनैतिक हस्ती हैं ।

श्री गौरीशंकर भदानी, गिरिडीह :-ये जमुआ थानान्तर्गत बलेडीह गाँव

के निवासी हैं । अब ये गिरिडीह में पूर्ण रुप से बस गये हैं । प्रारंभ से ही ये सार्वजनिक कार्यों से जुटे रहे । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भाजपा आदि से सम्बद्ध हैं । इनके यहाँ भाजपा के केन्द्रीय नेताओं का प्राय: जमघट रहता है । ये अनेकों बार जेल यात्रा कर चुके हैं । आपातकाल में लगभग दो वर्षों तक इन्हें जेल में रहना पड़ा । माहुरी वैश्य महामण्डल के ये स्थायी उपाध्यक्ष रह चुके हैं । आज भी इनकी सक्रियता महामण्डल एवं भाजपा से बनी हुई है ।

श्री राज किशोर राम कन्धवे, पचम्बा :- झारखण्ड मुक्ति मोर्चा की केन्द्रीय समिति के सदस्य और गिरिडीह जिला मोर्चा के कोषाध्यक्ष । सजग राजनीतिक कार्यकर्ता ।

नूरसराय

यहाँ माहुरी महामण्डल का विधिवत गठन है जिसके अध्यक्ष श्री कपिल देव प्रसाद हैं जो कि प्रखण्ड कांग्रेस (ई) के भी अध्यक्ष हैं । ये समाजहित में सक्रिय रहते हैं । सम्प्रति नालन्दा जिला माहुरी वैश्य मण्डल के अध्यक्ष भी हैं । मंडल के मंत्री हैं श्री ईश्वर चन्द्र बरहपुरिया, इनके अलावे श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री अनिल कुमार, श्री केदारनाथ लोहानी, श्री द्वारका प्रसाद लोहानी, श्री पुरुषोत्तम प्रसाद, श्री चमरु प्रसाद, शिव प्रसाद, राम भूषण प्रसाद, औंकार प्रसाद, सचीन्द्र प्रसाद, श्री राम वृजराम ।

वजीरगंज

यहाँ माहुरियों की अच्छी आबादी है । सर्वश्री मोहन लोहानी, देवानन्द प्रसाद, जगदीश प्रसाद उल्लेख्य हैं ।

राजगिरि के आनन्द होटल के मालिक श्री सदानन्द जी का निवास जाति के कार्यकर्त्ताओं के लिए सदा खुला रहता है । ये उन्हें

समुचित आदर, सहयोग देकर उपकृत करने से बाज नहीं आते ।

पटना

बिहार प्रदेश की राजधानी होने की वजह से यह स्थान महत्वपूर्ण है । अभी यहाँ करीब चार सौ परिवार रहते हैं । भिन्न-भिन्न स्थानों से नौकरी और व्यवसाय के लिए यहाँ लोग रह रहे हैं । सर्वश्री सदानन्दराम, अर्जुन प्रसाद, केदार प्रसाद, राधेश्याम प्रसाद, अनिल कुमार लोहानी, विनोद कुमार, अरुण कुमार, सुरेश कुमार, सुबोध कुमार, प्रमोद कुमार, पर्मदेश्वर प्रसाद मुख्य हैं ।

श्री ब्रह्मदेव प्रसाद, हिलसा :- हिलसा माहुरी मण्डल के मंत्री के रुप में तो ये समाज सेवा कर ही रहे हैं । जाति उन्नति की सभी बैठकों, सभाओं में जाकर अपनी बात कहना और सुनना नहीं भूलते ।

श्री सहदेव लोहानी :- हजारीबाग से रजरप्पा टाइम्स के ये संपादक, प्रकाशक और संचालक हैं । संपादकीय प्रतिभा और पत्र संचालन की कला के पारंगत श्री सहदेव जी को जब कभी अवसर मिलता है जाति हित की बात को प्राथमिकता देने में नहीं चुकते । राजनीति में ये कांग्रेस से जुड़े हैं ।

लक्खीसराय

यहाँ के अधिकांश स्वजातीय बन्धु जातीय हित की भावनाओं से जुड़े हैं । श्री श्याम सुन्दर गुप्ता सफल राजनीतिज्ञ और समाज सेवी हैं । आपातकाल के दौरान कुछ दिन जेल में रहे । जनता दल से जुड़े हुए हैं । सर्वश्री रामचन्दर राम, मधुसूदन प्रसाद, कृष्णमोहन प्रसाद आदि समाज के हित में लगे रहते हैं ।

बरबिघा

माहुरियों के लिए ऐतिहासिक स्थल है । जनहित के अनेकानेक कार्य यहाँ प्रारंभ से ही होते रहते हैं । यहाँ के श्री बिहारी प्रसाद, श्री चन्द्रशेखर जी, श्री दयानन्द प्रसाद, श्री सुरेन्द्र प्रसाद, श्री प्रसाद लोहानी, श्री केदार राम एवं श्री अर्जुन प्रसाद समाज के समर्पित कार्यकर्ता हैं । अभी भी यहाँ माहुरिंयों के सैंकड़ों घर हैं ।

श्री पारसनाथ गुप्ता, बिहारशरीफ :-माहुरी महामण्डल के संयुक्त मंत्री और नालन्दा जिला वैश्य सभा के प्रचार मंत्री के रुप में अपनी निःस्वार्थ सेवायें प्रदान कर रहे हैं । पटना में मथुरासिनी छात्रावास अतिथि निवास की स्थापना और संचालन में इनकी मुख्य भागेदारी है । वैश्य-हित और माहुरी जाति की सेवा में ये लगे रहते हैं ।

श्री भोलाप्रसाद चरण पहाड़ी :- समाज हित के भिन्न पदों पर रहकर इन्होंने समाज की अच्छी सेवा की है । पावापुरी टाइम्स के संपादक एवं प्रकाशक हैं । अनियत कालीन माहुरी नामक पत्रिका भी निकालते हैं । ये उपभोक्ता न्यायालय के अभिकर्त्ता के साथ-साथ भारतीय ग्राहक सेवा के सचिव भी हैं ।

कृष्णाप्रसाद, नई सराय :- शिक्षा विभाग के डिप्टी इन्सपेक्टर के पद से अवकाश ग्रहण कर ये जाति हित के कार्यों में लगे रहते हैं । स्काउट एवं गाइड संस्था से भी इनका गहरा लगाव है । ये घूम-घूम कर जाति हित का कार्य करते हैं । नालन्दा जिला माहुरी महामण्डल के ये मंत्री हैं ।

अशोक आर्य तरवे, बिहारशरीफ, झुमरीतिलैया :- समाज सेवा में इनकी रूचि रहती है । भाजपा से जुड़कर ये सम्प्रति कोडरमा जिला भाजपा के अध्यक्ष हैं ।

विशेष व्यक्ति

श्री योगेश प्रसाद सिंह योगेश जो कि अखिल भा० वर्षीय मगही सम्मेलन के अध्यक्ष हैं, श्री केदार पाण्डे जो कि सेन्ट्रल स्कूल ध

नबाद के वाइस प्रिन्सीपल हैं और श्री रामश्रय झा मगही के नामी कवि हैं तथा श्री सुरेन्द्र प्रसाद तरुण पूर्व मंत्री बिहार सरकार की भी सद्भावना और सहयोग इस समाज के साथ रहता आया है ।

स्व० अरुन्धती देवी :- नारी शिक्षा में इनका अग्रगण्य स्थान रहा है । इन्होंने सी०डी० बालिका विद्यालय में अवैतनिक रुप से जीवन के अन्तिम क्षण तक कार्य किया । पूर्णिमा विद्या मंदिर की स्थापना काल से ही वे इसे बाल शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र बनाने में जुटी रहीं । समाज रत्नाकर सहानन्द प्रसाद भदानी की ये धर्मपत्नी थी । इनका असामयिक निधन हुआ । समाज के पहले डिस्ट्रीक्ट जज बाबू दामोदर प्रसाद की ये पुत्री थीं ।

श्री जयनारायण राम सेठ जन्म स्थान हजारीबाग जिला धुज्जी ये पी०एच०डी० में ओवर सियर के पद पर पदस्थापित है । वर्तमान समय में ये झुमरीतिलैया में बस गये हैं । सामाजिक कार्यों से ये सदा जूटे रहते हैं ।

श्री ओम प्रकाश विद्यालंकार ये मूल निवासी बरबिघा के हैं । झुमरीतिलैया में वसे हैं । सामाजिक कार्यों में इनकी अमिट चर्चा बनी रहती है ।

बाबू होरिल रामजी :- पूर्व के पृष्ठों में इनकी औद्योगिक खूबियों को पढ़ चुके हैं । उसी रुप में ये जातीय स्वाभिमान के भी संरक्षक थे । जाति-अनुशासन और संगठन को ये सही ढंग से देखना चाहते थे । महामण्डल के कर्णधार इनके पास तक जाते जब कोई गंभीर बात होती । एक बार रेम्बा के एक जाति ने नियमित शुल्क नहीं दिया और संगठन को भला बुरा कहने लगा तो कई लोगों के साथ उसके यहाँ जाकर उन्होंने समझा बुझाकर रास्ता पर लाया । दूसरी बार शादी हेतु काढ़कर लायी गयी लड़की को वर के घर में आने पर लड़का भाग गया । होरिल बाबू बीमार चल रहे थे । अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं कर इन्होंने तीन दिन कई गाँवों में घूम-घूमकर

लड़के को ढूंढ निकाला । घर लौटे तो बिमारी लाइलाज हो गयी थी । इसी में इनका प्राणान्त हो गया । इसीलिए इन्हें सुधीजन हुतात्मा कहते हैं ।

प्रस्तुति : युगल प्रसाद गुप्ता, केन्दुआ

बाबू किसुन चन्द राम जी :- इन्होंने सी०एच०लि० को चलाने में सहयोग किया । ये जाति हित के अनेक कार्य करने में सफल रहे । ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे ।

बाबू दर्शन रामजी भदानी :- ये एक कुशल उद्योगपति थे । सी०एच०लि० के सर्वांगीण विकास का श्रेय मुख्यतः इन्हीं का है । इनके हृदय में जाति हित की अविरल धारा प्रवाहित होती रही । गिरिडीह का छात्रावास इन्हीं की देन है ।

बाबू रवीन्द प्रसाद भदानी :- श्री रवीन्द्र प्रसाद भदानी बाबू झरी राम जी के सुपुत्र हैं । इन्होंने झरीराम शिक्षा समिति की स्थापना की है जिसमें लगभग साठ हजार रुपये गये हैं । मेधावी किन्तु असमर्थ छात्रों को इसे व्याज मुक्त ऋण देने की व्यवस्था है ।

श्री परमानन्द गुप्ता, रहुई-राजगीर :- नालन्दा जिले का कोई भी सार्वजनिक कार्य इनके बिना अधूरा ही रहता है । राजगिरि में बसने के बाद इन्होंने वहां सामाजिक नव निर्माण का कार्य जो प्रारंभ किया है वे बड़े महत्वपूर्ण हैं । अब एम०ए० कर इन्टर कॉलेज से सेवा निवृत्त हुये । आपने माहुरी मयंक का लंबे समय तक संपादन के कार्य से जुड़े रहे ।

श्री नरेन्द्र प्रसाद चरण पहाड़ी, कोडरमा :- कोडरमा के जातीय गतिशीलता को बनाये रखने में नरेन्द्र बाबू का योगदान प्रभावी है । ये तन, मन, धन से जाति के गौरव को बनाये रखकर उसे ऊँचा उठाने में डटे रहते हैं । ऐसे निःस्वार्थ समाजसेवी से ही समाज की उन्नति होती है । इनके जैसे युवकोचित ऊष्मा से परिपूतिर व्यक्ति यदि अपेक्षित संख्या में समाज में हो जांय तो समाज का पिछड़ापन दूर होकर समाज उन्नति की

सीढ़ी पर चढ़ जाय ।

श्री रतन चन्द्र, झरिया :- निखिल बाबू के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण जाति सेवा की भावना इन्हें विरासत में मिली है । सो ये समय-समय पर जाति सेवा करते रहते हैं ।

श्री राम प्रकाश गुप्ता, गया :- ई० १९३८ में जन्में श्री गुप्ता एम०काम० हैं । १९८२ से ८८ तक गया मण्डल के मंत्री और एक बार महामण्डल के उपाध्यक्ष रहे । मथुरासिनी मंदिर के ट्रस्टी और मथुरासिनी स्वास्थ्य सेवा केन्द्र के सदस्य । लायन्स क्लब के सक्रिय सदस्य, क्लब की ओर से कनाडा, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली का भ्रमण किया । विद्युत बोर्ड गया में लेखापाल ।

श्री अर्जुन प्रसाद सेठ, झुमरीतिलैया :- ये हिलसा-निवासी सी०एच० इन्टर कॉलेज के अर्थशास्त्र के शिक्षक हैं । हंसमुख, चुटकुला के सिद्धहस्त एम०ए० हैं । अब स्थायी तौर पर झुमरीतिलैया के निवासी हैं । कुछ काल पूर्व गाँधी उच्च विद्यालय में स्थानान्तरित हैं ।

श्री युगल किशोर गुप्ता, केन्दुआ बाजार :- कोयलांचल क्षेत्र के ये उदीयमान नक्षत्र हैं । उस क्षेत्र की सभी सामाजिक संगठनों से जुड़कर इन्होंने अपने सहयोगियों के बल पर जो कार्य करते आ रहे हैं वे बड़े महत्वपूर्ण हैं । केन्दुआ विकास समिति और माहुरी वैश्य मण्डल केन्दुआ के अध्यक्ष । कोयलांचल माहुरी वैश्य संघ के महामन्त्री । केंन्दुआ ग्राम पंचायत के उप मुखिया । माहुरी युवा कल्याण समिति के संरक्षक एवं संस्थापक पूर्वा अध्यक्ष हिमगिरि सहकारी गृह निर्माण सहयोग समिति लि० । इन संस्थाओं के पदाधिकारी के रूप में रहना ही इनकी सामाजिक कार्य को संकेतित करते हैं ।

श्री कुलदीप राम गुप्ता, रायगढ़ (म०प्र०) :- ये गिरिडीह जिला के मिर्जागंज ग्राम के रहने वाले हैं । इन्होंने रायगढ़(म०प्र०) में जा कर लकड़ी का कारवार प्रारम्भ कर आरा मशिन बैठायें । इस उद्योग से इन्होंने अच्छी

खाशी धन अर्जित कर वहां एक सुन्दर मकान तो बनाये ही साथ ही एक बहुत बड़ा भूभाग अर्जित किये ।

धन कमाने के साथ ही ये अपने लड़के-लड़कियों को शिक्षा देने में पिछे नहीं रहे इनकी लड़की सुश्री शरिता गुप्ता एम०एस०सी० फाइनल में हैं जो पेन्टींग में विगत तीन वर्षों से रायगढ़ जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करते आ रही हैं । इस वर्ष तो ये पेन्टींग में सर्व श्रेष्ठ स्थान प्राप्त की जिसके फलस्वरूप इसकी पेन्टींग प्रदेश की राजधानी ले जाया गया तथा अनेकों शिल्ड एवं ग्यारह सौ रूपये इनाम स्वरूप प्राप्त की ।
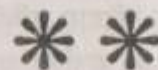
उपसंहार

इतिहास लेखन के पश्चात् प्रकाशन में अनपेक्षित विलम्ब हुआ । विलम्ब का कारण संबंधित पदाधिकारियों की व्यक्तिगत व्यस्तता थी । इसी अंतराल में कुछ उल्लेखनीय बातें सामने आयीं हैं । जिनकी संक्षिप्त चर्चा आवश्यक है ।

पहली बार समाज में एक मेधावी युवक ने भारतीय प्रशासनिक सेवा में योगदान किया । थोड़ा निम्न किन्तु महत्वपूर्ण एलाइड सर्विसेज में भी कई युवकों ने योगदान करके जाति का गौरव बढ़ाया ।

यह सर्वविदित है कि इतिहास समिति के अध्यक्ष श्री सदानन्द प्रसाद भदानी समाज में शिक्षा को सर्वोपरि महत्व देते रहें हैं । छात्राओं की शिक्षा के ये प्रबल पक्षधर हैं, इसी भावन से प्रेरित होकर सी० एच० लि० के ओर से श्री ध्रुवनारायण भदानी की सक्रिय भागीदारी में झुमरीतिलैया में एक विशाल महिला कॉलेज की नींव रखी है । इसके लिये एक बड़ा भूखण्ड सी० डी० फर्म ओर से महाविद्यालय के नाम से निबंधित कर दिया गया है । इसके भवन निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है । पाँच विशाल हॉल के छत की ढलाई हो चुकी है । शेष का निर्माण प्रगति पर है ।

इस महाविद्यालय में छात्राओं को कला, विज्ञान एवं वाणिज्य की उच्च शिक्षा की व्यवस्था है । अभी इस महाविद्यालय की पढ़ाई इसी फर्म द्वारा सी० डी० बालिका उच्च विद्यालय में चल रही है ।

साहित्य के क्षेत्र में श्री शिव प्रसाद लोहानी की मगही और हिन्दी में अनेक पुस्तकें छपीं जिन्हें विद्वानों ने काफी पसन्द किया है ।

मगध क्षेत्र की जाति गतिविधियाँ प्राय: ठप्प सी हो गयी है, क्योंकि इसके अध्यक्ष चुप बैठ गये हैं और इसके अधीनस्थ कई मंडल सक्रिय हैं । पटना, बरबिघा, बोकारो, बिहारशरीफ, झुमरीतिलैया, गया

आदि के मंडल तत्परता से कार्य करती रहती हैं । खासकर गया माहुरी मंडल विशेष जाग्रत दीख पड़ता है ।

माहुरी मयंक का प्रकाशन बंद होना समाज के लिये शुभ लक्षण नहीं है । इसी प्रकार गया महामंडल के अंतर्गत का माहुरी शिक्षा न्यास सुप्त है, यद्यपि इसके पास यथेष्ट रकम है ।

गिरिडीह मुख्यालय वाला माहुरी वैश्य महामंडल की गतिविधियों में पूर्व की भाँति जोश-खरोश नहीं है । यदि इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो स्थिति चिन्तनीय हो सकती है । इस बात को संगठन के कुछ वरिष्ठ पदाधिकारियों ने समझा और 1997 के अधिवेशन में एक मार्गदर्शक मंडल की उपसमिति गठित की । इसकी योजना है कि प्रस्तावित विचारों पर दोनों महामंडल मे चिन्तकों को ऐसे ऐतिहासिक स्थान पर बुलाया जाये और समाज और संगठन के व्यापक हित सम्यक् विचार करके कोई अँतिम निर्णय लिया जा सके । इसे कार्यान्वित करने/कराने में जिस धैर्य और सहिष्णुता की आवश्यकता है वह यदि बना रहा तो नि:संदेह यह बड़ी उपलब्धि होगी ।

बेहतर समाज के निर्माण के लिये गठित महासचिव वैश्य संघ की गतिविधि पूर्णतया बंद है । किन्तु कतिपय समाजसेवियों के बीच यदाकदा पत्राचार होता रहता है । इधर पिछले महिने में मैनपुरी (उत्तरप्रदेश) में वैश्य अनुसंधान कक्ष की स्थापाना करने की तैयारी एक समर्पित समाजसेवी युवक श्री अनिल कुमार गुप्ता, सीताराम मार्केट, मैनपुरी, उत्तरप्रदेश कर रह हैं । इस अनुसंधान कक्ष में वैश्य संघ के सभी घटकों के प्राप्य साहित्य सैकड़ों-हजारों की संख्या में रहेंगें, जिनके सहारे लोग इस घटकों के विविध स्थितियों का अध्ययन-लेखन कर सकेंगे ।

मार्ग दर्शक मण्डल

1998 के माहुरी वैश्य महामण्डल का अधिवेशन स्थल गिरिडिह में मार्गदर्शक मंडल की स्थापना समाज ने महशूर किया । जिसे यह काम सौंपा गया कि महामंडल को चातुर्दिक विकास के लिये आज के परिपेक्ष में कौन सा कार्य करें । इसके संयोजक महामण्डल के स्थाई सभापति जाति रत्न श्री कमलापतिराम तर्वेजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री कालीचरण राम तर्वेजी बनाये गये तथा इसके सदस्य सर्वश्री रामप्रसाद राम कुटरियार स्थाई उपाध्यक्ष सत्यनारायण राम तर्वे, प्रभुदयाल गुप्त, काशीनाथ गुप्त, पूर्व अध्यक्ष श्री गौरी शंकर मदानी, पूर्व स्थायी उपाध्यक्ष श्री खगपति राम तर्वे, कोषाध्यक्ष श्री गोपाल राम अठघरा, श्री कपिलदेव नारायण, श्री यदुनन्दन राम, एडवोकेट, पूर्व मंत्री एवं श्री वनमाली राम, पूर्व महामंत्री शिरोमणि माहुरी वैश्य महामंडल चुने गये ।

एक वर्ष में यह समिति अनेक कार्यक्रमों के द्वारा महामंडल के चातुर्दिक विकास के अनेकों कार्यक्रमों पर विचार कर अन्त में दिनांक 22.3.98 को अपना रिपोर्ट महामंडल को सौंप दिया ।

इसमें संगठनात्मक ढाँचे को मजबूत करने, शिक्षा के क्षेत्र में विकास तथा धर्म संचार के अनेक उपायों पर प्रकाश डालते हुये आय का और वृद्धि, पत्रिका प्रकाशन तथा क्षेत्र विस्तार के अनेक सम्भावनाओं पर गहन चिन्तनयुक्त विचार प्रस्तुत किया गया ।

आशा है आगामी 22 एवं 23 अप्रैल 1998 को बेंगाबाद में होने वाले अधिवेशन में इसे विचार कर कार्यान्वयन किया जायेगा । यदि इसे कार्यान्वयन किया गया तो यह संगठन अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करने में शत-प्रतिशत सफल रहेगा ।

मुद्रक : भगवती प्रेस, झुमरीतिलैया - 825 409, दूरभाष : (06534) 22453/22553